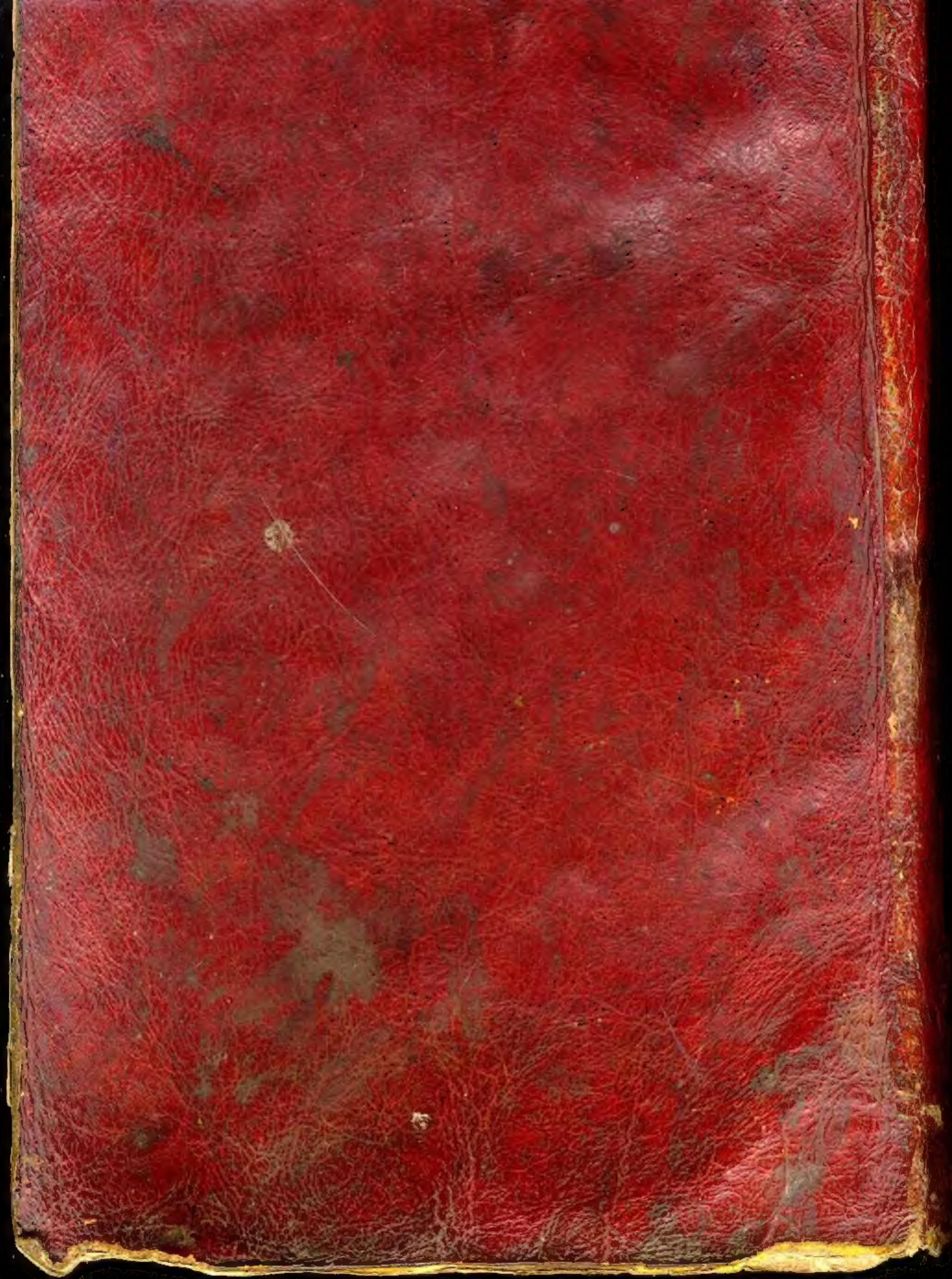










[illegible]

आत्मनामिच्छयत ॥ आत्मनश्चन्दननमः ॥ आत्मः
नमिन्सर्वार्थनमः ॥ आत्मासनायनमः ॥ आत्मः
मूलंयनमः ॥ ॥ **गंगाधरवार्म** ॥ **कुं** स्वस्तिनामिमा
तामग्निनारुगः स्वस्तिगद्यदिगिनवर्णः ॥ स्वस्तिधूमा
असनादधातुनः स्वस्तिवावायुधिवीसूक्तुना ॥ स्व
स्तयवायुमूयप्रवामहेसामस्वस्तिवृत्तनस्ययमग्नि
वृहस्पतिं सर्वगं स्वस्तयस्वस्तय आदित्यासाकव
तुनः ॥ दिव्यदवाना अथास्वस्तयवेऽथानवातसूत
निः स्वस्तयदवाः अरुवनिरुवः स्वस्तयस्वस्तिना
वृद्धः पार्त्तहसः ॥ स्वस्तिमिजावद्वृत्तास्वस्तिप्रथमवति
॥ स्वस्तिनः नृणां निष्पस्वस्तिना अदिगगृधि ॥ स्वस्तिप्र
क्तमनवममसूयवद्वृत्तमसाविव ॥ यूनदधगाद्यर्त
जानगासंगममहि ॥ स्वस्त्यनकार्थमनिष्ठनमिमह
दूर्तयायसीदवतानी ॥ असन्नद्यमिन्दुसर्वसमस्तवृह
यणा नामविमावदस ॥ अर्जुनामवसां निविर्गजयव
स्वस्त्याययमनसावगाय्ययगयालिः ॥ गवर्णययय
स्वस्तिर्सीतावद्वृत्तयना अस्तु ॥ ॥ **कुं** कनिकदकुनव
वक्त्रासन् यलिवावमदिगवनाः ॥ सूनमल्लयसव

नरुवासिमात्वाकाविदरिमाविष्वाविदता॥मात्वा॥
नडद्विधियन्मास्त्प॥मात्वाविदतिकमास्त्वीवा॥
।विष्वायामनप्रदिगं कनिद्रादस्त्समस्तलारुद्रपादी
वदद॥अवकुन्ददक्षिणगागृहाणसूर्मगलारुद्रवा
दीगकुना।मानस्तनव्रीणातमाद्य॥०मावृहद्वदम
विद॥थसूवीना॥यदक्षिणदविगृह्णितकानथाव
दनसमुप्रागकुनय॥डहवावावदतिसामग
वृवगायतु॥यद्वृह्वानुवाजति॥डहागवगकु
नसामगायसिखकूप॥वृवसवप्रसंगति॥८॥गव
वाजीगिष्ठमगीवपीत्यासर्वतान॥गकुनरुद्रमावदः
विष्वागान॥गकुनयूपमावद॥अवदस्त्वीगकुनरुद्र
मावदरुष्मीमासीन॥सूमतिविकिचिन॥यद्वृह्वानु
दसिककनिर्यथावृहद्वदमपिदयसूवीना॥रुद्रव
दक्षिणदंणागुरुद्रमरुद्रनगावदरुद्रयमस्तनावदरु
द्रयपश्चात्कर्पिजला।रुद्रवदयपुर्णरुद्रवदगृह्णवृ
दमस्तार्कवदरुद्रनाशूरुयवद।रुद्रमधस्तनाव
दरुद्रमधविष्वाद्यद॥रुद्ररुद्रनशूरुवदरुद्र।सर्व
गावदशमयन्ययवस्तान॥गिर्वदक्षिणस्तुविश्र

उमस्मादावदरुदन्नाश्रुयवदा रुदमवस्तानाव
दरुदमयनिष्ठादद॥ रुदं रुदन्नावदरुदा सर्व
गावदश्रुसयत्तं यन्नस्तानः ॥ निर्वदक्षिणास्तुधि। अ
रुयं सतरीयः ॥ आगरुदमूरुनगागृह। योवनानिवह
यसि सतिग्यवावेदन्नुहिः ॥ गकनकप्रदक्षिणां गत
पशालिनावद॥ आवदं स्वंगकनरुदमावदगृष्मीम
मीनः ॥ समर्गिचिकिदिनः ॥ यद्व्यरीवदसिकर्कनिर्य
थावृहदसमिदधसुवीनाः ॥ ॥ ॐ आ॥ पुः ॥ गिगाना
वृषरानरीमाद्यनाद्यनः ॥ कारुनधर्षलीनी। सिकन्द
नानिमिषचकवीनः ॥ गत० सनाश्रुजयत्माकमिन्दुः ॥
॥ ॥ ॐ अ॥ का॥ यगादूत्रमूदेतिदेवं तदसूकस्यतथेवे
ति। दूर्वगमं अतिषां अतिवर्कतन्ममनः ॥ निवर्सेक
ल्यममु॥ ॥ ॐ सहस्रगीर्षाप्रबूषः ॥ सहस्राक्षः सहस्र
पागु। सहस्रमि० सर्वतस्य त्वायतिष्ठद॥ गुरुली ॥ ॥ ॐ
विश्वगुरुहस्यिवशुसाम्यं मध्याश्रुदयश्रुयगाववि
कृतम। वागमूगायाश्रुतिवद्वतिर्मनाप्रजाः ॥ यूप
प्रयन्नेषाविनाकति॥ ॥ ॐ नमस्तु नूदमन्मवडगा
गुरु० प्रवनमः ॥ वाक्श्यामूतगनमः ॥ ॥ ॐ वय०

सा सवगगवमनूवविशतः प्रजावनः सववदिः
प्रवगगदरागः सहस्रमासिकयागः प्रसस्वादेव
गगदरागः आरुक्षयः ॥ अत्रवदुमतीमकमयव
प्रम्वकम ॥ यथानावस्यसक्तवयथानः ॥ यसक्तय
थानाववसाययागः ॥ रुषजमसिरुषजद्ववप्ययं
प्रवसायरुषजं ॥ मरुमसायमव्यः ॥ यम्वकंयजाम
हसगंविद्विद्वद्वनम् ॥ उर्वानूकमिववन्धनान्मृत्वा
मृत्वा मृक्षीयमानागः ॥ यम्वकंयजामहसगन्धि
यतिवदनम् ॥ उर्वानूकमिववन्धनादिनामृक्षीय
मानागः ॥ प्रगहवडावसक्तनयनामृजवगातीहिः
॥ अत्रगगधन्वापिनाकावसः कलिवासाग्रदि० स
नः ॥ गिवागीहिः ॥ ग्यायप्रुमदग्नेः कथ्यवथ्यथा
यवः ॥ अद्ववप्रुथायवतन्नामृमुथायवः ॥ गिवाना
मासिस्वधितिष्ठपिगानमस्तुमामादि० सी ॥ नि
वर्तयाम्नायवनायायप्रजननायनायस्यायायसु
प्रजास्वायसवीर्थाय ॥ ॥ यवामृत्वा ॥ यद्व ॥ उं व
यः ॥ पृथिव्याययडावधीप्रययादिव्यतनिष्कपयाथाः
ययवतीयदिः ॥ यंयमर्च ॥ ॥ यवि ॥ उं दवि कादा

प्रजास्त्रायस्त्रायया ॥ **प्रवासास्त्रायया** ॥ ॐ य
यः पृथिव्यां ययडाषधीषूययादिव्यं तन्निष्कपयावाः
ययस्वगीपदिः ॥ **संभुमर्क** ॥ ॥ धवि ॥ ॐ दधि काश्रा
श्रुषार्थजिष्णवः स्वस्वाजिनः ॥ **सुवलिना** ॥ **सुखाकनस्य**
॥ **अय** ॥ **विनायक** ॥ ॥ **यत्र** ॥ ॐ गजासिधुक्रमस्य
मृगमसिधमनासासि ॥ **पियन्धवानामनाधुधुन**
वयजनसि ॥ ॥ **कस्मि** ॥ ॐ मधुवातामनायसमधुः
कसनिर्मेधवः ॥ **माधीनः** ॥ **संगाषधी** ॥ **मधुनकसगाव**
सा ॥ **मधुमत्याधि** ॥ **व** ॥ **न** ॥ **मधुयोत्र** ॥ **मधुनः** ॥ **पिनामधु**
सन्नावनस्यगीमधुमान् ॥ **अमुसूर्यः** ॥ **माधीनः** ॥ **वाकव**
मुनः ॥ ॥ **साखन** ॥ ॐ नमः ॥ **रुवायवमथा** ॥ **रुवाय**
वनमः ॥ **रुवायवमथ** ॥ **रुवायनमः** ॥ **रुवायवनि**
वतनायव ॥ ॥ **रुवायन** ॥ **गंगाकलन** ॥ ॐ पविश
रुवायवमविश्वः ॥ **पसवडत्यनाम्य** ॥ **विदलयवि**
गुलसूर्यनमि ॥ ॥ **वदन** ॥ ॐ यदयकचवृह
रुनूदगा ॥ **अरिसूर्यः** ॥ **सर्व** ॥ **तदित्यनवम** ॥ **तनलि** ॥ **वि**
वतनिसगा ॥ **अनिवि** ॥ **वमा** ॥ **रासिनावन** ॥ ॥ **सर्गधव**
दन ॥ ॐ गन्धवादीदनाधर्षानिष्ययूर्य कवीकली ॥

ॐ धनसिद्धिस्तु नानाभिहावकयप्रियं ॥ **सिद्धिस्तु**
 ॥ **सुखं** जविष्ठदापुषा नुः पाहि ॥ **सुखं** धानि वः न द्योः
 गाकमस्तनना ॥ **सुखं** सक्ता ॥ **सुखं** सक्ता यवीर्गयन
 मं यविर्गयजायतयः ॥ सह ऊं यवस्ता गाजायतमय
 प्रतिमं वपुर्गयवता यवीर्गयन मस्तुतज ॥ **सुखं**
 सुखं नमसी मदनक सुवप्रिया सुदूषणः ॥ सुखं स
 गमधनमा विप्रान विषया मसीया जा निन्दुतद्वीः
 ॥ **सुखं** नमः ॥ सुखं तिला सिमा मय वल्लः ॥ **सुखं** सदा यव नि
 मिता ॥ यन्निम ययं कं पितृन्मा कान्यला ययः
 स्वाहा ॥ **सुखं** ॥ सुखं सदा सि यव आसद्वयाय व
 यामा गी ॥ **सुखं** ॥ सुखं सः रुलिनी र्या सुदला सुयः
 व्याया यय यिणी वृहस्य गि यमृता काना मस्तुतज ॥
 सः ॥ **सुखं** ॥ **सुखं** ॥ **सुखं** ॥ **सुखं** ॥ **सुखं** ॥ **सुखं** ॥
 कल सस्तुतज ॥ **सुखं** ॥ सुखं सः सुयय रुट् ॥ कनः
 सस्तुतज ॥ सुखं सः सुयय नमः ॥ सुखं सः गि य
 सस्तुतज ॥ सुखं सः गि यय वी यट् ॥ सुखं सः कववा
 यट् ॥ सुखं सः नयय यय वट् ॥ सुखं सः सुयय
 यट् ॥ सुखं सः नयय यय वट् ॥ सुखं सः सुयय

सत्त्वाहो॥ ॐ शं सः नः स्याय वा प्र ॥ ॐ शं सः का व वा
यद्वा॥ ॐ शं सः नः स्याय वा प्र ॥ ॐ शं सः अमु य
रुट् ॥ ॐ ति क नी ग न्या सः ॥ ॥ धने न अर्थ धा व दू जा
॥ सो स दू जा ॥ ॥ आ स ना आ धा न ण क य न मः ॥ अ न
ना स ना य न मः ॥ क न्या स ना य न मः ॥ ना वा स ना य
न मः ॥ य णा स ना य न मः ॥ क णा स ना य न मः ॥ ॥
क ल्पि का स ना य न मः ॥ य द्या स ना य न मः ॥ वृ षा ॥
स ना य न मः ॥ ॥ शि र्यां ज लि ॥ ॐ शं द्या क ल वृ द म
हा स न र्मा ह न स क ल ती र्थ म नु द ॥ व ना क ला
ग त्वा धि य ग य व क वि क नू द्वा स न ॥ आ ल ग त्व वि
या ग त्व णि व ग त्वा य द्या ॥ श्री धी र्म दूर्ध्व क ल स मूर्त
य न मः ॥ ॐ शं सः ॥ ॐ शं सः ॥ द द यो य र्या दि ष र्ग
॥ ॥ व लि स ॥ शि द व ॥ ॥ न वा स ना य न मः ॥ म यू वा
स ना य न मः ॥ मू णा स ना य न मः ॥ ॥ थो य स न दी य
द म् क दी द वी धा द क ण य ला य न मः ॥ व लि ॥ श्री द्वा
क ल य ण व द क ना धा य न मः ॥ व लि ॥ ॐ गं गी गूं गः
॥ ग्लो धी क ल ग ॥ १४४ वा य न मः ॥ व लि ॥ आ वा द न दि
॥ ग १३ ग ऊ नी ग उ म् द्वा द ण य र्ग ॥ ॐ शं सः ॥ म दूर्ध्व

गतः यथाय नदवाचनं ॥ गलः वृद्धनं ॥ न्यासः ॥ गूं
 म्नायदृष्टं ॥ कलः वृद्धनं ॥ गूं ददयाय नमः ॥ गूं
 निवसस्वाहा ॥ गूं निखाय वीषट् ॥ गूं कववाय दूं ॥
 गूं नकवयाय वषट् ॥ गूं अमोयदृष्टं ॥ वृत्तिव्यं
 गन्यासः ॥ ॥ श्वतर्न अर्थया वृद्धा ॥ अस्तं वृद्धा ॥
 कावृद्धा ॥ कावृद्धा ॥ कावृद्धा ॥ कावृद्धा ॥

अथसूर्यपूजनं॥ वं अस्तु यद्दृष्टं॥ कनकाधर्मः॥ अ
द्वययायनमः॥ अकार्यगिनसेखाहा॥ रुतुवः का
लिनीगिरिवायेवोषट्॥ दूकववायदू॥ रानगयया
यवषट्॥ वं अस्तु यद्दृष्टं॥ न्तिकवांगन्यासः॥ ॥ ध
नं न अर्थपात्रपूजा॥ आस्तपूजा॥ ॥ आसन॥ आधा
नकायथादि॥ अश्वसनायनमः॥ शिवांजलि॥
कुंदांकीसः॥ धीसूर्यायनमः॥ वरुंग अद्वययाय
थादि॥ ॥ वलिमण्डितव॥ वलिं॥ नवग्रहस्थावलिं
गृह्ण २खाहा॥ स्वाकमहावलिं धूनकं॥ आवाहनादि
॥ यद्वा मूर्त्तिं॥ न्तिसूर्यपूजा॥ ॥ ॥

गंगाविष्णुपूजनं ॥ न्यासः ॥ **ह्रीं** सः ॥ अस्तु यदुह ॥ कन
 (गाधनं) ॥ **ह्रीं** सः ॥ ददयाय नमः ॥ **ह्रीं** सः ॥ गिबेसखा
 हा ॥ **ह्रीं** सः ॥ गिखायेवोषट् ॥ **ह्रीं** सः ॥ कववायदू ॥ **ह्रीं**
 सः ॥ नञ्जयाय वषट् ॥ **ह्रीं** सः ॥ अस्तु यदुह ॥ ॐ तिक
 नांगन्यासः ॥ ॥ धनं नैर्गवयाय पूजा ॥ अस्तु पूजा ॥
 ॥ ॥ असन ॥ आधन ॥ कथय्यादि ॥ गन्तु सनाय
 नमः ॥ गिर्यांजलि ॥ ॐ **ह्रीं** सः ॥ नमानायाय नमः
 ॥ ॐ **ह्रीं** सः ॥ ददयाय यथादि ॥ ॥ वलिसिदिव ॥ व
 लि ॥ ॐ **ह्रीं** विषयनाय वलिगट् ॥ २ खाहा ॥ त्वाकमः
 हावलिधनक ॥ आवाहनादि ॥ वक्रमूजा ॥ ॐ तिवि
 ष्य पूजनं ॥

॥ अथ

दन्तपूजनं ॥ न्यासः ॥ ॐ दू (ने) अस्तु यदुह ॥ कन
 (गाधनं) ॥ ॐ दू (ने) ददयाय नमः ॥ ॐ दू (ने) गिबे
 सखाहा ॥ ॐ दू (ने) गिखायेवोषट् ॥ ॐ दू (ने) कव
 वायदू ॥ ॐ दू (ने) नञ्जयाय वषट् ॥ ॐ दू (ने) अ
 स्तु यदुह ॥ ॐ तिक नांगन्यासः ॥ ॥ धनं नैर्गवया
 य पूजा ॥ गंगा अस्तु पूजा ॥ ॥ असन ॥ आधन ॥
 कथय्यादि ॥ मिंदा सनाय नमः ॥ गिर्यांजलि ॥ ॐ

अथ ह्रीं ॥ गौरीयूजा ॥ ॥ श्रीगौरीयूजा ॥ ॥ श्रीगौरीयूजा ॥
शुद्धा ॥ ॥ श्रीगौरीयूजा ॥ ॥ श्रीगौरीयूजा ॥ ॥ श्रीगौरीयूजा ॥
कथय्यादि ॥ सिंहासनायनमः ॥ शिवाय जति ॥ ॐ
ह्रीं ह्रीं ह्रीं नमः ॥ षष्ठं गौरीयूजा ॥ ह्रीं ह्रीं ह्रीं नमः ॥
॥ ॥ वलिसिद्धिद्वय ॥ वलि ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं नमः ॥
द्रष्टव्य ॥ ॥ श्रीगौरीयूजा ॥ ॥ श्रीगौरीयूजा ॥ ॥ श्रीगौरीयूजा ॥
यानिमूढा ॥ ॐ गौरीयूजा ॥ ॥ ॥

अथ गौरीयूजा ॥ नमः ॥ गौरीयूजा ॥ ॥ श्रीगौरीयूजा ॥ ॥ श्रीगौरीयूजा ॥
धर्म ॥ गौरीयूजा ॥ ॥ श्रीगौरीयूजा ॥ ॥ श्रीगौरीयूजा ॥ ॥ श्रीगौरीयूजा ॥
शिवो वीर ॥ गौरीयूजा ॥ ॥ श्रीगौरीयूजा ॥ ॥ श्रीगौरीयूजा ॥ ॥ श्रीगौरीयूजा ॥
॥ गौरीयूजा ॥ ॥ श्रीगौरीयूजा ॥ ॥ श्रीगौरीयूजा ॥ ॥ श्रीगौरीयूजा ॥
ने श्रीगौरीयूजा ॥ ॥ श्रीगौरीयूजा ॥ ॥ श्रीगौरीयूजा ॥ ॥ श्रीगौरीयूजा ॥
धर्म ॥ कथय्यादि ॥ ॥ श्रीगौरीयूजा ॥ ॥ श्रीगौरीयूजा ॥ ॥ श्रीगौरीयूजा ॥
लि ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं नमः ॥ षष्ठं गौरीयूजा ॥ ह्रीं ह्रीं ह्रीं नमः ॥
दि ॥ ॥ वलिसिद्धिद्वय ॥ वलि ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं नमः ॥
लि गौरीयूजा ॥ ॥ श्रीगौरीयूजा ॥ ॥ श्रीगौरीयूजा ॥ ॥ श्रीगौरीयूजा ॥
नादि ॥ यानिमूढा ॥ ॐ गौरीयूजा ॥ ॥ ॥

सः॥ नमः स्वाहा॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥
॥ कवचाय नमः॥ ॐ नमः॥ नमः॥ नमः॥ नमः॥ ॐ नमः॥
सः॥ अमुय नमः॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥
या नमः॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥
दि॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥
नमः॥ नमः॥ नमः॥ नमः॥ नमः॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥
दि॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥
लिङ्ग नमः॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥
दि॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥

वकुल नमः॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥
नमः॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥
ॐ नमः॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥
सः॥ कवचाय नमः॥ ॐ नमः॥ नमः॥ नमः॥ नमः॥ ॐ नमः॥
ॐ नमः॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥
या नमः॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥
दि॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥
नमः॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥
मृदु नमः॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥

गतः उमा मरुत्तव पूजा ॥ न्यासः ॥ हुँ कं सः ददया
 यनमः ॥ हुँ कं सः निवस स्वाहा ॥ हुँ कं सः निखाये
 वीषट् ॥ हुँ कं सः कववायद्रं ॥ हुँ कं सः नखय
 यवषट् ॥ हुँ कं सः अस्तु यद्रुद्र ॥ ह्रीं तिकनीगन्यास
 ॥ ध्यानार्थं च पाशपूजा ॥ आत्मपूजा ॥ ॥ असन ॥
 आधाराङ्क यथादिष्ट ॥ वृषासनायनमः ॥ सिंहः
 सनायनमः ॥ शिखाञ्जलि ॥ हुँ कं सः मुख्य ऊ या यड
 माङ्कि सहितायनमः ॥ भक्त्यै हुँ कं सः ददया य
 थादि ॥ बलिसहितायनमः ॥ वलि ॥ हुँ कं सः मुख्य ऊ
 या यड माङ्कि सहितायनमः ॥ वलि गृह्ण ॥ स्वाहा ॥ स्वाक
 मन्त्रावली ध्वजक ॥ आवाहनानि ॥ विष्णवे ॥ यानिम

ह्यादि॥ वासनाय नमः॥ वासनाय नमः॥ वासनाय नमः॥
याय नमः॥ वासनाय नमः॥ वासनाय नमः॥ वासनाय नमः॥
महावर्तिधूनक॥ आवाहनादि॥ विष्णु॥ यानिम
दी॥ ॐ गिहसामहधनयूजनं॥ १ ॥

गंकननायाय॥ वृषासनाय नमः॥ गङ्गासना
य नमः॥ विद्यांजलि॥ ॐ गंकननायाय नमः॥
काददयाय नमः॥ वृषासनाय नमः॥ आवाहनादि
॥ ॐ दनेवय नमः॥ ॐ गिहसामहधनयूजा॥ ॥

कुलशीयूजा॥ यथासनाय नमः॥ विद्यांजलि॥ का
कुलशीयूजा॥ यथासनाय नमः॥ काददयाय नमः॥
वृषासनाय नमः॥ आवाहनादि॥ ॐ दनेवय नमः॥ ॐ गिह
कुलशीयूजनं॥ १ ॥ धारिषूजा॥ यथासनाय नमः॥

॥ विद्यांजलि॥ काधाय नमः॥ काददयाय
नमः॥ वृषासनाय नमः॥ आवाहनादि॥ ॐ दनेव
य नमः॥ ॐ गिहसामहधनयूजा॥ २ ॥ ॥ लक्ष्मीनाय

यथासनाय नमः॥ गङ्गासनाय नमः॥ कू
सासनाय नमः॥ विद्यांजलि॥ ॐ कासनाय नमः॥
याय नमः॥ काधाय नमः॥ काददयाय नमः॥ ॐ

क्रीं सः ददया यस्यादि षष्ठं गच्छ जयतु ॥ ~~आवाहना~~
~~दि ॥ ॐ दनेव र्यं नमः ॥ ॐ तिलक्ष्मीनामायेन पूजनं ॥~~

~~सिद्धलक्ष्मीमहादेवपूजा ॥ वृषासनाय नमः ॥ सिंह~~
~~सनाय नमः ॥ विद्यां कृति ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं सः सदागिवा~~
~~य नमः ॥ ह्रीं ददया यस्यादि षष्ठं ग ॥ आवाहनादि ॥~~
~~ॐ दनेव र्यं नमः ॥ ॐ तिसदागिव पूजनी ॥ ॥ ५ ॥~~

~~लाक्ष्मीमहादेवपूजा ॥ वृषासनाय नमः ॥ सिंह~~
~~नाय नमः ॥ विद्यां कृति ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं सः सदागिवा~~
~~य नमः ॥ ह्रीं ददया यस्यादि षष्ठं ग ॥ आवाहनादि ॥ ॐ द~~
~~नेव र्यं नमः ॥ ॐ तिलाक्ष्मीमहादेवपूजनं ॥ ॥~~

गंगा मूलमहादेवपूजनं ॥ विमलनाभमर्त ॥ न्यासः
॥ ॐ ह्रीं ह्रीं अननक ॥ कि अमुय ह्रीं ॥ कन ॥ धनं ४
॥ ॐ ह्रीं सः सर्वज्ञाता ददया य नमः ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं सदि
कि निवस स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं ॐ अनादिवाध निखाये वोष

[illegible]

ॐ शं धर्माय नमः ॥ ॐ शं कानाय नमः ॥ ॐ शं वेवाय
नमः ॥ ॐ शं ज्येष्ठाय नमः ॥ ॐ शं अधर्माय न
मः ॥ ॐ शं अकानाय नमः ॥ ॐ शं अवैवाय नमः
॥ ॐ शं अनेष्ठाय नमः ॥ ॐ शं अधष्ठाय नमः
॥ ॐ दुष्टष्ठाय नमः ॥ ॥ आधावगकथनमः
॥ अननसनाय नमः ॥ कंदासनाय नमः ॥ नावास
नाय नमः ॥ यज्ञासनाय नमः ॥ यदासनाय नमः
॥ कंदासनाय नमः ॥ कर्त्तिकासनाय नमः ॥ यद्य
सनाय नमः ॥ ॐ शं दृष्टासनाय नमः ॥ ॐ शं सिद्धा
सनाय नमः ॥ ॐ शं पुष्टमृष्टिकर्मकागं क
न्दन्दहिमसन्निरुं । पुष्टमृकावहावृष्टि । सिद्धवन्दन
रुषिर्गं ॥ सामंथुलमध्वरु । मध्वरु कृत्तिलावर्नं । सिद्ध
यथायविष्टुष्टुवद्वयदासनसिद्धिर्गं ॥ वदुर्दुष्टविष्टाः
लाङ्ग । वद्वदरुययालिनी । पूर्णवन्दनिरुं पुष्टकल
संक्रमृतायदं ॥ दद्वदरुष्टुक्लसं । वामवद्वदमृ
ली । वामावृष्टं गतादवी । वद्वदकृत्तिलावर्नी ॥ ॐ शं
वर्णमहादिकि । वद्वदरुययालिनी । गंखाकुक्कधवा
दवी । सर्वकासयदायिनी ॥ महासृष्ट्यष्टयद्वदमम

वल्गुमहादायि. वनदायययालिनी॥१॥ खाडुकववा
 दवी. सर्वकामप्रदायिनी॥ महासुखप्रदायिनी॥ महा
 तपःवरुणवती॥ एवमर्थव्यायमानार्ह. सर्वपापक्षया
 यव॥ ॐ तिष्ठानं॥ ॥ गिर्यां जति॥ ॐ कंसः अमृताः
 ॥ महाकुरुवायसदागिवायनमः॥ ३॥ ॐ कंसः अमृ
 तमजीवनी॥ किमहिनायनमः॥ ॥ गायत्री॥ ॐ कंसः
 मः अमृताः ॥ यविदाह. सुखप्रदायी महि. गन्नान
 सुखवादायान्॥ ॥ वक्रपूजा॥ ॐ लंसयाजायायन
 मः॥ ॐ वंवासदवायनमः॥ ॐ वंशुवावायनमः॥
 ॐ यं गत्युवायनमः॥ ॐ कंसं वीणानायनमः॥ ॥
 ऊर्वकाल्येनमः॥ कंसमहेश्वर्येनमः॥ चंकोमाय
 नमः॥ टं वेक्येनमः॥ गं वानाश्चनमः॥ यं वृन्दाय
 ल्येनमः॥ यं वामपुत्रायेनमः॥ ॥ महालक्ष्मणेनमः॥
 ॥ ॥ अलिनीगुरुववायनमः॥ वक्रकुरुववायनमः॥
 वक्रकुरुववायनमः॥ काधकुरुववायनमः॥ उन्नरु
 कुरुववायनमः॥ कयालीगुरुववायनमः॥ रीषण
 कुरुववायनमः॥ सीहावरुववायनमः॥ ॥ ॐ कंस

[illegible]

यकवन् वीं गानमूधुद्वनीललाहितकूडावलिंग
 द्रु २ स्वाहा ॥ **॥ त्र्यम्बकसूक्तं ॥** द्यौर्दिव्यः कः कः कः
 यवलिङ्गद्रु २ स्वाहा ॥ **॥ श्री कृष्णाय नमः ॥** कृष्णाय नमः
 वलिङ्गद्रु २ स्वाहा ॥ **॥ गंगा नमः ॥** गङ्गा नमः
 वलिङ्गद्रु २ स्वाहा ॥ **॥ दशमहाकनकाय नमः ॥** दशमहाकनकाय नमः
 यवलिङ्गद्रु २ स्वाहा ॥ **॥ श्री सिद्धिवासाय नमः ॥** श्री सिद्धिवासाय नमः
 द्रु २ स्वाहा ॥ **॥ श्री विष्णवे नमः ॥** श्री विष्णवे नमः
 २ स्वाहा ॥ **॥ सर्वथा सुखाय नमः ॥** सर्वथा सुखाय नमः
 स्वाहुं सुखदाय नमः ॥ **॥ श्री गणेशाय नमः ॥** श्री गणेशाय नमः
 लिङ्गं या निमज्ज ॥ **॥ श्री मूलमहादेवयूजर्ज ॥** ॥

अथ यः वलिङ्गद्रु ॥ द्वादशाष्टकं वलिङ्गद्रु ॥ मयूरासनं
 यनमः ॥ **॥ श्री कृष्णाय नमः ॥** श्री कृष्णाय नमः
 ॥ नवासनाय नमः ॥ **॥ श्री वसुदेवाय नमः ॥** श्री वसुदेवाय नमः
 हार्धं कृष्णाय नमः ॥ **॥ श्री विष्णवे नमः ॥** श्री विष्णवे नमः
 मः ॥ **॥ श्री योगिनीय नमः ॥** श्री योगिनीय नमः
 नीर्नाय ० आ. कृष्णाय नमः ॥ **॥ श्री गणेशाय नमः ॥** श्री गणेशाय नमः

[illegible]

गंगावदार्चनं ॥ ॐ गत्वायामीवक्ष्णवन्दमानम्
दाताम्स्रजमानाहविरिः ॥ अरुणमानावन्तु ॥

हवाध्वनः ॥ ० समान आयः ॥ प्रमाणी ॥ ॐ ददस्यत्वा
 सविदुः ॥ प्रमवलिना ददस्यत्वा ॥ ॐ ग
 लानां त्वा गलयति ॥ ० हवामह विद्यानां त्वा प्रिययति
 ॥ ० हवामह निधानी त्वा निविषति ॥ ० हवामह वसाम
 मा ॥ आहमजानिषद् धमात्त्वमजानिषद् धमात् ॥ ॐ वृ
 हस्यत अतिश्रुतया अहं यमदिकृति कउमऊ न
 प्र। यदीदयद्ववसः ॥ अतयजानतयस्मासूदवि
 लं (धरिविर्ण) ॥ ॐ वत्वा विष्टमा उवा अस्य यादाः
 दगीषस्यदहसमा अस्य शिधावद्वा वृषका वाववी
 तिमहादयवामया ॥ ॐ आविवग ॥ ॐ दवा दवीनन्वस्य
 विष्टवताददना ॥ अग्नदवयवसाधा म्नायस्यमान
 ॥ ॐ दिव्यगर्दः ॥ समवरुता ॥ प्रदतस्यजानः
 यतिवक आसीत् ॥ सदा धावयुधिर्वीशामृतमाकमे
 दवायदविषाविधम ॥ ॐ सकर्षयः ॥ यतिहिता ॥ ॐ नी
 वसकव्यनिसदमयमादी ॥ सका यः स्वयतालाकः
 मीयस्तु यया गता अय्युद्रजी सयसदो वदवी ॥ ॐ
 वद्वयज्ञानेयथमयव साद्विमीमतः ॥ सुदवा वनः
 जावः ॥ सवदा दयसा अस्य विद्या ॥ ॐ तथयानिवः

मायकस्तथागताश्रयस्त्वजामयसदायदवा॥ॐ॥
वद्वयज्ञानयथमयनकाद्विमीमतःसुदवावनः
आवः॥सकद्वाउपमाअस्यविष्ठाः॥गतयथानिवः
गतयदी॥ॐ॥विष्ठावनाटमसिद्विष्ठाः॥नयकस्तुविष्ठा
ःसूयसिद्विष्ठाः॥वसिद्विष्ठावमसिद्विष्ठावत्वा॥ॐ॥
नमः॥१॥रुवायवमयारुवायवनमः॥१॥कवायवम
यस्तवायवनमः॥गिवायवगिवतवायव॥आवाह
दि॥ॐ॥गिवायवने॥॥कलसया॥ॐ॥नमः॥१॥रु
वायवमयारुवायवनमः॥१॥कवायवमयस्तवाय
वनमः॥गिवायवगिवतवायव॥ॐ॥अजिद्वकल
१॥मयात्वावि१॥चिन्दवः॥यनद्वऊनिवस्वस्तानः॥
सद्वयध्वान्नधवाययस्वगीयनमावि१॥गादयिः॥
॥ॐ॥यवनयः॥सद्वस्वगीमपि१॥तिस्वस्तानसः॥सद्व
स्वगी॥ॐ॥यवधासाद॥१॥रुवत्सनिग॥ॐ॥ॐ॥समगी॥
मममसद्वस्वगीसुद्वद्वध्वम॥१॥गतधेयद्वध्व॥१॥असि
ध्वमद्वद्वध्वविगतस्वसाजीकी१॥१॥१॥अगिधामया
॥ॐ॥सिगासिगंसविगतस्वध्वम॥१॥गतधेयद्वध्व॥१॥असि
ध्वमद्वद्वध्वविगतस्वसाजीकी१॥१॥१॥अगिधामया

अमृतं रजः ॥ ॐ उपद्रवगिनी ॥ ५ संगमव
नदीनी ॥ प्रिया विद्या अजायत ॥ अवाहनादि ॥ ॥
गणया ॥ ॐ गणानां त्वा गणपति ० हवामह प्रिया
लां त्वा प्रियपति ० हवामह निधीनी त्वा निधिपति
० हवामह वसामम ॥ अहमजानि वरुधमा त्वम
जानि वरुध ॥ ॥ सूर्य्या ॥ ॐ अहमननवजसाव
रुमानानि वगमनमृगमर्यवा हि वप्ययनसवि
ता नरथनादवायाति रुवनानियधन ॥ ॥ विक्रय
॥ ॐ विक्रानवाटमसिद्विक्रः ॥ अहमविक्रः ॥ सूर्य
सिद्विक्रः ॥ अहमसिद्विक्रवत्वा ॥ ॥ दूर्य
या ॥ ॐ अहमवदमसूनवामसाममनाती हतानि
दहानिवदः ॥ मनः ॥ यनिषततिदूना लिद्विषानाव
वसिधं दनिषात्यग्निः ॥ ॥ गोपीया ॥ ॐ अम्वजम्वि
कअम्वालिकनमानयतिकथन ॥ ससत्यथकः
सुरुदिकां काम्यालवासिनी ॥ ॥ सावित्रमया ॥ ॐ
द्विक्रानवाटमसि ॥ ॐ श्रीश्वतलक्ष्मीश्वयत्नावहा
वायया ॥ अहमकशालिबूयमपिनी व्याकं ० ० ० नि
षाणा ससविषा ॥ ० सर्वलाकम ० ० ० ॥ ॥ सर्व

वायुया (ध्वन) कथा लिख्यमसिनी व्याकं ००० नि
 जाला मूमसिषा ॥ सर्वलाकम ००० वा ॥ ॥ सर्व
 गारुडया ॥ ००० दं विष्णु विवक्रमशुधानिद (ध
 पदं समुद्रमस्य पा ००० सुवस्वाहा ॥ ॥ वहुमुखमह
 दवया ॥ ००० सयाजातामिमिमीतयहममिदवान
 मरुवस्यनाग ॥ ॥ अस्य हा ००० प्रदिग्गस्यवावि
 स्वाहा दत्त ००० हविर्ददुदवा ॥ ॥ ००० वाममयस
 विगद्यमसुखादिवदिववाममसस्य ००० सावी ॥ वा
 मस्य हृदयस्य दवहनत्रयाधियावामराजः स्य
 म ॥ ००० यागजुडगिवातनूनद्यावायापकागिनी ॥ ग
 यानस्तुवा ००० तमयागिनि ००० राहिवारक ००० हि ॥ ०००
 यत्यनर्षयदधः ००० कतिधायकल्ययन् ॥ मूर्खकि
 मस्यामीर्त्तिवाक्यकिमूदूपादाडक्य ॥ ००० तमीगा
 नं जगत्तस्तुष्टस्यनिधिर्जिन्मवसदुमदव
 य ॥ यूपानायथा वंदसामसदु (धन) किगापायन
 दव ००० स्वस्त्य ॥ ॥ ००० सोमदुधनया ॥ ००० नमः ०००
 म्वाव ॥ ००० श्रीमालदीर्गविर्दमदि ००० सी ००० पृथि

[illegible]

साया॥ **ॐ** अ० १॥ निगानावृषकानहीमाद्यनाद्यन
१॥ कारुण्यवर्षणीनी॥ स० कन्दनानिमिषप्रकवीनः॥
ग० मनाश्रुजयत्साकमिन्दुः॥ **॥** **प०** ह० या॥ **ॐ** अ० क
क्षनवजसावर्षमानानिवर्षयन्नमृगीमर्षवाहिव
प्यथनमविगात्रथनादवायानिहुवन्नानियथन्
॥ **॥** **लो०** क० यालया॥ **ॐ** अ० गात्रविन्दुमविगात्रमिन्दु
० ह० व० व० सह० व० १॥ **प०** व० मिन्दु॥ क० यामिग० क० व० व० क०
मिन्दु० स्वस्तिनामद्यवाधास्त्रिन्दुः॥ **॥** **वि०** व० जी० वी० या
॥ **ॐ** अ० ध० वृ० वानिषदन्नय० व० वा० व० म० तिष्ठता॥ ग०
रा० ज० वृ० क्लितासध० ज० स० न० व० थ० य० व० व० ॥ **॥** **मा०** मा०
दिया॥ **ॐ** अ० द० मा० सा० प० नू० ५॥ वि० त० मा० सा० अ० कृ० नू० १॥
म० नू० १॥ अ० ह० वा० या० नि० म० नू० गा० वि० लि० मू० ०॥ स० द० य० नू० त०
॥ **ॐ** अ० ग्न० १॥ प० द० ति० वी० या० नि० प० द० ति० वि० नू० म० र० थ०
मा० म० म० व० रु० थ० दि० ले० प० व० मी० नू० द्वा० (प्ये० व० मी० म० नू० गा० ५॥
स० फ० मी० वृ० ह० स० य० न० व० म० म० य० म० न० व० मी० वा० रु० द० मा०
नू० स्ये० का० द० गी० व० य० ल० स्ये० द्वा० द० गी० य० म० म० य० या० द० गी० ॥ ००
नू० द्वा० (ग्या० १॥ प० द० ति० १॥ स० व० स० स्ये० नि० प० द० ति० मि० नू० स्ये० र०

तीयाया ५३ उर्थानि सत्ये पंचम्या ग्रीष्मया ४ अष्ठी
 सप्तम्या ५ सप्तम्या विष्णु नक्षत्रमी पूरुषानवमी त्वक्
 द्द ११ मी नु स्येकादशी वनस्पत्यद्वादशी यम्ये त्रयाद
 ११। यावापृथिव्या दक्षिणं पार्श्वे दिग्ब्रवीदवानाम्
 हर्म ॥ ॐ नक्षत्रस्य १ स्वाहा नक्षत्रस्य १ स्वाहा हा
 नास्य १ स्वाहा मासस्य १ स्वाहा मस्य १ स्वाहा ह
 वस्य १ स्वाहा समस्तस्य १ स्वाहा यावापृथिवी स्या
 ५ स्वाहा चन्द्राय स्वाहा सूर्याय स्वाहा नभिस्य १ स्वा
 हा वसुतस्य १ स्वाहा नक्षत्रस्य १ स्वाहा दिक्षुस्य १ स्वाहा म
 नस्य १ स्वाहा दिग्ब्रवीदवस्य १ स्वाहा मूलस्य १ स्वा
 हा गारवाय १ स्वाहा वनस्य तिस्य १ स्वाहा पूषस्य १ स्वा
 हा हस्तस्य १ स्वाहा मघास्य १ स्वाहा ॥ ॐ ध्या (ग) ध्या (ग) न
 वस्तु न वाज वाज ह वा म ह । सखायं न्द्रमूतय ॥
 ॐ नमः १ स्वस्य १ स्वपतिस्य १ स्वयानमानमानमारुवायव
 न्द्रायव नमः १ वायवयव पृथगतयवनमानीलः
 धीवायव नितिकणायव ॥ ॐ वत्सा विष्टमात्रया
 अस्मयादादशीर्वस्य हस्तमा अस्मयिधायव द्वाव
 वरुणा नक्षत्राणि सहा द्वा मस्या १ अविष्टमा ॥ ॥ ॥

[illegible]

संयत्तिः। अथ नवदशः। साम २ आ ४ यमा ४ मी ३
अर्द्धं ग व दीर्घं वि द य ग व द वि र्द्धं गि॥ ॥ वक्तुं नाया-
टस॥ ॐ वृहस्पति अति अतथ अर्द्धं यम दि रु गि क
उम ऊ ने व। सदी द य व व स २ म त य जान ग द र्द्धं
सू द वि र्द्धं (यदि वि र्द्धं)॥ ॥ ग व र्द्धं पाटस॥ ॐ न मा व
रु गाय या वि॥ ॥ दू सा रु पाटस॥ ॐ अस्व अति क
अस्वा लिक न मान यति कथन सिस स्य स्य कः ४ सू
रु डि की काम्या ल वा सिनी॥ ॥ ग व र्द्धं ॥ ॐ न मा ग (य
स्या ग ल यति स्य स्य वान मान मा वा र स्या वा र यति
स्य स्य वान मान मा ग र्द्धं स्या ग र्द्धं यति स्य स्य वान म
न सा द्वि नू य स्या द्वि नू य स्य स्य वान मान म ४॥ ॥
(ग व र्द्धं स्या॥ ॐ अ य (गी ४ वृ नि व क सी द ४ द न्या
ग व र्द्धं ४ पि र्द्धं व व र्द्धं र्द्धं ४॥ ॥ कामा वी य॥ ॐ
जा ग व द स सू न वा॥ ॥ अ का म मा ल॥ ॐ अ स्मा क
मि नू १ स म र्द्धं अ र्द्धं अ स्मा क य ४ व र्द्धं अ य लु
। अ स्मा क वी वा ड र्द्धं व र्द्धं स्या २ ड द वा अ व र्द्धं व
य॥ ॥ दू स क र्द्धं ॥ ॐ स मि र्द्धं १ स क ल य थ ५ स वि र्द्धं
वा वि र्द्धं स म न स्या मानो ॥ ॐ स म र्द्धं स वि र्द्धं सानो

[illegible]

[illegible]

[illegible]

अथ प्रायश्चित्तम् ॥ अथ प्रायश्चित्तम् ॥ अथ प्रायश्चित्तम् ॥
हविषीय ॥ ॥ **कनकावायन** ॥ नमस्तथागव्या
यथागणाय नमानमः सर्वकामयवर्द्धन नम
स्तद्विह्वलान्न ॥ ॥ **दुर्मासकृष्णवस** ॥ **कुंकार**
विन्दुसंयुक्तं निर्य्यायनियोगिनः कामदमाद
दं देव **कुंकार** वायनमानमः ॥ नमस्तिस्रयादव
नमस्तिस्रयागणः ॥ नवानमंतिदवर्णं नवाना
यनमानमः ॥ महादव महात्मानं महात्मानयवा
यली महापापहर्षदव महावायनमानमः ॥ नि
र्वर्णं नगन्तार्थं लाकानादिगकामयया ॥ शिवमा
दकवर्षदव गिकावायनमानमः ॥ वाहनं दवर्षः
यस्य वासकीकृष्णवर्णं ॥ वामगकिषवर्षदव द
कावायनमानमः ॥ यशुगुस्तिगादवा उगद्यापी
महर्षवः ॥ यागुनः सर्वदेवानां यकावायनमान
मः ॥ प्रशक्तवमिदं स्तुत्यः ॥ प(०) द्विवसन्निधौ
॥ सर्वपापविनिर्मुक्तः ॥ शिवलार्कसगद्वृत्तिः ॥ **वि**
प्रशक्तवस्तु ॥ ॥ **पुष्टः** ॥ नगिवः प्रसादय
वसः सर्वरुगकीष्टवः ॥ सानन्दसूचनायकष्टरु

गवान्सूक्तकामप्रदः। वागीश्वरमुवाच
 यदावासादिचक्रं प्राप्य विः। साकविनासकृत्
 रुयहामुखं जयशहिमी ॥ नमः शिवाय ॥ ना
 यकात्रलशयहृत्तवानिवदयासिवात्मानं स्वगति
 यत्रमध्यवा ॥ शिवं शिवकर्म ॥ शिवत्मानं शि
 वात्मं ॥ शिवमानं प्रनमामः ॥ यत्तस्मात्सिद्धातिर्व ॥ ॥
 पूर्वदिशि पश्चिमोत्तरदिशि पूर्वदिशि माशिवाः
 क्षुब्धः। सावगुरुतदूर्ध्वं रुद्रं रुद्रसूनाधाय वा ॥
 शान्तं शान्तमादिदववदरिः साकादिदासाप्रहानिः
 ग्यानं दमयी प्रभादिन सदावल्यादिपूजाविधिः ॥ ॥
 ॐ हूँ हूँ हूँ नमः सूर्यः कुलदेवनमानमः ॥ हूँ नद
 वः सर्वं मां पूजां गृह्णामासुतः ॥ पाथादं पा
 पकर्म हूँ पापान्मापापसंरुवः ॥ शहिमीदवदः
 वः सर्वपापहृन्नाह्वः ॥ अजगन्धयूषधूपदीपश्र
 द्धनविधेः सर्वं यविपूर्त्तमस्तु ॥ मस्तु न विमस्तु
 न ॥ नासिध ॥ ॐ शिवं नमः न विधिः ॥ ॥

हा २
 महादेवी नमः नमः ॥ शिवाय नमः ॥ सर्वकल्याणाय

रुमावतीधर्मदानक॥ शिवावस्य॥ सैकल्यकथा
ग॥ व॥ वा॥ क॥ ल॥ अ॥ य॥ दि॥ वा॥ क॥ उ॥ मा॥ म॥ ह॥ व॥ व॥ स॥
पू॥ र्ण॥ क॥ ल॥ स॥ गं॥ क॥ व॥ ना॥ ना॥ य॥ ल॥ स॥ व॥ र्ण॥ क॥ ल॥ ल॥
ना॥ ना॥ य॥ ल॥ (गो॥ नी॥ स॥ हि॥ त॥ यं॥ वा॥ य॥ न॥ पु॥ ल॥ गी॥ धा॥ शी॥
व॥ ल्या॥ च॥ ना॥ ल॥ क॥ का॥ लि॥ क॥ व॥ र॥ म॥ ह॥ क॥ वि॥ ष्य॥ ॐ
मि॥ र्म॥ क॥ ल॥ व॥ ति॥ न॥ ॥ ध॥ र॥ अ॥ र्ण॥ रु॥ क॥ रु॥ क॥ या॥ य॥
॥ ॥ ध॥ र्म॥ ति॥ ध॥ र्म॥ दान॥ ना॥ सि॥ य॥ ॥ सूर्या॥ र्च॥ उ॥
मा॥ म॥ ह॥ व॥ स॥ पू॥ र्ण॥ क॥ ल॥ स॥ गं॥ क॥ व॥ ना॥ ना॥ य॥ ल॥ स॥
व॥ र्ण॥ क॥ ल॥ ल॥ ना॥ ना॥ य॥ ल॥ (गो॥ नी॥ स॥ हि॥ त॥ यं॥ वा॥ य॥
न॥ पु॥ ल॥ गी॥ धा॥ शी॥ व॥ ल्या॥ च॥ ना॥ ल॥ क॥ का॥ लि॥ क॥ व॥ र॥
नि॥ मि॥ र्थ॥ क॥ र्ण॥ सूर्या॥ र्च॥ य॥ वा॥ अ॥ र्ण॥ न॥ म॥ ॐ
अ॥ र्ण॥ न॥ न॥ उ॥ सा॥ व॥ रु॥ मा॥ ना॥ नि॥ व॥ अ॥ न॥ म॥ र्ण॥ म॥
र्य॥ व॥ हि॥ व॥ य॥ अ॥ न॥ स॥ वि॥ ना॥ व॥ धे॥ ना॥ द॥ वा॥ आ॥ नि॥ रु॥
व॥ ना॥ नि॥ य॥ य॥ न॥ ॥ ॐ॥ मा॥ हा॥ न॥ च॥ का॥ न॥ म॥ ना॥ नी॥ उ॥
ना॥ ना॥ क॥ ना॥ न॥ मि॥ रि॥ ॥ रु॥ मा॥ म॥ ह॥ व॥ लं॥ य॥ न॥ र्ण॥ नी॥ मि॥
नि॥ व॥ रु॥ क॥ र्ण॥ ॥ धी॥ र्य॥ व॥ य॥ न॥ म॥ ॥ ॥

यत्तसोयावन्मासः॥सदागिवायश्रुमुयनम
॥सदागिवायददयाननमः॥सदागिवाय
गिरसनमः॥सदागिवायगिरवायेनमः॥सद
गिवायकववायनमः॥सदागिवायनशाय
नमः॥सदागिवायजुमुयनमः॥॥धर्मे
अर्धयागपूजाः॥**आत्मपूजा**॥अर्धयागलख
नहाय॥आत्मनगिश्चयत्॥आत्मनवन्दन
नमः॥आत्मनगिबसय्यनमः॥आत्मसिना
यनमः॥आत्ममूर्खयनमः॥॥गणःकलमपू
जा॥**ऐं**ब्रह्मणेनमः॥**ऐं**विष्णवेनमः॥**ऐं**शिवः
यनमः॥**ऐं**गंगायेनमः॥**ऐं**यमुनायेनमः॥
ऐंसतस्वयेनमः॥**ऐं**गण्डर्वेनमः॥**ऐं**कोटि
नमः॥**ऐं**डाक्षवेनमः॥**ऐं**नर्मदायेनमः॥
ऐंसकसागवथानमः॥॥मृत्पूजायायनम
॥अमृतीष्वनायनमः॥महालक्ष्मीकिसहि
तायनमः॥संपूर्णकलसायनमः॥**आवाह**
नस्तुवनवन्दनाद्यगयहायवीजपूर्यनमः
॥उज्जमकास्वानकायावराय॥**ॐ**निवासा ॥

नमो भगवते वासुदेवाय नमः ॥ श्रीवाह
नस्तु यनवन्दनास्तु यस्तु यवीर्ययनमः
॥ उज्जमकास्वानकायावतय ॥ ॐ नमो भगवते ॥

नमो भगवते वासुदेवाय नमः ॥ गणपतये नमः ॥ ॐ वक्र उ
द्ययनमः ॥ ॐ चक्रदंष्ट्रयनमः ॥ ॐ महादवाय
नमः ॥ ॐ गजाननाय नमः ॥ ॐ बभ्रादवाय नमः
॥ ॐ विक्रययनमः ॥ ॐ विघ्ननाशाय नमः ॥ ॐ
धूमवल्गयनमः ॥ आवाहनस्तु यनवन्दनास्तु
यस्तु यवीर्ययनमः ॥ उज्जमकास्वानकायाव
तय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ ततः सूर्ययनमः ॥
धीसूर्याय नमः ॥ ३ ॥ ॐ सामायनमः ॥ ॐ श्रीगर्व
यनमः ॥ ॐ वृषाय नमः ॥ ॐ वृहस्पतये नमः ॥
ॐ शुक्राय नमः ॥ ॐ गनेश्वराय नमः ॥ ॐ वाहव
नमः ॥ ॐ कर्तव्ये नमः ॥ आवाहनस्तु यनवन्दनास्तु
यस्तु यवीर्ययनमः ॥ उज्जमकास्वानकायाव
तय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ अथ विष्णु
यनमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ

वासुदेवाय नमः॥ **ॐ** शंकराय नमः॥ **ॐ** च
यन्नाय नमः॥ **ॐ** अनिरुद्राय नमः॥ **ॐ** शान्ते
नमः॥ **ॐ** सनत्कुमार्यै नमः॥ प्रिये नमः॥ **ॐ** शंखाय
नमः॥ **ॐ** वक्राय नमः॥ **ॐ** गदाय नमः॥ **ॐ** प
द्माय नमः॥ **ॐ** कोमुराय नमः॥ **ॐ** खड्गाय न
मः॥ **ॐ** वनमालायै नमः॥ **ॐ** गङ्गाय नमः॥
ॐ ध्वजाय नमः॥ **ॐ** अक्षयै नमः॥ **ॐ** दूर्गायै
नमः॥ **ॐ** वीर्याय नमः॥ **ॐ** वज्राय नमः॥
ॐ वाहनैः पद्मैः चक्रैः शङ्खैः विभूष्य
नमः॥ अजस्रकायान्द्रायावतथ॥ **ॐ** विवि
धैः पूजा॥ **॥** दूर्गायै नमः॥ **ॐ** दूर्गायै नमः॥ **ॐ**
जयायै नमः॥ **ॐ** विजायै नमः॥ **ॐ** क्रीडायै नमः
॥ **ॐ** प्रीत्यै नमः॥ **ॐ** प्रसादयै नमः॥ **ॐ** प्रदत्ता
यै नमः॥ **ॐ** मधायै नमः॥ **ॐ** प्रत्यै नमः॥
ॐ शंखाय नमः॥ **ॐ** वक्राय नमः॥ **ॐ** गदा
य नमः॥ **ॐ** खड्गाय नमः॥ **ॐ** पाशाय नमः
॥ **ॐ** अक्षयै नमः॥ **ॐ** शङ्खाय नमः॥ **ॐ** ध
नुषाय नमः॥ **ॐ** वाहनैः पद्मैः चक्रैः शङ्खैः विभूष्य

॥ ॐ श्री कृष्णाय नमः ॥ ॐ गणेशाय नमः ॥ ॐ ध
नूषणाय नमः ॥ ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ ॐ श्री गणेशाय नमः ॥
यविशयपूर्णाय नमः ॥ ॐ उक्तमकाख्यानकायचरय
॥ ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ ॐ श्री गणेशाय नमः ॥
दव ॥ ॐ निवाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ अनन्ताय नमः
॥ ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ ॐ निवाहमाय नमः ॥ ॐ व
कनशाय नमः ॥ ॐ एकवृद्धाय नमः ॥ ॐ श्री ग
णेशाय नमः ॥ ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ ॐ निखलिन नमः
मः ॥ ॐ उमाय नमः ॥ ॐ वल्लभाय नमः ॥ ॐ
ॐ दन्दिन नमः ॥ ॐ महाकालाय नमः ॥ ॐ ग
णेशाय नमः ॥ ॐ वृषराय नमः ॥ ॐ रुद्रिन
नमः ॥ ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ ॐ न्यादिलाकपालया
नमः ॥ ॐ वक्राशाय नमः ॥ ॐ श्री गणेशाय नमः ॥
नवचनाकराय नमः ॥ ॐ यविशयपूर्णाय नमः ॥ ॐ उक्तम
काख्यानकायचरय ॥ ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ ॐ श्री गणेशाय नमः ॥
पूजा ॥ ॥ गोवीर्यपूजा ॥ ॐ गोवीर्ये नमः ॥ ॐ पा
वर्धने नमः ॥ ॐ सदाशिवे नमः ॥ ॐ श्री गणेशाय नमः

१॥ ॐ मालिन्ये नमः ॥ ॐ मृगान्ये नमः ॥ ॐ मूष्ये
नमः ॥ ॐ नावाय ल्ये नमः ॥ ॐ मनान्ये नमः
॥ ॐ वामाये नमः ॥ ॐ अवाये नमः ॥ ॐ कांक्षे
नमः ॥ ॐ यद्वा रुवाये नमः ॥ आवाहनस्तु यन
वन्दनाद्गतयस्तु पवित्रपूर्व्यं नमः ॥ ऊजम
काखानकायावतय ॥ ॐ नमो गोपीपूजा ॥ ॥

ॐ नमो नारायणाय ॥ ॐ नमो नारायणाय न
मः ॥ ॐ अनाय नमः ॥ ॐ शिखर्ये नमः ॥ ॐ
श्रुवाय नमः ॥ ॐ कलाय नमः ॥ ॐ निवाय
नमः ॥ ॐ निखलाय नमः ॥ ॐ अर्कनयाय न
मः ॥ ॐ एकवृद्धाय नमः ॥ आवाहनस्तु यन
वन्दनाद्गतयस्तु पवित्रपूर्व्यं नमः ॥ ऊजमकाख
नकायावतय ॥ ॐ नमो नारायणाय ॥ ॥

लक्ष्मीनारायणदवववाय २ पूजा ॥ नमो रुगवः
तवासुदवाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ लक्ष्मी नमः ॥ ॐ पृथ
गीलाय नमः ॥ ॐ सुशीलाय नमः ॥ ॐ ऊयाय
नमः ॥ ॐ विऊयाय नमः ॥ ॐ द्यादिदहालाक
पालनमः ॥ आवाहनस्तु यन वन्दनाद्गतय

[illegible]

दधे स्नानं नमः ॥ तुलसी दधे धूनं वा वसनीयं न
 मः ॥ तुलसी दधे चन्दनं नमः ॥ तुलसी दधे श्रद्धा
 र्त्तं नमः ॥ तुलसी दधे धूर्त्तं नमः ॥ विष्णु कलिकां
 स्वाहा ॥ ~~श्री वाङ्मनसि~~ स्तुतय न चन्दनाक्षतयक्षाय
 विनयार्थं नमः ॥ ऊऊ मन्त्रास्नानकाया वक्तव्य ॥
 ॐ नमो तुलसी पूजा ॥ ॥ तत्ता धात्री पूजा ॥ धात्रे
 दधे ॐ दमास नं नमः ॥ धात्रे दधे धार्त्तं नमः ॥ धा
 त्रे दधे श्रद्धा नमः ॥ धात्रे दधे आवसनीयं ॥ धा
 त्रे दधे स्नानं नमः ॥ धात्रे दधे धूनं वा वसनीयं न
 मः ॥ धात्रे दधे चन्दनं नमः ॥ धात्रे दधे श्रद्धा र्त्तं
 नमः ॥ धात्रे दधे सिन्धु नं नमः ॥ धात्रे दधे ऊऊ
 पवित्रार्त्तं नमः ॥ धात्रे दधे धूर्त्तं नमः ॥ ~~श्री वाङ्मनसि~~
 मन्त्राय न चन्दनाक्षतयक्षाय विनयार्थं नमः ॥ ऊ
 ऊ मन्त्रास्नानकाया वक्तव्य ॥ ॐ नमो धात्री पूजा ॥ ॥

तत्ता धिर्दू पूजयन् ॥ सा विष्णु मसः ॥ ॐ गणपतय
 नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ द्वाय दालाय नमः ॥ ॐ
 नमः ॥ ॐ विष्णु मसः ॥ ॐ द्वाय दालाय नमः

[illegible]

ॐ यक्षनारायधादिगायनमः॥ ॐ दामादवाय
सहिमासहिगायनमः॥ श्रीपूनुषाहमायलक्ष्मी
सहिगायनमः॥ आवाहनादि॥ ॐ श्री
वासुदेवायनमः॥ ॐ श्रीगोकर्णायनमः॥ ॐ
श्रीपद्मासनायनमः॥ ॐ श्रीश्रीनिवासायनमः
॥ ॐ ॐ केशेनमः॥ ॐ श्रीनिखेनमः॥ ॐ क्रिया
येनमः॥ ॐ विद्यायेनमः॥ ॐ श्रीनारायणाय
नायनमः॥ ॐ सूर्यायनमः॥ श्रीकल्यायनमः
॥ ॐ पूनुषाहमायनमः॥ ॐ वासुदेवायन
मः॥ ॐ दधीकगायनमः॥ ॐ माधवायनमः॥
ॐ मधुसूदनायनमः॥ ॐ वनाहायनमः॥ ॐ
पुष्टीकाकायनमः॥ ॐ नवसिंहायनमः॥
ॐ दयित्यसूदयनमः॥ ॐ दामादवायनमः॥
ॐ यक्षनारायनमः॥ आवाहनादि॥ ॐ कौ
शावायनमः॥ ॐ गङ्गाधरायनमः॥ ॐ गविन्द
यनमः॥ ॐ श्रीनारायनमः॥ ॐ विष्णवेनमः॥
ॐ श्रीनकाश्रपवाजिगायेनमः॥ ॐ श्रीवाङ्मना
येनमः॥ ॐ उगदितायेनमः॥ ॐ श्रीवसिष्ठाय

ॐ अन्नना अथवा जिज्ञासे नमः ॥ ॐ अथाद्वजा
 येन नमः ॥ ॐ जगद्धि गोयेन नमः ॥ ॐ गीतवस्त्रि एव
 यन नमः ॥ ॐ नावाय एयन नमः ॥ ॐ वहुवाहव
 नमः ॥ ॐ गीताय नमः ॥ ॐ वक्राय नमः ॥ ॐ ग
 दायेन नमः ॥ ॐ मदावन नमः ॥ अथाद्वजादि ॥ ॥
 ॐ सग्यदाय नमः ॥ ॐ यज्ञवदाय नमः ॥ ॐ सा
 मवदाय नमः ॥ ॐ अथर्वदाय नमः ॥ ॐ अना
 दिनाथाय नमः ॥ ॐ कृष्णाय नमः ॥ ॐ जेलाक
 नाथाय नमः ॥ ॐ विविक्त्रमाय नमः ॥ ॐ पीता
 म्बराय नमः ॥ ॐ निर्याय नमः ॥ ॐ वनमाला
 येन नमः ॥ ॐ विरूपाय नमः ॥ पीवत्सायाय न
 मः ॥ पीधवाय नमः ॥ पीपतय नमः ॥ ॐ हव
 यन नमः ॥ अथाद्वजादि नमः ॥ अथाद्वजादि नमः ॥
 विगयूष्येन नमः ॥ अजमकास्वानकायावतय ॥
 ॐ विविक्त्रपूजा ॥ ॥ गतः सर्वगोत्रद्वयपूजा ॥ ॐ
 गलाय नमः ॥ ॐ पुत्राय नमः ॥ ॐ दानपा
 लाय नमः ॥ ॐ जयाय नमः ॥ ॐ विजयाय न

[illegible]

[illegible]

अध्यात्मजायेनमः॥ तुं जगद्धिगायेनमः॥ तुं
खल्लिख्यकायेनमः॥ तुं नात्रायणायनमः॥ तुं
कथुवद्विद्वनमः॥ तुं गीखायेनमः॥ तुं वजाय
नमः॥ तुं गदायेनमः॥ तुं मलयनमः॥ आवा
हनादि॥ ॥ तुं जगद्धिगायेनमः॥ तुं यशुवद्विदाय
नमः॥ तुं सामवदायनमः॥ तुं अथर्वदायन
मः॥ तुं अनादिनाथायनमः॥ तुं कृष्णायनमः
॥ तुं जेलाकनाथायनमः॥ तुं विविक्तायन
मः॥ तुं श्रीगान्ध्यायनमः॥ तुं निष्ठायेनमः॥
तुं वनमालायेनमः॥ तुं विरूपायनमः॥ धी
वत्सनायनमः॥ धीधरायनमः॥ धीपतयेनमः
॥ तुं हनयनमः॥ आवाहनस्तुपनचन्दना
कृतयस्तुपविगतपुष्पिनमः॥ ऊऊमकास्वानका
यावतय॥ ॥ तिसर्वगारुडयूजा॥ ॥

अथ उमा महेश्वरयूजा॥ सदा निर्वी॥ तुं गणप
तयेनमः॥ तुं गुरुयानमः॥ तुं कुरुपालायन
मः॥ तुं दानपालायनमः॥ तुं नन्दिनमः॥ तुं
सदाकालायनमः॥ तुं गिन्नमः॥ तुं विना

मः॥ ॐ दानपालाय नमः॥ ॐ नन्दिन नमः॥ ॐ
महाकालाय नमः॥ ॐ रुगिन नमः॥ ॐ विना
यकाय नमः॥ ॐ वृषाय नमः॥ ॐ रुद्राय नमः
॥ ॐ दक्षिणाय नमः॥ ॐ वज्राय नमः॥ ॐ धर्माय न
मः॥ ॐ ज्ञानाय नमः॥ ॐ वेदाङ्गाय नमः॥ ॐ न
मोऽय नमः॥ ॐ अथ रुद्राय नमः॥ ॐ दुर्धनु
नाय नमः॥ ॐ यदामनाय नमः॥ ॐ वृषाक्षस
नाय नमः॥ ॐ सदाशिवसूर्यय नमः॥ नमो
नै॥ ॐ श्रीगानेशाय नमः॥ शिष्टं लब्धं तदा विना
सर्वव्यावर्तय वन्द्यमीति शिलावनी॥ श्रीश्वक
न्दनधवल मङ्गमालाधरीरुनी॥ वन्द्यारुयहर्ष
व शिष्टं लब्धं वरुणुर्ज॥ वरुणुर्ज महात्मान मृत्यु
लारुयः॥ शिष्टं लब्धं मारुणधनीगानेश मङ्गलध
नीविर्ज॥ वामाक्षगङ्गाद्वीपीषण्डसिमान
नी॥ उमासहस्रवन्धाय सर्वकामप्रदायक॥ न
मोऽय नमः॥ ॐ उमासहस्रवन्धाय नमः॥ ३
॥ ॐ श्रीकृष्णाय नमः॥ सहिनाय नमः॥ ॐ गङ्गाय नमः॥

निविडासहितायनमः॥ **ॐ** महेश्वराय नमः॥
 हितायनमः॥ **ॐ** महादेवाय नमः॥
 नमः॥ **ॐ** स्नानविमलान्नाय नमः॥ **ॐ**
 निवायपीमरवीसहितायनमः॥ **ॐ** यशुवराय
 नावायपीसहितायनमः॥ **ॐ** उग्रायमाधवीस
 हितायनमः॥ **ॐ** शिवायप्रियासहितायनमः
 ॥ **ॐ** श्रीवकायसरुडासहितायनमः॥ **ॐ** श्री
 शायमंगलासहितायनमः॥ **ॐ** नूदायश्रविकास
 हितायनमः॥ **ॐ** वृषरुधायमहामायसहि
 तायनमः॥ **ॐ** ~~आवाहन~~ स्नानवन्दनाय नमः॥
 पवित्रपूष्यनमः॥ उज्जमकास्नानकायावराय
 ॥ **ॐ** तिडमामहेश्वराय नमः॥ ॥ ॥

अथवलि पूजा॥ **ॐ** वृकाय नमः॥
 ॥ **ॐ** वृकाय नमः॥ **ॐ** लवोवृका
 ययालायनमः॥ **ॐ** वृकलावननकाययालाय
 नमः॥ **ॐ** सुलजिजायनमः॥ **ॐ** अमिताभ
 ववायनमः॥ **ॐ** वृकलायनमः॥ **ॐ** वृकलायनमः॥

नमः॥ ॐ सुलजिद्येनमः॥ ॐ अमिनांगरे
 ववायनमः॥ ॐ वक्ररेववायनमः॥ ॐ वक्ररे
 ववायनमः॥ ॐ काधरेववायनमः॥ ॐ उल
 हरेववायनमः॥ ॐ कपालीरेववानमः॥ ॐ
 लीसलीरेववायनमः॥ ॐ सीहावरेववायन
 मः॥ ॐ स्वस्मानक्षयपालायनमः॥ ॐ वहिदा
 वायनमः॥ ॐ सर्वक्षयपालस्थानमः॥ ॐ सर्व
 रक्षणस्थानमः॥ ॐ सर्वपिण्डस्थानमः॥ ॐ आवा
 हनस्तुपनचन्दनाक्षयक्षायवितरपूषीनमः॥
 ॐ उक्तमकास्थानकायावमय॥ ॐ गितवलिपूजा
 ॥ ॥ गणपतिपूजा॥ ॐ गणपतयनमः॥ ॐ
 विद्युष्यवायनमः॥ ॐ एकदगायनमः॥ ॐ मूर
 वाहनायनमः॥ ॐ लीवादवायनमः॥ ॐ गजव
 कायनमः॥ ॐ पञ्चहस्तायनमः॥ ॐ सिद्धि
 नायकायनमः॥ ॐ गंगासूतायनमः॥ ॐ पाव
 नीदद्यानदानमः॥ ॐ उन्नयवासविद्युष्यवा
 यनमः॥ ॐ आवाहनस्तुपनचन्दनाक्षयक्षाय

[illegible]

[illegible]

धमान् अस्तु सूयः साध्वीर्न वा रुवन्तु न ॥ ॥ प
न वा वसनी ॥ ॐ मा आ य म या रुक्मा रा व या लि ग ल
पि ताः आ व म य म ह्य द व पी नः ॥ ॥ नै प्र य द्धु मः ॥
ॐ श्री व कं य जा म ह ॥ ॥ स्नान ॥ उ ल व णी ग ल स्व
दं नि र्थ उ द्ध म ना य मी स्नानार्थ ग म या रुक्मा क लि
गं प्र ति गृ य तां ॥ ॐ स्व स्ति न ॐ द्वा द्ध प्र वाः स्व स्ति न
ः पू षा वि ष्व व द्वाः स्व स्ति न का श्मू श्रु वि द्धु न मिः स्व स्ति
ना द्धु ह स्य ति द्ध वा उ ॥ ॥ क पि ल द्ध य म ॥ क पि ली द्वा
य मा द्वा य ग र व द्धु ला उ ना द्ध न य रु य ग म ह्य प्र म
स्ना य पि त्वा ल रु द्ध ल ॥ ॐ य सः य धि यो य म डा वः
धी ष्य य या दि व्यं त वि द्ध य आ धाः य य स्व गी प्र दि ण
ः र्म त र्क ॥ ॥ य व ग य स्र व न स ॥ य भू ग य न द
व णी यः स्ना य य ति रु कि नः ॥ य द्धु द्धु वि धा न न वि
सू ला क म ह्य य न ॥ ॐ य वि ण रु व द्धु यो म वि ष्व व
ः य स व द्धु ल ना म्य दि द्ध य वि ण रु य स्र य न मि ति
॥ ॥ गी (धा द्ध क र्ण र व स्र न य न स ॥ ग र व गी (धा द्ध क
द ला यः स्ना य य ति सा ध वी वि न्द मा रु ण द्वा द्ध य क

लानां तावद्यच्चुतं । शुं यविशुस्त्रवेक्ष्यो ॥ ॥ गीखलु
ति ॥ ख्यवासागवात्यन्ना विष्कूनासुधतकवः । नमि
तः सर्वदेवे सुयाश्च उन्ननभासुत ॥ ॥ यथा ॥ स
र्ववायमयीद्यत्ता कणावस्य सदाधिया दानवा
लरुतयल्यं यरुकाटिगाराव ॥ ॥ सममुवायु
स ॥ मृदरुवायसंयुक्तं पनवनसमन्विता ॥ अच
नवासुदवस्य सनृत्तमादृदंनृणां ॥ ॥ यद्वायवी
नं ॥ कय्यासकलिर्गसुतं सुधोतीविउलीदरी ॥ य
नृत्तयुवीकाद रुकिरावदृतं मया ॥ ॥ यद्वा
यवीनं यनसंयविशुप्रजायतयः ॥ सहजंयुवसाः
त ॥ अयत्तमग्रप्रतिमं वलुयं यद्वायवीनं यनस
मुनंजः ॥ ॥ वलु ॥ गनुसंज्ञानसंवनं वज्रितीना
गवमुना ॥ मरुदवरुजपीति वासस्तयविधीयतां
॥ ॥ वसाः ॥ यविशुमसिगताधर्ववसाः ॥ यविशुम
सिसरुप्रधर्व ॥ यवस्त्रासविनायनाहुवसाः ॥ य
विशुगताधर्वप्रसयाकासध्वन्तः ॥ ॥ गंधः ॥ व
न्दनादिसुगन्धार्कसुयासहिवासिनी ॥ रुद्रा य
लपिर्गदर्वं तवार्थं सध्वसदन ॥ ॥ सद्यकवद्व

नचनादिसुगन्धार्थकमुखासहिवासिनी। रुक्मप
लपिनीद्वयं तवार्थसधुसदन॥ **ॐ** सदयकवच
रुहं नूदगाश्रुतिमुखः॥ सर्वगदियुगवस॥ ननः
लिविष्यतविमुगाश्रुतिविष्यसारुसिवाचनी॥
सुगन्धवन्दनी॥ अगुर्वक्यकर्मवैव कथ्युबलसम
न्विता। मलयजसमायुक्तमिदं गन्धविलयनी॥ **ॐ**
गन्धदानीदूनाधर्षानित्ययुक्तकवीकृती॥ **ॐ** गन्ध
सर्वरुतानां गामिहापद्यप्रियं॥ **॥ अक्षरी॥ अक्ष**
री अक्षयकामं धर्मकामार्थसाधनी॥ **ॐ** विष्णुमीशव
न्दहि पदवदयनीगति॥ **ॐ** अक्षन्नीसदनक
वप्रिया अक्षयगं॥ **अक्षो** वगस्वधानमाविद्यानवि
षयामसीथाजान्निवृत्तद्वी॥ **॥ सिद्धी॥ वीथ**
नमहावीथवीथरुसविह्वितावीथरुतिगृहा
ली। जगदीशवन्दय॥ **ॐ** त्वं उविह्वितापुत्रानुप
दि। **ॐ** ध्यानिनः प्रकाशाकमनना॥ **॥ डरुया**
॥ द्रव्यं॥ मूर्ध्निमनावसीदिवी सुगन्धवदनिर्मिताः
कल्पमनुगमाययं दवदह्यगृहणी॥ **॥ द्रव्यः**

माला॥ काला विनेय धायोऽपश्च वक्तुं सगन्धिरिः
 विविधघन्दिनां माली गृहालयनमथव ॥ ॐ साः
 रुलिनी श्रीमूला अथ व्याधय विषी दुहस्यति प्र
 सुता कानाम् अथ व ० रु स ॥ ॥ तुलसी ॥ गृहात्वा
 तुलसी पथं रुक्मा विष्णु समव्ययम् ॥ अविर्तननः
 सकलं सवदा सुवमानव ॥ ॥ धनयव्य ॥ कनवी
 वसहस्यम् रुक्म रुक्म यत्तुलं गदकस्य ययः
 स्य रुक्म रुक्म मन्त ॥ ॥ वक्तुं यय ॥ वक्तुं ययः
 यदानादि ॥ धनस्य द्विगुणं लरुता ॥ अथ ॥ धनयय
 यदानं अन्य रुक्म द्विगुणं रुक्म प्रादिकाम रुक्म वक्तुं
 यदी रुक्म वक्तुं विष्णु वक्तुं रुक्म सवदा दद ॥ ॥ नीलात्यली ॥
 सवदा यलदानस्य रुक्म प्रादिकामानव ॥ दत्तानी
 लात्यली रूपनायकाया विद्याविद्या ॥ ॥ धनयव्य
 ॥ धनयव्य गये कस्मिन्नाधवेयनिवदिता दददत्तं
 सवदा नि यत्तुलं गदवायुयात् ॥ ॥ जानियव्य ॥
 सवदा सीयव्य जानीनी जात्यः प्रथममाः सती ॥ जा
 नीनामपि सवदा सीयुक्त जानीयगस्यत ॥ ॥ दूती ॥
 दूती दूती दूती दूती दूती दूती दूती दूती दूती दूती

सद्वासाय प्रवृत्ता नाना जात्यः प्रवृत्ता नाना जा
तीनामपि सर्वसंशुद्धजातीयस्य गणः ॥ **द्वितीया** ॥
द्विद्वन्द्वं ह्ययं सु पूजा काल प्रयत्नः पूजा कर्तुं
तुल्यं सम्यगाप्राप्तिमानवः ॥ **तृतीया** ॥ निवाय
सर्वहिताय सर्वपापहनाय वा निवर्तय माद
रुं गृह्णाण्यनमः ॥ **चतुर्थी** ॥ अहिंसा
सिद्धिं प्राप्य सर्वं यदकं पश्येत् ॥ तन्न यत्प्रवृत्तं
विष्णुलाक्ष्मणं ह्ययं ॥ **पञ्चमी** ॥ द्रव्यमात्रं सदा न
सहर्तुं द्रव्यमात्रं दारुणं ॥ अथ यत्प्रमादं दानं जन्य
रुल्लसत्सहस्रं याफिका मन्दं द्रव्यमात्रं दामाः
दनाय सदा निवाय विष्णु वनमः ॥ **षष्ठी** ॥ व
नमाला सहस्रादिर्वयं कुरु विनिष्कृतं ॥ अथ वन
सहस्रानि वदनं जन्य रुल्ल विनिष्कृतं लयाफिका
मन्दं द्रव्यमात्रं दामा दनाय सदा निवाय विष्णु व
नमः ॥ **सप्तमी** ॥ गणपत्य सहस्रादि मल्लिका
पूज्यं मूलं ॥ अथ गणपत्य सहस्रानि वदनं जन्य रु
ल्लयाफिका मन्यं दं मल्लिका पूज्यं दामा दनाय
सदा निवाय विष्णु वनमः ॥ **अष्टमी** ॥ अथ स

वर्षायाविनिर्माकत्वविष्णुलाकगिवलाकप्राधिक
मपरिब्रजानाग्नपञ्चद्विंसदागिवमर्चयिष्य ॥
कृष्णकालः ॥ गवद्वामयेः पृथ्वीसुधाकाशक
(॥ रुवेधुवनं समलं कथय विष्णुलाकं वडनन
॥ अथ रुवनालं कवण पूर्वविष्णुलाकगमनकाम
परिः क (॥ पृथ्वीः काश पृथ्वी बहिर्विंसदागिवम
र्चयिष्य ॥ **विल्वपत्रं** ॥ यद्यानीव सहस्रसमम
दहस्ययत्नलं गन्तुं ललरुतयं दहविल्वस्य
(॥ रुम ॥ सर्वकामप्रदविल्वद्विदस्य प्रनाशः
नं । विल्वपत्रात्यन्तनासि यन्नहुष्यति ॥ कव ॥
हीमवाजः ॥ अथ सर्वप्रायविनिर्माकत्वविष्णुलाक
गिवलाकप्राधिकाम अग्रामाग्नपञ्चद्विनाधिकेव
हिरुमनाजपञ्चद्विंसदागिवमर्चयिष्य ॥
कनकविम ॥ कार्तिकस्रवमासस्य एकदा वणयाज
यतः अथ यत्ननदीवण (॥ सहस्रदलं ललरुतु ॥
॥ **गगनाजः** ॥ गगनाजपृथक् कवृत्तकपृथ्वीमि
धाय पञ्चदशद्विंसदागिवमर्चयिष्य ॥
कनक ॥ अथ सर्वप्रायविनिर्माकत्वकणायाना

॥ ~~अथ~~ ~~गगना~~ ~~उप~~ ~~पक्ष~~ ~~कू~~ ~~क~~ ~~पक्ष~~ ~~ग~~ ~~नि~~
धायायने दामादर्व सदागिव मरुं पूजयिष्य ॥ ॥
~~अथ~~ ॥ अथ सर्वदाय विनिर्मकं त्वं कृणुयाच्च न
विष्क विष्क लोकागिव लोका मरुति तत्त्व कामपरिद
मनक पण्डे हविं सदागिव मरुचयिष्य ॥ ~~अथ~~ ~~विष्क~~
॥ ~~आदृ~~ ~~गि~~ ~~सा~~ ~~न~~ ॥ मालयस्य सहस्रानि त्रिसंख्यात्रय
मरुमं ॥ अथ मालतीयस्य सहस्रानि त्रयदशान्यरु
लविनिष्क लप्राधिकामरुंदं त्रयक त्रिसंख्यायस्य
रुगवत विष्क वरुं निवदयामि ॥ ~~गाय~~ ~~व~~ ~~ति~~ ~~सा~~ ~~न~~
॥ त्रिसंख्यात्रय सहस्रादि त्रिसंख्या ~~ष्व~~ ~~त~~ ~~र्क~~ ~~व~~ ~~र्ष~~ ॥ अ
थ त्रयक त्रिसंख्यायस्य सहस्रानि त्रयदशान्यरु लस
मरु लप्राधिकामरुंदं ~~ष्व~~ ~~त~~ ~~त्रि~~ ~~सं~~ ~~ख~~ ~~या~~ ~~य~~ ~~स्य~~ ~~रु~~ ~~ग~~ ~~व~~ ~~त~~
विष्क वरुं निवदयामि ॥ ~~गाय~~ ~~व~~ ~~स्वा~~ ~~न~~ ॥ त्रिसंख्याः
यस्य सहस्रादि कर्दं यस्य विनिष्क ॥ अथ ~~ष्व~~ ~~त~~ ~~त्रि~~
संख्यायस्य सहस्रानि त्रयदशान्यरु लविनिष्क ल
प्राधिकामरुंदं कर्दं यस्य रुगवत विष्क वरुं नि
वदयामि ॥ ~~जि~~ ~~थि~~ ~~स्वा~~ ~~न~~ ॥ सवन्ती यस्य सहस्रादि
कर्दं यस्य मरुमं ॥ यथ सवन्ती यस्य सहस्रानि

वदनजन्यरुलविनिष्ठरुलप्राप्तिकामवन्दक
कुपयैरुगवतविक्रवर्हनिवदयानिनमः॥ ॥
मथरुल॥ अथरुविर्वधत्वरुवनकामनयाऽऽ
रिवाधकयैरुगवर्नरुविमर्चयिष्य॥ ॥ निया
रुल॥ (एवमपूष्यातिवम्यश्च मङ्गलानां चमंग
ली। वासुदवमृहाणत्वं दूर्वाकंदयपूष्यादिकं॥ ॥
अथगिवल्यदधवा॥ एकधरुलकंपूष्यां गिरि
म्यापूजितं गिवः॥ स(गात्रद्वयदानश्च गिवला
कंसहोयत॥ ॥ खानदकाकाययनावेजधनी
॥ ॥ ॐ आः रुलिनीर्मात्ररुला अरुष्याऽवयवि
लीरुस्यतिप्रसूतास्तानाम्॥ त्व० रुसः॥ ॥
अथधूप॥ वनस्यतिवसादिव्यागंधर्वासुवराजः
नः॥ मयानिवदितारुक्काधूयायप्रतिगृह्यतां॥
ॐ धूमसिधूर्वधूर्वर्तधूर्वर्तआस्तानधूर्वर्तगंध
र्वर्तवर्षधूर्वामः॥ ॥ दीपः॥ अग्निर्धोतावदिकः
तिष्ठेत्ता अतिस्तेवव। अतिषामरुमादवदी
यायप्रतिगृह्यतां॥ ॐ गंआसिष्ठुक्रमस्यमृतमः
सिद्धामनामासि। प्रियं दत्तानामनाधुवन्दवस

[illegible]

गह्वरकः॥ ~~सर्वकारः~~॥ वृत्तिनः
कारिकमासि. स्यात्सविधिवन्मागृहाणार्थ
मयादर्श. बाधयासहिगाहवः॥ सर्वषी. ~~सर्व~~
~~शियांजलिः~~॥ ॥ जप॥ जपसमर्थः॥ ॥ मधुल
दयक. पंचजपलवन॥ ॥ ~~का~~ कलस. नत्वा
षधीसकलगीर्थजलनयूक्त. सच्चुपन्नवसू
(शा)रितयूष्यमाला। यत्तुषमागविषयमूनिरिः
यसस्मार्तकमूहिलिवगकियुगनसामि॥ ॥
म(ला)यी॥ गोर्वायुद्विकृतिर्पंचवदंसिहस्त
माकषली. पाणीमूत्रवटकमकवलर्यनागेष्व
र्नतवर्वा। याज्ञभादकयुवितकुरुयदसव्याय
सर्वकरी. विडकुप्रमनाह्वंसूज० वद्वचन
धनमः॥ ॥ ~~सूर्य~~ स॥ जम्हायागीरुद्वमि
वदधनः॥ सांद्रसिन्दुवत्रयका। निकैरुतागेव
दयगिवितटीधारुधायादवत्मा। आयात्ताशुल्यः
कारिकमलवनवववावराविरुतिरुयात्तर्क
मयन्ताहुवनमरिनवासानवासानवीया॥ ॥ वि
षय॥ शिखकयलीकाक. नमस्तुविषयवना।

[illegible]

व. मच्चिगासिमनिष्ये ॥ नमानमसककुलगा. पाप
 दनदविषय ॥ ॥ **आषाया** ॥ धायुर्ववासाताध
 जी. पृथ्व्यापविमावन. आविद्याविद्वननिर्ह्य
 लमासिदविषय ॥ ॥ **लक्ष्मीनावायलसा** ॥ अल
 नामसद्वृत्त. कगावा. ईनमवगीता. गृहमवा
 र्थनामानि. यनरुव्यामदमदा. कगाव. पृथुनी
 काद. स्वयंरुमधूसूदन. दामादलादधीक
 ॥ ॥ यदानाकाऊनादन. विषयनाविहृयथा.
 हविर्नावायलसुथा. अनन. प्रमय. सस्य
 ॥ दससुवाहस. आदिकरुविवाह. वेकू. ॥
 विस्त्रव्यत. धीधव. धीपतिः. धीमान्. पद्मिवाज
 धउसुथा. ॥ यतानिसमनामानि. विद्यार्थवाक्यः
 प. ०. तादृशियाविजयार्थव. वे. ॥ धनससुद्वय
 ॥ ॥ ॥ सुद. सुदतिमात्राति. तेजसा. यविन्दति. ना.
 निवाऊरुयं. तस्य. नवो. नान्नयन्नगा. नादससा
 रुयं. नास्ति. व्याविरिर्नायपीयता. ॥ ॥ ॥ देनामसह
 आदो. कगावनाह. रीत्यय. उदृष्टवा. ईनदह्य
 दगा. रुविना. ॥ यामानामसह. सु. सु. सु.

आहो. कथा वनाहृ संखयं । उहृयवा र्जनं दहं य
द्वगं विनाशनं ॥ यामां नाम सहस्रं । स्तुतिमि
दृतिपां उवा । सपरिन्नामहिः सुखा. सर्वतल्ल
माययाग ॥ ॐ त्रिविष्णुकां ॥ नमस्तननायस
हस्रमूर्तय. सहस्रयादाक्षगिना नूवाहवा । सह
स्रनाम्रपूषाय ॥ ॐ त. सहस्रकाटियुगाधवि
लनमः ॥ ॥ उमा सहस्रवत्स ॥ ॐ कारं विन्दुसं
युक्तं. निर्यधाय क्रियागिनः । कामदं माददं देव
ॐ काराय नमानमः ॥ नमं किमप्यथा दवा. नमकि
वायुवागलाः । नवानमंति दवर्ण. नकाराय नमा
नमः ॥ महादवं महात्मानं. महाज्ञानप्रदायणं ।
महायाय हर्षदं. महाकाराय नमानमः ॥ शिवं
नैजगन्नाथं. लोकानां हितकामय ॥ शिवमादक
वंदवं. शिवाय नमानमः ॥ वाहनं कृष्णं यस्य
वासुकीकं ॥ ॐ त्रिं । वामं किं वंदवं. वकारा
य नमानमः ॥ यशस्तुतिना दवा उगद्यापी सह
ॐ त्रिं । यायुवं ॥ सर्वदवानां. यकाराय नमानम

[illegible]

जयशशिमी॥ नमः शिवाय भक्त्या यत्काले
शुभं कृतवानि वदथा सिवात्मानं त्वं गति यत्र मध्य
त्र॥ ॥ शिवं शिवं कर्तुं शानं शिवात्मानं शिवारुमी
शिवमानं यत्र नानं यत्काले सदा शिवं॥ ॥ याथा
हं पापकर्म हं याथात्मा यापसं कृतं शशिमीं द
वदवशा सर्वपापहृत्वा हव॥ अथ गन्थादि॥ ॥ न
मस्तु॥ यत्रा लभ्यवर्णं॥ मधुल विमर्जने॥ ॥
वाक्कलपुत्रा॥ अथादि॥ वाक्कल॥ कार्तिक वत कर्म
लिवक्कलपुत्रां कर्तुं श्रीसूर्याय ज्ञेयं नमः॥ ॥ श्री
हृत्कनकजसावरुमाना निवशा अन्नमृतं मर्त्यं व
दिवल्य अन्नमृतिना बधनादवाप्तातिशुवनानि
पश्यन्॥ ॥ ॐ माहात्म्यकार मन्त्रानां जनानां क्ता
नत्र शिरीः कृतं मूर्धन्यं अन्नं नो मिनिवका क
र्त॥ ॥ गलपस्यादि सदा शिवाय ॐ दमा सर्वं नम
ः पूज्यं नमः॥ यशस्विदाय नान्द्राज (ग) जायव
क्कदवताय विष्णुपुन्दस ॐ दमा सर्वं नमः पूज्यं न
मः॥ नन्दिक ॐ दमा सर्वं नमः पूज्यं नमः

१॥ ॥ **अथ** हस्तार्थचन्दनं यक्षाय वीर्यपूर्व
धूपं दीपं ॥ **अथ** गंधादि ॥ ॥ **अन्नसंकल्य** ॥ ग
लपत्यादि सदा गिवाय वूदमन्नसंकल्य अदि
डासु ॥ **अथ** वृंदाय रावदाज (ग) शायवक्त्रदव
गाय अन्नसंकल्य अदि डासु ॥ नदि कष्वनाय
अन्नसंकल्य अदि डासु ॥ ॥ **गुणपत्यादि** सदा
गिवाय दद्विर्णनमः ॥ **अथ** वृंदाय रावदाज
(ग) शायवक्त्रदव गाय त्रिषू द्दुन्दुस्यथा गुदा
दद्विर्णनस्य महं संप्रदद ॥ नदि कष्वनाय द
द्विर्णनस्य महं संप्रदद ॥ ॥ **वाचन** ॥ **तुं** स्वस्ति
रुवका वृक्षा स्वस्ति ॥ ॥ **अथ** गंधादि ॥ ॥ **तथा** व
दावर्न ॥ **कलस** ॥ **तुं** अजिद्य कलसं मन्त्रा वि
र्णनिन्दवः पुन वृक्षा निवर्त स्वसानः सहस्रं ध
क्रान्धा नापय स्वगी पुन म्मा विग नादयिः ॥ ॥
गलप ॥ **तुं** गलानां त्वा गलपति ० हवामह प्रिया
र्णान्वा प्रियपति ० हवामह निधीर्णान्वा निधियति
० हवामह वृक्षाममम ॥ **अहम** जानिषह धमात्वा
मजा सिषदधं ॥ ॥ **सूर्य** ॥ **तुं** अरुध नवजसाव

जाह्याप्रययागहवानहानयानाहानाप्रयात
०ह्यामहद्वसामसाहमजानिषहधमात्वः
मजासिषहध॥ ॥सूर्य॥ॐआहृक्कनप्रजसाव
हमानानिवधमन्नमृतीमर्थवाहिनययनः
सविगायधनादवासातिष्ठवनानिषयन॥ ॥
विसूया॥ॐविक्रावनाटमसिद्विक्काः॥नयस्तेवि
क्काः॥सूत्रसिद्विक्काः॥वसिदेक्कवमसिद्विक्कव
न्वा॥ ॥दग्गाया॥ॐआगवदससूनवामसामस
वागीहगानिदहागिवदः॥सनः॥पतिषगतिदूर्ग
लिद्विष्वानाववसिधूद्विगायनिः॥ ॥गोविन्दा
॥ॐअम्बअन्विकअन्वालिकनमानयतिकथ्य
नासमय्यकः॥सूरुदिकीकामीलवासिनी॥ ॥
सावित्रामया॥ॐविक्रावनाटमसि॥अथमलक्ष
थयन्तावहावागया॥नन्दगालिद्रूपमयिनोः
यार्क०००निषालामसमिषा॥सर्वलाकम००
आला॥ ॥सर्वगारुड॥ॐ०००द्विक्कद्विक्कम
गंधानिदधधदसमृटमस्यया॥सूत्रवाहा॥ ॥
कहुमूरवमहादव॥ॐनमः॥गुरुवायवमया

रुवायवनमः॥१॥कवायवनमयस्कवायवनमः॥
वायवननिवतवायव॥ ॥उमामहेश्वर॥ॐः
निवानामासिस्वधितिष्ठपिगानमस्तुअमुमामा
हि०सी॥निवर्त्तयाम्नायधनायायप्रजननाः
यस्यायसूयजास्त्रायसूवीयाय॥ॐ श्रीमालका
वीरविन्दमहि०सी॥युधिव्यासंरुवाअय०हि
त्वास्वधितिष्ठतिजान॥यलिनायमरुनलोका
य॥ ॥१॥कवनानाय॥ॐ नमः॥१॥रुवायव॥ॐ
विकानवाटमसि॥ ॥उलगा॥ॐ श्रीलिपदाधि
वक्रमदिक्रुगोपाश्रुदाखी॥अ॥धर्मनिधानय
न॥ ॥धारी॥ॐ सहजगीर्षाप्रनूषः॥सहस्राक्ष
॥सहस्रपाश॥सहसि०सर्वगतस्यत्वायतिष्ठद
गा॥कुली॥ ॥लक्ष्मीनानाय॥ॐ ॐदद्विष्द्विच
क्रम॥ ॥सिजलमहादेव॥ॐ निवानामासि॥ ॥
लाक्ष्यामहादेव॥ॐ आनन्दनिवातनूवद्यावा
वायकाशिनी॥गयानस्तन्वा॥१॥मयागिनि॥१॥गारि
वाकगीहि॥ ॥मूलमहादेव॥ॐ नमः॥१॥रुवाः
य॥ॐ श्रीमालका॥ॐ श्री॥१॥निगानाकप्रकान

[illegible]

तन्मना ॥ ॥ ~~स्नानविधिः~~ ॐ वाजकसधवाला ॥
प्राप्तगस्यदीदिवि। वदमान ५ (१५६ म॥ स्नान ४३
पिणवसूनव (नसूयायनारु। सवस्वान ४ स्वसु
य ॥ ॥ ~~खतीदकासांस्नानविधिः~~ ॥ गगायथा
गस्यपवात्रलस्वसुदवगार्चन ॥ ॥ ॐ निका
रिक्वतदिनकस्यनिर्यकर्मदूजासमाफ ॥

गगात्राशियायद्वनदूजाविधि ॥ संध्याविदुर्नदी
हिनयावक ॥ महानगातकावश्रवतिस्नानस
मसंवायथाय ॥ वाकनदूय ॥ ॥ धनलिप्रहलः
वालुकनपूजायाय ॥ ॥ लेखनकाय ॥ ॐ स्वस्तिन
ॐ न्द्रावृद्धप्रवाः स्वस्तिनः पूषाविष्वक्वदाः ॥ स्वस्ति
नस्तान्मृष्विष्वनमिः स्वस्तिनावृद्धस्यनिर्दधुः
॥ ॥ वन ॥ ॐ सद्यक ॥ ॥ सिन्दूर ॥ ॐ न्वंजविष
या ॥ ॥ जजमका ॥ ॐ सहायविर्ग ॥ ॥ स्नान ॥ ॐ स
हलनि ॥ ॥ अवमन ॥ ३ ॥ सूयादि ॥ वाक
॥ कर्तुं वृद्धानवज्जर्णनमः ॥ ॐ अग्निर्मुखादि
वः ककन्यतिः ॥ ५ ॥ धियाअय ॥ अया ५ वगा ५ सि

॥ कर्तुं वृद्ध हानव अर्थ नमः ॥ ॐ अविमूर्छादि
वः ककुत्सतिः पृथिव्या अयः । अथा ५ नगा ५ सि
जन्वति ॥ ॥ न्यासः ॥ ॐ कं रुद्र अननकुल कि अमु
य रुद्र ॥ कन (१०) धनं ४ ॥ ॐ कं सः सर्वज्ञाता ददः
याय नमः ॥ ॐ कं आसदि कि निवस स्वाहा ॥ ॐ
कं अनादि वाध निरोधे वोषट् ॥ ॐ कं स्वगतु
कव वाय दं ॥ ॐ कं अलफ कि न प्रयाय वष
ट् ॥ ॐ कं रुद्र अननकुल कि अमु य रुद्र ॥ ॥ अर्च
या प्र पूजा ॥ प्रणवा सनाय नमः ॥ प्रणव मूर्त्य
नमः ॥ प्रणवाय नमः ॥ प्राणी कीर्त्तय दं य दं य
दुविम्व अरु स र्व । पथ्या काल कला या नु पीयू
षण अमि अय न ॥ मण्डन पूजय न ॥ आवाह
नायि ॥ धनू मूर्त्ता देय न ॥ ॥ रुद्र उदि ॥ ॐ कं
कानि कलि कला या गा य दं रुद्र ॥ ॐ कं क्री प्रतिष्ठा
कला य या गा य दं रुद्र ॥ ॐ कं विद्या कला या गा य
दं रुद्र ॥ ॐ कं क्री गा नि कला या गा य दं रुद्र ॥ ॐ कं
हा गा न्या नी न कला या गा य दं रुद्र ॥ ॐ कं रुद्र आरु

मूर्धनि ॥ ॐ श्रीं सः अस्तु गीमहादेव वायनमः ॥
॥ आत्मनः ॥ अस्तु ॥ आत्मनः चन्द्रनमः ॥ आत्मनि
वसय्य ॥ आत्मासनाय ॥ आत्मसूर्येयनमः ॥
कलसः ॥ अस्तु ॥ वृषास्त्राय ॥ ॐ श्रीं सः सः सः सः सः सः
कलसाय ॥ नैवय ॥ ॥ गीमहा ॥ सिंहासनायनमः ॥
शियां अस्तु ॥ गीमहा ॥ वलि ॥ नैव
यसः ॥ आवाहनादि ॥ ॥ सूर्य ॥ अस्तु ॥ सनायनमः
॥ ॐ श्रीं सः ॥ सूर्यायनमः ॥ वलि ॥ नैवय
सः ॥ आवाहनादि ॥ ॥ विष्णु ॥ गङ्गासनायनमः
॥ शियां अस्तु ॥ ॐ श्रीं सः ॥ नमानावाय ॥ यनमः
॥ वलि ॥ नैवयसः ॥ आवाहनादि ॥ ॥ दक्ष ॥ सि
हासनायनमः ॥ शियां अस्तु ॥ ॐ श्रीं सः ॥ दक्षायन
मः ॥ वलि ॥ नैवयसः ॥ आवाहनादि ॥ ॥ गोवि ॥
यमासनायनमः ॥ शियां अस्तु ॥ ॐ श्रीं सः ॥ गोम्येन
मः ॥ वलि ॥ नैवयसः ॥ आवाहनादि ॥ ॥ सावित्र
मः ॥ गङ्गासनायनमः ॥ दक्षसनायनमः ॥ शि
यां अस्तु ॥ ॐ श्रीं सः ॥ नमानावाय ॥ यनमः ॥ श्रीं
ॐ लक्ष्मी वासुदेवायनमः ॥ वलि ॥ नैवयसः ॥ ॐ

मङ्गलार्चनाय नमः ॥ पूज्यार्चनाय नमः ॥
या ॐ लि ॥ ॐ क्रीं सः नमानावाय नमः ॥ क्रीं
लीलार्चनाय नमः ॥ वलिनेवयसं ॥
वाहनादि ॥ ॥ सर्वगारुड ॥ गार्क्ष्मनाय नमः
॥ शिवांजलि ॥ ॐ क्रीं सः नमानावाय नमः ॥ व
लिनेवयसं ॥ आवाहनादि ॥ ॥ वज्रमुखमहादेव
॥ वृषासनाय नमः ॥ शिवांजलि ॥ ॐ क्रीं सः नमः
ॐ याय नमः ॥ वलिनेवयसं ॥ आवाहनादि ॥ ॥
उमासहस्रव ॥ वृषासनाय नमः ॥ सिंहासनाय
नमः ॥ शिवांजलि ॥ ॐ क्रीं सः नमः ॐ याय उमा
॥ किमहिनाय नमः ॥ वलिनेवयसं ॥ आवाहना
दि ॥ ॥ गीकवनावाय ॥ वृषासनाय नमः ॥ ग
वृषासनाय नमः ॥ शिवांजलि ॥ ॐ क्रीं गीकवनावा
य नमः ॥ वलिनेवयसं ॥ आवाहनादि ॥ ॥
कुल ॥ ॥ वृषासनाय नमः ॥ शिवांजलि ॥ ॐ कुल
गीदयेनमः ॥ वलिनेवयसं ॥ आवाहनादि ॥ ॥
धार्जी ॥ ॥ वृषासनाय नमः ॥ शिवांजलि ॥ ॐ धार्जी
येनमः ॥ वलिनेवयसं ॥ आवाहनादि ॥ ॥ लक्ष्मीनावाय

लम्प्यः॥ गङ्गायाय नमः॥ कृष्णाय नमः॥ श्रीजलि॥ श्री
मनमानायाय नमः॥ श्रीग्रीलक्ष्मीवासुदेवाय नमः॥ व
लिनेवद्यसि॥ आवाय॥ ॥ सिजलमहादेव॥ दृष्टास्त्रा
य॥ सिहास्त्राय॥ श्रीजलि॥ हाँहीसः सदागिवाय॥
॥ वलिनेवद्यसि॥ आवाय॥ ॥ लाहामहादेव॥ दृष्टास्त्रा
यनमः॥ सिहास्त्राय॥ पुँडा अथाय॥ पुँडा अथाय॥
थायथायनमः॥ पुँडा सर्वतः सर्वसर्वदेवैः सः श्री
पुँडाः गिवास्त्रावद्यसि॥ वलिनेवद्यसि॥
मूल॥ अथाय॥ कथय्यादि॥ ॥ दृष्टासनाय नमः
॥ सिहासनाय नमः॥ गिवाजलि॥ पुँडा सः अ
मृगीगमहादेव॥ दृष्टागिवायनमः॥ पुँडा सः
॥ अमृगीगमहादेव॥ किमहिताय नमः॥ अथाय॥
पुँडा सः सर्वज्ञाददयाय नमः॥ वलिनेवद्य
सि॥ आवाहनादि॥ ॥ गिवाजलि॥ ॥ दृष्टा
स्त्रा॥ अथाय॥ दकनअमुपयादली॥ पुँडा
रुद्रअननगकिअमुयद्रुद्र॥ मूलनमः॥
पुँडा जगधनिमार्तनमः॥ आवाहनादि॥ धनमूर्धा
॥ ॥ दृष्टावाय॥ धूप॥ पुँडा वसवस्त्राधूपयं रुगाय
शलाकनसीगिवास्त्राधूपयं रुद्रनक

[illegible]

(५) दिदिपदवदुष्यद ॥ ॥ प्रणिष्ठा ॥ ॐ मना इति ई
 षमा मा यस्य दहस्यति यद्मिर्ममना त्वविष्टमम्
 ० मनिर्मदधायुः दिविदवा सव्दमादयं गामा ३
 प्रणिष्ठ ॥ ॥ जय ॥ कलस ॥ ॐ ईं सः स्वाहा ॥ ग ॥ ॥ स्वाहा
 ॥ सूर्य ॥ ॐ स्वाहा ॥ दूर्गा ॥ ॐ स्वाहा ॥ गोत्री ॥ ॐ स्वाहा ॥ सामि
 ग्राम ॥ ॐ स्वाहा ॥ ॥ सुवर्गा रुद्र ॥ ॐ स्वाहा ॥ ॥ वरु
 मूर्यमहादेव ॥ ॐ ईं सः स्वाहा ॥ ॥ ॐ कवना नायक
 ॥ ॐ स्वाहा ॥ ॥ उलगा ॥ ॐ स्वाहा ॥ ॥ धात्री ॥ ॐ स्वा
 हा ॥ ॥ लक्ष्मी नायाय ॥ ॐ ॐ स्वाहा ॥ ॥ सिज्याम
 हादेव ॥ ॐ स्वाहा ॥ ॥ लाहायामहादेव ॥ ॐ स्वाहा
 नाय स्वाहा ॥ ॥ मूलनामाय ॥ ॐ ईं सः स्वाहा ॥ ॥
 रुद्र ॥ कलस ॥ वनाषधामकलगीर्धजलनपूर्णा
 एादि ॥ ॐ नैष्यद्दविरुगिर्धववदनीसिंहसुमाक
 र्धर्षा ॥ ॐ मूर्यवर्धकमन्दवलयना ॥ ॐ नैर्धवव
 ॥ ॐ भादकयुविर्गिर्धरुयदसव्यायसर्वकववि
 ज्ज्वरमनाहर्नसुज ० वरुवमनाथ नमः ॥ ॐ नि
 ग ॥ ॥ ॥ सूर्यस ॥ ॐ नानागीरुक् मूर्यवमिव
 दधनः सांदिमिन्दववलयकागिकेवरा ॥ ॐ नदयगि

गणेश॥ ॥ सुप्रसन्न॥ जन्मनामीरुक्महादेवमिव
दधतः सांख्यसिद्धयन्त्रकागिकेवशागेनदयनि
विराटीधाराधारादवस्थाश्रयान्तराल्यकार्यकम
लवनद्वयवशाविरुतिरुयास्वरुसयनाशुव
नमरिनवाशनवाशनवीया॥ ॥ विष्णु॥ जितन
पुत्रवीकाक. नमस्तुविष्णुवनः॥ नमस्तुसुदधी
कण. महाप्रदप्रवृज॥ ॥ दम्भा॥ सर्वसंगलमा
गल्यनिवसार्थसाधका. गवेष्यप्रसिद्धिमेविना
वायलिनमाशुत॥ ॥ गोवि॥ दूर्वास्मावर्णजानीः
नीलाभ्यलदलदला. वनवाभ्यलधवावदी. द्विजुर्ज
द्विषद्विषी॥ ॥ सर्वगारुड॥ नमस्तुनकाप्रसहः
प्रसूत्य. सहप्रयादाकनिवाप्रवाहवा. सहप्रः
नामप्रदवायगाधन. सहप्रकाटिभूगधाविधन
न॥ ॥ सुलभा॥ दवेस्त्रनिमिगाप्रव. मन्त्रिगासिः
मन्त्रिधनः॥ नमानमस्तुलगा. पार्थद्वद्विधि
या॥ ॥ धाशुर्दवास्मगाधार्ण. पृथ्व्यायविमोवनी.
आधिव्याधिदेवनिर्णय. प्रणमासिहविषीय॥ ॥ गीक

ननात्रायलसः नमस्कथागदुपाययागभायन
मानसः सर्वकामप्रवर्द्धन नमस्कद्विह्वल
न ॥ ॥ उनामदुःखप्रस ॥ ॐ कार्विन्दुसंयुक्तं नि
र्यधायनिथागिन ॥ कामदंभाकवेव ॐ कावा
अनमानसः नमन्निमवयादवा नमन्निर्वीयवा
गलाः नवानमन्तिदवर्ग नकात्रायननानमः म
हादर्वमहात्मानं महाहानयत्रायली महाप्राप
हर्षदर्वमकात्रायनमानसः ॥ गिवः ॥ नकगन्त्रा
र्थलोकानां हितकामया गिवसाककर्वदर्वलि
कात्रायनमानसः ॥ वाहनं दृष्टरुयस्य वासकी
कः ॥ रुषली वासगकिधर्वदर्ववकात्रायनमा
नसः ॥ यशसवस्तितादवा जगद्वायीमदुःखवः
यागुवः सर्वदवानां यकात्रायनमानसः ॥ वज्र
कर्मिदंकाणयः प(०)द्विवसन्निधो सर्वप्राप
विनिर्मकः गिवलोकं समकुति ॥ ॐ गिवउद्व
कावः ॥ ॥ पुद्वः ॥ नकगिवः यमादयनमः सर्वरु
गकीष्ववः सानन्दसूत्रनायकः ॥ रुगवान्मयूक्त
कामप्रदः ॥ वीगी ॥ वदन्मवाकवयदावामादि

[illegible]

र्यव।दिप्रप्यथनसविताकथनादवायानिउवना
 निप्रप्यन॥ ॥विप्रया॥ॐविक्षाववाटमसिद्विः
 क्कः॥नयस्कविक्षाःसूनसिद्विक्षाध्रवासिदेक्कव
 मसिद्विक्षवत्वा॥ ॥दग्ग्या॥ॐजातवदससूनव
 मसामसवागीदगानिदहागिवदः॥सनःप्रतिवत
 तिदग्गलिद्विष्वानाववसिंधूदवितायनिः॥ ॥गो
 विद्या॥ॐअम्बअम्बिकअम्बालिकनमानयगिक
 थन।ससस्यथकःसुरुदिकाकाम्पीलवासिनी
 ॥ ॥सविप्रामया॥ॐविक्षाववाटमसि॥ॐप्रीथ
 गलक्कीथयत्मावहावाश्या॥र्वनकपालिबुयम
 विनीव्यार्कव्क्कनिष्वाणसममिष्वाणःसर्वलाः
 कसव्क्काण॥ ॥सर्वगान्द॥ॐव्द्विक्कविवक्क
 मयधानिदधेयदसमूरमस्यया॥सवस्वाहा॥ ॥
 वधुमस्वमहादवा॥ॐनमः॥रुवायवमया
 वायवनमः॥रुवायवमयस्कवायनमः॥गिवा
 यवगिदगवायव॥ ॥डमामहथन॥ॐगिदाना
 मासिस्वधितिष्ठपिगानसक्तअमुमामाहि०सी॥नि
 वरुथ्यासायमनायाययवननायसा॥समप्रजा

यथागच्छन्मयायवा ॥ ॐ नमो ह्येवम ॥ ॐ गीवाना
 मासिस्त्रिभिर्निष्ठपिमानमस्तुमामाहि ० सी ॥ नि
 बल्याम्मायूषनाथास्यजननायस्मास्यस्यजा
 स्वायसूवीर्याय ॥ ॐ श्रीमालकीर्तनविर्दनीहि ०
 सी ॥ पृथिव्यामस्तुवा ॥ अय ० हिलास्त्रिभिर्निष्ठपि
 नः ॥ प्रलिनायमहर्तमोरगाय ॥ ॥ श्रीकवनावाच
 ॥ ॐ नमः ॥ श्रीरुवायव ॥ ॐ विष्णववाटमसि ॥ ॥
 ॐ लगी ॥ ॐ श्रीलियदादिवक्रमविष्णु (गोपाग्रदक्ष
 ॥ अगाधमनिधावयन ॥ ॥ धात्री ॥ ॐ सहस्रगा
 पायवषः सहस्राक्षः सहस्रपादाः सहस्रमि ० स
 वगस्यत्वात्यनिष्ठदगाकुली ॥ ॥ लक्ष्मीनावायन
 ॥ ॐ ॐ विष्णुविवक्रम ॥ ॥ सिजलमहादव ॥
 ॐ गीवानामासि ॥ ॥ लोहामहादव ॥ ॐ आन
 नूदगिवातनूवद्यावापकागिनी ॥ गयानस्तन्वा
 श्रीममयागिनिर्गोताकिवाकगीहि ॥ ॥ मूलमल
 दव ॥ ॐ नमः ॥ श्रीरुवायव ॥ ॐ श्रीमालकी ॥ ॐ आ
 ॥ गीवानाटपशानलीमाद्यनाद्यनः ॥ कारुन्यव
 गीनी ॥ श्रीकन्दनानिमिषचक्रवीवः ॥ श्री ० मनाः

अजयत्साकमिन्द्रः॥ ॥ वदार्चनविधेस्तत्सर्वं य
विष्णुर्मिह॥ ॥ काठिन्यानकाय॥ प्रीतिशुभं
यानास्वानमय॥ ॥ निपह्नयूजः॥ ॥ धनं यद
नपि॥ ॥ सीयायामात्त॥ ॥

सनिकुद्रयाविधि॥ अमुनवलिविसर्जनं॥ ॥ व
 वउवका॥ वलिकुय॥ दूवपाठवलिकुठकस॥
 वकुलाय॥ गनउस॥ दूमाकस॥ मवानडगसुहि
 गय॥ गवनउगव॥ क्षाखाव्वाय॥ ॥ (गयसः
 ॥ ककनउजावाहानकुस॥ यनसवदखापिखाः
 कुय॥ ॥ लाहाउसवाठजानिमाल्यदकासूख
 वयकलकुय॥ ॥ यूनःमानादिदवाचनं॥ ध
 मदान॥ दूथ॥ (थंदिथंमाल॥ ॥

दाक्षधर्मकृद्निस्त्रिभुवःकथाय॥३॥ ॥
 १ॐ श्रीगणेशायनमः॥ अथब्रह्मविधानील्लिख्य
 ग॥ अथमर्नकथा॥ यजमानन॥ तिलकगजल
 न्यादाय॥ सीकल्या॥ ॐ अथवालाहकल्या॥ मासन
 कृतं॥ ॥ वा॥ ॥ मानवगो॥ ॥ श्रीगणेशायनमः॥

॥ श्रीवमनकथा ॥ यजमानन ॥ गालक ॥ जल
न्यादाय. सिकल्यः ॥ ॐ अथवालाहकल्य ॥ मासन
कल ॥ ॥ वाक् ॥ मानव (ग) धी धी जय रूप मी
नमस्तु वमन ॥ धी ३ स्वयं दवताया पीतिव तु वम
हल प्रापिका मनया. वंदा क वाक् ॥ ७ दाना धी ३
(ग) यथा वगान व दसूकन सपन म हं का वयि ध
॥ ॐ स्वस्ति ति ३ ॥ ॐ स्वस्ति न ० ० न्दा वृद्ध धवा ॥ स्वस्ति
न ॥ यूषा विध्व ददा ॥ स्वस्ति न स्तोत्र ॥ अत्रि वृद्ध न मि ॥
स्वस्ति ना वृद्ध स्य ति दधा ३ ॥ ० ॥ ति सिकल्य ॥ ॥
वाक् ॥ ७ न. शिगल वना वम ॥ सूर्या र्य ॥ अथादि ॥ वा
क् ॥ यजमान स्य कार्त्तिक वत कर्म लि न्दा रि व
क कर्तुं सूर्या य अर्घ्य नमः ॥ ॐ आरु धन वजसा
वर्हमानानि वगय न्न मृग मार्य ॥ ३ ॥ हि वल्य य
नम विना व (ध) ना दवा या गि तु वना नि य धन ॥ धी
सूर्या य पृथ्वी नमः ॥ ॥ पुन नमस्का ॥ न्यास ॥ ॐ
कं रुट अ न न ॥ कि अ म्ना य रुट ॥ कव (ग) धन ॥ ४ ॥
ॐ कं से ॥ सर्वज्ञा ना द दया य नमः ॥ ॐ कं याम दि
कि गि न म स्वाहा ॥ ॐ कं ० ० अना दि वा ध गि स्वा ये वो

षट्॥ **ॐ** शं देव गन्तव्यं कवचाय दम् ॥ **ॐ** शं अत्र क
कि न श्रु या यत्र षट् ॥ **ॐ** शं रुद्र अननक ॥ कि अत्र
यद्रुद्र ॥ ॥ धर्म नमः श्रु यत्र यद्रुद्र ॥ आत्म यद्रुद्र ॥ आ
त्म नमः श्रु यत्र ॥ आत्म नमः श्रु यत्र नमः ॥ आत्म नमः श्रु
यत्र यद्रुद्र नमः ॥ आत्मा सनाय नमः ॥ आत्म मूर्त्य
नमः ॥ **ॐ** जातवदससूनवामसामसवाताहगानि
दहातिवदः सनः प्रतिवदतिद्रुद्र नमः श्रु यत्र नावव
सिधुद्र विगात्रनिः ॥ निवः सजयत्र ॥ ॥ यद्रुद्र नमः
याय नमः श्रु यत्र नावव ॥ मद्रुद्र ॥ **ॐ** माना महान्कम
माना ॥ अर्क कमान ॥ उद्रुद्र नमः श्रु यत्र मान ॥ उद्रुद्र नमः
मानावक्षीः ॥ विद्रुद्र नमः श्रु यत्र मान ॥ विद्रुद्र नमः
नमः श्रु यत्र विद्रुद्र ॥ **ॐ** महादेवाय साक्षाय सगलस्य वि
वावाय ॥ दमावाहनसमय्यामिनमः ॥ ॥ आत्म
नमः ॥ **ॐ** वद्रुद्र ॥ कि नमः श्रु यत्र सप्रथाः सना विद्रुद्र
यः सप्रथाः सनः सवायूः सप्रथाः ॥ अपद्रुद्र
अपद्रुद्र नमः श्रु यत्र सप्रथाः ॥ **ॐ** महादेवाय सा
क्षाय सगलस्य विवावाय ॥ दमावनसमय्यामि
नमः ॥ ॥ यावद्रुद्र ॥ **ॐ** नमः ॥ यद्रुद्र ॥ यद्रुद्र नमः श्रु यत्र

[illegible]

[illegible]

समधुक्तसन्निर्धवः साधीर्नः सीगाधधी। समधुनक
सूगाधसाः समधुमन्याधिव० वज। समधुयोवमुनः
पितामधुमन्नावनम्यगीमधुमान्अमुसुसुयः सा
धीगावार्कवनुनः॥ **ॐ** महादवायसांगायसगल
यनिवावायब्दमधुस्नानसमय्यामिनमः॥ **॥**
ॐ नमः॥ मूवायचमथाहवायचनमः॥ कवाय
वमयस्कवायनमः॥ गिवायचगिवतनायव। **ॐ**
अपा५ वसमदयस० सूर्यसक्त० समाहितम्। अर्प
५ वसमयथावसक्तम्। गृह्णाम्यहममूपयामगृही
तासीत्यायत्वाकुरुकुरुकामप्रतया निर्विघ्नयत्वाक
रुणमम॥ **ॐ** महादवायगिगकस्नानसमय्यामि॥
॥ ॐ वेङ्गलस्यार्कनमसिबन्गलस्यर्कुरुसर्कुनी
स्तवन्गलस्यसक्तसदनसिबन्गलस्यसक्तसदनम
सिबन्गलस्यसक्तसदनमासीद॥ यं वासुगस्नानान्क
र्षयुष्वायकस्नानसमय्यामिनमः॥ **ॐ** नमाहि
वज्रवाहवसनान्प्रदिगा॥ यतयनमानमावृक्ष
स्याहनिक्क(गल्यः० यः०) नामयतयनमानमः॥ गिग

वायस्विषीमरायथीनामरायनमानमाहविक्रमाय
 पवीतिनययानामरायनमानमाहविक्रमाय॥वसुम
 सर्ययामि॥॥ॐ नमः॥वसुमः॥वसुमः॥वसुमः॥
 नमाहवायवकदायवनमः॥वसुमः॥वसुमः॥
 वनमानीलपावायवगितिक्रमायव॥सुमः॥
 दनसमर्ययामि॥॥ॐ त्वं विषदापुषावः॥याहि॥
 ॥ॐ श्रीगिरिः॥वक्रागाकमृतन्मना॥सिद्धनसमर्य
 यामि॥॥ॐ अक्षन्मीमदनकक्षवप्रियाअक्षः
 गः॥अक्षोषतत्त्वधानमाविषानविषयासमीयाजा
 चिन्दुतहरी॥अक्षतसमर्ययामि॥॥ॐ अवसि
 अवसासदधायवयावाती॥यवसमर्ययामि॥॥
 ॐ गिलासिसामदवत्त्व॥सवावनिर्मितः॥यः
 तिमयथकपिरुत्ताकान्यलायुधः॥स्वरा॥गिलीः
 समर्ययामि॥॥ॐ नमाविलिप्तवक्वविनवनः
 मावर्मिचलाववनूथिनवनमः॥प्रतायवप्रतिम
 नायवनमादन्त्यायवाहनन्यायव॥उपवीर
 समर्ययामि॥॥ॐ नमः॥याय्यायवावाय्यायवन
 मायवावावावावाहनन्यायव॥उपवीर

[illegible]

नमोऽष्टनिधाय ॥ ॐ श्रीजिह्वकलशं मया स्वादि

कुंज... निधाय...

तगाद्यर्तनिधाय॥ कुंज... निधाय...
गं विन्दवः यूननूजानिवरुस्वसानः सहस्रधूकानू
धाराययस्वगीयूननमाविः गाद्ययिः॥ कलः सम
खविकुः कः कः दः समाधिः गः मूलनयसिता
यका मः (यमा रुगलाः स्मृताः॥ कुंज... सागनास
क सफदीयाः वसुधवाः मः (यदाथयशुर्वद
ः सामवदाकथर्वगध अः (मैयसहिताः सर्वक
लः रुसमाधिनाः॥ ॥ कुंज... निधायनकि
सुकादस्तानिधायिः गलाः सहस्रयाजनव
धन्वानिगनासि॥ सुगन्धर्वदनः॥ ॥ कुंज... विरु
देक्योसविशुर्वः यसवडन्यनाम्यकिडलयवि
णलसूर्यवमिरिः॥ कः ययानिधाय॥ ॥ कुंज...
ममगं गयमूनसनस्वगीसूत्रदूयमंगतधाय
वकाः॥ असिक्तामनूदधवितरुयाजीकीवः ॥ ॥
अगिधामया॥ गं गादकवः॥ कुंज... समुद्राः सवि
न स्कीधनिजलदवताः॥ अयानुयजमानस्यद

विनयकावका॥ ॥ पूनः पूजन॥ वरुसका
व॥ वरुनादि वरुदिनी॥ ॥ वरुलद्यटमूरुयन
मः॥ ॥ वरुवद्यटमूरुयनमः॥ ॥ वरुदयद्यट
मूरुयनमः॥ ॥ वरुलस्यगत्वमस्ययनासूका
स्यवाधितनयः॥ ॥ किन्वाविष्यगहृडजनयनद
वाटहृदगमपिदधसूवीनाः॥ ॥ ॐ वरुद्विष्वि
वक्रमवधनिदधयदसमूरुमस्यवा५सूयस्वा
हा॥ ॥ ॐ नमः॥ ॥ रुवायवमसा रुवायवनमः॥ ॥
कवायवमयस्कवायनमः॥ ॥ निवायवनिवगवाय
व॥ ॥ ॐ कागवदसमूनवामसासमवागीहता
निदहातिवदः॥ ॥ सनः॥ ॥ पतिवगतिदगालिविष्वः
नाववसिधंदविगायनिः॥ ॥ ॐ यधमावावकः
ल्यापीमावदानिजनयः॥ ॥ वरुवाजनासा५॥ ॥ दयवा
यायवसायवायवायव॥ ॥ पिथादवाजादहिनायेदाः
वुविहृरुयासमयभकासः॥ ॥ समुद्यतामूपमादाव
मउ॥ ॥ सकषागायुजीउयत॥ ॥ ॥ वरुनिष्य॥
ॐ नमामुसयसायकवदेथिवीमन॥ ॥ यशूनवि
कयदिवियरुः॥ ॥ मयसायनमः॥ ॥ ॥ वरुलस्यगहृड

[illegible]

ॐ ममालिखितवर्मणां हृदयानि सा मन्त्रावाजामृतं
नानवक्तव्यम् । उवाच वीर्यावकूलास्तु कृष्ण उवाच न
त्वा मयदा मयदनु कवचायदू ॥ ॐ अथर्वकयजाम
हंसगन्धिमयवर्धनम् ॥ उवाच कतिवदन्धनान्मः
याम्मदीयसामृतान् ॥ अथर्वकयजामहंसगन्धि
मयतिवदनम् । उवाच कतिवदन्धनादिनामदीय
सामृतं ननु जयायवषट् ॥ ॐ मानस्तु कन
यमानः आयप्रिमानाणां प्रमानाः प्र (ध्व) वीविष
१ । माना वीवान्कुरुमिना वधार्हविषान्कुरुमि
त्वाहवामहं कलगतं न ॥ अमुयदूट् ॥ ननु द
यादिषु उक्तं न्यासीकम्यति ॥ ॥ ननु ननु ननु ननु
त्वावदं प (०) न ॥ ॐ गलानां त्वागलयति ० हवाम
हप्रियाणां त्वाप्रिययति ० हवामहं निधीनां त्वानि
प्रियति ० हवामहं वशामसा आहमजानिषद्वध
मात्वमजासिषद्वधी ॥ सहस्रामाः सहस्रं दसः आ
हसहस्रपतामययः सयदेव्याधुर्व्याम्यथाम
नूदध्वीनाः अन्वात्तरिवन (आ) नवभीन ॥ गाय
त्रीतिहं कगलान्कयद्वामह ॥ हद्वयविदाक

नृदयधीनाऽञ्जनाललितन(ध्यानवर्भीन॥ गाय
 णीतिद्वकुगयनूययस्मासह। वृहस्पतिहाक
 कय्यवीरिः॥ गम्मानुत्वा॥ द्विपदायाऽथपुत्र्यदासि
 पदायाऽथषट्पदा॥ विद्वन्दायाऽथसहस्रन्दाः सुवी
 रिः॥ गम्मानुत्वा॥ ॥ ॥ ॐ यजुःपतादूवमूदेतिदेव
 नदस्यकस्य। तथेवेति। दूवमूम(श्रुतिगिवा। श्रुतिगि
 कनममनः। गिवसकल्यमस्तु॥ १॥ यनकस्य
 यमामनीवि(॥ यजुःकल्यनिविद(थयूधीनाथय
 दपूर्वअदमनः। यजानीतनमनः। गिवसकः
 ल्यमस्तु॥ ३॥ यल्यज्ञानमूतवगाधुतिथ्यस्यगि
 वनकवमूतस्यजासा। यस्मान्नः। अनकिश्चनकम
 क्रियतानममनः। गिवसकल्यमस्तु॥ १॥ यनद
 रुतवदनमूविद्यत्यविगृहीतममूतानसर्वम्।
 यनयजुःसायनस्यकल्यतानममनः। गिवसक
 ल्यमस्तु॥ ५॥ अस्मिन्वः। सामयजुः। प्रियसित्य
 गिषिगात्रथनाहाविद्यानाः। अस्मिन्विह० सर्वमाः
 तस्यजानानममनः। गिवसकल्यमस्तु॥ २॥ स

[illegible]

गस्ताद्यस्तस्ताद्यजायतां ॥ गस्ताद्यन्वा ॥ ३ ॥
यनयकवारुयादतः ॥ गताद्वयहिबनस्मात् ॥
स्मात्ता ॥ गता ॥ अजावयः ॥ १० ॥ गीयत्तुमहिषिय्योक्त
न्यूनवृक्षगमस्यतः ॥ गनदवा ॥ अयजन्तसाद्या
॥ अययध्व ॥ २ ॥ अन्यवृषद्वयद्वः ॥ कतिधाद्य
कल्पयन् ॥ मूरवकिमस्यासीत्किम्वद्वकिमूवपादा
॥ उच्यते ॥ १० ॥ ब्राह्मणस्यमूरवमासीद्वाक्वजन्त
॥ कृतः ॥ उच्यते ॥ दस्यअद्वयः ॥ यद्वा ॥ १० ॥ अजाय
तः ॥ ११ ॥ वन्दुमामनसाजागध्वकाः ॥ सूत्रा ॥ अजाय
ता ॥ अजाद्यय्या ॥ अमूरवादनिबजायतः ॥ १२ ॥ न
द्या ॥ असीदन्तविद्व ॥ ० ॥ १० ॥ असी ॥ समवर्तते ॥ यद्वा
मूमिदिष्टः ॥ अजाद्यथालाका ॥ १ ॥ अकल्पयन् ॥ १
॥ यत्तुवृषद्वयविषादवाअरुमनन्ततावसन्ताः
स्यासीदा ॥ असीदन् ॥ १० ॥ असीदन् ॥ १० ॥ असीदन् ॥
स्यासन्तानिधयन्ति ॥ सयसमिधः ॥ कृताः ॥ दवाअः
ययत्तुनन्ताना ॥ अवाअन्यवृषम ॥ १० ॥ अ
रुनयत्तुमयजन्तदवाका निधमा ॥ लिप्यथमान्
सन्तागदनाकमहिमानः ॥ सवन्तयत्तुपूर्वसाद्या

सन्निदवाः॥१७॥ अद्भुतः स कृतः पृथिव्ये दसाय वि
त्तकर्मणः समवर्तता॥१८॥ तस्य त्वष्टा विदधदुप
मगित न्नार्यस्य दवत्तमा जानम॥१९॥ वदो ह
म नम्य दूषमा हानकमादि सवर्त्तनकमसः पदका
त॥ तमव विदित्वाति मृत्स्य मगितान्त्रः पथावि
द्येत अनाय॥२०॥ यजायति श्रुवति गत्यं श्रुत
वजायमाना वक्रधा विजायत॥ तस्य सानिम्य वि
पथ्य निधावास्तु सिद्धतस्य दुर्वनानि विन्वा॥२१॥
आदव द्वाः श्रुतपति आदवानाम्य दारितः पूर्वा
आदव द्वा जागानमा ववाय द्वाकथ॥२२॥ दूव द्वा
कञ्जन अनादवाः श्रुतदद्वुवन्। अस्ते वस्त्राकः
॥२३॥ विद्यालु स्य दवाः श्रुतमन्त्र॥२४॥ प्रीति कलक्षी
पत्न्या वहावायुया॥ नन्दकालि दूषमग्निना
व्वाहत्। ॐ नृनिषाणाम्म ३०० वाणसर्वलाकमा
३०० वाण॥२५॥ अद्भुतः शिषाना वृषकानकीमाद्यना
द्यनः काकलप्यवर्त्तनीनाम। सङ्कन्दनानि मिषः ३४
कवीवः ॥२६॥ सनाः श्रुतयत्नाकमिन्दुः॥२७॥ स
कन्दनानि मिषल विषना अन्ता वलदः ३४ वन

कवीनः॥१॥ नमो॥ अथ यन्माकमिन्दुः॥१॥ स
 कन्दननानिमिषणजिष्णुना अन्नाययदूश्चवन
 नष्टकूनामदिन्दुजयतगत्सहध्वं अ॥ धाननः
 ॐ षडक्षनवक्का॥२॥ सः॥ षडक्षेः सनिषमि
 निर्वर्णा सः॥ षडक्षसयधः॥ ॐ न्याग॥ धाना सः॥ स
 कजिन्नामयावाकूणाद्यधन्वायनिदिना निवर्क
 ॥३॥ षडक्षसयधविदीयाव॥ धननवकोहामिजाः॥ अ
 यवाधमानः॥ यरु अन्नामयस॥ धाना अथ
 नस्माकमथविनायधानाम॥४॥ वलविन्नायस्क
 विवः॥ यवीनः॥ सहस्वान्नाजी सहमानः॥ ६॥ अ
 रिवीनः॥ अरिसन्ना सहजाजी यमिन्दुवधमाः
 निष॥ गाविन्॥ ॥५॥ गाविन्द॥ नाविदम्बडावाकू
 अयनमयायस॥ धाना असा॥ ॐ सः॥ सजागा
 ॥ अन्वीनयधमिन्दु॥ सखायाः॥ अन्वीनरुः
 धम॥६॥ अरि॥ गाविन्ना सहसागाहमानादयावी
 वः॥ गमन्यविन्दुः॥ दूश्चवनः॥ यतनायाययुध्या
 माक॥ नमो॥ अथ यन्माकमिन्दुः॥१॥ ॐ न्याग॥ धाना

[illegible]

॥१॥ मम अक्षु ॥ ७ ॥ अथ ॥ सन्तु वा द्वा नाना ध्या यः
 धाम्ना ॥ १४ ॥ अमो या मना मन्त्रः यत्र वा मये नि
 नः ॥ ३ ॥ असा स्य दत्ताना ॥ गा मू ह ग ग म सा य वृत्त न
 अथा मी ॥ ३ ॥ अन्ना ॥ २ ॥ अन्न न्न जान न ॥ १५ ॥ अथ वा ॥
 ॥ सम्यगनिक्रमा वा विगिरा ॥ ३० ॥ वा ग न्न ॥ ३ ॥ अ
 हस्य निव दिति ॥ १ ॥ मम अक्षु ॥ ७ ॥ अथ वा ॥ १ ॥ मम अक्षु
 ॥ १३ ॥ ममो गिरा वर्मणा ॥ ३ ॥ दया मित्रा मत्वा वा
 जा म ग नाना वस्तु मा ॥ ३ ॥ वा व र्वा या व न्न ॥ ३ ॥ अ
 तु ज य न न्नाना वस्तु मा ॥ १० ॥ ॥ ३ ॥ विद्या ॥
 हस्य वस्तु मा मम अक्षु ॥ ३ ॥ अथ वा ॥ ३ ॥ अथ वा ॥
 ॥ वा ग द्वा ग ॥ ३ ॥ अथ वा ॥ ३ ॥ अथ वा ॥ ३ ॥ अथ वा ॥
 नू या विद्या ॥ ३ ॥ ॥ ३ ॥ अथ वा ॥ ३ ॥ अथ वा ॥ ३ ॥
 निक्रमा व ॥ ३ ॥ ॥ ३ ॥ विद्या यस्तु यस्तु ॥ २ ॥ अनाया व
 क वस्तु मा ॥ ३ ॥ अथ वा ॥ ३ ॥ अथ वा ॥ ३ ॥ अथ वा ॥
 ॥ ३ ॥ ॥ ३ ॥ अथ वा ॥ ३ ॥ अथ वा ॥ ३ ॥ अथ वा ॥
 वा ॥ मम अक्षु ॥ ३ ॥ मम अक्षु ॥ ३ ॥ मम अक्षु ॥ ३ ॥
 अथ वा ॥ ३ ॥ ॥ ३ ॥ मम अक्षु ॥ ३ ॥ मम अक्षु ॥ ३ ॥
 अथ वा ॥ ३ ॥ ॥ ३ ॥ मम अक्षु ॥ ३ ॥ मम अक्षु ॥ ३ ॥

[illegible]

[illegible]

ब्रमादि० सी० यन्त्रषष्ठगत् ॥३॥ निवनववमात्वा
गिनि० कावदाससि। यथेन० सर्वमिजगदय
द्र० समना० समता० ॥४॥ अथवावदधिवकाप्र
थमादेव्याहिवका। अहो० यमवो० अहयन्तवो०
यथायुधान्माधवावी० यनासुव० ॥५॥ असोयका
सी० अन्न० उतवत्त० सममल० अवेन० वृडा
अहितादिद्रुपिना० सहस्र० (मावेया० ह० उ० ॥
मह० ॥३॥ असोयावसयमिनीलपीवाविलाहित
॥ उतेन० माया० अदधन्नदधन्नदहार्थ० सहस्रम
उयागिन० ॥ ॥ नमासुनीलपीवायसहस्राकायमी
दृष्या० (था० अ० अस्मसलानाहकस्याकवनम० ॥५॥
येमथ० धेननस्वमुरुयावात्मा० असा० या० यगदस
॥ ॥ ॥ यवागारुगवाव० ॥ विद्यन्धन० कपदि
नाविहाल्यावापवा० उता० अन० नस्यया० ॥ ॥ यव०
अनुवस्यनिषकधि० ॥१०॥ यागदतिमादसमह
सवद्वतगधन० नियासान्विधनस्वमयक्षयाप
विदुज० ॥१॥ पविनधननाहनिवसान्धुपकुवि
॥ ॥ अ० (था० अ० ॥ ॥ यमिस्तवाव० असावि० धदिन

विहृज ॥ ११ ॥ यविनधननाहनिवसान्धुलकुवि
धनः ॥ अथास २०० अविस्तवान् २ असानि (धहित
सा ॥ १२ ॥ अवतस्यधनद्व० सहसाद्वगतं प्रधानिणी
अंशाल्यानामूखाणिवानः सुमनारुव ॥ १३ ॥ नमस्त
२ आयधायानागगायधृक्कवाडराखामुगतनमाः
वाकस्यानवधनन ॥ १४ ॥ मानामहान्कमुक्तमाना
२ अहंकमान २ उक्तमुक्तमान २ उक्तिमानमाना
वधीः पितवसागमानमान २ धियास्तनोद्वी
विषः ॥ १५ ॥ मानस्तोक्तनयमान २ आयविमाना
(गायमाना २ अ (धृष्टनीविषः मानाबीत्रावृद्धरामि
नावधीहविमानः सदमित्वाहवामह ॥ १६ ॥ नमा
हिवधवाहवसनान्त्रदिगाथयनमानमाना
क्षमाहविक (गाथः यशूनामयनमानमः ॥ १७ ॥ धि
अवायविषीमगयथीनामयनमानमाहविक
गायायवीतिनयूयानामयनमानमावहूगाया ॥
१८ ॥ नमावहूगायव्याधिननानामयनमानमाव
सहस्येउगागामयनमानमावडायागगायिन

[illegible]

भानमः श्रान्नानस्यः प्रतिदधानस्यः यवानमान
 मः श्रयकृष्णस्यः यवानमानमाविष्टुजः ॥
 २२ ॥ नमाविष्टुजः श्रद्विष्यः यवानमानमः स्वः
 यश्चाजान्नस्यः यवानमानमः गयानस्यः श्रामीन
 स्यः यवानमानमस्तित्थः श्रधावः यवानमानमः
 मरुस्यः ॥ २३ ॥ नमः मरुस्यः मरुयतिर्यः यवा
 नमानमाः ॥ २४ ॥ यवायतिर्यः यवानमानमः श्रव्या
 धिनीर्याद्विविधकीर्यः यवानमानमः ॥ २५ ॥ गणस्य
 मृ० रुगीर्यः यवानमानमागः ॥ २६ ॥ नमा
 गः ॥ गणप्रतिर्यः यवानमानमाद्वागः यवाग
 यतिर्यः यवानमानमागृत्स्यः गृत्स्यतिर्यः
 यवानमानमाद्विबूयः यवाविबूयः यवानमानमः
 ॥ २७ ॥ नमः मनास्यः मनानिर्यः यवा
 नमानमावधिर्यः श्रवः ॥ २८ ॥ यवानमानमः क
 रुत्यः ॥ २९ ॥ रुत्यः यवानमानमा मरुश्रः ॥ ३० ॥
 कः यवानमानमः ॥ ३१ ॥ नमः कः यवानमानमा
 यवानमानमः कलालस्यः कलालस्यः यवानमानमा

ॐ महालक्ष्मी नमः॥ ॥ मूलनमस्तु नमः॥
लि॥३॥ यत्तु॥ ॥ वलि॥ विदव॥ ननासः
नायनमः॥ मयूनासनायनमः॥ मूषासः
नायनमः॥ ॐ प्रसन्नदीपदस्तुकीदवी महा
क्षाक्षपालायनमः॥ ॐ क्षीकूलयुव
दनाथायनमः॥ गंगैंगैंगः॥ ॐ क्षीकूलग
ध्वनायनमः॥ धर्मवलि॥ आवाहनाय॥ न
ऊनीदुग्गजमुखा॥ ॐ मूलनमस्तु नमः॥ ॐ
ईन्द्रमाहगलयस्तुपदविष्णुगलासिद्धि
पालायवलिगुद्रस्तुवाह॥ ॐ ईन्द्रस्तु
मनेमस्तुवनपत्रायस्तुवनवर्णी॥ नमस्तु
नीललाहिमस्तुवावलिगुद्रस्तुवाह॥ ॥
वलि॥ ॐ क्षीकूलयुवदनाथायवलिगुद्रस्तु
वाह॥ ॐ क्षीकूलयुवदनाथायवलिगुद्रस्तु
वाह॥ गंगैंगैंगः॥ कूलगध्वनायवलिगुद्रस्तु
वाह॥ ॐ महाकववीवमगा॥ नाविपनयवलि
गुद्रस्तुवाह॥ ॐ सिद्धिवास्तु॥ ॐ विवलिगुद्र
स्तुवाह॥ ॐ आवाहनायवलिगुद्र

[illegible]

वनः॥ यनः॥ श्रीशयननस्मिन् विमानस्तुमनेः
 यनः॥ रागनय(थयि नान् यस्का गिवसाय
 अनां वऊन्॥ कवलनाथवाञ्छनदवागयन
 वेतथा। ययसा यवगयन ययसङ्कवसन
 वा॥ यः॥ कानयल्लहास्त्रान् विधिनाननमस्तु
 नः॥ साविननेवसा(नेलगमिष्यतिपदपद॥॥
 शुद्धः॥ नः॥ वः॥ प्रसादयवसः सर्वरुं॥ की
 वः॥ सानन्दसूननायकधरुगवान्मयूर्धका
 मयदः॥ वागी(॥ वदवमुवाग्दवपदीवासदि
 वक्रवनावाविः॥ कविनासकृष्टरुयहामः
 र्गजयजहिमी॥ ॥ पापार्हपापकमाहपापात्मा
 पापसंलवः॥ जहिमीदवदवः॥ सर्वपापहनाह
 व॥ अलगन्धादि॥ ॥ अस्माकप्रणाम॥ ॥ निसहस्र
 नविधिसमाकः॥ ॥
 धर्नलिन्दारिषकपूर्ववत्तुष्टवदप(०॥
 निलदवाचनविधिधर्पवायनादियायवदाचनत्वा॥

॥ अ॥ व॥ य॥ य॥ य॥ य॥ य॥ य॥ य॥ य॥ य॥ य॥ ॥ क॥ य॥ य॥ य॥

अथ वनायापनप्रतिष्ठाविधिः ॥ ॥ कर्पञ्जवा
दक्याय ॥ वाउगमारुकाकाथावायावकवागय
॥ १७ ॥ दानमारुका ॥ कृवनववकिदयकं यक्षा
कमलगतय ॥ यवदूर्वाधनिः वयवास् पतवास
वनगतय ॥ उरुवस गल (गयास कासावीदूखा
पिखा कवागतय ॥ २ ॥ सगनप्ररुठिकागतय ॥ ध्व
नवाय ॥ ॥ वाकलपूवशास्त्रवान् ॥ यजमान
उरुवसास्त्रवान् ॥ मारुगलयधिमसाय ॥ ॥
यजमानपूषाकाजन ॥ अथादि ॥ वाक् ॥ यजमा
नस्यकारिकवतायापनआर्यदेवतजवादक
वृद्धिप्रार्थकुरुपूषाकाजनसमप्रयामि ॥ सिद्धि
वसुक्रियावभुवृद्धिवसुधनागमापूषिवसुधनी
वसुधानिबसुगृहगतव ॥ सर्वविद्यप्रणमनं स
र्वनिकर्तुं ॥ अथः पूषवकासं वलक्षीसक्त
मिवर्द्धनं ॥ यथावाप्यप्रदावाप्यकवर्वरुवकुवा
वली ॥ तद्वदेवविधाहर्णागानिर्हवकुवानर्ण ॥

पुष्पराजनसमर्पयामि॥ ॥सूर्यार्घ्यं॥अथा
दि॥वाक्॥यत्तुमानस्यकारिक्तयुगाथायन
आस्यदेवराजवाद्यकवृद्धिप्राद्वक्तुंपीसूर्यार्घ्यं
पुष्पांश्वृद्धि॥ॐ॥आहूतंनवजसावर्तमाना
निवर्णयन्मृतंमर्त्यव॥हिबंध्ययनमविज्ञान
(धनादवायागिभुवनानिपश्यन्॥पीसूर्यार्घ्यं
पूष्यंवृद्धि॥॥विष्णुश्चायं देवश्चावेष्टानलदव
श्चांन्दमासनंवृद्धिपूष्यंवृद्धि॥॥मारुति
तामहीप्रपितामहप्रितवपितामहप्रपिता
महमातामहप्रमातामहंन्दुआनवदवत
श्चांन्दमासनंवृद्धिपूष्यंवृद्धि॥॥नन्दिकंश्च
वायंन्दमासनंवृद्धिपूष्यंवृद्धि॥॥आवाः
यार्घ्यंन्दमासनंवृद्धिपूष्यंवृद्धि॥॥विष्णुश्चाः
दवश्चावेष्टानवदवश्चायादार्घ्यंवृद्धि॥॥मारु
पितामहीप्रपितामहप्रितवपितामहप्रपिता
महमातामहप्रमातामहंन्दुआनवदवत
श्चायादार्घ्यंवृद्धि॥॥नन्दिकंश्चवाययादार्घ्यंवृ
द्धि॥॥आवायार्घ्ययादार्घ्यंवृद्धि॥॥नाम॥

[illegible]

काः सवधीप्रदं साः सवसिमानसाः गपिया गा
कनकं वाक्कावावदवावगाः। प्रसिगादूनः
मधानं, यूर्यं गत्यः प्रसीदथा। प्राद्वरुमिंगयाः
ध्यात्वा, ध्यात्वा दर्वगजाधनं। गार्यावेवनमस्कारं
गतः प्राद्वरुवर्तुनं॥ **ॐ** गययेनमः॥ **ॐ** गजाध
नायनमः॥ **ॐ** प्रपुत्रीकाकायनमः॥ **॥ लीखन**
हाय॥ ॐ अपविष्टं प्रविश्या, सर्ववर्तुगगापिवा
। यः स्मरन् प्रपुत्रीकाकां, सवाक्कायं गवः प्रविशति॥ ल
खविद्य॥ **ॐ** गन्नादवीनरिक्त्य, आधारुवंपुपी
गत्य॥ गीयावलिष्टवनुन॥ **॥ विष्टवर्तुस्त्वानवि**
य॥ पूववायनमः॥ मनवायनमः॥ **॥ मारुगप**
वाक्कापस्त्वानविद्य॥ (गीयीयद्यासवीमध्यासावि
शीविजयाजयादवसेन्नास्वध्यासाहा, मागवालाः
कमागनः॥ कृष्टिपुष्टिगथायूष्टिआत्मदवत्वया
सह। न न न नि नि द व य, व स द व मु हा ग व॥ क
यावविजयावेव, सकेतं दानमारुका॥ मापुपित
महीप्रपितामहिपितृवपितामहप्रपितामहमाः
गामहप्रमातामहवृद्धिप्रमातामह००० द्यायानव

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ॐ दमासनं दक्षिणं दक्षि ॥ दानमास्तु
ॐ दमासनं दक्षिणं दक्षि ॥ ॐ नन्दायैः
नमः ॥ ॐ रुद्रायै नमः ॥ ॐ सुमनसायै नमः
॥ ॐ सुगीलायै नमः ॥ ॐ सुकृणायै नमः ॥ ॐ
जगन्मायै नमः ॥ ॐ पर्वतमायै नमः ॥
॥ ॐ वज्रायै नमः ॥ ॐ तारुण्यायै नमः ॥ ॐ
कीर्त्यायै नमः ॥ ॐ वैकुण्ठायै नमः ॥ ॐ वाजिनै नमः
॥ ॐ वन्द्यायै नमः ॥ ॐ वामनायै नमः ॥ ॐ स
हाल्लायै नमः ॥ ॐ गलायै नमः ॥ ॐ विष्णु
व्यायै नमः ॥ ॐ एकदंतायै नमः ॥ ॐ मुखवा
हनायै नमः ॥ ॐ लीलायै नमः ॥ ॐ गजव
क्रायै नमः ॥ ॐ यनप्रहारायै नमः ॥ ॐ सिद्धि
विनायकायै नमः ॥ ॐ गंगासुतायै नमः ॥ ॐ या
वर्गीयदद्यायै नमः ॥ ॐ उन्नयनायै नमः ॥ ॐ विष्णुव्या
यै नमः ॥ ॥ श्रीसूर्यायै नमः ॥ ॐ वसुधैतिरुद्राः
वक्रायै नमः ॥ ॐ गजवक्रायै नमः ॥ ॐ
मानव्यायै नमः ॥ ॐ वक्रायै नमः ॥ ॐ वक्रायै न
मः ॥ ॥ ॐ वक्रायै नमः ॥ ॥ ॐ वक्रायै नमः ॥ ॥ ॐ वक्रायै नमः ॥

मानस्य श्रीं वृद्धवताय नमः ॥ वृद्धवताय नमः ॥
मः ॥ ४ ॥ वृद्धवताय नमः ॥ ॥ ५ ॥
मारुतः ॥ (गोत्रीयमासदीपधा. सावित्रीविजयाज
या ॥ ददसे न्यासधासाहा. मातृभालाकमातृवः ॥
दक्षिणदक्षिणधायुद्धि. अस्तदवन्तयासहानन्द
नन्दिनिदवन्तवसुदवन्तुगवः ॥ अयाववि
जयावव. सकेन दानमारुका ॥ ५ ॥ ॥ मारुत्या
दानमारुत्यापूर्य्यवृद्धि ॥ ॥ कपिलादिपर्व (गा
मारुत्यापूर्य्यवृद्धि ॥ वक्रा. यद्युमारुत्यापूर्य्य
वृद्धि ॥ गणपतिविद्युत्तमायपूर्य्यवृद्धि ॥ वहिदा
नीगणायपूर्य्यवृद्धि ॥ ५ ॥ ॥ मारुत्यापूर्य्यवृद्धि
॥ दानमारुत्यापूर्य्यवृद्धि ॥ ॥ प्रतिपूर्य्यवृद्धि ॥ ॥
पर्ववन्दनयज्ञादीनं पूर्य्यपूर्य्यदीप ॥ हलपूर्य्य
गान्धूलपूर्य्यदीपनेवयादिसेकला ॥ अक्षिदासु
॥ ॥ मण्डलकवा ॥ ॥ ॥ वंदितासिवसिष्ठन
विष्णुनिगनजान्धना. कपिलहवमपार्य्यजन्म
यादत्तनं कर्तुं ॥ गावाममागतानिस्त्र. गावापूर्य्य

उदहिम। गाथा मङ्गल यथादि गवामध्वसम
ह॥ सोमरुची उगन्नागा दवानाममृतप्रिया
हानवनदायासी ००॥ प्रियार्थवदहिम॥ अमृतः
समधनान्नान्न सोमरुचीना कथाविलि ०० दयास
पहानत्वं ०० दं सखतमूरुमं ॥ अयदहिप्रियं
हि प्रयादहिगवमम। पपुप्रष्टिविवदहि धनं
दहिगवमम॥ सर्वमङ्गलमाङ्गलिव सर्वार्थसं
धिक। सनप्यप्रविक्क। गोविनायायतिनमामुत
॥ गलानीगलपतिवन्द मजवकुमुलावन। प्र
नारुवउमनिरी वलंदागाविनायक॥ मनावीक
सिद्धार्थपूजिगालर्षिमह॥ सहप्रविष्टरुवद
व गलाप्रियतयनम॥ गोत्रीयदामवीमधासाः
विशीविजयाजया। दवसेन्यास्वधास्वाहा मातृभाला
कमागव॥ दहिउद्विगथापृष्टि आसदवत्त्वयास
ह। नन्दनचिनिदवध्ववसूदवसुहर्गव॥ जया
प्रविजयावेव सदेतदावमारुका॥ ०० वृद्धवः
नमसुख्यकलदवानमानम॥ लुनदववसर्व
षी पूजापृष्टीनमास्तुता॥ अरुगन्नादि॥ ॥ म०

नमस्तुभ्यं कलदवानमानमः। नदववसर्व
षीं पूजायुक्तं नमास्तुते॥ अथ गन्धादि॥ ॥ म
लयास्नानं कुरु॥ गान्धर्वप्रसादा रुवंतु॥ ॥ वा
समास्तु सलखनहाय॥ सुधाक्षतमस्तु दीपानि
न्याधनयध्वविक्षाः। लिलिधदानिव। पर्वदायुष
। स्यनिदीर्घमायुषवायुयात्॥ अर्पामध्वनिगा
दवासर्वमस्य प्रणिहिता॥ वाक्कलसकवप्यस्तः
निवश्राधारुवलुगं। निवाश्रापः सस्तुः॥ ॥ वि
दवस्तुपुष्पराजनविद्य॥ लक्ष्मीवसतिपुष्प
लक्ष्मीवसतिपुष्पवाचन्यासस्तदा। गच्छ सीमस
ददास्तुम॥ अर्कगंवास्तुमयुष्यं। गान्धर्वविक्रव
स्तुर्ह। यय। ययस्तुवयुष्यं। गरुदस्तुसदासमः॥
अर्कगंदर्पवास्तु॥ विधेदवादिदस्तुमन्त्रमूद
कमदीयमस्तु॥ ॥ अथामृदिष्टुगं। अथवा
अस्मात् ॐ न्यायानवदेवगस्तुः सस्तु॥ ॥ पू
जालिखेत्तुपुर्वमस्तु॥ अस्मात्। गार्गनावद्वर्गा
आयुवावाग्यमस्तुयजनधलेनेक्षीः सनक्तिम

गानवृद्धिबन्धु ॥ ॥ मण्डलसल्लखदायका ॥ दागा
नामाविवर्द्धनायकाः सन्ततिववव । प्रदायनाम
व्यगमः द्रुह (धय) वनामुम ॥ अन्नः नावकवि
(धवि विविध) लरु मयि । लरु र्वजातिकालः स
उष हस्तपानिच ॥ एगदवागिरव ससु । मायावी
आकथं वन । द्विपदः ससुः ॥ यदानीं गानिर्वव
युक्तिर्वव ॥ एतां एतां सखाः अगिषः ससु । स्वा
हं वावयिष्यावावागां ॥ ॥ वयव समुदाव (गम)
ससग ॥ ॐ आधरु पित्तनागरु कृमावयुक्कव
उं । य (ध) हयवृषासग ॥ ॥ धाउग माल्लसल्लखदा
व ॥ हायक ॥ ॐ दुर्जिदेहनी वसर्गयुर्गययः की
लालयविश्वर्ग । स्वधासुसुयगयपिरुन ॥ ॥
गमायधाम्ना ॥ गगवृद्धिका निवर्द्धन ॥ ॐ नका
हर्णवल्लगहर्णवैष्णवीमिदमहर्णवल्लगमूलिकला
मियन्ननिष्ठा यममाथानिचखानदमहर्णवल्ल
गमूलिकलामियन्नसमानायमसमानानिचखान
दमहर्णवल्लगमूलिकलामियन्नसदन्ध्यामसव
न्निचखानदमहर्णवल्लमूलिकलामियन्नस

दमहर्नद्वलगमूक्तिलामियनमसदन्धयमसव
न्धनिवखानदमहर्नद्वलमूक्तिलामियनमस
जागायमसजागानिदखानात्तुर्थांकिलामि॥ ॥
वलि॥ **ॐ** अथावदधिवकापुथमादेव्यादिषक्त।
अहोयसर्वज्ञमूयन्मवाययाउधान्माधेनावी
४पत्रासूव॥ ॥ **दीप**॥ **ॐ** नजासिपुक्रमस्यमृतः
मसिधामनामासिपियन्दवानामनाधुन्यवय
जनमसि॥ ॥ **मगाहागालवायुजा**॥ **ॐ** अग्निर्
दादिवःककृत्यतिःपृथिव्याअर्या।अथापूवता
५सिजन्वति॥ **ॐ** स्वजविष्ठदापुषान्वःपाहि।**ॐ**
७धीगिवःवक्त्रागाकमूगनना॥ ॥ **मगाहाग**
लवासगुनखाय॥ **ॐ** स्वस्तिनामिमीतामग्निना
रुगःस्वस्तिनयदिति नर्बलः॥ स्वस्तिपूषाअस्र
वादवाउनःस्वस्तिवावापृथिवीसूवगुना॥ स्व
सूयवायमूपपुवामहेसामस्वस्तिरुवनस्यय
स्यतिरुहस्यतिमर्बगलस्वस्त्यस्वस्त्यआदित्य
सासुवगुनः॥ विष्णवेदवानाअथास्वस्त्यदेवान

आवसुवनिः स्वस्त्ययदवारः अरुवनिः लुलवः
स्वस्त्ययस्वस्तिना नूदः पात्यहसः॥ स्वस्तिमिषा
वक्रुषा स्वस्तिपथानवनिः स्वस्तिनव्वन्दुः स्थानि
यस्वस्तिना अदिमगृषिः स्वस्तिपन्मनूववम
सूर्यावन्दुमसाविवाः पुनद्वधगाद्यगा जानता
संगममहिः स्वस्त्यनना अमनिष्ठनमिमहद
रीयायसंयवतानीः अस्तनद्यमिन्दुसखंसमस्त
वृहयः (गाना) मविमावृहमः॥ अर्यहामूवमीगिदि
गीजयंयस्वस्त्या अर्यमनसावगा अययनपालि
१॥ नलीययय स्वस्तिमवादस्वरुयन्ना अमु॥ ॥
सतवृन्दिक्कावायः॥ **विननादिः॥ स(गाना) दुंय**
दयकवृहृहृनूदगा अरिसूर्यः सर्वतदिन्दु
नव(ग)॥ तयलिचिष्वदगीता अतिष्टुदसिसूर्यः **वि**
धमासासिनावनः **वि** त्वजविष्ठदा पुषा नवः पादि
१॥ लधागिनः नकताकमूतन्मना **वि** दधिकाप्रा
आषाषजिक्का नयस्यवाजिनः॥ सूर्यसिनासूवाक
नम्यलअथ ५ वितावन्तः **वि** नमः॥
मूवायवमया लवायवनसः॥ कवायवमयस

[illegible]

दक्षिणां तु स्य महं संप्रदद ॥ ॥ मारुपितामही
 प्रपितामहीः पितृवपितामहप्रपितामहमाता
 महप्रमातामहवृद्धिप्रमातामह० न्यायानव
 देवगस्यायथापद्धदक्षिणां तु स्य महं संप्रदद
 ॥ ॥ नन्दिः केषवाय आवाप्याययथापद्धदक्षि
 णां तु स्य महं संप्रदद ॥ ॥ वाचन ॥ ॐ स्वस्तिरु
 वीतावर्णा स्वस्ति ॥ अरुणमधादि ॥ ॥ वराहवर्ण ॥ ॥
 यास ॥ ॐ आय गोः युग्निवक्रमीदगदन्वागवय
 वः ॥ पितृवंप्रययं स्वधा ॥ ॥ कोतापी ॥ ॐ जानव
 दसस्तनवामसामसमातीहगानिदहातिवदः
 ॥ सनः प्रविशततिदग्मलिविनाववसिधूदवि
 नायग्निः ॥ ॥ गलया ॥ ॐ गलानीत्वागलयति०
 हवामहप्रियाणां स्वाधिययति० हवामहनिधी
 नां स्वानिधियति० हवामहवशामसाग्रहमजाः
 निषकृधमात्त्वमजामिषकृधं ॥ ॥ द्रवापिस्वा ॥ ॐ
 समखदद्याधियासदक्षिणयावृद्धमासास
 आयः प्रमावीमः ॥ अहं गववीनं विदयतवदवि
 संप्रद ॥ ॥ अवादि ॥ ॐ आहवणवृद्धमाव

आयः प्रमाणीमः इन्द्रं तव वीरं विदय तव देवि
संहिता ॥ **॥ ह्यदि २ ॥** तुं आरुक्क न व ऊ सा व
हमाना निवर्गय न स रं स र्य व ॥ हि न ल्प य न स
विगात्र (ध न द वा या नि शु व ना नि य ल्प न ॥ **॥** तुं आ
ग न्द नि वा त न्द न्द ना या य का नि नी ॥ त या न स
न्वा रं त स या नि वि रं ता रि वा क णी हि ॥ **॥** विष्णु वः
वा ठ स सि विष्णुः ॥ न क र्क विष्णुः ॥ स्य व सि विष्णु ॥ **॥** वा
सि विष्णु व स सि विष्णु व त्वा ॥ **॥** तुं तु ह स्य त अ ति अ त
थी अ र्हा य स दि ता नि क म उ स ऊ न व ॥ य द्वा द य
क व स ॥ स त प जा न त द स्मा स द वि ल (ध हि वि रं
॥ तुं अ म्ब अ सि क अ म्बालि क न मा न य नि क ल्प न ॥
स स र्य ल्प क ॥ स रु डि कां का म्पी ल वा सि नी ॥ **॥** तुं न
मः ॥ रं रु वा य व स या रु वा य व न मः ॥ रं क वा य व
स य र्क वा य व न मः ॥ नि वा य व नि व र वा य व ॥ **॥** तुं
जा न व द स ॥ **॥** तुं ॐ मं द वा अ स प त्र ० स रु र्ध्व म रु
ग रु या य स रु रं र्ध्व या य स रु रं या न वा अ य न्द
ये दि या य ॥ ॐ स स स र्य ल्प न म सी वा ऊ सा सा २

[illegible]

स्वास्तिनाष्टरुस्यातद्वत्ता ॥ ॥ चदन ॥ ॥ यदय
कचवृहदं नूदगा अरि सूर्यः ॥ सर्वत दिनुतः
वस ॥ तत्र लि विष्वत विमता क्रानि विष्वमाकासि
भावन ॥ ॥ अग्निवाय ॥ आयुर्वल विपूल मसु
सुख प्रियासु आनाय कामव सुधा तव कीर्तिवसु
धर्ममतिन सुविपुल यासु सनान वृद्धि मनवा
कासिद्धिन सु ॥ सिद्धि वसु क्रिया वसुः ॥ वृद्धि वसु
धनागपायुद्धि वसु ॥ वीर वसु ॥ निवसु गृह तव
सर्व विद्ये प्रणमन सर्वगान् कर्म पुंरु अयुष
वकासं वलसु सनक्तिवर्धनं सुख सर्वसां वाचः
वादीनां सर्वदा कल्याण मसु ॥ विष्वद वादि वल
प्रसादा रुवन्तु ॥ ॥ न्यासविकारा ॥ विमर्जनी ॥ क
पिलादिपर्वण मारुत्या वक्राणां यक्ष मारुत्या ग
णपति विष्णु वायवर्हि दानां गणेशा धी सूर्या
य यष्टयति रुद्रा वकाय गवूना वायणा यमा
नव्वनी ॥ सुद वताये ॥ सुद वताये ४ वद्वाना
गना ऊर्या वात ॥ मारुत्या दान मारुत्या सर्वस्व
स्तनवा मारुवन्तु ॥ ॥ वात ॥ मारुका मादथ स

[illegible]

न कर्तुं यत्प्रसाजं न स यथाति ॥ श्रीमद्वैद्यसमु
द्राक्तं कर्मपदनिहिता नन्द्याकिं सूरीमा. सुवि
न्नायं वरुणं कलकलगतं यं वरुणं चान्नयदं
। यत्त्वायां यं वरुणं चान्नयनं नयि वरुणं तत्त्वाताममु
लदं सौष्ठवं जनतस्य. नमति पुनर्वरुणं वरुणीक
ऊर्ण ॥ ॥ वन्द्यं सदा सकलकालिकं सावर्ण्यं. क
शब्दं नय कया लकदस्य माला. खद्वाङ्ग खद्वा
वन्द्यं ककाय दस्य दस्यं विरुव नयव
नयमा ॥ ॥ सिद्धिं नयुक्रियानं वृद्धिं नयुधनं
गमः। पृष्टिं नयुगानी नयुगानि नयुगदतव ॥ सब
विष्टिपुणं मनं सर्वगानि कनयुगं। आयु पृष्टव
मयलक्ष्मी सनक्ति वरुणं ॥ यथावा पृष्टावा
कवर्णं वरुणं वरुणं। तद्वद्विद्विधाहृणां. गानि
रुव वरुणं ॥ पृष्टं कर्तुं न स नयथाति ॥ ॥
विनय आचमन ॥ जा आत्त तत्त्वाय स्वाहा ॥ जा
विद्या तत्त्वाय स्वाहा ॥ दूगिव तत्त्वाय स्वाहा ॥ स्त्र
यार्थ ॥ अथादि ॥ वाक् ॥ यजमानस्य कार्तिक

वृत्तायाय नमः कुरु प्रीत्याय नमः ॥ व
र्त्तनं वीर्यं कुरु प्रीत्याय नमः ॥ व
दिमध्यावसानं नमः अग्निप्रय विरुचिर्त्तं ॥ मेम
लादीपिर्त्तं कुरुत्वा सावित्रादेवमूर्ध्वं वृत्ताय वक्तु
वृत्तः ॥ ५ ॥ वृत्तामहा मारुतुर्त्तं वृत्तः ॥ वृत्तामहा मारुतु
लमारुतुमहा मारुतु वृत्ताय नमः ॥ पूष्यं नमः
॥ ॥ उन्नमस्तु नमः ॥ अरवस्तु मस्तु लाक्षावत्वा
कथं न वृत्तावर्त्तं ॥ तत्तदं दलितं यं न गच्छेत्तु
वृत्तं नमः ॥ उन्नमस्तु नमः ॥ उन्नमस्तु नमः ॥ उन्नमस्तु नमः ॥
वृत्तं नमः ॥ उन्नमस्तु नमः ॥ उन्नमस्तु नमः ॥ उन्नमस्तु नमः ॥
वृत्ताय नमः ॥ वृत्ताय नमः ॥ वृत्ताय नमः ॥ वृत्ताय नमः ॥
॥ अर्ध्याशा सनाय यादृका ॥ स्वात्मा सनः ॥ कुरु
सनाय यादृका ॥ पा॥ अर्ध्याशा सनाय यादृका ॥ किलि
२ विश्वका कुरुत्तं ॥ अर्ध्याशा सनाय यादृका ॥ २ ॥ वृत्तामहा
या मरुतु वृत्तं ॥ कुरुत्तं वृत्ताय नमः ॥ ३ ॥ द
गच्छान निवर्त्तनी ॥ वृत्ताय नमः ॥ किलि २ विश्वका

धाम्निवदधन॥कुंरुवधायकुंरुवधाय॥२॥
 गद्यननिवधने॥वदलमकुलकुलमवतलका
 दुरुटसाहा॥॥वनीगान्यास॥॥किलि२विचका
 कल्लयेद॥अमुयदुट॥४॥कव(मावने॥न
 भारगवनिदलकमलायेकाधीअंगुषायायाद
 का॥कुं कडिकायेकलदीयायेकाधीगऊनीला
 याद का॥काकाकुं वववनिखकुं धीमवसा
 र्यायादका॥धानअधानअधानामुखिवदु
 यायेकाधीअनामिकायायादका॥काकासह
 नात्रिकायेकाधीकनिषायायादका॥किलि२
 विचकाकेल्लयेदःधीकलनलपुषायायाद
 का॥कन्यास॥॥नमारगवनिदलकमला
 येकाउदवकाययादका॥कुं कडिकायेकल
 दीयायेकाधीवववकाययाद का॥काकाकुं व
 ववनिखधीददिलवकाययादका॥धानअधा
 नअधानामुखिवदुयायेकाउदववकायया
 दका॥काकासहनात्रिकायेकाधीपण्डिमवका
 ययादका॥किलि२विचकाकेल्लयेकाधीववाप

[illegible]

पूजा॥ श्रीगणेशाय नमः॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय॥
पञ्चतन्त्रं पञ्चतन्त्रं कुरु २ वसु २ दसु २ घातय २
विद्यातय २ विधि २ दुः ३ रुट् कोऽपि महाकोमा
निकाविद्ययादकां॥ ॐ नमो श्रीगणेशाय नमः॥ किं न
वानन्दधीमहाविद्याया ॥ ॐ नमो श्रीगणेशाय नमः॥
व्यपावुरुहाविद्याया ॥ दकां॥ ॐ नमो श्रीगणेशाय नमः॥
याथयादि॥ **आवाहनादि॥** यानि म २ दाद
गयत॥ ॥ **रुनपुष्टि॥** ॐ नमो श्रीगणेशाय नमः॥
धीकांसे॥ ॐ नमो श्रीगणेशाय नमः॥ ॥ ॐ नमो श्रीगणेशाय नमः॥
नन्दगकिरेववानन्दवीयाधियतय ॥ ॐ नमो श्रीगणेशाय नमः॥
आत्मनयेवन्दनयादकां॥ ॐ नमो श्रीगणेशाय नमः॥
अकर्तयादकां॥ धीवीवरुसमिद्वययादकां॥
ॐ सर्वजनमाहर्तयादकां॥ ॐ नमो श्रीगणेशाय नमः॥
वपुष्यादकां॥ विन्दुयकसांयादकां ३॥ ॥
ॐ नमो श्रीगणेशाय नमः॥ ॥ **आवाहन॥** धीमहि वसुधैव कुटुम्बकम्
वानककुमयदनिहिगानन्दगकिमूलीमास्तुष्टि
न्यायवपुर्कलकलगतयवर्कवान्यवर्क
। वस्वावापवकान्यपुनत्रपि वपुर्वततत्त्वतामपु

लटं स ॥ ८ ॥ अ न न न न न स ति उ न व न न न व व पी
क हा ॥ १ ॥ ॐ वं आ वा रु धि वा आ वा रु या मि ॥ ॥ अथ
पंच वलिं द या न ॥ वलि पा न ३ ॥ ॐ स यू ना स ना
य या द का ॥ श्रीं श्रीं क ल य उ व रु क ना था य या
२ ॥ ॐ न वा स ना य या २ ॥ ॐ ज (धो) प्र स न दी प द रु की द वी
म हा धीं क क य पा ल य व लि ॥ ॐ सिं हा स ना य या दूः
का ॥ यां आ गि नी र या या दू का ॥ व लि ॥ ॐ ज य क वि
आ गि नी नां पी ० आ. क रु जा स रु जा. या ग जा ग रु
जा क ल जा. स दा रु जा य क वि आ गि नी नां र व व नी
र व नी. (गा) व नी उ का रु नी. क्ष रु नी. अ रु नी. व रुः
म अ व रु का रु न वा रु नी नां ति य गा मि नी नां य
(था) य य नी नां व लि ग रु २ म म सि दि क रु व रु दू दू
दू रु ट स्वा हा ॥ व लि ॥ ॐ ज ध ना स ना य या दू का ॥
ॐ ज धू सि दि वा मू (धु) व नी या दू का ॥ व लि ॥ ॐ ज मू
गा स रु ना य या दू का ॥ ॐ ज गं गी गं गी (गं) गः (गं)
पी क ल ग (धु) व ना य या दू का ॥ व लि ॥ आ वा रु ना
दि ॥ रु रु नी. द रु. या नि वि रु. ग रु मू रु द रु य रु
॥ ज य ॥ (धो) स्वा हा ॥ श्रीं श्रीं स्वा हा ॥ यां स्वा हा ॥ धू स्वा

श्रीकृष्णलिंगपञ्चनाथपादुका ॥ वलि ॥ श्रीवाहन
 दि ॥ मऊनी, दलु, यानिविन्दु, गजमूखादशयित
 ॥ ऊष ॥ (ॐ स्वाहा ॥ श्रीं स्वाहा ॥ यां स्वाहा ॥ श्रीं स्वा
 हा ॥ स्त्रीं स्वाहा ॥ स्वः ॥ (मैय्या पूर्णकृमात्रंग ॥ ग
 लतत्रहिर्गं कुरुपंथागिनी ववामुष्टावपु नूपा
 द्द्विगतलयहर्नविद्युनाथंग (॥ ११ ॥ पूव्यायाधूप
 दीपाविषममनूरिध्वविनारुषिगात्री, वक्रसं
 पूष्टकांनामरिसतलदातुकिमूकिप्रदाता ॥
 पञ्चवल्याचनविधनसर्वयवियुक्तमनु ॥ न
 यम ॥ नमः श्रीनाथाय ॥ नमः श्रीसिद्धिनाथाय ॥
 नमः श्रीकृष्णनाथाय नमानमः ॥ ॐ नमः ॥
 वलि ॥ ॥ वलिमश्रावहन ॥ श्रीसंवत्समपुत्रा
 न्कृष्णमयदनिहिरानन्दशक्तिमूलीमासुर्विन्वा
 यवशुक्लत्वकलकलगरं पञ्चकीचान्मषद्वी
 यत्वावार्थवकान्मन्यूनत्रपिवशुर्नगतत्वतामपु
 लदसंशुक्तनगसं, नमसिपुत्रवर्धनवर्धनी
 कृष्ण ॥ ॐ श्रीवाहयिष्यश्रावहयामि ॥ नवा
 सनायपादुका ॥ मयूबासनायपादुका ॥ सुभा

[illegible]

॥ श्रीवक्त्रायलीपादका ॥ कमाहः वनापादका
॥ वं कामात्रीपादका ॥ वं वेष्मवीपादका ॥ वं वावा
हीपादका ॥ वं वृन्दायलीपादका ॥ यं वाममुखे
पादका ॥ गं महालक्ष्मीपादका ॥ वलि ॥ ॥ वैज
अद्यानं काथया न कोथा न द्या न न न रूं दुं सर्वत
॥ सर्वसर्वकं रूं सः कां नूद नूपका ॥ पादका ॥
वं वैवस्वतकुडिनीश्रुं लेलाकरवर्षादीकामा
रुद्रावनीक्रोमुं महाकारुकाविणीले सो सः प्री
पादका ॥ वैज नमारुगवत श्रुं कुडिकायेकांकी
द्वंद्वनलिखद्यान अद्यान अद्यानामुरवीकांकी
किलिशिविष्टपादका ॥ वैज दां आनन्दगकिरेव
वानन्दवीनाधियतयम् ॥ वै पादका ॥ ध्य
तनं वलि ॥ रुद्रया वि ॥ या ध्यानशियाभ्रति
॥ वैज टं उंटं लंकां वे ॥ कवीदवीपादका पू
ऊयामि ॥ मय ॥ वै ॥ वलि ॥ आवारुनादि ॥ यानि
मूर्धादर्शयत ॥ विन्दुप्रिय ३ ॥ ॥ अवसरकर्त्तक
याता ॥ वैज नोजमार्ग (गणेशवीपादका ॥ न सम
तं (गणेशवीपादका ॥ वलमार्ग (गणेशवीपादका ॥ ध्या

[illegible]

पापय पादका ॥ वलि ॥ ॐ ॥ अकिनी पादका
 ॥ मां नाकिनी पादका ॥ नमो ॥ ॐ ॥ लाकिनी पादका
 ॥ ॐ ॥ कां काकिनी पादका ॥ ॐ ॥ मां साकिनी पा
 दका ॥ ॐ ॥ दां हाकिनी पादका ॥ ॐ ॥ वलि ॥ ॥
 दां जयाद ॥ ॐ ॥ वी पादका ॥ दां विजयाद वी पा
 दका ॥ दां अजिताद वी पादका ॥ दां अयनाजि
 ताद वी पादका ॥ दां उमनीद वी पादका ॥ दां
 रुमनीद वी पादका ॥ दां साहिनीद वी पादका
 ॥ दां आकर्षणीद वी पादका ॥ वलि ॥ ॐ ॥ अथा
 यदा ध्यायदा ध्यायदा नक्तं द्युं द्युं सर्वतः स
 र्वसर्वदं दं सः ॥ दां नृपद नृपदः पादका ॥ ॐ ॥
 ॐ वद कदिनी द्युं ॥ लाया कर्षणी दां कामा रु
 दावनी को मुं म ॥ हाकार काविणी ये सो मः
 धी पादका ॥ ॐ ॥ नमो नमो गवत द्युं कदिका ये दां
 दां द्युं वद वलिखदा व अथा व अथा वा मुखी द्युं
 द्युं किलि २ विश पादका ॥ ॐ ॥ दां आनन्द ग कि
 रुं वानन्द वी नाधिपत यम ॥ ॐ ॥ धी पादका
 ॥ वलि ॥ ॐ ॥ अथा द्युं वलिखदा ॥ ॐ ॥ अलि ॥ ॐ ॥

कां कौं दूँ द्यौं क्षणपालाय पादकां ॥ ३ ॥ वलि ॥ व
उरु ॥ अ वू वाहनादि ॥ यानिमखी ॥ विन्दुयय ३
॥ ॥ अथ दीपाक्षवलि विषयः ॥ यानिमखी ॥ विन्दुयय ३
वलि ॥ ॐ कौं कौं कन्यदीपमनाहवा दवी विष्णु
क्षणपालया वू दकां ॥ ॐ खौ खौ सिद्ध
वदीपकनादवी अगस्तिकक्षणपाले पादकां ॥ ॐ
ॐ गौं खौ दीपपुष्पकानि दवी वलुनाथक्ष
णया वू लयादकां ॥ ॐ ॐ ॐ कर्णदीपयवन
वनादवी उक्षवाजक्षणया वू लयादकां ॥ ॐ
ॐ ॐ ॐ समखदीप विरुदवी गणपतिक्षण
पाल वू पादकां ॥ ॐ ॐ ॐ कर्णदीपवली द
वी महाजिह्वाक्षणपाल वू पादकां ॥ ॐ ॐ ॐ
ॐ उडियानदीपकालनाथी दवी महालुपुक्ष
वू णपालपादकां ॥ ॐ ॐ ॐ जालंधवदी
प. कालिनी दवी महाजि वू क्षाक्षणपाल
पादकां ॥ ॐ ॐ ॐ एकपाद दीपसूरुदाः
दवी विष्णुक्षण वू पालपादकां ॥ ॐ ॐ ॐ
पूवदीपसूरुटादवी धांक्षक्षणपालयाद वू

पादकी॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ द्वापसूरुदाः
दवी विद्या नक्षत्र ॥ ॐ पालपादकी॥ ॐ नमो भगवते
पुनर्द्वीपसूरुदा दवी धां नक्षत्र पालपाद ॥ ॐ
की॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
क्षेत्रपाल ॥ ॐ पादकी॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
पद्मामनी दवी वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ ॐ पादकी॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
क्षेत्रपाल ॥ ॐ पादकी॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
मदं द्वाप दवी कृष्णक्षेत्रपाल ॥ ॐ लपादकी॥ ॐ
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
पाल ॥ ॐ पादकी॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नादवी ॥ ॐ विपादक्षेत्रपाल ॥ ॐ लपादकी॥ ॐ
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
क्षेत्रपाल ॥ ॐ पादकी॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
क्षेत्रपाल ॥ ॐ लपादकी॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
पादकी ॥ ॐ लपादकी॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

नी॥३॥ रुद्रकाली मूरुडाव रुद्रहीमा मूरुडि
का॥ द्वाविंशत मनुमा नृरा करु कोयाल धावि
ली॥४॥ द्वाविंशे नामाहा याग्नि पुष्क मूलावगा
निनी॥ द्वाविंश याग्निनी म्मावलिं गट्ट २ साहा॥ ॥
जंज मूरुज न यापक मूरुय वूंडा वावसु (धेव वा
वूंनु मूरुलिं यडल्का म्मा डुष्मा पुमय मूरुदन॥१॥
॥ ममूक ० क काय य ० ला पा देव दष्टक ॥ **वे** वा
वत य डी घा म्मा डी वधी ॥ सथा य न॥२॥ मूरुक
मूरुध वा कू य क मल य मवान न॥ ॥ ग मूरुव (धेव
य ० वा र ० य पुधा न क॥३॥ द्वाटा था पा ऊटा
लाखा मका वा ० रुट य व ० ट क पा लि सथा वान्म
० ० व व न्म य था म न॥४॥ ट रुक (धेव ० ली कान्तः
सुठि रु सुवि न सथा॥ द्वा नु वा ध न द (धेव नाग क
क ० ० य व पु वान॥५॥ रुक्का वा वी व सिं ह य रु क
टा म य रु स न॥ **यि** ग ना वी न व (धेव वं ल म्मा ०
व स न सथा॥६॥ पु क उ पु ० व जाला म्मा सना मा
दू दू क सथा॥ क या न क मूरु य व ० ग न क य पाल
ड दा द मा ॥७॥ य ० ग द ० मूरु वी व स न स ० क

उवाल्का ॥ १॥ पावर्णविहीनास्तु, क्षणपालस्य
 उद्धृता ॥ ८ ॥ एकलिङ्गवर्द्धकान्, मणालेन रु
 यावह ॥ महालक्ष्मीवनधान, कालासूखावस
 सदा ॥ ९ ॥ एकवृक्षवटवाथ, विशालवदनाव
 मृगाद्यप्युहावास, यद्यखण्डजलाम्बवः ॥
 १० ॥ समसहविधाबोद्यः पर्वतमननसदा ।
 निमग्नवलिप्रवाह, निधानमलिरुद्धकः ॥ ११
 ॥ नमस्कृतानाथका, यत्नवाटसूकासूकः ॥ अ
 नल्पवर्णविद्या, दयानमधूकनः स्मृतः ॥ १२ ॥
 वृष्टः प्रसिद्धावीर्याः पालयीत्वास्मिताजगता
 नृक्षसदाकाल, वलिपूजा निवदयत ॥ १३ ॥
 वत्सप्रसन्नपाला, द्विजायाष्टकनवलि । स्ख
 गनप्रदिवस्वावाविवलिकीर्त्ति ॥ १४ ॥ निर्य
 प्रिकाविदत्तानः कथादाहं नवजना ॥ १५ ॥ वव
 नार्पिणकणास्य, पिङ्गरूपिभलावनाः । दक्षकवा
 लाश्रयः कपालकनकाक्षला ॥ १६ ॥ कासील
 वन्द्यारवण, मृगालिमीनरुद्रुषाः । प्रथिवसे
 कथाकृत, दीपेन्द्रगुणुलेनथा ॥ १७ ॥ राविगान्त

[illegible]

गुंगः। लो कूल गाल धनाय वलि ग्ट द्वा २ स्वाहा ॥ क
महाकनवीन मम नाधि पतय वलि ग्ट द्वा २ स्वा
हा ॥ द्यौं। सिद्धि चाम पुष्य विवलि ग्ट द्वा २ स्वाहा
॥ आ ॥ काग वात्रिणी सव। ने स्वा वलि ग्ट द्वा २ स्वा
हा ॥ सर्व स्वा रुत ल्यः सर्व ल्यः पिगा वल्यः सर्व
स्वा ०० दद वना स्वा वलि ग्ट द्वा २ स्वाहा ॥ आ वा रु
नादि ॥ आ नि मूर्धा द ग य त ॥ वि न्द व ३ ॥ ॥ धू
प ॥ दिव्य गं ध समाय कं सर्व द व धिया व दं ॥ आ ध
य सर्व द वं वां धू पा यं ध नि ग्ट द्वा २ ॥ दी प ॥ म
ध का। म हा ग उ सर्व ध नि मि या प दं ॥ स वा अ र्थ
त न अ ति धी पा यं ध नि ग्ट द्वा २ ॥ ने व द्य ॥ अ न
म हा स व दि यं व सः व दिः स म नि नी ॥ म या नि व
दि तं रु क्क ग्ट द्वा न प व म ध वी ॥ ने व द्य ग्ट द्वा २ द
वी रु कि म अ व ली क व अ रु म्प रु व द वी प
व न व य वां ग ति ॥ रु ल य र्थ ता म्बु ल रु ल धू प दी
प ने व द्य न म ॥ ॥ ज प ॥ धी स्वा हा ॥ ३ ॥ धी स्वा हा
हा ३ ॥ लो स्वा हा ३ ॥ वा स्वा हा ॥ १४ ॥ द्यौ स्वा हा १४
॥ द्यौ स्वा हा १४ ॥ धी स्वा हा १४ ॥ धी स्वा हा १४ ॥ स्वा हा ॥

[illegible]

वटन्या। आधावसावगानं कलकमसकली
मधुलास्तनयुर्व, संस्कान्तिरुमलयधुमल
कयकनिष्ठुपुद्धिः गिवाग्ने॥४॥ म(प्रविष्टीम
रुमियसत्रणनरुयं प्रत्ययं स्वाधिकारं संसु
रुयं न तसो न मतयु न वनं रु वरं धीकजं
॥५॥ ॥ वन्द्यसदा सकलकोलिकसावस्त
न, कुरुष्व न वनकपालकदम्बमाला, खदा न
खद्वनदं टककायहर्ष, दानस्ति रं गिधुवन
धनवन्त्रराया॥६॥ ॥ धीमासनवदकनाथं
गियसिद्धः स्कन्दः सनादिगणकाननधूमकः
७॥ गीत्रीसूतः गकिमूकवितादधानः धायाः
सुनकवसनः गिखिवाहनानः॥८॥ सिद्धवसा
दमदमूर्द्धिनकाकृष्णनिर्जिह्वा नाद्यनयः
याधवदहलक्ष्मीः विजयकथाववनमादकया
कसूर्य, पायसनागलयनिः सकलार्थदाता॥
९॥ ॐ ह्रीं क्लीं नीक्रियासासुनवननमितासाधि
यासङ्गलाख्या, सा। गीत्रीसावदूर्गगवनिस्त
रुगामारुकावधुम॥ सावकासावविष्णुः य

८॥ ॐ ह्रीं क्लीं नमो भगवते वासुदेवाय ॥ मंगलाशु
भिलाखासागोवीसावदूर्गगवगिस
रुगमाहकावधुमः सावकासावविष्णुः य
हगलसकलारेववीक्षपात्तासानकानक
नूपाविविधयुलयगाथागिनीलीनमामि॥ २॥
॥ ॥ दुकावान्तर्यामादाहसकमनरुआवाध
वधानिलिमावायव्याद्याजिनाकुगलिगक
बलिनाविन्दनादाद्यकः॥ नियन्त्रमाध
नाजकधनमकलारेववासलसूरिः पाया
दवानवासासकलपुत्रवनारेववः धीक
ऊ॥ ॥ ॥ वकापीकमलन्दसोमवदनीमाह
धवीलीलयाकोमानीविप्रदयलासलकवीः
वकायधवेकवीवानाहीधनधानधयनमः
खीचिन्दीववकायधामसूलागललाधरेवव
गलावकनुनमाहका॥ ॥ ॥ मधविमामनसु
मदमदिसमूखीवकायधमदीकावकाधायः
पुपुखनदिगपलवधीपयागादिक्षु।यः
काकाविंशकालवसखसहसखवका॥ ॥ ॥

मूत्रनीसाष्टाविंशतिरुदाः क्रमयदसहिता
ः पालुदाविंशतिरुदाः ॥ १२ ॥ खड्गवामनु सिद्धिप
नयनविंशतिरुदाः खड्गवामनु सिद्धिप
पूजावलिपलिगुडयं सुसुनं सर्वविद्यां दीः
द्यौर्ष्यं कविर्निधिप्रसुटिकां पादकां काम
सिद्धिं सर्वविन्नादयन्तु फलपिसिगनगारेन
वैष्णवकाः ॥ १३ ॥ ॥ यामात्रकादिनशासनरु
नपानिगामरुमात्ररुगामी विष्वाष्टीवात्रनयाय
थुनत्रजयनामखलात्रसारादवात्रवसुता
रुवत्रवत्रकसुभद्रवत्रकगारात्रसामग्रीकः
ह्रिकाखाविनत्ररुतवसाहानदिव्योद्यमाद्यं ॥ १४
॥ वन्धूकयति सुन्दरी शिनयनी सिंहसनी सुन्द
री सर्वषामिह सर्वगुरुद्वर्णं पुष्पावधारुः
वितां यस्माष्टादश्यालियद्विमलावीं द्वात्र
लार्थप्रदं तान्दवीमहिषासुत्रप्रमथनिष्ठम् ॥
वीनमास्यं ॥ १५ ॥ काकाः ॥ कर्मावधः कद
दनः कायः कविः कुरुवा कव्यका कजनादनः
कनकनः कन्दः कदवासनाः कल्याणालरुटी

वीनमास्यहं॥१७॥काकाः॥कःमीवः॥कद
हनः॥कापः॥कविः॥कृत्वा॥कवका॥कजनादनः
कतवनः॥कन्दः॥कदवासूत्राः॥कल्यानालरुटी
नटप्रसूतिः॥प्रीतिद्विधा॥गधनः॥क्रीडानाटक
नायकाविज्ञयतदवामहारुनवः॥१७॥॥म
हाकालमहाबोदं॥महाकफाञ्जनपरं॥तूलवृ
षंमहाकार्यं॥करुकापालधविर्णं॥१८॥खड्ग
टधर्यदव॥शिनर्षकालनपरं॥नमस्तुमहा
काल॥गुरुर्गहावकावर्कं॥१९॥माकः॥पुथाविः
पदपदगानपहायावगान॥धकयस्यप्रवृत्त
कवः॥वकापीवकाकल्पः॥देखाकुंदप्रदित
गिलः॥कृत्वावकावः॥सायंदयारुवहुकव
गां॥धयसवपुकायाः॥२०॥यादवीमधकोटरु
यमथनीयावपुमृष्टादिनी॥यामायासहिषास
वकयकवीयावकवीजायया॥यामागुम्हनिउ
म्हयेयदलनीयादवदवाययासादवीममव
कददिकः॥कुञ्जयपुजयावकायु॥२०॥उल्
न्नाम्हककल्किकापनिगताप्रीतिद्विलम्बी॥पना

कयुनसुटिकन्दकन्दधवलानिः॥१७॥यायाप
हा॥ससाबाष्पवदः॥खयकदरुनिनिकम्यनस
वद्या॥पीमन्य॥मूर्खावृजाद॥कुजाधतमिता
यावुवः॥२१॥आगायुनयायहात्रिलिङगदूःखो
यविद्यावली॥क्रा॥हालिदेविमात्रिलिसदासं
वमाकात्रिणी॥पयस्कत्रिलिकात्र॥विजयगया
लायसंवात्रिणी॥स्त्रीसंशानिगयामरीदूरुलदा
पीमिद्विलक्ष्मीनमः॥२२॥यासानककानिकदुवा
स्त्रिगलायवृया॥सामाकवद्विजिप॥थादवमध
संस्त॥विचरविहविषयारवविलीनरावास्वाः
रावर्तवैयवसामिकाली॥२३॥चैत्यस्यवगवास
नस्यदधनीम॥अललाटयुकीसोकीकानिमनष
गात्रिविप्रस्यगवतीसर्वदा॥पयसीविप्रवाह
दियतिविवा॥स्त्री॥गाः॥सदाहः॥स्त्रिगा॥द्वियान्नः॥स
हसापदमि॥रिदद्य॥अतिमयीवाद्ययी॥२४॥मा
याकृ॥उलिनीक्रियामधुमतीकालीकलामालिनी
मातङ्गीविजयाजयारुगवतीधविः॥गिदागा॥क्रुः
वी॥गकिः॥गकववन्तराजिनयनीवाग्यादिणीः

या कृष्णालिनी क्रिया मधुमती काली कलामालिनी
मातङ्गी विजया जया रुगवती यद्विः शिवामातङ्गी
वी। शक्तिः शक्रवदम्बररुचि नयनी वाग्मादिनीः
रुद्रवीक्षी काली शिष्या यत्र यत्र मयी माता कृ
मात्रीत्यसि ॥ २५ ॥ नमस्तु यद्वद्वनि सिद्धिलक्ष्मी
महोजसः पत्युर्निवास महादेवी वाजलक्ष्मी नमा
स्तुते ॥ २६ ॥ ॥ वैष्णवी विष्णुमाया ॥ देवदूता
ननामिनी रुद्रिनी स्यामवधूः श्रीगवुजाप्रविर्
स्मिता ॥ शिववक्त्रगदाहस्ता वज्रवक्त्र विरूषिता
॥ वक्रवाला महाक्रीडा नानावल विरूषिता ॥ रु
द्रोपव्या ॥ सदा रुद्रितधा विष्णोः स्वर्गमर्थवयाता
ल स्ति तिबुधनसंस्मिता ॥ श्रद्धासमहाक्षुः क
यम्बुदक्षवासिनी ॥ निरुक्तिपी ० नेमस्य नावाय
नी नमास्तुते ॥ २७ ॥ धूमार्कदीकनर्णगलिगन्ध
विजया शिपिनर्णकलाली रुद्रवक्त्रवक्त्ररुद्रिनी
तदयत्रवक्त्रः शीकृष्णलक्ष्मीकपाली वक्रान्तमन्त्र
सासासवक्त्रवि विविधमादिर्गन्धतमसंस्तुता मातङ्गी
पी स रुद्रवक्त्रगणपतिविरुता नो मि उक्तिरुनाथ ॥

॥२॥ पिनाद्वै न क कं किलिकिलिन वलं किकि
 नीमालजालं दक्षसंकलशर्वसकषद्वं वा उह
 र्द्वनादं सुखकंसिंहनादं वनवनवनवनवनवन
 ध्यामस्तत्त्वस्तथसाधिनार्थं सकलरुयद्वं क्षु
 यालं नमामि ॥२॥ ॥ पूर्वद्विष्टयस्त्रिमासव
 णिवापूर्वादिवागिमावाक्षु (गावद्वस्तुर्न नि
 लयद्वं नस्तनाथायव ॥ मगानध्वनमादिदववि
 रुजः ॥ गाकादिद्वषापदा निष्पानद्वमयीप्रमाद
 मुखदावल्यादिपूजाविधि ॥ यथावाप्यदावाप्य
 कवचं रुवतुवात्रपं ॥ नद्वद्वेवविधाहृत्पं ॥ नाकि
 रुवतुवात्रपं ॥ अन्यगवर्पनास्त्रिष्टुमवसवनं
 ममस्तसाकावननरावननद्वसंयवमध्वनी ॥ १
 वृत्तिस्तस्यसमायं ॥ ॥ नयला ॥ चैव प्रीतिः प्रसा
 मनस्तुवतुयद्वव (पारुववामनुसूत्रिष्टु
 यष्टु ॥ मनस्तुगलपुवद्वद्वकालाकयालाद्वनीन्द्रा
 ॥ नक्षायकाः ॥ सुगीकाः ॥ पिरुगलसकलासागना
 ॥ क्षुपाला ॥ यागिनीयागयकाः ॥ सुलजस्तवव
 खववाः ॥ पानवतस्त्रिवनु ॥ पिवनुद्ववनाः ॥ सदा

[illegible]

य। ॐ ज कि लि २ वि च का क णी य दः अ सु य रु ट
॥ ३ ॥ अ सु य रु ट पू ष्या क र त व ला क्षि य त ॥ ॐ न सो
रु ग व ति जा द द या य या द का ॥ द द य ॥ आ त म ली
न क ल ॥ म हान मू द या वि स र्ज य त ॥ वै द्यो ऽं
दुं द्रो द्रो दुं णी द्रो वै स रु न वा सा रु व नु ॥ द्रो अ
व म नी य स्वा हा ॥ ध र वि द्धि रु न व ल वि वि धि
॥ ॥ व लि रु य ॥ ख व स चा ट व लि वै क वी पी धि
स ॥ उ व स चा ट व लि त्रा उ क ल क स ॥ ॥ द थ स
चा ट व लि ग ली उ ली र व स ॥ ग ण धा रा यि ना य स
॥ व ट क थि ३ द मा रु स ॥ दू व द नू द का द र वा पि
खा रु य ॥ ध र व लि रु य ॥ ॥ धा य या अ नू कः
न माल का रु द य ल द य क व लि वि य ॥ ॥
नू द व लि म हाने व य या द या वि द्ध रु न व ल वि
ध र्म रु लि रु वा ॥ ॐ वि द्धि रु न व ल वि वि धि स
मा क ॥ ॥ व स द वि धि ॥ पू जा रु ॥ व त ॥ सि ध
न ॥ अ रु त ॥ का (गा उ ॥ स्नान ॥ सि धान ॥ वा ३ व लि
वा ॥ ध न ॥ धू पा स ॥ उ ज म का य ३ ॥ ॐ गाल व क
न ॥ गाय ॥ ध र वा स ॥ स सा ॥ क र्ण प ना का रु ३ ॥

न॥ श्रुतं॥ का॥ ग॥ उ॥ खान॥ से॥ धान॥ वा॥ ३॥ धलि
 वा॥ धन॥ ध्यास॥ ऊ॥ ऊ॥ म॥ का॥ य॥ ३॥ ॐ॥ गाल॥ ध॥ क
 न॥ गाय॥ य॥ न॥ वा॥ स॥ स॥ सा॥ क॥ प॥ ना॥ का॥ ३॥ ३॥
 य॥ च॥ य॥ ना॥ का॥ ४॥ श्रु॥ द॥ वा॥ न॥ पा॥ ना॥ ३॥ द॥ वि॥ जा॥ ३॥
 ॥ व॥ लि॥ पा॥ ना॥ ३॥ ॥ गाल॥ जा॥ १॥ म॥ ला॥ नि॥ ड॥ ना॥ १॥ द॥ न॥
 १२॥ नि॥ ड॥ ना॥ १२॥ द॥ द॥ पा॥ ना॥ १॥ ध॥ न॥ वि॥ वि॥ द॥ न॥ ल॥ व॥ लि
 या॥ व॥ स॥ ध॥ वि॥ धि॥ ॥ ॥ ॥

ग॥ त॥ १॥ य॥ ध॥ ग॥ द॥ सा॥ ध॥ न॥ ॥ क॥ ग॥ द॥
 य॥ धि॥ म॥ ॥ ग॥ म॥ य॥
 उ॥ रु॥ न॥ ॥ ग॥ म॥ य॥
 द॥ क्षि॥ ल॥ द॥ न॥ ॥
 द॥ र्ध॥ द॥ धि॥ ॥

॥ क॥	पूर्व दधि	गामय लिंग
उरुन (गामय)	म॥ ध॥ द॥ द॥ व॥ क॥ य॥ न॥	दक्षिण द्युत
	पश्चिम (गामय)	

न॥ ध॥ क्षी॥ न॥ ॥ ग॥ त॥ १॥ य॥ ध॥ ग॥ द॥ सा॥ ध॥ न॥ ॥ श्रु॥ या॥ द्य॥ श॥ श्रु॥ या॥ दि
 ॥ वा॥ क॥ ॥ य॥ ऊ॥ मा॥ न॥ स॥ का॥ लि॥ क॥ व॥ ना॥ या॥ य॥ न॥ य॥ ध॥ ग
 य॥ सा॥ ध॥ न॥ क॥ उ॥ द॥ श्रु॥ या॥ य॥ ध॥ श्रु॥ य॥ न॥ म॥ ॥ ॐ॥ श्रु॥
 क॥ प॥ न॥ न॥ उ॥ सा॥ व॥ र॥ मा॥ ना॥ नि॥ व॥ ना॥ य॥ न॥ म॥ र॥ म॥ र्थ
 वा॥ दि॥ व॥ य॥ य॥ न॥ स॥ वि॥ ना॥ न॥ थ॥ ना॥ द॥ वा॥ या॥ ति॥ नु॥ वः
 ना॥ नि॥ य॥ ध॥ न॥ ॥ ॥ य॥ न॥ न॥ म॥ र्थ॥ ना॥ स॥ ॥ ॐ॥ श्रु॥

[illegible]

कांते सधा जातव कुाय नमः॥ **ॐ** गंधर्वादि
नाथानि स्य यथा कवीश्वरी॥ **ॐ** वनी सर्वरुता
नीता मिहाय दय प्रियी॥ **॥ इत्युक्तं गानं ॥** **ॐ** इ
वं वा सदा व व कुाय नमः॥ **ॐ** अग्नि मूर्द्धा दिवः क
कृत्यतिः पृथिव्या अयं अपा ५ वता ५ सि उन्नति
॥ **॥ दक्षिणे च गानं ॥** **ॐ** इति न अद्याव व कुाय न
मः॥ **ॐ** न जाति पुत्र मस्य स त मसि धामना मा
सि प्रियं दवाना मना धृष्टं न व यजन सि॥ **॥**
पूर्व दक्षिणे ॥ **ॐ** इति न तत्त्व व व कुाय नमः॥ **ॐ**
दक्षिणा प्राश्ना या व जिह्वा व य सदा जिनः॥ **सू**
हिना सखा क व स्य ल अय ५ वि ना र्थत॥ **॥ म**
दीर्घं ॥ **ॐ** इति न न्नी गान व कुाय नमः॥ **ॐ** यय
ः पृथिव्या ययता स मी प्रयया दिव्यं न विज्ञयं या
धाः यय स्वगी यदि ॥ **॥ सीतु मर्थ ॥** **॥ न्नी गान व**
गानक गायत्री ॥ **॥ अग्नि गान स यति ग वृक्षा ॥**
ॐ अद्याव द्वा पद्या व द्वा पद्या व न न द्वा द्वा
सर्वतः सर्व सर्व द्वा द्वा मः॥ **ॐ** इति न न य द्वाः पाद
को॥ **ॐ** इति न न स्या रु न मसि द्वा न स्य र्क रु स रु

नीलवर्णस्य जगत्सदन्यसिद्धवृक्षस्य जगत्सदन्य
नमसिद्धवृक्षस्य जगत्सदन्य नमोऽसी ॥ ॐ नमः ॥ १ ॥
रुवायवमया रुवायव नमः ॥ १ ॥ रुवायवमयः
रुवायव नमः ॥ निवायव निवृत्तनायव ॥ ॥ पूजा
यादार्कधनं मूढद ॥ सर्वं गायत्र्या जपत ॥ १० ॥ ॥ श्री
लादने ॥ ॐ सम्यगामि समायता प्रधीरिः समा
प्रधयात्रसनस ० ववगीर्जगीरिः ॥ वृथना ॥ ॥
विरागी ॥ ॐ रुः स्वाहा ॥ ॐ रुः रुवः स्वाहा ॥ ॐ ॐ
पुजालिः ॥ स्या ५ सूवीना दीनः स्या ४ धाधः ॥ न
य्यैजाभायादिस ० स्य ४ न्माया कथय्य पिउ
भायादि ॥ ॥ दवराग ॥ ॐ रुवः स्वाहा ॥ ॐ ॐ
वावगी (धनमगी हिरुग ० सूर्यमवसिनीमः
नवदशास्या ॥ यस्कृता नादसी विष्णुवर्गदाधर्थ
पृथिवीमरिगा मयूखे ॥ स्वाहा ॥ ॥ अग्निराग
॥ ॐ रुः रुवः स्वाहा ॥ ॐ ॐ दं विष्णु विचक्र
मण्डानिद (धयदं समूह मस्य वा ५ सूत्रस्वा
हा ॥ ॥ यजमानराग ॥ ॐ जनयत्ये स्वास्यो
मीदम (गन्निदमग्नीषा मया निष स्वाद्यमसि

मंजुशानंद (धयदसमूहसंस्थिता ५ सूत्रा
हा ॥ **यजमानशागः** ॥ **कुं** जनयत्येखासंयो
मीदमग्निदमग्नीषामयाविषत्वाद्यमसि
विष्वायून्प्रथमादन्प्रथमावृणमरुतगिः
प्रथमाग्निस्तत्त्वमादि ५ सीदवस्त्रासविः
गात्रप्रपुत्रविषिष्विनाकः ॥ **सर्वगया**
यग १० ॥ **प्रतिष्ठा** ॥ **कुं** मनाकृतिरुषितामाक
स्यष्टदस्यतिरुमिमंननात्त्वविष्यय ०
समिमंदधातुवि (विदवासं ह मादयनामा
३ प्रतिष्ठा ॥ **यजमानः** ॥ **कुं** निर्मलं कामदूपायवक्
ज्ञाननिवर्तन ॥ **उद्यतपापयं सानी** विनयवक्
दूषि ॥ **अश्वगंधादि** ॥ **यं वगया** चनवि (धनस
वैयविपूर्तमस्तु ॥ **गंगागामयलिंगदूजनं**
कुं कोसदागिवायनमः ॥ **ध्यानः** ॥ **रावय** (मा म
यलिंगं गिवं सर्वरू दूषि ॥ **वक्ता** पुत्रायि नंद
व माग्नेयं रुव (पथनं ॥ **कुं** स्वस्तिनं नृदा
द्वयवाः स्वस्तिनः पूषाविष्ववदाः स्वस्तिनस्का
अश्वविष्वनमिः स्वस्तिनावृहस्यतिदधातुः ॥

[illegible]

न॥ ॥ मिथुना ॥ तुल्यं उ विष्णुदा पुत्रा नृः पादि
॥ ५८ ॥ धीगिबः वक्षता क मू र न न ना ॥ ॥ अक्षत
॥ तु अक्ष न मी स द न क क व प्रिया अ दू प तः ॥ अ
स्ते ष र त्व धान मा विद्या न विष्णु या म सी या जा नि
नृ त ह नी ध ॥ ॥ अक्ष म का ॥ तु य ह ॥ प वी रं प व
मी प वि रं प जा प रं यः ॥ स ह उं प व क ता अ य
क म य प्र ति मं व पु रं य ह ॥ प वी रं प व म सु रं
उ ॥ ॥ ॥ पृथ्वा ॥ तु याः ॥ रु लि नी या अ रु ला अ यः
व्या ॥ य य व्या ॥ य प्र षि णी वृ ह स्य ति प मू ता कानाः
मू अ र त्व ० ह मः ॥ ॥ पूजन ॥ तु नि वा ना मा सि
स्व धि ति क पि गान म रू २ अ मू मा मा हि ० सी ध नि
व र्त्त या म्मा य व न्ना या य प उ न ना य वा य स्या
वा य मू प जा स्त्राय मू वी या य ॥ ॥ ॥ धूप ॥ तु धू
व सि धू र्व धू र्व रं धू र्व रं या स्मा न धू र्व ति रं या स्मा
न धू र्व ति रं धू र्व रं व यं धू र्व मः ॥ ॥ दीप ॥ तु
न जा ति पु क म स्य मृ त म सि धा म ना मा सि ॥ प्रियं
य वा ना म ना धू र्व न्द व य उ न म सि ॥ ॥ ने व य
॥ तु अ न्न प रं न र्त्त ना द म्म न सी व स्य पु षि ण

[illegible]

ननु यथाप्रतिष्ठार्थः पञ्चगव्यालं गृह्य कलः
स्यः ॥ ॐ तिष्ठ गव्यासाधनविधिः ॥ पञ्चगव्यन
सकलगाहाय ॥

ननु अथ पाचनं कर्तव्यम् ॥ आपः दीवक
गव्यालं सिद्धार्थं तिलतुलं कोलयवसमायुक्त
मर्कटगंद्यमयम् ॥ यथा देवस्य मूलन्यासः ॥
ॐ ईं हूं अन्नं नमो किं अन्नं यदहं ॥ कवः ॥ धनं ॥
ॐ ईं सः सर्वं कृताह दयाय नमः ॥ ॐ ईं धाम्नि
किं निवसस्वाहा ॥ ॐ ईं सः ॐ अनादिवाध निखाय
वीर्य ॥ ॐ ईं हूं स्वर्गं कवचाय हूं ॥ ॐ ईं अल
कं किं ननु यथायवमहं ॥ ॐ ईं हूं अन्नं नमो
किं अन्नं यदहं ॥ ॐ तिष्ठ गव्यासाधनं ॥ ॥ धनं
नं अथ पाचनं पूजे ॥ आवाहनादि ॥ धनं मूला ॥
॥ गव्यालं गव्यादि ॥ ॐ ईं हूं निवृत्ति कलाय हूं
धी गत्वा यदहं ॥ सयाजा गाय हूं हूं ॥ ॐ ईं य
तिष्ठा कला गत्वा विष्णु ववामदवाय हूं हूं ॥ ॐ
ईं विद्या कलाय नमः गत्वा यदहं ददताय अथ

वायकूट्ट॥**ॐ** कं गानिकलाय वायनत्वाय ॐ
 ष्वन्नदं वनाय नत्वाय वायकूट्ट॥**ॐ** कं सान्नी
 नीन कलाय आकाशनाय गदागिवदं वनाय
 ॐ गानायकूट्ट॥**ॐ** कं आकाशवक्त्र॥ ॥ यथाद
 वस्य गायत्री आत्मानं सिं वथं सर्वं वसुध॥**ॐ**
 कं सः अमृता गाय विद्वद्भ्यः सुखं अयाय धीमहि
 नन्ना ननु यथा दयात् ॥ ॥ **आत्म ब्रह्मा** ॥ आत्मन
 निश्चयत् ॥ आत्मनं वन्दनं नमः ॥ आत्मनं निवस
 यन् नमः ॥ आत्मा सनाय नमः ॥ आत्ममूर्तये
 नमः ॥ **ॐ ति हूत उद्गात्मा ब्रह्मा** ॥

गगागिवदं स्त॥ वामदक्षसर्गं ध्वजं नन वदुः
 नम्रं लिखित्वा **ॐ** ॥ पूजनं यथाद वस्य मूलमनु
 ८॥ **ॐ** कं सः अमृता गाय महादेव वाय नमः धाव
 ७३॥ **आवाहनादि** ॥ गतं पूर्य निवस निधाय ह
 स्तनं सर्वं निलययत् ॥ स्वयं दवत्वं हावयच्च ॥
ॐ ति गिवदं स्त विधिः ॥

गगात्मानं खड्गसाधनं ॥ सध्वं यदकाशं द्वाकाशं

सुनसुवाङ्गलपयग॥स्वयंदवर्त्तकावयव॥

ॐतिगिवहसुविधिः॥

गगाङ्गानखङ्गसाधन॥संयत्तकाथकाङ्गगङ्ग

य॥ॐमहा३०००द्यावदाहसुःषाठगीगमय

दुहु।रुनुयायानेयासां दक्षिणववयदिष्वा

॥यथादवस्यमूलमकुलपूजन॥ॐकंसः॥

अमृतीगमहाहैववायनमः॥ॐकंसःद्वय

यनमः॥ॐकंसःनिबसखाहा॥ॐकंसःनि

खायेकीषट्॥ॐकंसःकववायद॥ॐकंसः

नचययायवषट्॥ॐकंसःअच्छायदृष्ट॥

पूनःअथावाङ्गलजयग॥जौङ्गीङ्गङ्गःपेसू

न२धाव२गनगनद्वपवत२यवत२कह२वम

दम२घातय२विद्यानय२विधि२ङ्गदृष्टकां

महाकीमाविकाविद्ययादका॥सकथा॥वाम

हसुधुत्वा॥ॐतिङ्गानखङ्गसाधनविधिः॥

अथमपुपलमिग॥धर्म॥ॐगायत्रीमकुलम

पुपनिनीकली॥ॐकंसःअमृतीगायविद्यहःसु

सुप्रसादधी महित नाना जय वाद यात ॥ ॥
पृथीरुद्राय ॥ ॐ पृथिवी नमः ॥ ॐ स्थाना पृथि
वी नारुवानिद्रुनालि वगनिः यद्वानः समस्य
था ॥ ॥ नथरुद्राय ॥ ॐ नथाय नमः ॥ ॐ सक्त
युक्त निवथ मवक्त मका श्रुजा विष्वगि सक्त माना
। रुपा निवक्त मउव मउव नम नवयपा विष्वगु
वनानिक्तसूः ॥ ॥ कृष्णाय नमः ॥ ॐ रुद्रसिद्ध
मित्रस्य दिति नसि विष्वधाया विष्वस्य रुद्रनस्य धरु
॥ पृथिवी यद्व पृथिवी दृ० ह पृथिवी माहि० सीः ॥
प्रासादयुक्ता ॥ ॐ वास्त्राधिपतय वक्त लनमः ॥ ॐ
पुत्रा मक्षमिद वृत्तस्य पागाय नत्वा वध्रास्य विनाः
सुसवा । अतस्य यानो सुदृगस्य लाके अविष्ट कस
हयस्यादधामि ॥ ॥ कृष्णाय नमः ॥ ॐ विष्ट कस
तद्वृत्त नमः ॥ ॐ ललरुय ॥ दक्ष लाजा ॥ वामवीहि ॥ म
ये माकुनी ॥ ॐ उनी ॥ ॐ गानिकाय सुख्य नम
॥ ॐ वीहयस्य मयवाय ममावाय मतिलाय म
सूनाय मखलाय मप्रियद्रवय मलावय मग्याम
काय मनीवानाय मगाधूमाय मसूनाय मयः

ॐ वीरुयथमयवायममाषाथमतिताथम
मूनाथमखलाथमप्रियङ्गुवथमलवथमग्याम
काथमनीवायाथमगाधूमाथममसूनाथमयः
रूनकल्यनाम॥ ॐ द्रष्टृकायलक्ष्मीमूर्त्यनमः॥
ॐ स्वस्तिनः॥ नमो वृद्धयवाः स्वस्तिनः पूषा विश्व
दाः स्वस्तिनस्तार्क्ष्यं अविष्टनमिः स्वस्तिना वृद्धस्य
तिष्ठतः॥ ॐ सर्वविष्टविनाशाय वक्ष्मणेन
मः॥ ॐ वक्ष्यन्तान् यथमप्यनास्ताद्विमीक्षतः सु
ब्रह्मक्षेत्रज्ञावः॥ सर्वज्ञा उग्रमा अस्य विष्ठाः॥ त
थयानिदः॥ तथ्यवीवः॥ ॥ वीरुयथम॥ ॐ
वीरुयथमयवायममाषाथमतिताथममूना
थमखलाथमप्रियङ्गुवथमलवथमग्यामाका
थमनीवायाथमगाधूमाथममसूनाथमयः रू
नकल्यनाम॥ ॥ लाङ्काक्षयम्॥ ॐ त्वं उविष्ट
दाष्टुषा नृपादिः॥ अथीगिरिः वक्ष्मणाकमूतः
नमः॥ ॥ अथ योर्गृहीत्वा मूलकलगायता
गच्छतः॥ ॐ नमो दावर्वन॥ वद॥ ॐ वायुवा
याद्वेत्तययूषानाद्वयदातयापि वासुतस्मान्ध

सा अहि विर्यं ॥ ॥ यामा वयति काङ्ग नि ॥ ॥
 यं वग वना रूपा ॥ ॥ यं विर्य वीर्य वीर्य सवि
 उर्वः ॥ यम वद न्यना म्यद्विद ॥ ॥ सूर्य न मिहि ॥
 न स्य न य विर्य य न य विर्य य न स्य य न स्य ॥ य न
 न च कयं ॥ ॥ अथ यथा दक न सिवनं ॥ ॥ स
 मि विर्य न स्य यडा ययः सन्तु ॥ ॥ मि विर्य न स्य
 सन्तु यामा वयति वयति विर्य ॥ ॥ यं वयति वयति
 वयति यय ॥ ॥ न च दक न वल गद ॥ ॥ वीर्य मिदम
 दक न वल गम किला मि यन नि यय म स्या निः
 ययान दम दक न वल गम किला मि यन स माना
 यम स माना नि ययान दम दक न वल गम किला
 मि यन स वयति यम स वयति नि ययान दम दक न
 वल गम किला मि यन स जा ता यम स जा ता निः
 ययाना रूपा किला मि ॥ ॥ माला यय ॥ ॥ यी
 यय न लक्ष्मी यय न्या वद वा यय (यन दक यालि न
 यम यि नो व्या दक ॥ ॥ नि यय न स्य यय ॥ ॥ सव
 ला क म ॥ ॥ यय न्या वद वा यय (यन दक यालि न
 न ॥ ॥ यय न्या वद वा यय (यन दक यालि न

ततः शिवगणकि वलासनपूजा ॥ शिवदामगणकि
 दक्ष ॥ ॥ न्यासः ॥ ॐ शं रुट् अननकगणकि अमुय
 रुट् ॥ कव(ग)धनं ॥ ॐ शं सः सर्वज्ञाता ददया
 यनेमः ॥ ॐ शं व्यासदिफिशिवमखाहा ॥ ॐ शं ॐ
 अनादिवाध शिखाये वीषट् ॥ ॐ शं दं स्वगणकद
 वायदं ॥ ॐ शं अलूकगणकि नञ्जयायवषट् ॥
 ॐ शं रुट् अननकगणकि अमुय रुट् ॥ ॐ तिकेवा
 नन्यासः ॥ ॥ धनं अर्थयात्रपूजा ॥ आवाहना
 दि ॥ धनमूखादगथित ॥ ॥ आत्मपूजा ॥ आत्म
 नसिं वयत् ॥ आत्मनवेन्दनं नमः ॥ आत्मनपूष्यं
 नमः ॥ आत्मान आत्मासनं नमः ॥ आत्मसूर्ययन

मः॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ पूजनी ॥ ॐ शं वल वृष
रासनाय नमः॥ ॐ शं वल सिंहासनाय नमः॥ ॐ
शं सः दद्याय नमः॥ ॐ शं सः निवसखाहा॥ ॐ
शं सः लिखाये वोषट्॥ ॐ शं सः कवचाय दू॥ ॐ शं
सः नकुञ्जयाय वषट्॥ ॐ शं कट्जसूत्राय दू॥ ॐ
निदद्यादिषु (गनसंयुक्त) ॥ वद ॥ ॐ गत्वाः
आमीमीवक्षणावन्दमानस्तदाऽऽस्तु यजमाना
द्विर्विंशत्युत्तमानावन्तः पुरुषाश्च द्वापुः ॥ ॐ
मान आशुः प्रभाषी ॥ ॐ ददस्मत्वाप्तविशुः प्रस
वन्निनावाकुर्यात्पूष्पाहस्तार्या ॥ ॐ वक्ष्यन्तानि
यथर्मयन्तस्तद्विशीमनः सुनवाचन आवा ॥ स
वद्वाडयमाश्रयविष्ठाऽऽतः प्रयानिवऽऽतः प्र
वीवः॥ ॐ विष्ठावन्नाटमसि विष्ठाऽऽनकस्तु विष्ठा
ऽऽनमसि विष्ठाध्ववासि वैष्ठावमसि विष्ठावत्वा ॥ ॐ
नमः॥ ॐ रुवायवमया रुवायव नमः॥ ॐ कवाय
वमयस्तुवायवमनः निवायव निवन्नायव ॥
ॐ धीमालक्ष्मीवन्तविष्ठा मदि० सीः ॐ धियासीरव।
आय० हित्वास्वधितिष्ठति जानः प्रलिनाय महत्तसो
ॐ शं सः कवचाय दू॥ ॐ शं सः कट्जसूत्राय दू॥ ॐ शं सः निदद्यादिषु

नमः कलः यमने ॥ यजमान नजलधार्वाकृत्वा ॥

आचार्यः अर्घ्यपाशादकं नास्यदली ॥ यद्गुणसमुप
पदं दित्वा कानयनं ॥ ॥ नमो ॥ ॥ उं ॥ काला क
पालास्वायूषासन्नदा रुदध नृदार्थं समस्तकर्म
धामयाजसमं धनी ॥ आचार्यो वा नयत्यां ॥ सर्व
विधिनिवादनं ॥ नाथमहं धनीयकं ययं कर्म
समानरुत ॥ यासादक्रियत नृदार्थं यावत्कर्म क
रं सति ॥ यद्गुणसंनदाधाय विद्यानां धर्मनाथ
दायूर्यं सदा सुयसं निधीष्यति वाहयां ॥ ॥ उं ॥ नृद
हर्नं वल्लगदली वै कृती मिदमहर्नं वल्लगमूलिकल
मियन्मनिष्ठा यमसाया निवखानदमहर्नं वल
गमूलिकलमियन्मसमानायमसमानानि वखान
दमहर्नं वल्लगमूलिकलमियन्मसमानायमस
मानानि वखानदमहर्नं वल्लगमूलिकलमियन्मस
वन्धेयमसवन्धुनि वखानदमहर्नं वल्लगमूलिकल
मियन्मसजातायमसजातानि वखानात्कस्यां कि
लामि ॥ ॥ उं ॥ स्वस्तिनामिमीतामधिना रुगः स्वस्तिः
गद्यदिति नवली ॥ स्वस्तिपूषा अमृतादधातुनः स्व
स्तिवापुषि वीरुवधुना ॥ स्वस्त्यवायमूयपवा
सुस्त्यवायमूयपवा

रं अदिति न व ॥ स्वस्ति पूषा अमृता दधातु नः स्व
 स्ति या वा ए धि वी स व हु ना ॥ स्वस्त्य वा य मू प प वा
 म ह स म स्वस्ति रु व न स य स्य ति व रु स्य ति सर्व ग
 णं स्वस्त्य स्व त य आ दि स्या सा रु व हु न ॥ वि ॥ ५ ॥ द
 वा ना अया स्वस्त्य वे ॥ धान वा व स व निः स्वस्त्य द
 वा ॥ अ रु व नि रु रु व ॥ स्वस्त्य स्वस्ति ना व दः पा स्वे
 ह स ॥ स्वस्ति मि जा व व ॥ स्वस्ति प्र ॥ ५ ॥ व व ति ॥ स्वस्ति
 न ॥ ५ ॥ नि ॥ ५ ॥ स्वस्ति ना अ दि त ग ट धि ॥ स्वस्ति य न्ता
 म नू व न म सृ आ व नू म सा वि व ॥ पु न द ध ता च्च ताः
 जान ता म ग म म हि ॥ स्वस्त्य न ना अ म वि व न मि म ह
 ह र्ग पा य सी द व ता ना ॥ अ म न च्च मि नू म र्व म म स्त
 व रु य ॥ ५ ॥ ना म वि सा नू ह म ॥ अ र्य ह म व मां गि वि णं
 ऊ र्य व स्व स्ता ण र्य म न सा व ता र्छ य य न पा लिः ॥
 व णं प्र प थ स्वस्ति म वा द च रु य न्ता अ मृ ॥ ५ ॥ द दि
 णं रु त्वा ॥ गि व क ल णं द दि ॥ ५ ॥ कि क ल स वा म
 स्ता य य त् ॥ ५ ॥ ति व ना म न वि धिः ॥
 त तः स्ति वा स न पू जा ॥ गं ॥ ५ ॥ द क न क ल णं पू व णं

॥ ॐ नमः शिवाय ॥ गय मूलमन्त्रं स्वर्गाय नमः ॥ त
था य नमः ॥ असिद्धा मन्त्रं ध्वनिस्तथा जीका
वः ॥ अलिषामया ॥ वाक् ॥ ॐ सर्वसमृद्धाः सवि
तस्तीर्थानि कुलदवताः ॥ आयातु यजमानस्य दुनि
तद्वयकावकाः ॥ ॐ आपाहिष्ममयातु वस्तनड
ऊर्ध्वध्वजनः ॥ मरुवलायवद्वसः ॥ यावः शिवतमा
वसस्तस्मात्ताजय गहनः ॥ उ सतीविवमातनः ॥ त
स्मात्तु नगमावहायस्य दयाय किञ्चथा आपाजन
यथावनः ॥ ॥ यनः पूर्ववत्तु यजनः ॥ ॐ शंख
सनायनमः ॥ ॐ शंखिहासनोयनमः ॥ ॐ शंखि
सनायनमः ॥ ॐ शंखिवाकिं ॥ हागदु २ ॥ ॐ शंखि
२ ॥ ॐ शंखिनिर्वाक्य २ नमः स्वाहा ॥ दृढतिनिर्वा
दूनिश्चयवर्गः ॥ ॥ धनमूर्द्धादयत्तु ॥ ॐ शिवतुम्
स्वर्गः ॥ ॥ गतः यजनः ॥ ॐ शंखमदागिवायनमः
॥ ॐ शंखकथनमः ॥ ॐ श्वद्वयस्तनप्रथमयनः
स्ताद्विमीमतः सन्वाचनश्रावः सवद्व्याडयमाज
स्यविकाः ॥ गतः यनिवः ॥ गतः यवीवः ॥ ॐ श्विक्ता
वाटमसिचिक्ताः ॥ गतः यविक्ताः ॥ स्यवसिचिक्ताः ॥ ॐ
शिवतुम् ॥ ॐ श्वद्वयस्तनप्रथमयनः

[illegible]

सा स्वाहा ॥ सा ॥ नन्ना वधा सकल गीर्थ कलन यूः
 लं स कृणु यन्त्र वरु गंधी तपू व्यमाली । यरु प्रयाः
 रु विषय मू निरुः प्रगम ली क मू रु निव ग कि
 य रं न मा मि ॥ अरु गंधादि ॥ गि मू ल मू डा द ग य म ॥
 ॥ ॥ नान ख म स म र्व ग ॥ उं ड मा य रु ग नू पा य लि
 ग नू पा य न न म ॥ गं क वा य न म मू रु स र्व नि य रु क
 व र्क ॥ वि रु पा य ॥ उं य (थ दं रु स य त्र न रु ग र्व मू ख म
 दि र्वा । व रु ली य उ ग न्ना थ स र्व धि व व व त्र य ॥ रु गः
 ली ग क व र्क ॥ य र्म क ग नि व ग कि क ल (ग नि य ॥ ॥ वि
 यं उ लि ॥ डौ डौ डू ड ॥ य मू व र द्या व र न व न नू वू य व न
 २ य व न २ क रु २ व म २ द म २ द्या न य २ वि द्या न य २
 वि द्धि २ दू रु ट् को पी म ह को मा वि क्ता वि व पा दू की ॥
 अरु गंधादि ॥ ॥

ग गः यू र्व द्या व यू उ नं ॥ ग य जी म रु ल नि वि द्वा ली ॥
 न्या स ॥ उं ल ॥ अ रु द्या य रु ट ॥ क व (ग ध न ॥ उं ली
 द द या य न म ॥ उं ली नि वे स स्वा हा ॥ उं लू नि र्वा
 ये वो ष ट ॥ उं ली क व वा य दू ॥ उं ली न रु रु य य
 य रु रु ॥ ली रु ॥ य रु रु ॥ य रु रु ॥ य रु रु ॥ य रु रु ॥

द्वययायनमः॥**ॐ** लीगिनेयखाह॥**ॐ** लीगिखा
येवोषट॥**ॐ** लीकववायदू॥**ॐ** लीनजययाय
वषट॥**ॐ** लः अस्त्रायदूट॥**ॐ** लिकवाङ्गनासः॥
॥ धनं न अर्घ्याय पूजो॥ ॥ आसन॥**ॐ** ग
यामीवक्षणावन्दमानस्तदागास्तयजमानाहवि
रिः॥ अहउमानावदू(एहहवाध्वरग० समान
अयः प्रभाषी॥ ॥ अयद्वर्ण॥**ॐ** दवस्त्रासवि
रुः प्रसवविनावाकृत्यापूजाहस्तार्या॥ ॥**ॐ** वि
कवर्ण॥**ॐ** ल्वमानयस्त्रिमाधुसूयनित्वमद्वः
स्त्रमसमानस्यत्रिात्वनस्यस्त्रमाषधीस्त्रनृत्त
नृपगजायसमुविः॥ ॥**ॐ** ईसमंगलद्वावाय
नमः॥**ॐ** द्वावायवीनचस्त्रि(ध्ववगायदन्क। अ
(नउदूयवसाधाम्नायमानाः॥ ॥**ॐ** पथाय
नमः॥**ॐ** यगपंथासविरः पूर्यासावः सुक
गाअनविन्द॥ गरिन्नाश्रयपथिरिः सुगलीनका
वनाः अविबबुहिदवा॥**ॐ** ईनन्दिननमः॥**ॐ** उपन
ः नवाविनः ॥**ॐ** ल्वमनस्यथा। समुजीरुवलुन

[illegible]

॥ ॥ **आवाहनादि** ॥ धूप ॥ **ॐ** धूवसिधूवधूवनेधू
वर्तयास्मानधूवतिर्गधूवर्तवयधूवामः ॥ **दीप**
॥ **ॐ** तं जासिपुक्रमस्य मृतमसिधामनामसिपि
यदवानामनाधूवन्वयजनमसि ॥ **रुल** ॥ **ॐ**
याः रुलिनीयाश्रुलाश्रुयायाथपूष्पिलीवह
स्यतिप्रसूताकानामधूवत् ० हस ॥ **नेवय** ॥ **ॐ**
अन्नयन्नस्यनादकनमीवस्यपुष्पिलः पप्रदा
गात्रं गात्रं ऊर्जनाधूवतिद्विपदवधूवद ॥ **प्रति**
रु ॥ **ॐ** मनाश्रुतिरुषगामाश्रुत्यवहस्यतिर्यरु
मिमननात्वविषयरु ० समिमदधातुविषयद
वासं रुमादयंगामाश्रुतिरु ॥ **सूयतिष्ठावव**
दारुवतु ॥ **जप** ॥ **ॐ** लं स्वाहा ॥ **रु** ॥ **महावीर्या**
महाकाय उदयाहिसहानिबिः विठ्ठायरुनाम
यं सर्वदवनमरुतः ॥ **ॐ** अयं वयं रुतवनदनी
यं सर्वपदपूविनियामितयं दानाविदवस्तिन
लेनसर्ववकाकवध्वं वस्वस्वदिसय ॥ **अरुगन्धादि**
॥ ॐ तिपूर्वद्वानपूजाविधिः ॥

नमः कृष्णलोककर्मकृत्यागः ॥ अथ सिंहासनाधु
पविष्यन् अलिवद्धाप (०) मे ॥ ॐ अग्निदेवार्थकवा
मीनसगलं यत्नं सूर्यं । देवत्वं सर्वविद्यानि । दत्त
माता अदहिम ॥ गिवग किं स्ववृषाय । सर्वलोक
हिताय वा । सुदीर्घपादयुग्माय । न मा सुविश्वम् ॥
हिम ॥ ॥ यनः पार्थना ॥ ॐ वेलाद्ययानि हतानि
सुवनालिवनालिव । वक्रविष्णुगिवेः । सार्द्धं वदन्ति
वन्दुमसदा ॥ दददावनगंधर्वसिद्धवाक् सपन्नग
॥ अथ यामनवागावा । ददमानवमानवः ॥ सर्वम
माध्ववदन्ति कर्तुं वसुधाचिता ॥ ॐ निसिंखा अथ
वज्रना नमस्तुभ्यम् ॥ यथा विधि सिंहासनमपाः
विगतम् ॥ ॥ यजमानपूष्यराजनं कृत्यागः ॥ अथा
दि ॥ वाक् ॥ यजमानस्य कार्तिकवृषायापेनयः
हानस्तु कर्तुं पूष्यराजनं समप्रयामि ॥ ॐ वली
पथीसकलगीर्धजलनयूर्ध्वं । सवृषयन्त्रवरुतं
धनपूष्यमाली । यत्नं पूष्यात्नं विषयमनिरिः प्रगर्त
त्वीकृमृमृतिगिवग किं यत्नं नमामि ॥ धरुपृथीस
पीठं । जलधनकलसंलिगसाकाशं नृपं नक्षत्रं ॥

लीकृमृमृहिलिवगकिप्रतनसामि॥धरुधुधिस
 यी०।उलधनकलसिलिंगसाकागनूपनक्षत्रे॥
 पय्यमालीयहगलकसमेनवन्द्याकवद्वि।क
 कीसकसमडा।उजवनगिरवली।सकयातालया
 दं।सिद्धान्तवदवाक्यं।दगदिसवदनदियलिंगन
 सामि॥सिद्धिप्रसुद्धियावम्।द्विद्विप्रसुधनागमाय
 विप्रसुगवीवयगानिप्रसुगृहृतव॥सर्वविधिप्र
 णमनसर्वगानिकवपुर्ह।आयप्रवकासवल
 क्षीसकतिवधन॥यथावापयहावापाकववर्ह
 वरुवावली।गददेवविधाहृपा।गानिर्हवहुवा
 वली॥पय्यराजनसमर्थयामि॥॥गिवगकिकल
 गादिर्यमदागिवयपय्यसमर्थयामि॥मश्वदा
 यराननदाउ।गाययवद्वदवगायविष्णुपुन्यस
 कसपुल्यपय्यराजनसमर्थयामि॥ ॥

वाक्मननआवमनी॥कौआत्मतत्वायस्वाहा॥की
 विद्यातत्वायस्वाहा॥कौगिवतत्वायस्वाहा॥ ॥

सूर्याय ॥ अथादि ॥ वाक् ॥ यजमानस्य कार्तिक
वशायाय नमः ॥ कुरु ॥ प्रसूर्याय पूर्य नमः ॥ ३
ॐ आ क क्ष न व ज सा व रु मा ना नि व ॥ य न्न नृ तं
म र्त्य व ॥ हि व ल्य म न स वि ता व ॥ थ ना द वा या ति उ
व ना नि प ल्य न ॥ ॥ प्री सु र्या य पू र्य न मः ॥ ॥
उ व न म र्का ने ॥ न्या स ॥ ॐ ईं रु ट अ न न ॥ कि
अ म्ना य रु ट ॥ क व ॥ ॥ ध न ॥ ॐ ईं स ॥ स व क्ता गा
द द या य न मः ॥ ॐ ईं आ म दि पि ॥ गि त्र म स्वा हा ॥
ॐ ईं ॐ अ ना दि वा ध गि रा ये वो ष ट ॥ ॐ ईं ईं स्व
गु ण का य वा य दू ॥ ॐ ईं अ ल्प क ॥ कि न गु ण या य
व ष ट ॥ ॐ ईं रु ट अ न न ॥ कि अ म्ना य रु ट ॥ ॐ
ति क वो न न्या स ॥ ॥ ध त न अ र्च या ण य पू जा ॥ आ वा
ह ना दि ॥ ॥ ध न मू डा द ग य त् ॥ ॥ आ ल पू जा ॥ आ ल
न सि द य त् ॥ आ ल न व न्द न न मः ॥ आ ल न प र्ण
न मः ॥ आ ल न आ ल्मा स न न मः ॥ आ ल न मू र्क य
न मः ॥ ॐ ति आ ल पू जा ॥ ॥ ॐ म हा ३ ॐ न्द्रा व द्वा
ह रु ॥ धा उ णी ग म य रु उ ॥ रु रु पा प्पा न या सा द
धि र्य व व र्य दि ष ॥ अ म क ग वा स रु रु रु ॥ ॥
ॐ नृ क रि म य ॥ ॥ ॐ नृ क रि म य ॥ ॥ ॐ नृ क रि म य ॥ ॥

हस्तः शीघ्रं मयि कृतुः । हस्तं पाप्मानं यासां ह
स्त्रियं वदयं द्विषः ॥ यमकं गवामहस्तं कृत्वा ॥ ॥
ॐ हस्तं विष्टदायुषां त्रैः पादि । १८ ॥ धागि नः नक्त
माकमस्तनमला ॥ लाजारिक्तयनं ॥ ॥ गायत्री मस्त
नमस्तु निनीक्ष ॥ ॐ हस्तः अस्तु गायविष्टहस्त
स्तु अयायधामहिनानं यद्यवाययत ॥ ॥ ॐ य
द्यवायवहस्तं नदवामस्तु हस्तं वयं । अग्निमातस्मा
दनमाद्विष्टान् अस्तु ० हस्तः ॥ यविस्तु हस्तं ॥ ॥
ॐ मानस्तु कस्तनयमान आय विमाना (गा) मस्ताना
अस्तु मस्ताना विष्टः ॥ मानादीनां त्रुदरामिना वधीह वि
विष्टान्तः सदमित्वाहवामस्तु ॥ यद्यवयनं ॥ ॥ ॐ
स्वीहस्तं विष्टं सत्यतिनवस्तु कायस्तु वस्तु ॥ ॐ हस्तं
नं ॥ ॐ हस्तं यामिष्टं कला वन्दमानस्तु दागास्तु य
जमानाह विष्टः ॥ अस्तु माना वस्तु (१) हस्तं वस्तु ॥
० सस्तान आयः प्रभाषी ॥ अर्थयाता दकन अस्तु क
नं ॥ ॥ गायता हस्तं वस्तु यविस्तु नद द्विष्टः ॥ दद्विष्टः ॥ न
उस्तु वस्तु वस्तु सस्तु अस्तु नयं यविस्तु वस्तु दद्विष्टः ॥

पिरुदवताडुरुवसासदवानांप्राजापत्यमुसधम
 ॥ अथस्तुथिसमीगहृस्वयमवदूगासनः॥ वखावः
 उच्यतेक्यातगायत्रीविन्यसद्वधः॥ ॐ सदसत्य
 तिमहुतप्रियेनिन्दस्यकास्यम॥ सनिमधमयाः
 सिधः स्वाहा॥ धान्यविष्कपन॥ ॥ ॐ श्रीहृथम
 यत्राथममाथाथमगिलाथममूमाथमखल्लाथ
 मप्रियमवथमपवथमथमाकाथमनीवाना
 थमगाधूमाथममयूवाथमयहनकल्यनाम
 ॥ श्रीहृथमनम॥ ॥ ॐ दवस्यत्वासविभुः प्रम
 वधिनाद्विक्रयैयूक्तहस्ताया॥ कृणासन॥ ॥
 ॐ हिवथगदः समवरुता॥ एरुतस्यजातः प्र
 तिनकरः आसीत॥ सदाधानयथीवीन्यामूतवाः
 कसेधवायहविषाविधेम॥ विद्वत्सन॥ ॥
 ॐ यदनिनयदुद्रुयदादीयदसैरुव॥ तन
 रुजसिपदादियनस्यूक्ष्णलरामहम॥ पीतचू
 ॥ ॐ नयदादितिलिखत॥ ॥ ॐ नजासिपुक्रमस्य
 नृतमसिधामनामासिप्रियदवानामनाधयून्ध
 वयजमसि॥ यणासनम॥ ॥ ॐ नकाहर्नवल
 मरुतः ॥ ॐ नकाहर्नवल

सुगमसिधामनामामिधियदवानामनाधयुन्य
वयजमसि॥**वृणासनम॥** ॥**ॐ** नक्राहर्नवल
गहनवेकदीमिदमहर्नवलगमूक्तिवामियम
निक्षायममास्यानिवखानदमहर्नवलगमूक्ति
वामियमममानाजमसमानायममसवन्धुयम
सवन्धुनिवखानदमहर्नवलगमूक्तिवामिय
मसजागायमसजागानिवखानात्कस्याकिवामि
॥**विष्णुजीकृपुवधुनम॥** ॥**ॐ** हिबध्विध्वि
लीसवध्विउगमूदिक्ती॥**वन्द्याहिबध्विध्वि**
शिवदाममावहर्गावहर्जागवदालक्ष्मीमल
यगामिनीम्॥लक्ष्मीधुजन॥ ॥**ॐ** यकनसनमा
वयदवस्यसविशुसवस्वन्तयगस्य॥**वागीध्वि**
धुजन॥ ॥**ॐ** स्त्रीवध्विध्विध्विध्विध्विध्वि
व्यासवर्तः॥**कायध्विध्विध्विध्विध्विध्विध्वि**
०हिमायमन०समिधामहि॥वयस्वन्तवयस्व
न०सहस्वनःस्वहस्वनम॥ ॥**ॐ** नमयत्तदमून
मदवासाज्जदालम्॥विशवेसास्वस्तिनपात्रमणी

य॥ यस्तु न ब्रूयाज्जन॥ ॥ ॐ अस्तवस्तुः समावृत्तः
अस्तुस्तुः समावृत्तः। द्युतयतामध्यानाधिना
जानामकासध्याः शुद्धीयमाणास्त॥ क० पु० पु० ज०
स॥ ॥ ॐ अग्निर्मूर्धादिवः ककुत्सतिः पृथिव्या अ
यम्। अथा २ वता २ सिजिन्वति॥ अग्निप्रदानं ॥
नृन्मथपापम्॥ अग्निमान्नीय॥ ॥ ॐ नृन्दाहर्नव
लग्नहर्नवेष्वीमिदमहर्नवलग्नमूर्त्तिवामिथम
निष्प्रायममाणा निवखानदमहर्नवलग्नमूर्त्तिव
मिथमममाना जमसमाना निवखानदमहर्नव
लग्नमूर्त्तिवामिथममसवधूर्यमसवधूरिनिवखान
दमहर्नवलग्नमूर्त्तिवामिथमसजातायमसज
तानि वखानात्कुर्यान्निवामि॥ नृवचुनी॥ ॥ ॐ अ
ध्वावदधिवकाप्रथमा देव्या रिषक॥ अर्हा २ य
सर्वा २ रुयं सर्वान्यथा रुधाम्नाधवावीः प्रवासव
॥ वलिप्रदानम्॥ ॥ ॐ गतासि पुत्रमस्य सतम
सिधामनामासि प्रियं दवानामनाधुन्यवयज
मसि॥ दीपदानं॥ ॥ ॐ कथादमनिप्रदि। लामि
दूर्वायमनाश्रुनकुतुबिप्रवाहः॥ ॐ हे वायमि

सिधामनामासिधियंदवानामनाधुनद्वयज
मसि॥दीपदानं॥ ॥**ॐ** कथादमनिप्रदि॥**ॐ** मि
दूर्वयमनाधुनद्वयज॥**ॐ** हे वायमि
ननाजानवदादवखादववहउपजानन॥**ॐ**
कथादानंसीयविरयय॥ ॥**आदति॥** कथादानेय
खाहा॥**ॐ** वालजयं॥**ॐ** तिलादुति॥**ॐ** तादुति॥**ॐ** प
स्यनी॥ ॥**ॐ** अनिवश्यद्वय॥**ॐ** अनिन्यास॥**ॐ** वः
आयदुट॥**ॐ** ददयायनम॥**ॐ** निवसखाहा॥**ॐ**
निखायेवोषट॥**ॐ** कववायदु॥**ॐ** नउजयाय
वषट॥**ॐ** वः**ॐ** आयायदुट॥**ॐ** तिकनामन्यास॥ ॥
मनसउमनसपूय॥ ॥**ॐ** गजा॥**ॐ** वेन्दवयाति
मकेदुत्वानलजयं॥**ॐ** पूय॥ ॥**ॐ** अनिसिधिः
पवमानः॥**ॐ** जयः॥**ॐ** नाहितः॥**ॐ** मीमहमहाग
यम॥**ॐ** गायत्रीनमः॥**ॐ** सः॥**ॐ** अमृती॥**ॐ** यविद्या
दुमेरयायधीमहुतेनानजप्रवाद्यता॥ ॥
ॐ सः॥**ॐ** आयायदुट॥**ॐ** अनसवद्वय॥ ॥**ॐ** सः
कववायदु॥**ॐ** कवेवनावरु॥**ॐ** (ॐ)॥**ॐ** नमः॥**ॐ** मृती
दुय॥ ॥**ॐ** गजा॥**ॐ** अनिरुहीत्वा॥**ॐ** अनवनिवृषमा

मयमखट्टनचहानिप्रमसाजातयदाः। अनसूर्य
स्यप्रकृतावप्रमीननयावापृथिवीः। अततन्तु॥ अ
निशिषदक्षिणीकृत्य॥ ॥ यजमानस्यकारिकव
तायापनयकृतुं अनिस्तपनसुसूद्रुतांशु॥ ॐ
मयिगृह्णाम्यप्यग्निं वायस्यस्ययमूयजाश्वा
यसूवीयाय। मासूदवताः सवकां स्वाहा॥ अग्नि
स्तपन॥ ॥ स्वस्तिवादनं प० ॥ ॐ स्वस्तिनामिमी
तामग्निनारुगः स्वस्तिगद्यदिति नर्वलः॥ स्वस्तिपूर्व
असूत्रादधातुनः स्वस्तिवापृथिवीसूचतुना॥ स्व
स्तयवायमूयप्रवामहे। मासूस्वस्तिस्तपनस्ययस्य
तिष्ठहस्यति सर्वगं स्वस्तयस्वतय आदित्यासाः
रुचतुनः॥ वि० यदवाना अयास्वस्तयवे धानवा
वसूत्रनिः स्वस्तयदवाः अरुवकिरुवः स्वस्त
यस्वस्तिनाः रुदः पालीदसः॥ स्वस्तिमिश्रावब्रूणा
स्वस्तिप० यदवति॥ स्वस्तिनं नृ० नृ० यानि० यस्वस्ति
ना अदितगृ० ॥ स्वस्तिपन्नामनूववमसूय्यावतु
मसाविव॥ यूनदधनाद्यताजानतासंगममहि
। स्वस्त्यनना अमविद्वन्ममिहद्वन्तयायसीदव

नाश्रुदितगृध्रि॥ स्वस्ति यन्मामनूयवमसूयावदु
मसादिव॥ यूनदधनाधुनाजाननासंगममहि
। त्वत्पुननाश्रुमनिष्कृन्मिमसहृद्गंयायसंदव
तानी। अस्तुवद्वमिन्दुसखंसमस्तुहृद्य। (॥ नाम
विमानूहम॥ अयं हामवसांगिविणीजयवस्वसा
पयमनसावनाश्रुप्रयतयालिः॥ वलीप्रयथ
स्वस्तिमवादवहयन्नाश्रु॥ ॥ **ॐ** मत्सालिगव
मत्सालिगवमिसामस्तानाजामतनानवस्तम
॥ उवाचत्रीयावद्वलकृष्ण। उजयनीत्वानूदवो
मदलु॥ **ॐ** (नमनप्रकाश॥ ॥ **ॐ** पृष्ठादिविष्ट
पृष्ठाग्निः पृथिव्यापृष्ठादिविष्ठाडाषधीनाविविधावे
ध्याननः सरुसायपृष्ठाग्निः सनादिवासविषया
उवकम॥ **अग्निप्रकाशम॥** ॥ ॥
वउवदियूजनम॥ स(ग्वदोयब्दमासननम
॥ ॥ यश्वदायब्दमासननमः॥ ॥ सामवदा
यब्दमासननमः॥ ॥ अथर्वदायब्दमास
ननमः॥ ॥ **ॐ** अग्निमीउयवाहिनीयहृत्पदव
मत्सालिगव। हानावद्वलधामसम॥ पूर्वअद्वयान

म॥ ॐ ॐ ॐ स्वा ऊँ ला वा य व सु द वा वः स वि ता
वा य य वः ॐ ॐ त मा य क स ल आ य य ध म आ ॐ
न्या य का ग स्य जा व ती व न सी वा श्र य आ मा व स न ॐ
ॐ त मा य ॐ ॐ सा ॐ वा श्र नि (सा य ती स्या ग व की यः
ऊ मा न स्य य ॐ न्या हि ॥ द क्षि ण श्र द वा ग न ॥ ॐ ॐ
न आ या हि वी न य द्यु ता ना रु द वा दा ग य नि हा ता य
स्य व हि वि ॥ य वि स अ द वा ग न ॥ ॐ ॐ न्ना द वी
व रि ष्य य ॐ आ वा रु व नु धा ग य ॥ ॐ ॐ व रि ष्य व
न ॥ ॐ ॐ अ द वा ग न ॥ ॐ ॐ व नः पू ज न ॥ ॐ ॐ
ॐ द वा य न मः ॥ ॐ ॐ गाय न मः ॥ ॐ ॐ सा म द व ता य
न मः ॥ ॐ ॐ गाय न मः ॐ ॐ कु न्द स न मः ॥ ॐ ॐ य र्क्षे द वा य न
मः ॥ ॐ ॐ रा व द वा य न मः ॐ ॐ व द वा य न मः ॐ ॐ
ॐ ॐ कु न्द स न मः ॥ ॐ ॐ रा म व द वा य न मः ॐ ॐ का स्य य (गा
जा य न मः ॐ ॐ व द वा य न मः ॐ ॐ उ ग ती कु न्द स न मः
॥ ॐ ॐ अ थ र्क्षे द वा य न मः ॐ ॐ व द वा य न मः ॐ ॐ गाय न
मः ॐ ॐ कु न्द स न मः ॐ ॐ अ नू द्य व कु न्द स न मः ॥
॥ ॐ ॐ ला दि द ॐ ला क पा ल यू ज न ॥ ॐ ॐ द वा य
न मः ॥ ॐ ॐ अ (न य न मः ॥ ॐ ॐ य मा य न मः ॥
ॐ ॐ ने स र्था य न मः ॥ ॐ ॐ व द वा य न मः ॥ ॐ ॐ वा
य य न मः ॥ ॐ ॐ व द वा य न मः ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ना
य न मः ॥ ॐ ॐ वि ष्णु व न मः ॥ ॐ ॐ व द वा य न मः

॥ ॐ अथर्ववेदाय नमः ॥ वेदावानस्य (ग) षाय न
मः ॥ ॐ इन्द्रदेवताय नमः ॥ अन्नदूपकृन्धस्य नमः ॥
॥ ॐ आदिदशलाकपालयुजने ॥ ॐ ॐ द्वाय
नमः ॥ ॐ अग्नेय नमः ॥ ॐ यमाय नमः ॥
ॐ नैमस्याय नमः ॥ ॐ वरुणाय नमः ॥ ॐ वा
यवाय नमः ॥ ॐ कवचाय नमः ॥ ॐ ॐ गाना
य नमः ॥ ॐ विष्णवे नमः ॥ ॐ ब्रह्मणे नमः
॥ ॐ सधामसस्तद्वानासधिसखायलाहिता
वल्गुयधुवहस्ताय हव्यासनाय स्वाहापत्नीसमन्वि
ताय च ध्यानवाय नमः ॥ ॐ समिधहामा ॥ ॐ
ॐ कावनस्वाहा ॥ ॐ ॐ गृष्णीशुक्या नमः ॥
ॐ अथाहवः ॥ अदिगानसर्वाः पूर्वाहजोतेवः
सः ॐ गुरुं अन्नः ॥ सचवज्जगः ॥ सजनिव्यमालः ॥ अ
थ अनासिष्ठिः सर्वतासुखः ॥ अग्निर्मसूखी कव
र्षी ॥ ॐ ब्रह्मासर्गः ॥ अलीनासर्गः ॥ अलीवनः ॥ अलीनास
र्गः ॐ तिवलासर्गः ॥ ॐ हिमवत्पगर्गः ॥ समवर्त
ताय रुतस्य जगः ॥ अतिवक्रः ॥ आसीत ॥ सदा धाव
युधीवीन्यासुत वाक्स्मेदवाय हविषा विधेम ॥
ॐ तिवलासर्गः ॥ ॐ ॐ दं विष्णुर्विवक्रमण

धनिदधेयदं॥ समूहसम्यपा५सुबस्वाहा॥ ॐ
निषलीनासनं॥ ॥ ॐ प्रत्यक्ष० वक्षः प्रत्यक्षा
नातथानिष्टक० वक्षानिष्टकाज्जातयः॥ अनि
निगसिसयत्तद्विज्ञाजिनत्वावाज्जायैसमायि
श्रुश्रुक्षणी॥ प्रलीतप्रत्यक्षनमः॥ ॥ ॐ आपाहि
षामथातुवस्तानः॥ उक्तदधानेनमद्वलायव
क्षमः॥ यावन्निवर्तमानसकस्यराजयगहनः॥ उ
गतीवनिमातनः॥ तस्माः॥ अनक्षमासवायस्यक्ष
याजिन्वथ॥ आपाजनयथावनः॥ आकाशादक
नप्रलीतप्रत्यक्षः॥ ॥ वक्षः प्रत्यक्षः॥ वक्षः प्रत्यक्षः॥
वः॥ अस्तुयदृष्टः॥ कवः॥ धनः॥ वंद्यदयायनमः॥
॥ वंदिनिवसस्वाहा॥ वंदिनिवायवोषट॥ वंदकववा
यदं॥ वंदनं॥ वंदययायवषट॥ वः॥ अस्तुयदृष्टः॥ ॐ
निकर्तान्न्यासः॥ ॥ प्रत्यक्षः॥ वक्षः प्रत्यक्षः॥
प्रजापतयनमः॥ वदाधिपतयनमः॥ सर्वथा
दवस्थानमः॥ ॐ वक्षयस्तानप्रथमं प्रत्यक्षादिः
सीमताः॥ सूत्रवाचनः॥ आवः॥ सर्वथा॥ उदयमाश्रु
स्यविष्टः॥ सतथयानिमसतथद्विव॥ ॥
प्रलीतप्रत्यक्षः॥ वक्षः प्रत्यक्षः॥ वंद्यदयायनमः॥ वंदिनिवसस्वाहा॥
वंदिनिवायवोषट॥ वंदकववायदं॥ वंदनं॥ वंदययायवषट॥

ॐ आ व द क वा द क (पा व द क व र्च सी जा य ता मा वा ष
ना ऊ न्नः । १२ न ०० ष ष्या ति ष्या धी महा व (था जा य
तां दा श्वी (धन वर्वा टा न द्वा ना पुः स किः पृ न भि मा
षा जि मू न (था काः सरु था य वा स्य य उ मा न स्य बी
ना जा य तानि काम नि काम नः प ऊ न्मा च ष तु रु
ल व स्थान डा प्रयः प य गां या ग द मानः क ल्य ता
म ॥ द दि पा ता व द्वा स्त प नी ॥ ॥ ॐ विष्णो न वा
ट मे सि विष्ठाः न अ स्ता विष्ठाः सू न सि विष्ठा ध्रु वा

सिद्धिस्तु वसति विस्तु वत्वा ॥ उरु नगा यला नरु
 यन ॥ ॥ यूनः यूड न ॥ वक्तु (नमः) ॥ यडा नय
 नमः ॥ सर्वथा दवस्थान नमः ॥ उं वक्तु यरु नय
 धर्म यूनरुादि सीम नः ॥ सुनवा वन ॥ आवः ॥ सव
 आ ॥ उ यमा ॥ अस्य विद्या ॥ स न ॥ यथा निम स न ॥ य
 द्वि ॥ सिवा स न ॥ ॥ उं विस्तु वन नमः ॥ यला ना य
 नमः ॥ अरु नमः ॥ अरुा व नूला यन नमः ॥ उं विस्तु
 वाट मसि विस्तु ॥ नक्तु विस्तु ॥ सुवसि विस्तु ॥ अरुाः
 सिद्धिस्तु वसति विस्तु वत्वा ॥ सिवा स न ॥ ॥ उं कया
 नयि ॥ अरु व दूनी सदा द ॥ सखा ॥ कया ॥ वि
 यथा द ॥ क ॥ नय विस्तु वत्वा ॥ ॥

यथा यथा विस्तु मल्ल कल गा व न ॥ नगा यू व ॥
 कल गा व न गत्वा ॥ गायत्री मल्ल निवी द ॥ उं कया
 ॥ अरु नी गा य विस्तु द नूला यय धी म हि न नान
 उ य वा द या न ॥ ॥ नमः ॥ उं लं द ॥ अ न न ॥ किः
 अरुा य द ॥ क न ॥ ध न ॥ ॥ उं लो द द या य न
 मः ॥ उं लो नि व स खा द ॥ उं लू ॥ नि खा ये वोः

उद्यवाद्ययागः ॥ आसः ॥ ॐ लहट् अन्ननक्तः ॥
अन्नाय हट् ॥ केन ॥ धनं ॥ ॐ लो हट् दयाय न
मः ॥ ॐ लो निवस स्वाहा ॥ ॐ लू ॥ लिखाये वोः
षट् ॥ ॐ लो कववाय दः ॥ ॐ लो नञ्जया य
वषट् ॥ ॐ लहट् अन्नाय हट् ॥ ॐ ति कवा न्नया स
॥ ॥ धनं अर्थया य पूजा ॥ आवाहनादि ॥ ॥ धन
मूर्त्तिदशाय न ॥ ॥ आत्मपूजा ॥ आत्मनसि वय न ॥
आत्मन वन्दनं नमः ॥ आत्मन पूष्यं नमः ॥ आत्मन
आत्मा मनं नमः ॥ आत्मन मूर्त्तये नमः ॥ ॐ ति आ
त्मपूजा ॥ ॥ आसनं ॥ ॐ गत्वा आसि वक्ष्णा वन्दः
मानस्तदा ॥ अयजमाना हविरिः ॥ अहं उमाना व
वृणा हवा ॥ अहं ० समान आयः प्रसायी ॥ ॥
अस्य कर्ण ॥ ॐ द वस्य त्वा सविः ॥ प्रसवधिना
बोद्धव्यं पूष्ण हस्तार्थ ॥ ॥ ॐ विवद ॥ ॐ त्वम
ग्नय रित्त्वमा ॐ पुष्यनित्वमद्वा त्वमस्मनस्य वि
त्वं वनस्य त्वमा वधीत्यस्त्वं नृणां नृपतजाय स
ॐ विः ॥ ॥ ॐ उवा वना सनाय नमः ॥ ध्यानं ॥ उ
वा वना समान् नृन् सवत्सु र्निबिडिनी ॥ सहस्रनः

यनं गङ्गा वक्रपालिविरावयता ॥ विद्याभूति
॥ ॐ लं ॐ न्यायवक्रहस्ताय नमो महिताय नम
॥ ॐ शान्तमिन्दुमवितामिन्दु ० हव हव हव हव
हव ० ग्लमिन्दुसाक्ष्यामि गङ्गापूजकतमिन्दु
स्वस्तिनामद्यवाधालिन्दु ॥ ॐ आरुन ॐ नु वृष
हन्तमिन्दुमहामहिमहान्तमहान्तिनिदि ॥ ॥
ॐ अग्नयतज्जाधिकयगङ्गाकिहस्ताय नमो सना
यनम ॥ ॐ यमायतज्जाहस्ताय यतासनाय
नम ॥ ॐ नेमयायतज्जाहस्ताय यतासनाय
यतासनायनम ॥ ॐ वननायतज्जाधिक
यतासनायतज्जाहस्तायतज्जासनायनम ॥ ॐ वाय
वयालधिकयतज्जाहस्तायतज्जासनायनम ॥
॥ ॐ कवनायतज्जाधिकयतज्जाहस्तायतज्जा
सनायनम ॥ ॐ ॐ गङ्गायतज्जाधिकयतज्जा
तज्जाहस्तायतज्जासनायनम ॥ ॐ विष्णुवक्र
धिकयतज्जाहस्तायतज्जासनायनम ॥ ॐ व
क्र ॥ ॐ विष्णुवक्र ॥ ॐ विष्णुवक्र ॥ ॐ विष्णुवक्र ॥
॥ ॐ अग्निमूर्धनि दिवः ककुत्स्थतिः पृथिव्या अय

विद्यथ वक्रहस्तयकसोसनायनमः॥ ॥**ॐ** व
क्र(८)दुद्धविद्यथ यद्वहस्तयहंसासनायनमः॥
॥ ॥**ॐ** अग्निमूर्द्धादिवःककृत्यतिः॥**ॐ** धिया अय
मा अया पू न गा पू सिजिन्वति॥ ॥**ॐ** यमनदहं वि
नयनमायूनगिल्यनयथमानिबतिष्ठतागन्धर्वा
अस्यवसनामगृह्णामादध्वं वसवानिबतिष्ठा॥ ॥
ॐ यनकदवीनिमतिनाववन्धः॥**ॐ** यीवीसविद्विः
अ।नकविष्णामायषानवयावाद(थेनं)पिबुमयप
सूतनमारुपियदवकाव॥ ॥**ॐ** ॐ ममवन्नलप्र
धीहवमयावमउयत्तामवसूनावक॥ ॥**ॐ** नव
वायवतस्यनंत्वदूजमानवहुता।अया पू सावृणीम
ह॥ ॥**ॐ** कविदंगजवमगायवविद्यथादोन्मनूयः
वविद्यय।ॐ हहृषां हृषां हिराजनामियवर्हिषान
मउर्द्वियजनि॥ ॥**ॐ** अरित्वाष्ट्रव(८)नमादग्वाॐ
व(८)नवः।ॐ गानमस्यजगताः स्वर्गमीगानमिन्द्र
तसूषः॥ ॥**ॐ** जालिपदाविद्वक्रमविष्णु(८)पा अया
स्य।अगाधसोनिधावयन्॥ ॥**ॐ** वक्रहस्त
नत्वमस्ययनासूकस्यराधितनयश्चजिन्वाविष्व

गङ्गुडं जनयन्निदं वाटुहं दत्तं मयि दत्तं ॥ ५ ॥ सूवीनाः
॥ ॥ ॐ विद्युत्तच्छायनमः ॥ ॐ वृहस्पतं कृदि नः
सिंयायनामं गङ्गहि ॥ ॥ ॐ कनिककृन्तनमः ॥ ॐ
कनिककृन्तनमं वक्रवामं यत्ति वाचमदि नव
नारं । सुमन्तलं यत्तु नरु वासिमात्राकाविदः
रिमाविष्ठाविदः ॥ ॥ ॐ यदून्मन्त्रायै नमः ॥ ॥
ॐ गां ५ सविहृद्वै न्यस्य विष्णुमाह वृत् ॥ ५ ॥ सुमन्तिः
विष्णुजन्म । यामस्य कल्पा जूदूह प्रपीवा ५ सहस्र
धा वाययसामहं गामः ॥ ॥ ॐ क्रीकालिपताकाय
नमः ॥ ॐ ॐ न्यस्य वक्रासिवा जसात्वा ययं वा जः
० सता वाजस्य नृपसर्व मातनं मही मदिनि नाः
मवदे साकनामहा । यस्यामिदं विष्णुव नमावि
वर्गं । नस्यान्नादवः सविता धर्मसाविष्कः ॥ ॥
ॐ रुद्राकाय नमः ॥ ॐ रुद्रवस्वः सूर्यजाः प्रजा
पतिः स्या ५ सूवीना वीनेः सपाषः पाषः । नयप्रजा
मपाहि स ० सपाषः नयपाकथयपि तु मपाहि ॥ ॥
ॐ गान्धिवानाय नमः ॥ ॐ वत्सा विष्णुमाह यथा जू
सपादाद्वर्गं सयहकासा जूसाधिवावदा वृषः

मयादिम० मयः नयायथयपि तु मयादि॥ ॥
ॐ नमो नितान्तं नमः॥ ॐ वत्सा वि० नमो यथा अ
मयादाद्वंशीर्षसकहसासा अमयिधावडावृषका
नान्वीति महाद्वामसाः अविद्वं॥ ॥ ॐ मममन
सालयनमः॥ ॐ द्वावादवीनन्मद्वि० यवताददन्ता
अ० न० उ० न० यवसाधामाययमानाः॥ ॥ ॐ यवयन्त्र
वायनमः॥ ॐ वलविज्ञायस्वविद्वं प्रवीनः सहसा
न्याजी सहमानः उ० अ० विद्वं न० अ० विद्वं न० सह
जाज० नमिन्नुनथमातिष्ठ० गाविन॥ ॥ ॐ उ० दयगिनि
पर्वतायनमः॥ ॐ यामिषु निविद्वं न० हस्तविरुष्यस
व० निवादि वि० नमो न० मादि० म० यवयव अ० गता॥ ॥
ॐ सर्वपायनमः॥ ॐ ॐ मा न० दायनवसकपदिन
कयदीनायवृषनामहमनीः यथासमसद्विपद
वृष्यदविद्वं यवयवम० अ० सिन्नना न० ॥ ॥ ॐ
धजायनमः॥ ॐ अ० साकमिन्नुः समनयवृद्धजवः
साक्या ॐ यवसाजयनु॥ अ० साक्या वीनाडलनरु
वन्तसाः उ० यवयवयवतादवव॥ ॥ ॐ ह० उ० कायव
लि० ग० द० स्वाहा॥ ॐ यवताजयताननव० ॐ न० द० ॥

मम अकृता उपावः सनुवाहवानाध्यायथासथ ॥
॥ ॐ अयवलिनमः ॥ ॐ अयवावददिवकायथ
मादध्यालिषका अहोयसर्वाश्रुमयसर्वाश्रुजाउ
धान्याधनावीः यनासुव ॥ ॥ आवाहनादि ॥ ॥ धूप
॥ ॐ धूवसिधूवधूवर्नधूवर्गयासान्धूवर्गिर्नधू
वर्गवयधूवर्मः ॥ ॥ धीप ॥ ॐ गजासिउक्रमस्यम
गमसिधामनामासि। पिर्यदवानामनाधधूवन्दवय
जनमसि ॥ ॥ रुल ॥ ॐ याः रुलिनीयश्रुललाअ
पूष्यायाः ययुषिणीहहस्यतिप्रसूनाकानामश्रुत्
० रुमः ॥ ॥ नेवय ॥ ॐ अनयतन्नस्यनादधूनमी
वस्यउषिणीः यप्रदागार्वागार्वउऊनाधदिदिय
धवउष्यद ॥ ॥ प्रतिष्ठा ॥ ॐ मनाहृतिरुषनामाय
साकहस्यतिर्यरुमिमनान्वविर्द्ययह ० समिमद
धाउ। वि। ययवासं हमादयंगामां प्रतिष्ठा ॥ सु
प्रतिष्ठावददारुवनु ॥ ॥ जय ॥ लंखाहा ॥ ॥ स्तो
त्र ॥ ॐ ॐ नुः सूनयति। यैववडाहसामहावल ॥
सर्वयहाविद्यादवः ॥ क्रवाजनमासुत ॥ अयगवि
दि ॥ ॐ कयानविजुअनुवदूती सदावृधः सखाः

ॐ नमः सर्वप्रतिपद्ये वदहसामहावल ॥
सर्वयज्ञाविद्यादवः ॥ कनकाजनमामुगं ॥ अथगवि
दि ॥ ॐ कथानविजुआलुवदूनी सदावृधः सखा ॥
कथागविषयावृता ॥ कृ (गनयविसुवर्ण ॥ ॐ निः
ॐ नु कलसदूजविधि ॥

नगागलकलसदूजा ॥ न्मासः ॥ गृः अमुयदुट् ॥ क
ल (गाननी ॥ गृः ददयायनमः ॥ गृः निवसन्वाह ॥
गृः निखाये वीषट् ॥ (गृः कववायदू ॥ (गृः नकुतया
यवषट् ॥ गृः अमुयदुट् ॥ ॐ निक्वांगन्यासः ॥
आसन ॥ ॐ नत्वायामीवकलावन्दमानसुदो ॥ सु
यऊमानाहविरिः ॥ अहउमानावदू (हवाध्वन
ग० समानआयः प्रमीषी ॥ ॥ अहकल ॥ ॐ दव
सन्वासविशुः प्रसवविनावाक्यां प्रकाहसार्था
॥ ॥ ॐ सुवासनायनमः ॥ ध्वानी ॥ एकवकुमहाका
र्य (ध्वनवर्कमहायूति ॥ गऊ वकुमहावीर्य व्याथद
वंगजाविष ॥ ॥ विद्याजलि ॥ ॐ (लो गलयतयनम
॥ ॥ वद ॥ ॐ गगानीन्नागलयति ० हवामहप्रियाः

ॐ स्वाधिय पति ० ह वा म ह नि धी नां स्वा नि धि य ति ०
 ह वा म ह व क्षा म म । आ ह म जा नि ष ह ध मा त्व म जा
 नि ष ह ध ॥ ॥ आ वा ह ना धि ॥ ॥ धू य ॥ ॐ धू न सि धू
 व धू व न धू व न या स्मा न धू व ति न धू व न व य धू वा
 म ॥ ॥ धी य ॥ ॐ न जा सि षु क्र म स्म न्त म सि धा म न
 मा सि । धि यं द वा ना म ना धू न्द व य ज न म सि ॥ ॥
 रु ल ॥ ॐ या ॥ ह लि नी य अ रु ला अ य व्या या ऽव य
 धि णी ह ह स्य ति य स्र ग्ग ना म अ न्द ० ह स ॥ ॥
 ने व य ॥ ॐ अ न य न न्द स्र ना द अ न मी व स्य षु धि
 ण ॥ य य दा ना न ना ष डु ऊ न्ना (ध दि दि द व षु ध्य द ॥
 ॥ ॥ य ति षा ॥ ॐ म ना ह ति रु ष ग्ग मा अ स्य ह ह स्य ति
 य ह मि स ग ना त्व वि ष य ह ० स मि मं द धा षा वि (ध
 द वा स ० ह मा द यं ना मा ३ य ति ष ॥ ॥ अ य ॥ ग्लो ३
 सा ह ॥ ॥ अ य ॥ ग अ व कु म हा वी द मूल मा द क
 या लि ना नि वि ष स र्व का य षू ग्ग ना य ष न मा सु ग
 ॥ अ य गं धा वि ॥ ॐ क या न धि ष ॥ क ग व द्वा ॥ ० नि ग
 क ल स य उ ॥

अथ य उ व क ल गा व न क य नि ॥ न्या स ॥ ॥ अ ॥ अ य

॥ अथ गंगादा ॥ हुं कथानाथे ॥ हुं गवदा ॥ हुं गंगा
कलसयुता ॥

अथ यत्र कलसावर्तनं कथ्यते ॥ न्यासः ॥ जः ॥ अथ य
हृत् ॥ जं हृदयाय नमः ॥ जं गिरिसत्त्वाहा ॥ हुं गिरि
ये वोषट् ॥ जं कवचाय हुं ॥ जं नयनयाय वषट् ॥ ३
जः ॥ अथ यहृत् ॥ हुं गिरिगंगा न्यासः ॥ ॥ आसेन
॥ हुं गत्वा यामी वक्ष्यामि वन्दमानसदा ॥ सुयजमा
नाह विहिः ॥ अहं उमाना वन्दे (एहं वा ध्येयं) ॥ ० समा
नम्रायः प्रभाषी ॥ ॥ अथ कर्ण ॥ हुं द वस्यत्वा स
विहः ॥ प्रसव विना वदित्वा यूपकाहं स्यामी ॥ ॥ हुं
यद्यामनाय नमः ॥ ध्यानं ॥ कृष्णमात्रं एव दहायि ॥ अ
क्षयं कक्षयकः ॥ सर्वं सा सुखं विहस्य सर्वं पाव
उदः स्मृतः ॥ ॥ विद्यां जलि ॥ हुं की पुन वनमः ॥
हुं दृष्टं तं अति अतथा अहं यमदिराति कृत
मकनं वा यदीदयं कृतं सः ॥ अथ यजानं तदसा
सुद विहं (धृति विहं) ॥ ॥ आवाहनादि ॥ वलि ॥ ॥
धृप ॥ हुं धृपसि ॥ ॥ दीप ॥ हुं गजसि ॥ ॥ रुल ॥
हुं याः दलिनी ॥ ॥ नेवय ॥ हुं अन्नपक्वं ॥ ॥ यनिका

॥ ॐ मनाहंति ॥ ॥ जय ॥ ॐ ह्रीं स्वाहा ॥ ॥ स्वाहा ॥ द
वाना ॥ ॐ व सर्वेषां ॥ मणीनां व नवा दयः ॥ ॐ व सर्व
नमस्तु ॥ सर्वेषां ॥ सुविष्णवद ॥ ॐ व ग ॥ ॥
ॐ कयानि ॥ ॐ आहु व दूती सदा व ॥ ॐ सखा ॥
कया ॥ विष्णवा व ता ॥ कयानि ॥ विष्णवली ॥ ॐ नि
ॐ व कल ॥ पूजा विधि ॥

नमः ॥ निव ॥ कि कल ॥ पूजा य ॥ न्यासः ॥ ॐ ह्रीं
सः ॥ अमु य दूट ॥ ॐ ह्रीं सः ॥ दूट या य नमः ॥ ॐ
ह्रीं सः ॥ निव स ॥ स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं सः ॥ निखा य वी षट् ॥
ॐ ह्रीं सः ॥ क व वा य दूट ॥ ॐ ह्रीं सः ॥ न व व या ये
व षट् ॥ ॐ ह्रीं सः ॥ अमु य दूट ॥ ॐ नि क न म न्या
सः ॥ ॥ आसन ॥ ॐ न स्वा या मि व दूट ॥ व न्द मा न स
दा ॥ स्वा य उ मा ना ॥ ह वि लि ॥ अ ह उ मा ना व न्द ॥
ह वा धू न्द ॥ ॐ स मा न आ यः ॥ य मा षी ॥ ॥ अ न्द क
॥ ॐ द व स्य स्वा स वि लु ॥ य स व वि ना द्वा दू न्यां दूः
का ह स्वा र्था ॥ ॥ आसन पूजा ॥ ॐ व व रा स ना य
नमः ॥ ॐ सिंहा स ना य नमः ॥ ॥ आन ॥ व व र्क व

॥ ॐ द व स्य त्वा स वि लुः प्र स व श्वे ना द्वा दू स्या दूः
का ह स्ता र्णा ॥ ॥ आ स न वू ज्ञा ॥ ॐ वृ ष रा स ना य
न मः ॥ ॐ सिं हा स ना य न मः ॥ आ न ॥ वृ ष स्कं ध
स मा नू रं (श्व तां गं गृ ल या लि नं । वा स द वी मृ ज।
नी ॥ ॐ की रू तं स दा च य न ॥ वा स ह स्ता द कं वः
व या नि नि गं व त न्य न । ए वे मृ लि व ध्या य न स
व का म ह ल दं ॥ ॐ ति ध्या न ॥ वि यां ज लि ॥ ॐ ने
द्रा ॥ आ न न्द ग कि र्णं क ना य पा द वी स हि ना य न
मः ॥ ॐ ज म्बा धी पा द कौ ॥ ॥ ॐ या ग नू दः
नि वा त नू प्र ध्या ना या प्र का शि नी त या नः
सु न्दा ग न म या नि वि ष ना रि वा क णि हि ॥ ॐ
स ह स्र गी र्वा य नू षः स ह स्रा दः स ह स्र पा ता स ह
मि ० स द्वा त स्य त्वा य ति ष द्वा गं रु लं ॥ ॐ जा त
व द स मू न वा स सा म म बा ती रु ता नि द हा ति व द
॥ स नः प्र वि ष त ति द र्ना लि वि ष ना व व सिं धू द
वि ता य निः ॥ ॐ प्रो ष त ल क्षी ष य त्वा व हा ना
थ पा (श्वे न द्वा ग लि वू य स श्वि नो व्या र्क ॥ ॐ र्क नि षा
ता मू म्मा यि षा लः स द्वा ला र्क म ० वा ल ॥ ॥ आ वा ह

नादि॥ वलि॥ **ॐ** निवर्गकैर्वर्मवलिगृह्णस्वाहा॥
॥ **ॐ** धूप॥ **ॐ** धूवसिधूवधूवर्नधूवर्नयास्मानधू
वर्तिर्नधूवर्तिर्नधूवर्नवयधूवर्म॥ ॥ **दीप**॥ **ॐ** न
आसिउकुमस्यसुतमसिधामनामासि। प्रियं धव
नामनाधूवर्नवयजनमसि॥ ॥ **रुल**॥ **ॐ** याः
रुलिनीयांशुरुलाश्रयप्यायाधयध्विणीवृहस्य
तिप्रसूतास्मानाम्श्रुत्व० हस॥ ॥ **नेवय**॥ **ॐ** अ
नयगन्नसनाथजनमीवस्यपुष्पिणीः प्रप्रदाता
नगावडुर्जनाधदिदिवदुष्यथ॥ ॥ **प्रतिष्ठा**॥
ॐ ननाहूतिरुपगामाश्रयवृहस्यतिर्यक्तमिमत
नात्वविष्टयक्त० समिमदधातु। विष्टवसन्
हमादयंतामाइप्रतिष्ठा॥ ॥ **जय**॥ **ॐ** कंसः स्वाहा
॥ ॥ **स्तुत**॥ शिखलनीलान्यलक्ष्मिणागोडमाम
हृगोमनिर्वदितागो। अष्टांगहस्तकुलिनाप्रलो
मि। सर्वार्थकामरुलदायिनीगो॥ **अष्टगन्धादि**॥ ॥
ॐ कयानस्थिअशुवदूतीसदावृ४१ सरवा। क
यागविष्टयावृता॥ कृ। गनप्रविस्तवर्ण॥ **ॐ** निमि
वर्गकिंकलगावर्नविधि॥ ॥ ॥

ॐ कथानिधि आहुवदूता सदा वृ४१ सर्वा क
यागविष्ठाया वृता ॥ क॥ ननयविसुनली ॥ ॐ निमि
वशाकि कलगा चनविधिः ॥ ॥ ॥

नमः ॥ आदित्य कलसयूजा ॥ न्यासं कथ्यात् ॥ नः ॥ अ
मुयदृष्ट ॥ कव॥ ॥ धनं ॥ ॥ अद्वययानमः ॥ अ
कथिनिवसस्वाहा ॥ रु० वः ॥ कालिना निखाये वो व
ट ॥ दू० कव वायदू ॥ रौ० नशययायववट ॥ न० अमु
येरुट ॥ ॐ निवर्गान्यासः ॥ ॥ असन ॥ ॐ गत्वा
यामि वक्ष्मणा वन्दमानस्तदागा मुयजमानाह विरि
॥ अहं उमाना वन्दनं लहवा ध्वनं ॥ ० समान आय
॥ प्रभाषी ॥ ॥ अत्यन्त ॥ ॐ दवस्यत्वा सविउ
॥ प्रसवविना बौद्ध्याय कृष्णस्य ॥ ॥ ॐ यद्वा
सनायनमः ॥ ध्यानं ॥ अनुरागं नृपयं कञ्ज निवर्णः
मकललीति वचनं कर्तव्यं ॥ स्व नृवाहिममलुल
मिनशानविवाकल्यगा कलाः वतादः ॥ ॐ निध्या
नं ॥ ॥ शिवांजलि ॥ ॐ कौ० कौ० मः ॥ सूर्याय नमः ॥ ॥
ॐ आरुध्वनवजसावरुमानानिवशा यन्नमस्तु सर्व

वाहिवप्यथनसविमानधनादवायानिबुवनानि
पथ्यन॥ ॥**ॐ** सामायनमः॥**ॐ** ॐ मन्दवायसप
न० सुवधमहनकृणायमहनकृणायमहनका
नवाशायनस्येदियाय॥ ॐ ममसूत्रयुगमम
ययुगमस्येदिवि॥ ॐ वामीनाकासामा२साकृवा
कृणाना५नाका॥ ॥**ॐ** अंगनायनमः॥**ॐ** अग्नि
मूर्धादिवःककृत्यतिःपृथिव्याअयं। अया५वना
२सिजिन्वति॥ ॥**ॐ** वधायनमः॥**ॐ** उद्वप्यस्वा
(मपतिजागृहित्वमिष्टादूरुस० सुकथामय॥
॥असिन्मध॥ अथरुवसिन्वि॥ ॐ दवायउमान
॥ ॐ सीदत॥ ॥**ॐ** वृहस्यनमः॥**ॐ** वृहस्यनमः
तिअगथाअहयमदिरातिकृमऊनय। यदीद
यद्ववस२मगयजानकतदसासुदविर्ण॥ ॐ वि
॥ ॥**ॐ** पुकायनमः॥**ॐ** अन्नात्यविष्णोवस
वद्वप्यपिवत्कृणयय॥ ॐ मयजायति॥ ॐ न
सत्यमिन्द्रियविद्यान० ॐ कृमन्धस० नृस्यन्द्रियमि
दंयथासुतंमध॥ ॥**ॐ** ॐ नृवायनमः॥**ॐ** ॐ
नादवीवदिवययआयारुवन्नुयीनया। ॐ जावलिः

संभामाभुयविद्यान० पुत्रसंभसंभुसंभुयमि
दंयथासुतंमधु॥ ॥**कुं**नेत्रवायनमः॥**कुं**ना
नादवीवदियुयआपारुवनुयीनया।**कुं**जावलिः
प्रवनुनः॥ ॥**कुं**बाहवयनमः॥**कुं**कयानस्थिज
आहुवदूतीसदावृधःसखा।कया।विद्ययावृता
॥ ॥**कुं**कनवनमः॥**कुं**कउंकल्यन्नकनवयः
।।मयाअयगसासमूवहिवजायगी॥ ॥**कुं**क
नननमः॥**कुं**नाअस्वसूददाहसः।सम५।पील
निष्टप्रयः।जननवानांवि।सिद्धावावनदिव
॥ ॥**कुं**वाहनादि॥ ॥**कुं**धूप॥**कुं**धूनसि॥ ॥**कुं**दीप
॥**कुं**नजासि॥ ॥**कुं**रुल॥**कुं**याःरुलिनी॥ ॥नेवय॥
कुंअन्नयन॥ ॥**कुं**पतिष्ठा॥**कुं**मनाकूति॥ ॥**कुं**जय॥
कुंकांकीसःस्वाद॥ ॥**कुं**रा॥**कुं**आदिरयप्रकुताय
शामूपगिरीसःपर्ववरुर्वद्विवापिद्व(भाउव
यगुवगीमा(ने)पुर्कानवः।सोविविद्यामिष्टवि
वरुःकुदकिमिहिसूतःकुरुःकैटवकरुर्नविद
धगीगवानकूलाग्रहाः।अजगंभादि॥ ॥**कुं**क
यानस्थिजआहुवदूतीसदावृधःसखा।कया।वि

षष्ठादृता ॥ कृष्णनयविस्तारं ॥ ४४ ॥ तिष्ठादिस्थकः
 तत्त्वावनपूजाविधिः ॥ ॥

गणेशाय नमः ॥ अथ कलसपूजयन् ॥ न्यासः ॥ ॐ कूं स
 ॥ अमुं यदु ॥ ॐ कूं सः ॥ ददया येन मः ॥ ॐ कूं सः
 शिवसंखाहो ॥ ॐ कूं सः ॥ शिवाय वीर्यदु ॥ ॐ कूं सः
 कवचाय हुं ॥ ॐ कूं सः ॥ नमो जयाय वदु ॥ ॐ कूं सः
 अमुं यदु ॥ ॐ किकागान्यासः ॥ ॥ असन ॥ ॐ
 गत्वायामीव कृष्णवन्दमानसुदा ॥ सकयजमाना
 दविरिः ॥ अहो उमाना वदु ॥ ॐ ददवस्यत्वा सः
 आयः प्रभाषी ॥ ॥ अथ कर्ण ॥ ॐ ददवस्यत्वा सः
 विदुः प्रसवविनावाक्यां पूजाहसार्थी ॥ ॥ ॐ वि
 कवर्ण ॥ ॐ त्वमग्निशक्तिस्तमापुष्यनिस्त्वमद्वास्त्व
 मस्मनस्य विन्तवनस्यस्त्वमाषधीस्यस्त्वं नृणां नृपत
 जायस्य विः ॥ ॐ यद्यासनाय नमः ॥ ध्यान ॥ सु
 टिनलिनलिनसुसुमोलिवद्धन्दुवखाप्रवसुतन
 साधुवन्दुवद्भक्तनर्ण ॥ स्वकवललितमूढायागवः
 यादुमालसुटिकवज्रमूकागोवमीगन्नमामि ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 साधु वन्द्य वन्द्य वन्द्य ॥ स्वक बल लिंग मूढाया ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 दाक्ष माल सुटिक वज्र मूढा (गो वसी) नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 यत्न श्रवणाय महा लक्ष्मी सहि गायन मः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 कथयतामह सुगन्धि यद्वि वन्दन ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 सुगन्धि यद्वि वन्दन ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 लक्ष्मी वानिषद नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 लासथ ऊत्तम वध यूवर्ष ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 महीशोः पृथिवी वनं मय रू मिमिक्षतां पियता
 न्नाह्वी मरुतिः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 गुरुद्विस्वम (नवद्वया न्दी) तस्मै दवा अवि वन्दन
 यश्च वक्ष्ये लस्यतिः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 वानध्यासान कृष्ण नट पया लया ध्याव (धरिः) मरु
 द्वाजे यन्त शो अ वक्रामनः पयद वमि गान्धिलानि
 गयु ललयन् यन्तः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

नमो माता (गामिनि) नमः ० नमो वृंदमह ० नमो
 शिनिषामीदमह ० नमो ववा ० वृंदमह ० न
 मोधमनमानया सिद्धिगनया वायुधिवीधा
 वार्था वाया वस्त्राकानामनिना अस्मद्वत्तु स्वाहा
 स्वाहा कृतं दुर्जनरुसमाननंगदुर्त ॥ ॐ कृपा
 यनमः ॥ ॐ अय ० सह प्रमृषिनिः सह प्रमृषि
 निः सह स्तुतः समुद्ववपय (धा) सत्यः सा अस्म
 महिमा ग्लानि वायु वृष विप्रनाथ ॥ ॐ प
 वामायनमः ॥ ॐ य जायते नत्तदनी न्यन्या विष्ण
 नृपालिपविता वरुवा यत्का मास्तु रुद्रमस्तु ना
 अस्तु वयं स्याम पतयानयीनां ॥ ॐ मा कालि
 यायनमः ॥ ॐ सफषयः प्रतिहिताः नीत्रसक
 यनि सद्यमादं सदायः स्वयनालाकनीयस्तु
 जया गता अस्तु अजी सग सदी वदवी ॥ ॐ आवा
 रुनादि ॥ ॐ धूप ॥ ॐ धूवसिधूवधूवर्नधूवर्नया
 स्मानधूवर्निर्गधूवर्नवयधूवामः ॥ ॐ दीप ॥ ॐ
 गजासिगुक्रमस्यमृगमसिधामनामासि। प्रिय
 दवानामना धृष्टवयजनमसि ॥ ॐ रुत ॥ ॐ

स्मान्धूवागनधूवागवयधूवामः॥ ॥ द्यावा॥ दु
 गंजासिगुक्रमस्यमृगमसिधामनामासि। प्रियं
 दवानामनाधूवन्धवयजनमसि॥ ॥ रुत॥ उं
 याःरुलिनीयाञ्जुरुलाश्रययायाश्चययिणी
 रुदस्यतिप्रसूतास्तानामश्रुत्व० रुत॥ ॥ नेव
 य॥ उं अन्नपतेन्नसनादश्चनमीवस्यगुणिनी
 १ पप्रदागानं गावडुर्कनाधदिदिप्रदवहुव्यद
 ॥ ॥ प्रतिका॥ उं मनारुतिरुषगामाश्रयरु
 स्यतिर्यरुमिमगनात्वविद्यंयरु० समिमदधा
 रुविध्वदवासरुमादयंगामाश्चतिष॥ ॥
 ऊय॥ उं रं सः स्वाह॥ ॥ रुत॥ ॥ गान्दीवन्दुषा
 वहावधवलं गुञ्जाकुमधस्तिगंयीयूषांविष्यूर्ण
 र्कंरुयगलं गुञ्जावविंददयं। विआर्णगलितान्
 पावकटर्णपू० न्दविम्बाननं वंदमरुयं विनाग
 नेककटर्णमरुयं ऊयं र्णं कनं॥ अरुगन्धादि॥ उं
 क्रयानप्रियश्रुतवदूतीसदावध१ सखा। क्रया
 गविष्ययावता॥ क० नयविस्रवर्ण॥ वंति मरुय
 अयकलमयूजाविषि॥ ॥

१ अथ ध्यातुं लार्चनं ॥ न्यासः ॥ ॐ कं रुट् अननकं कि
अमुय रुट् ॥ कवः ॥ धनं ॥ ॐ कं सः सर्वं का गा द
दया य न मे ॥ ॐ कं ध्यामदि कि नि व स का हा ॥ ॐ ॥
कं ॐ अनादि वा ध नि रा ये वो षट् ॥ ॐ कं दं स्व रु
क व या य द् ॥ ॐ कं अल य क कि न रु य या य व ष
ट् ॥ ॐ कं रुट् अननकं कि अमुय रुट् ॥ न्तिक
ना क न्या स ॥ ॥ धनं न अर्थ पा षट् ॥ आ वा
ह ना दि ॥ धन मूखा द ध य न ॥ ॥ रुत उ दि ॥ ॐ कं
कानि ट् हि क ला या गा य द् रुट् ॥ ॐ कं क्री प्र ति क
क ला य या गा य द् रुट् ॥ ॐ कं वि या क ला या गा य
द् रुट् ॥ ॐ कं अं गा नि क ला या गा य द् रुट् ॥ ॐ कं
हं गा न्या गी त क ला या गा य द् रुट् ॥ ॐ कं रुट् आः
रु मू द नि ॥ न्ति रु त उ दि ॥ ॥ आ न य द् ॥ आ
न न नि अ य त ॥ आ न न व न्द न न म ॥ आ न न
नि व स य द् य न म ॥ आ न्ना स ना य न म ॥ आ न्म मू
रु य न म ॥ न्ति आ न य द् ॥ ॥ आ स न ॥ ॐ
त त्वा या सी व क ला व न्द मा न रु द्वा गा रु य उ मा ना
रु वि रि ॥ अ रु उ मा ना व न्द रु द्वा ध्वा व ॥ ० स मा

[illegible]

द्वन्द्वजगद्गुरुं, नागदात्रारुर्नगिर्व। एतद्व्यात्वा
महाद्वयकर्मस्यैकजिम्। ॐ नमो ॥
विश्वजलि॥ ॐ ईं सः सत्यं याय नमः॥ गाय
वि॥ ॐ ईं सः सत्यं याय विद्वद् सत्यं याय ध
महिता नान गय दयात् ॥ ॐ धर्मादिस्थान
मः॥ ॐ वासादिगकि स्थानमः॥ ॐ ईं कवायया
वलि सहिताये नमः॥ ॐ रुवाय सर्वस्मि न सहि
ताये नमः॥ ॐ महेश्वराय वासा सहिताये नमः
॥ ॐ निवगकि सहिताये नमः॥ ॐ स्वनवमञ्ज
ली सहिताय नमः॥ ॐ ययुयतयकायाय पीस
हिताय नमः॥ ॐ उयाय ब्रह्मा पीस हिताय न
मः॥ ॐ अम्बकाय गुरुदा सहिताय नमः॥ ॐ
व्वीश्वराय कानि सहिताय नमः॥ ॐ रुवाय या
वती सहिताय नमः॥ ॐ गवयगि विजा सहिता
य नमः॥ ॐ नीलपीवाय मनान्मन्ये सहिताय
नमः॥ ॥ वयः॥ ॐ द्वावा दवी नवस्मवि (व्यवता
ददन्। अग्नद्वयवसाधाम्नाय यमानाः॥ ॥
ॐ असि यमाः अस्मादिष्टाः अर्चनसिद्धिगुण

नमः॥ ॥ वद॥ ॐ द्वावा दवा न न्व स्याद्वि (व्यवसा
दद न॥ अग्न हव्य वसा धाम्ना यत्यमानाः॥ ॥
ॐ असि यमाः अस्मादिह्याः अर्वन्नसिद्धिना पुष्प
नवतानः असि सासन समया विष्टक आदू सुषी
पिद्धि विवंधनानि॥ ॥ ॐ वक्त्रालिमममयः ॥ १०
सूतासः पुष्पाः ॥ यरुहियरुतामः अदिः अग्नम
नयति हय न्यक्तु मादू बीव हतस्तानाः अक्तु॥ ॥
ॐ आतवदस सूतवा ससा ममवागीह गानिदहा
निवदः सनः यविषततिदू नलि विष्वा नाववसि
धंदू विगात्यनि॥ ॥ ॐ नमः ॥ ईरवायवमथारु
वायव नमः ॥ ईक वायवमयस्क वायव नमः नि
वायव निवत वायव॥ ॥ ॐ नमः ॥ ध्वयः ॥ ध्वयति
ध्ववानमानमारुवायव दूदायव नमः ॥ ध्वयि व
पुपुपतयवनमानिलयी वायव निविकषायव
॥ ॥ ॐ नमः ॥ कूदमन्यवडगात ॥ ध्ववनमः ॥ वा
दूसा मूतत नमः ॥ ॐ आग्न अग्नयः ॥ आग्न नू
व विष्वा गद्वक्त्रा ॥ उयन्ववाः अवावधीरुधम्ववा
अवावधीरुवाहा॥ ॥ ॐ ॐ मादूदायतवसकप

दिनदयदीनायधरुनामहंमनीः॥यथासमस्त
द्विपदवदुष्यदविष्वक्कृष्णमश्वसिन्ननाशुर्व॥
॥**ॐ** नमस्तुह नमः॥विष्वक्नमस्तु॥अस्तुचिषि
।अन्यास्तु॥अस्तुपुनरुहंनयः॥यावका॥अस्तु
स्य०गिवाहव॥॥**ॐ** नीलपीवाःगिगिक०॥दि
व०कडा॥उपदिताः॥गमा॥सहस्रयाजनव
धन्वानितनमसि॥॥**ॐ** दवीनायाः॥अपान्नयाथा
व॥उर्मिहविष्य॥००॥दियावान्मदिनमः॥तन्दव
सादवशादरुपुत्रयथायथा॥गस्तुस्वाहा॥॥
ॐ श्रीमालदीर्घत्रिन्दमादि०मीः॥पृथिव्यामरु
वाअय०॥दिन्वास्वधिति०॥गिजानः॥प्रणिनायमह
तमोरुगाय॥॥**ॐ** गान्धर्वयानिविदाहूमहवय
रुगमिषमदितिदहममिध॥अयमनवद्वल०
साममन्विनासत्रस्वतीनः॥सुरुगामयस्तुवत॥**ॐ**
रुगप्र०॥गर्गसह्यवा॥धारागमान्धियमदवाद
दन्नः॥रुगप्रनाउनय॥गारिब॥वेरुगप्रनरिन्
वन्तः॥स्वाम॥॥**ॐ** दवीनायाः॥अपान्नयाथाम॥उ
र्मिहविष्य॥००॥दियायांमर्तिगमा॥तंदवसादव

दन्तः। रुग घनाउनय (गा) रि व (वै) रु ग घन रु नि
वनः स्याम ॥ ॥ **ॐ** द वी वा य (अ) वा न्न वा याम इड
मि ह वि व्य इ ०० दि या यी म रिं ग म। गी द व स्या द व
जा द रु उ क य स्या य यी रा ग द्वा हा ॥ ॥ **ॐ** द वी वा
व ती उ व नाना म रि प्रिया वी द्धि म ध द्ध म य
ग सा ॥ या वा दृ धि वी द्ध न्ना म ध म ल वि क रि ग इ
अ ऊ न रु वि न ग सा ॥ ॥ **ॐ** द वी द्वा ना इ अ धि ना इ
रि ष ऊ न्द स न स्व गी ॥ या ल न्न द्वा य न्न सि द्वा वा द ध
वि दि य म्ब स व न द्ध म्ब (ध) य स्य य न्द य उ ॥ ॥ **ॐ** अ
म्ब इ अ म्बि क अ म्बालि क न मान य ति क ध्व ना स स व
ध क ॥ म रु डि कां का म्पी ल वा सि नी ॥ ॥ **ॐ** व रु य
गा य न म ॥ **ॐ** अ क्क वा का य कि त व क्क ता या दि न
व द रु नि ता ये क लि न द्वा य ना या धि क लि न मा इ
स्व न्दा य स रु स्त न्म स य व (गा) य द्ध म न्न का य (गा)
या ग द्ध (ध) या गा म्बि क न न्म रि क्क मा ल इ उ प ति क
ति द्ध क्क ता य व न्ना वा य म्बा य न्म स ल ग म ॥ ॥ **ॐ**
द रु य न म ॥ **ॐ** अ पु ण्णि सी ना द्ध व रु न्नी मा य
ना य न ॥ का रु न्ध व ली ना। स क्क न्ना नि मि ष उ क्क

[illegible]

वासं ह मादं यं ता मादं यतिष ॥ ॥ ऊ ॥ ऊं
सः स्वाहा ॥ ॥ ऊ ॥ ॥ उ ॥ ॥ नः ॥ निव प्रसादय न
मः सव रुपा कथं वः सान नः सुव नायक थं रुग
वान् स पूरु काम प्रदः वागी ॥ ॥ व द सुवा रुव
पदो वा मादि ग की थं व व्याधी ॥ ॥ क वि ना ॥ कृष्
रुय दा रुय ऊ य शा हि मां ॥ ॥ ऊ ॥ ग न्धा दि ॥ ॥
ऊं क या न थि ज आ रु व दू ती स दा व ॥ ॥ स र वा ॥ क
या ॥ वि रु या द ता ॥ कृ ॥ ॥ न य वि रु व ली ॥ ॥ नि थ
ठि ला र्च न वि वि रु ऊ ॥ ॥

म म प्र बा ण द व पू ज न ॥ न्या स ॥ ॥ ऊं सः ॥ ऊं सः ॥ ऊं सः
य रु ट ॥ ॥ ऊं सः ॥ द द या य न म ॥ ॥ ऊं सः ॥ नि व स
स्वा हा ॥ ॥ ऊं सः ॥ नि वा य वी ष ट ॥ ॥ ऊं सः ॥ क व व
य कू ॥ ॥ ऊं सः ॥ न रु ज या य व ष ट ॥ ॥ ऊं सः ॥ ऊं
मा य रु ट ॥ ॥ नि क वा ग न्या स ॥ ॥ ॥ स न ॥ ॥ ऊं
त त्वा या मी व कृ णा व न्द मा न रु द्रा ॥ ॥ रु य ऊ मा ना
ह वि र्ति ॥ ॥ ऊं रु उ मा ना व दू ॥ ॥ रु वा ऋ व ॥ ॥ ० स मा
न आ यः ॥ य मा वी ॥ ॥ ॥ रु रु रु रु ॥ ॥ ॥ ऊं द व स त्वा स

विष्णुः प्रसवविना बर्द्धक्यां पूजा दक्षक्या ॥ ॥ ध्या
नं ॥ चन्द्रा को निवितावनं सिमसखं यद्यद्यान्त
ः स्मिन्मखाय पुष्टिगान्दसूयविलत्यालिहिमां
यश्च । काटीवन्द्यगलत्सुधापूततनूदावाविस्वधा
काली कान्धाविषविनाहनं यद्युपतिमस्यजयं
वयम् ॥ ॥ निधामं ॥ ॥ कलसादिषियीकलि ॥ ॥
वृषासनाय नमः ॥ ॐ हंसः ॥ द्यौः ॥ सूर्यः ॥ कल
याय नमः ॥ ॥ गणेश ॥ सिद्ध ॥ सनाय नमः
॥ ॐ ग्लो गणेशाय नमः ॥ ॥ ॥ हृद्य ॥ अश्वत्
नाय नमः ॥ ॐ द्वां द्वां सः ॥ सूर्याय नमः ॥ ॥ विष्णु
॥ गङ्गासनाय नमः ॥ ॐ द्वां सः ॥ नमानावाय यथाय
नमः ॥ ॥ दूर्गा ॥ सिद्धासनाय नमः ॥ ॐ द्वां द्वां दूर्गा
ये नमः ॥ ॥ गोत्री ॥ यथासनाय नमः ॥ ॐ द्वां (गो
थे नमः ॥ ॥ सावित्रास ॥ गङ्गासनाय नमः ॥ ॥ दूर्गा
सनाय नमः ॥ ॐ द्वां सः ॥ नमानावाय यथाय नमः ॥
कोटीं लक्ष्मीं वासुदेवाय नमः ॥ ॥ सर्वगारुड ॥ ॐ
गाङ्गासनाय नमः ॥ ॐ द्वां सः ॥ नमानावाय यथाय नमः
मः ॥ ॥ वसुमखमहादेव ॥ वृषासनाय नमः ॥ ॐ

[illegible]

मः॥ॐ रुसः ददयायद्यादि॥ आवाहनादि॥ ॥

वच॥ॐ अजिह्वकलः मया स्वाविः चिन्दवः प
नदू ऊनिवल् स्वसानः सहर्षं धृष्टा वृथा वायन
स्वगीयनमाविः तादयिः॥ ॥ॐ गलानां स्वागल

पति० रुवामरु प्रियाः ला स्वापिय पति० रुवामरु
निधानां स्वा निधि पति० रुवामरु वृक्षाममः आरु
मजानिषरु वामास्व मजा सिषरु वृषः॥ ॥ॐ आरुः

धूननकजसावल् माना निवः यन्मृगं मर्यवा हि
वप्यथन सविता वरथनादवा याति रुवना निपथ
न॥ ॥ॐ विष्णु नवाटमसि विष्णुः नयस्त्वविष्णुः
स्य नसि विष्णुः प्रवाप्ति वेष्णु वमसि विष्णु वत्वा॥ ॥

ॐ जातवदससूनवाससाममवागीरुता निदहाति
वदः सनः पतिषततिदूर्गालि विष्णु नाववसिं वृ
द्विगायनिः॥ ॥ॐ अन्व अन्विक अन्वालि कनसा

नयति कथनः ससय्यथकः सुरुदिका काम्यी लं
वासिनी॥ ॥ॐ विष्णु नवाटमसि॥ॐ प्रीत्यगलः
क्रीड्यपत्वा वहावा यथाऽथेन कृशालि नूयमसि

नीकायः०० कृनिषाणः ससयिषाणः सर्वलाकम

वासिनी॥ ॥ॐ॥ विष्णु नवाटमसि॥ ॐ॥ प्राण्यनलः
 श्रीः प्रत्यावहावाययाः ॥ नृणां लिङ्गयमसि
 नीत्यायं ॥ ॐ॥ निषाणममयिषाणः सर्वलाकम
 ॥ ॐ॥ ॥ॐ॥ दविष्णु विवक्रमधुधानिदध
 पदं समुद्रमस्यया ॥ सुवस्वाहा॥ ॥ॐ॥ नमः ॥ गुरु
 वायवमयाहवायनमः ॥ गुरुवायवममस्कवाय
 नमः ॥ निवायवनिवगवायव॥ ॥ॐ॥ निवानामासि
 स्वधितिषपिगानमस्कअसुमामाहि० सीः ॥ निव
 रुयाम्मायवनायाययजननायनायश्वायायसु
 यजास्वायसुवीयाय॥ ॥ॐ॥ यामालदोवगवि
 रुमाहि० सीः ॥ यथिद्यामरुवाअयि० हित्वास्वः
 धितिषतिजानः ॥ यलिनायमरुनसोरुगाय॥ ॥
 ॐ॥ नमः ॥ गुरुवायव॥ ॐ॥ विष्णु नवाटमसि॥ ॥ॐ॥
 ॥ श्रीलिपदाविवक्रमविष्णु ॥ गायत्र्या ॥ अनाधम
 निधनयन॥ ॥ॐ॥ मरुप्रगायद्वरुषः मरुप्रद
 ॥ मरुप्रयाग॥ मरुमि० सर्वतस्यत्वायनिष्ठदगा
 रुनी॥ ॥ॐ॥ ॥ॐ॥ दविष्णु विवक्रम॥ ॥ॐ॥ निवानाम
 सि॥ ॥ॐ॥ आगेन्द्रनिवागनूत्रद्यावायायकासि

नी। नयानस्तन्वा। गंतमयागिनिवि। गंतवाकभीदि
॥ ॥ **ॐ** नमः। गंतवायवमथा। रुवायनमः। गंतक
वायवमयस्कवायनमः। गिवायवगिवातनाय
व॥ **ॐ** श्रीमालकीर्णविद्महादि० सीः। धृथिवा
सीरुवा। आय० हिवास्वविनिष। गिजानः। प्रलिना
यमरुतसीरुगय॥ ॥ **ॐ** आ०। गि। गनाठप्रका
नरीमाद्यनाद्यनः। दारुनः। धृलीनी। स्रकन्दना
निमिषप्रकवीनः। गंत०। मना। अऊयत्साकमिन्दः
॥ **आवाहनादि॥** ॥ **धूप॥** **ॐ** धूनसिधूर्वधूर्वर्नधूर्व
नयास्मान्धूर्वतिर्नधूर्वर्नवयधूर्वमः॥ ॥ **दीप॥** **ॐ**
गजासिधुक्रमस्यमृगमसिधामनामासि। प्रियधर्व
नामनाधृष्टनदवयउनमसि। ॥ **रुल॥** **ॐ** याः। रु
लिनीया। अरुला। अय्याया। धयपिपी। रुहस्यति
प्रसूतास्मान्। म०। रुम॥ ॥ **नेवद्य॥** **ॐ** अन्नप
तन्नस्यनादकनमीवस्यगुमि। यः। ययदातान्। गार्ज
डुर्कना। धदिद्विपदवउप्यद॥ ॥ **पतिषा॥** **ॐ** मना
रुतिरुषतामा। अस्वदृहस्यतिर्यहमिमगनात्तनिर्व
यह०। समिसंदधु। वि। धदवास०। रुमादयंता

हुं कुं न्ना (धृदि द्विपद वहुष्यद) ॥ प्रतिष्ठा ॥ हुं मना
कृति कषमा मा अस्मद हस्यति यत्तु मिमगना खनिर्द
यत्तु ० समि संद वा तु वि। पद वा स ० ह मा दयं गा
मा ३ प्रतिष्ठा ॥ स प्रतिष्ठा व द वा रु व तु ॥ ॥ उप ॥ हुं
शं सः द्वां द्वां स्वाहा ॥ ॥ (ते स्वाहा) ॥ द्वां द्वां स्वाहा ॥
द्वां स्वाहा ॥ ॥ द्वां द्वां स्वाहा ॥ ॥ द्वां स्वाहा ॥ ॥ द्वां
द्वां स्वाहा ॥ ॥ द्वां स्वाहा ॥ ॥ हुं शं सः स्वाहा ॥
हुं शं सः स्वाहा ॥ ॥ द्वां स्वाहा ॥ ॥ द्वां स्वाहा ॥ ॥ द्वां स्वा
हा ॥ ॥ द्वां स्वाहा ॥ ॥ द्वां द्वां स्वाहा ॥ ॥ हां हां स्वाहा ॥
हुं शं सः स्वाहा ॥ ॥ ॥ न मा मुतं मृता गाय मृ
त्यु जय सदा गिव सर्व पाप विना गाय सर्व पाप नि न
मा मुतं ॥ ॥ अरि य नाथ सिद्धर्थ पूजितायः सूने व
पि। सर्व विद्युद्विद न सो गला धिय न य न स ॥ ॥ हुं
वाक् सुम स कां कां पीय महायति। न मा वि सर्व
पाप द्यं प्रण मा मि दि वा क रं ॥ ॥ जित न क व पुत्री का क
न म रु वि श्व रा व न ॥ न म रु मु द्वा पी क ण महाय नूष
पू र्व ज ॥ ॥ सर्व म ग ल मा ग ल गि व सर्वार्थ साध क
ग व (धृदि द्विपद वहुष्यद) ॥ न मा मुतं ॥ ॥ न म रु

ननाय सहस्रसुखं सहस्रयादादलिना नूवाः
हयः सहस्रनामनयूवाय गायतः सहस्रकाटिय
गधाविलनमः॥ पुच्छः गानकः निवृत्तसादयनम
ः सर्वज्ञकथनः सानन्दः सुवनायकथरुगवान्
संयुक्तकामयदः वागीशः वनदसुवागुवयदाः
वामादिगकीथनः व्याधीशः कविनागकृष्णरुयहा
मरुतः प्रययाहिमी॥ अष्टगन्धः॥ ॐ कथानविश
अनुवदूनीसदावृधः सखाः कथाविषयावृता
कृष्णनयविस्तवली॥ ॐ निवृत्तालदवनयूजाविधि
॥

ननाय रुसिहामनउयविश्व॥ उर्वरिदलसयूजा॥
ॐ कौकौकः सर्वकलेशानमः॥ ॐ आडिद्यक
लशंसमस्त्याविशं लिन्दवः पुननूऊ निवर्तस्वसा
नः सहस्रधुक्ता नूवायायस्वगीपुनमाविशगाद
यि॥ ॐ प्रियेनमः॥ ॐ धीश्वरलक्ष्मीश्वयत्ताव
हावाशयाः नरुजा निवृत्तमयिनोयार्कः ॐ पूनि
षाणाममायिषाणः सर्वलार्कमॐ षाणः॥ ॐ लक्ष्मी
नमः॥ ॐ यामालक्ष्मीर्वरादिर्दमदि० सीः पथिया

हावाशुधाऽथेनकृजालिदूयमधिनीयाकं॥ॐॐनि
षाणाममायिषाणःसर्वलोकम०षाण॥॥ॐलक्ष्मी
नमः॥ॐश्रीमालकीर्णविन्दमहि०सीःपृथिव्या
सीरुवाअय०हित्वास्वधित्वाविजावःप्रलिनाय
महत्सोऽरुगाय॥॥ॐयद्वायनमः॥ॐअग्नेअ
कावदहहनःप्रतिनःसमनाश्वप्रनायकुस
हप्रकित्वा०हिधनदाअसिस्वाहा॥॥ॐयद्वा
नमः॥ॐप्रनायकुत्वयमाप्रपूषाप्रवृहस्यतिः
प्रवाद्येवीददाहनःस्वाहा॥॥ॐनागायनमः॥
ॐनमस्तुसर्वस्यैकवदृथिवीमनूयअनवि
क्षयदिविथयःसर्वस्थानमः॥॥ॐगामयन्ति
गायनमः॥ॐगिवानामासिस्वधित्वाविजावःप्रलिनाय
अमुमामाहि०सीःनिवरुयास्यायवनायामप्र
जननायत्रायसाषायसप्रजास्वायसुवीर्याय॥॥
ॐस्वधानागायनमः॥ॐया०ॐप्रवायाकुधानाना
यवावनस्यतीजनूयवावटप्र०गवतस्य॥॥
ॐअमयनमः॥ॐअग्निमूर्द्धादिवःककुत्यति
ःपृथिव्याअयःअया०वता०सिजिन्वति॥अग्निक्

ॐ पूजा॥

५

॥ ततो मासादि पूजयन् ॥

ॐ मां सख्यानमः॥ ॐ यक्षख्यानमः॥ ॐ नक्षत्र
ख्यानमः॥ ॐ मद्रुहयिनमः॥ ॐ यथियेनमः॥ ॐ
कनलख्यानमः॥ ॐ योगख्यानमः॥ ॐ सख्यानमः
॥ ॐ सख्यसनायनमः॥ ॐ वाणिख्यानमः॥ ॐ व
थायनमः॥ ॐ नक्षत्रायनमः॥ ॐ वाक्ख्यानमः॥
ॐ उद्योगवसनमः॥ ॐ श्रवणायनमः॥ ॐ क
मात्रायनमः॥ ॐ मधुवायनमः॥ ॐ गङ्गायन
मः॥ ॐ प्रणामायनमः॥ ॐ नदीख्यानमः॥ ॐ व
त्तगुरुयिनमः॥ ॐ विष्णुवनमः॥ ॐ कृपायनमः

॥ ॥ वव॥ ॐ अर्द्धमासाः प्रदूषितं मासाच्छा
नुनामकः॥ अर्द्धमासालिप्तं नदीविलिख्य ० सुदय
तुंग॥ ॥ ॐ अग्नेः प्रकृतिर्विधानि विप्रकृतिविन्दः
सख्यामासस्य वरुथादिस्येयं वसिन्दा (स्येयं) स
वृता ५ सयमीकृदस्य तं वरुमयम्मानवमीधातुः
द्विगमीन्दुस्येकादशी वरुणस्य द्वादशी यमस्य त्रयो
दशी॥ ॐ न्द्रा (न्द्रा) ४ यकृतिः सवस्वस्ये नियकृतिमि
तस्य रुगीयाया ३ उथानि सख्येयं वसिन्दी सा सया

दृष्टं मीनं स्य कादशी वनं स्य द्वादशी यमस्य यथा
दृष्टं ॥ ॐ न्द्रा (गन्धः) यन्त्रातिः सनस्वये नियन्त्रातिमि
तस्य रुती या या ३ उथी निमये पदम्यनी धामया
॥ मळी मय्या ॥ ५ मयमी चिक्का नयमी पूष्ण नव
मी स्वयं दृष्टं मीनं स्य कादशी वनं स्य द्वादशी य
म्येन या दृष्टं ॥ या वा यथिवा दक्षिणं पाश्च विष्व
मिंदवाना मरुतं ॥ ॥ ॐ नद्रं स्यः स्वाहानद्रं
विष्वः स्वाहाना स्यः स्वाहा दमा स्यः स्वाहाः
मा स्यः स्वाहा मयु स्यः स्वाहा रुव स्यः स्वाहा सम
सनाय स्वाहा या वा यथि वी स्या ५ स्वाहा वन्दाय स्वा
हा स्याय स्वाहा वग्निस्यः स्वाहा वसुस्यः स्वाहाः
वृद्धस्यः स्वाहा दिशस्यः स्वाहा मनस्यः स्वाहा विष्व
म्यादवस्यः स्वाहा मूलस्यः स्वाहा गारुस्यः स्वाहा
वनस्य निस्यः स्वाहा पूषस्यः स्वाहा रुतस्यः स्वाहा
वधीस्यः स्वाहा ॥ ॥ ॐ सपत्न्यः पातन्य निवाः
हसाद विद्या गवाय वट्ट हस्य गय वावस्य गयये
मलाजी वज्रान्क विद्रः ह्रवा मरुत्तस्य गनदी
पगय या वा यथि वी यः कर्म ॥ ॥ ॐ काणा सिः

[illegible]

[illegible]

विम ॥ ॐ द्विः पृथग कुरुः समवर्तता प्रहस्यजातः
पतिवत्कृत्सीतासदावावयुधिवीर्यामृतमौक्तिके
दवायहविषाधेम ॥ ॐ द्विः कुरुः कुरुः कुरुः
तयतावतानियस्यता ॐ नृस्ययुधः सरवा ॥ ॥
ॐ नमः ॐ नमः ॐ पतिवत्कुरुः नमानमालवाय
वक्रदायवनमः ॥ वयिवपुपतयवनमानी
नपीवायवगितिकलायव ॥ ॐ अजिद्यकल
॥ मन्त्रावाविः त्विन्दवः ॐ ननूकानिवरुस्वमान
॥ सहस्रधूक्तावकावाययस्वगीपनम्माविः ताव
यि ॥ ॐ वन्त्राविष्टतावया अस्मयादादणीधिस
फहस्तासा अस्मयादादणीधिसयहस्तासा अस्म
विषावदावृषकावावतीतिमहादवाप्त्या ॥ अ
विदः ॥ आवाहनादि ॥ ॥ ततः सगानपूजा ॥ ॐ
दक्षिणाश्राष्ट्रार्थं किष्कावयस्यवाकिनामूनलि
नामरवाकवन्यप्रायः ॥ वितावत ॥ ॐ दीर्घाय
त्वायवलायववसमूपजात्वायसहसाश्रुधाजी
वतावदः ॥ ॥ ॐ त्वं जविद्यदापुषापुषाजः वा
हिष्टपूषीगिनः वक्राताकमृतमना ॥ ॐ यद

स्वायं वलाय वदं समुद्रं जलाय सहसा श्रुत्वा
वदन्तः ॥ ॥ ॐ त्वं जवि दूदायुषा पुषा जः वा
हिष्ठ लूधी गिनः न द्वाता क मूत नाना ॥ ॥ ॐ य द
य क च वृथ दं न दगा अरि सूर्या सर्वं तदित्युग व
॥ ॥ त न लि विष्व दगा आ ति दू द मि सूर्य विष्व मा
श मित्रा व नं ॥ ॥ ॐ या ॥ ह लि नी या श्रु द ला श्रु प्र ॥
या या श्व प्र पि नी वृ ह स्य ति प्र सृ ता स्ताना मूर्ध्व त्व
० ह स ॥ ॥ ॐ धी श्व त ल क्षी श्व य त्वा व हा वा न
प्रा श्व न द्वा जालि नू य म वि नी व्या क ॥ ॐ षं नि वा ला
मू मयि वा ला ॥ स वृ ला कं म वृ वा ला ॥ ॥ ॐ न म ॥
प ल्म य व प ल्म स द्वा य व न म उ रु व मा ना य वा ति
प्र गं व न म आ खि द त व प्र वि द त व न म ॐ वृ क
श्रा ध न कृ श्म श्व वा न मा न मा व ॥ कि वि क श्म द वाः
ना ० ह द य श्म न मा वि वि न व क् श्म न मा वि वि ण
क् श्म न म आ नि र्द त य ॥ ॥ आ वा रु ना वि ॥ ॥
त सः कं वा दू ज ॥ ॥ धी सूर्या य न म ॥ ॥ धी प्र ण प ति
रु द्रा प्र का य न म ॥ ॐ ग व रु ना वा य ला य न म ॥
मा न श्व दी ॐ वृ द व ता य न म ॥ ॥ ॐ व वृ ल ना ग

वाजाय नमः॥ ॐ आद्यं नमः सावर्हमानाः
निवर्हय नमः सत्यं वाहि नमः सविता न
थनादवायाति रुवना नियथ न॥ ॥ ॐ या नमः
पुलिवा नमः नमः वायाय काणिनी। तयान सन्वा
नीत मया निविर्गता रिवा कणीहि॥ ॥ ॐ विष्वा
नवाद्य मसि विष्वाः नमः कुरु विष्वाः स्युः सविष्वा
वासि। वेष्वा मसि विष्वा वन्वा॥ ॥ ॐ हृदय तत्र
ति अतथा अहं यमदि राति क्रमं स मज्जनं य
दीदय कुरु वसः स नय जान कदसा सुद विर्ग
हि विर्ग॥ ॥ ॐ अम्र अम्रिक अम्रालिक नमान
यति कथन। स सत्यं यकः स रुद्रिकां कामी लः
वासिनी॥ ॥ ॐ नमः॥ ॐ रुवाय वसथा रुवाय
नमः॥ ॐ कवाय वसय कवाय वनमः॥ ॐ निवाय
व निवत वायव॥ ॥ ॐ जात वद स
सूनवा मसा मसना नीहनी निदहा निवदः॥ सन
॥ यविष तति दूत लि विष्वा नाव वसिधं दूविगा ल
निः॥ ॥ ॐ ॐ मंदवा असयत्न ० सहर्धं सहत
क जाय महतं ये व्याय महतं यानवा म ये नु स

॥ यद्विषयं तद्विदुर्नालो ब्रह्मना वदसि धीं द्वावना ल
निः॥ ॥ **ॐ** सं द वा अ स य त्त ० स ह र्धं स ह र
क षा य स ह र षे ष्ठा य स ह र या न वा अ ये नु स
द्वि या य ॥ **ॐ** स स मू य य ण म सी वा जा सा मा ३ की
व द्म णा ना ५ वा जा ॥ ॥ **ॐ** प्री त्य न त्त द्वा प्री त्य प त्ना
व द्म ना तु या ॥ **ॐ** न द्वा लि नू य स वि नो द्वा रु मा
ॐ कृ नि षा णा म मा २ **ॐ** वा ल स र्व ला क मा २ **ॐ** वा
॥ ॥ **ॐ** न मा रु स र्वा य क व पृ थि वी म न ॥ य
अ न वि क थ दि वि य ष्य ॥ स र्वा य न म ॥ **आ वा ह**
ना दि ॥ ॥

॥ **म मा व लि यू जा ॥** था न व लि षा व द्म क ष्ट या ट ॥ **ॐ**
ग णा नी त्वा ग ल प ति ० ह वा म ह पि या णा त्वा पि य
प ति ० ह वा म ह नि धी ना त्वा नि धि प ति ० ह वा म ह
व सा म मा अ ह म जा नि स रु ध जा त्व म जा सि ष रु
ध ॥ ॥ **ॐ** जा न व द स ॥ ॥ **ॐ** मा नू दाय न व स क
प र्दि न द्वा य द्वा य य रु द्वा म ह म ती ॥ य था स म
स दि प द व रु द्वा द वि ष्व य कृ ण म अ सि न्न ना तु
व ॥ ॥ **ॐ** दृ न द्वा य वा न ॥ पि व न व सी व सा पा

[illegible]

गिवातनूत्र **ॐ** ध्यानायायकागिनी॥ तथानस्त
 न्वागंतमया **ॐ** गिनिर्गताहिवाकगीहि॥ **॥ गाय**
॥ कं कामात्री नैवयेनमः॥ वलि॥ **ॐ** जातवद
 स॥ **॥ ॐ** दायनी॥ **ॐ** दायनेनमध॥ **ॐ** जाता
 प्रविन्दमवितात्रमिन्द० हवहवसूहव० पूव
 मिन्द॥ क्रयामिगकंप्रदूतमिन्द० स्वसिनामध
 वाधाचिन्दः॥ **॥ ॐ** नमः॥ **ॐ** साहारेववायनमः
॥ ॐ जातवद॥ **॥ वदुवा॥** म्या॥ वदुदयनमः॥
ॐ वदुदयनमः॥ अतिश्रुतयो **ॐ** अहयमदिरा
 तिकउमऊनम॥ यदीदय **ॐ** वदुदयनमः॥
 ननदस्मासुदविर्ण॥ **ॐ** वदुदयनमः॥ **ॐ**
 यस्तवदीयदस्तुकीदवीमहाध्वं **ॐ** वदुदयनमः॥
 वलिगृह्ण॥ **ॐ** वदुदयनमः॥ **ॐ** नमावदुदयनमः॥
 दूसाह॥ **ॐ** दूसाह॥ **ॐ** दूसाह॥ **ॐ** दूसाह॥
 कं अन्वालि **ॐ** कं नमानयति कथ्यन॥ समस्त
 यकः॥ **ॐ** वदुदयनमः॥ **ॐ** वदुदयनमः॥

ॐ गायतनयनमः॥ वलि॥ **ॐ** नमाग

ॐ स्वागच्छति स्वयं दानमानमानमावाह स्वावाहय
ति स्वयं दानमानमानमागच्छति स्वयं दानमानमान
नमाद्विदूय स्वाद्विदूय दूय स्वयं दानमानमानमः ॥
ॐ गायत्रि ॥ ॐ वं गामाह स्वा नमः ॥ ॐ आर्यं गो
ः पृथिव्यं कृमीदं दत्तातर्न पूवः पितरं वयं प्रयः
नमः ॥ ॐ कामाची ॥ ॐ कामाची नमः ॥ ॐ जात
वदसः ॥ ॐ जा ॥ ॐ जस्माकमिदं समस्तं ब्रह्म
जस्माकं याम् ॐ ब्रह्मा जयन्तु । अस्माकं वीरा
उरु नर वन्तस्मा ॐ उदं वा अत्र तादृवं ॥ ॐ
कामाची ॥ ॐ समितं ० संकल्पथा ५ संविद्यो वा
विष्णुसमनसमानो । सत्तामना ५ सिमं वता सम
विद्याया कर्तु । अग्नेयूषीष्याधिपारुवत्वं न ॐ प्र
मूर्जय जमानाय धेहि ॥ ॥ सिध्वमस्तु ॥ ॐ ग्रा
ह्यं तं लक्ष्मीं स्वयं पन्थावहावा शया ॥ ॐ नक्षत्रालि
कूपमयि नो यार्क ॥ ॐ सनिवाला सममयि घालः
सर्वलाकं म ॐ घाल ॥ ॥ यदुःखं स्वस्ति ॥ ॐ स्वस्ति
न ॐ नृदृष्टयवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववदाः स्वस्ति
नस्तान् अविष्णु नमिः स्वस्ति नादृहस्यति दधौ

[illegible]

लिनीयाश्रुलाश्रुपद्यायाः प्रविणीकृतस्यति
 प्रसूतास्तानामश्रुत्व० हस॥ **॥ नवय॥** पुंश्रु
 न्नयतन्नस्यनादश्च नमीवस्यउष्मिणः पयदा
 गावंगार्धकुङ्कुनाधदिद्विपदवहस्यदा॥ **॥**
 तिष्ठा॥ पुंमनाश्रुतिश्रुततामाश्रुत्वहस्यतिर्यक्त
 मिसतनात्त्वविष्टयक्त० समिमंदधालुविष्वद
 वास० हमादयंगामा० प्रतिष्ठ॥ सप्रतिष्ठाव
 दारुवह॥ **॥ मउदयक॥ जय॥** पुंश्रुसः सार्ह
 ॥ पुंनलोषधीसकलगीर्धजलनपूर्वसचुणप
 न्नवरुर्गंधतपव्यमाल॥ यक्तप्रयाक्तविषयम
 निरिः प्रजसंत्वाकम्भमृद्विनिवगकिप्रननमामि
 ॥ **॥** वृद्धवनमसुर्यकलदवानमानमः॥ स्त
 नदववसर्वर्षापूजाट्टनमानुस॥ **॥**
 दि॥ **॥** यजमानस्यकाहिकवतायापनयक्त
 निमित्थाथनवदावैलविधेनसर्वयनिपूर्वममु
 ॥

वनीश्रुथयदासाधनी॥ दक्षिणकमलुलपूव्यरा
 जनी॥ शीलिचिह्नदनादिपविशालिध्राकलीपा

वनाश्रयदासाधनं ॥ दक्षिणक्रमलुल्लूख्यहा
 जनं ॥ गीलिविद्धदनादिपवित्रालिषाकलीपा
 णं आश्रयलीवदस्तलीप्रवर्तमानजनउपयमन
 कृष्णसमिधद्वयं ॥ उदुखवमृगलक्ष्मजिनसूर्य
 आश्रयिलगंदल ॥ उदकलितयुग्मयुगालंरुन
 ॥ ॐ यागयागतवस्तुनवाजवाजद्वामरु ॥ स
 खायं ॥ लुप्तमृतय ॥ सप्तदशुल्ललनी ॥ ॐ पवि
 त्रं स्रवैक्यासविभुवः प्रसवदत्यनीमिच्छिद
 लपविभुलसूर्यमनमिह ॥ पवित्रद्वयं ॥ ॥
 ॐ विष्णुवनाटससिविष्णुः प्रकस्तविष्णुसूत्रसि
 विष्णुर्वासावेष्णुवमसिविष्णुवत्ता ॥ पवित्रव
 नं ॥ अथयागनिधाय ॥ ॥ प्राकलीपाययत
 यली ॥ ॐ प्रत्यक्षं वक्षः प्रत्यक्षाश्वानयानि
 वृक्षं वक्षानिष्टकाश्वानयः ॥ ॐ अनिगिता
 सिसयन्नदिवाजिनं त्वावाज्यायेसीमार्य ॥
 कृष्णनसीमार्जनं ॥ ॐ समुदादुर्मिर्मधुमां दे
 उदावदपां ॥ ॐ नासमस्तुतत्वमानट ॥ द्युतस्यन

मउर्कयदमिजिद्धादवानामसुतस्य नाहिः॥
कपूवली॥ ॥**ॐ** देवीनाथाश्रुपुत्राश्रुपुत्रा
प० समशयकृन्नयनापयकृपति० सुधाश्रुय
कृपतिदवयुर्व॥**आलादव॥** ॥**ॐ** यथा० न्द्रा
वृणीतवृणरुथयुयमिन्दुमवृणीधवृणरुथ
पाक्षिगारु॥**आसिंदव॥** ॥**ॐ** सतिउत्ताप
सवडन्यनामहिदुपयविशुसूर्यस्यप्रभिति
॥**सर्ववमुथाकलीआलानथ॥** ॥**ॐ** देवाय
कसी० पुधधंदवयश्रययदाउछा० यनाज
घ्रुविदवस्तकुन्धामि॥**असिंदवमुथाकलीआवि**
पलीतथामधोस्तथा॥ ॥**गगःआश्रुमूली** च
वस्तुलीपतयली॥**ॐ** यत्यरु०॥**क०गनसमा**
ऊ॥ ॥**ॐ** महीनापथासिववृदिश्रुसिववृम
दहि॥ वृश्यासिकनीनकथ्यद्वदश्रुसिवद्वम
दहि॥**आश्रुमूल्यामाश्रुनिधाय॥** ॥
गतभ्यनसाधन॥**ॐ** धान्यमसिधिनदिदवान्या
लायत्वादानात्वायानायत्वा॥**गंदर्पनिधाय॥** ॥
ॐ ककुटामिसधजिद्ध० वसुक्तमावदत्वयाव

[illegible]

अग्नि॥ **कृष्णपद्माक्ष्य नीवाजर्ज**॥ ॥ **ॐ** नमोऽस्तुते
विषहं वसामन्यावसन्धस। अशिवत्सं नमस्तव
(धनवः० नृगीरि नवा मरु॥ **अंगवपहर्ज**॥ ॥
ॐ नानावमिन्दुमविनावमिन्दु० हव हव सु हव
० नृवमिन्दु॥ कयासिगकुं पूरुदूतमिन्दु० स्वसि
नामद्यवाधात्विन्दु॥ **दर्वपहर्ज**॥ ॥ **ॐ** देवसा
न्वासविशुः प्रसवविनावाकृन्मपूष्णहस्ताभ्यां
॥ **प्रगर्ज**॥ **अश्वकर्ज**॥ ॥ **ॐ** ०० अस्वाकुत्वा
वायवस्तु देवावः सविता प्रार्थयतु प्रथममाय
कर्मणि आयायधमद्या ०० नृयज्ञागं प्रजावती
वर्जमीवाश्रयश्चासावस्तनन्ती॥ नमाद्य॥ ० सा
धवाश्रमिन्नापनी स्यात्तवकीर्यजमानस्य पशू
न्नाहि॥ **वपुश्चक्र**॥ **अलाञ्छन**॥ ॥ **ॐ** सविशुस्त्वाय
सवडत्यनाम्नक्विडलाप्रविशुः सूर्यस्य वरि॥ ॥
अश्वपुवर्ज॥ **संश्ववर्ज**॥ ॥ **ॐ** न जासिपुक्रम
समस्तमसिधामनामासिधिर्यदवानामनादृष्टं
दवयजनमसि॥ **द्युतयूजर्ज**॥ ॥ **ॐ** प्रजापते
नत्वं दती न्यन्याद्विष्वाद्युयाणि प्रवितावरुवायन्

समस्तमसिधामेनामासिधियं दवानामनादृष्टं
दवयजनमसि॥ दृष्टमृजनं॥ ॥ॐ॥ प्रजापत
नत्वं दत्तान्यन्माविष्वा नृपालिपतिता वरुवायन्
मास्तु शक्रमस्तु न्नाः॥ अस्तु द्रव्यं॥ स्मा मयतथा न
यीणां॥ वनृपृजनं॥ ॥ॐ॥ आर्षपापद्वन्द्वं दृष्टुं
र्षपापद्वन्द्वं पत्रा आर्षसूत्रगणायीत्वा सर्वमाय
यतिस्तिर्गं॥ आर्षावद्वन्द्वं॥ ॥ॐ॥ पवित्रं शुद्धं
आमविशुद्धं॥ प्रसवद्वन्द्वं नीमिद्विद्वन्द्वं पवित्रं
सूर्यस्य वन्मिर्गं॥ आर्षपवित्रं निधाय॥ ॥
श्रीकृष्णाय नमः॥ ॐ॥ दवीनाया अ॥ (पुत्रवा अ॥
(पुत्रवा अ॥ ममयय नृन्तयता (पुत्ररूपति ० स
धार्तुय नृपतिद्वयवत्॥ ॐ॥ अस्मा नृन्तयता नृ
पुत्रययमिन्दुमठपीध्वं नृपुत्रययप्रादिनाम्॥
ॐ॥ कृष्णस्मारवन्मन्त्रयन्ता शर्षपाका मिर्वद्विन्मि
वर्दिषत्वा शर्षपाका मिर्वद्विन्मिन्मन्त्रा शर्ष
पाका मन्त्रिन्मन्त्रयन्तमसि विष्णुमुपास्यन्मन्त्रयन्त
त्वा नृन्तयन्मन्त्रयन्तमन्त्रयन्तमन्त्रयन्तमन्त्रयन्त
नयन्तमन्त्रयन्तमन्त्रयन्तमन्त्रयन्तमन्त्रयन्तमन्त्रयन्त

(ग) आदकं प्रलीननिधाय ॥ सप्रविर्भूतानख
 प्रव ॥ ॥ गतः धरक धरवा (ग) धनी ॥ ॐ दव
 सत्वा ॥ अत्यन्त ॥ ॥ ॐ प्रत्यक्ष ० वक्ष ॥ प्र
 यत् ॥ ॥ ॐ अनिलिगामी ॥ सीमा ऊर्ध्व ॥ ॐ प
 वितस्तु ॥ पंचगव्यनसिधन ॥ ॥ गतः स्त्रितत्वन
 लामविलासनसाधयत् ॥ कृष्णमूलनमूल ॥ ॐ
 आत्मतत्वाय स्वाहा ॥ म (ध) नम (ध) ॥ ॐ विद्यातत्वा
 य स्वाहा ॥ अ (प) न (अ) प्र ॥ ॐ गिव तत्वाय स्वाहा ॥
 प्रीव कृष्णाय नमः ॥ ॥ गतः धरक धर
 वावर्धनी ॥ ॐ ॐ अध्यावायनमः ॥ ॐ ॐ अध्यावेष्ट
 यनमः ॥ ॐ यात नृपतिवात नृवद्यावायापकाः
 लीनी ॥ गयानसुन्वाणीतमयागि विगंता रिवा ॥ ॐ
 हि ॥ ॐ जातवदसं सनवा मसाममवाती हतानि
 दहातिवदः ॥ सनः पविषततिदूतलिद्विषानाव
 वसिधूद्विनायनिः ॥ ॐ प्रयमनकृष्णमादाय
 ॥ ॐ धूवसिधूवधूवर्नयास्मान्धूवर्तिर्नधूवयव
 यं धूवामः ॥

गतः ॥ निदः ॥ क्रिया ॥ ॐ अ (ग) न्योनिकल्पनी संपा

॥ सवश्चादयमाश्रमस्यविष्णुसमस्तं यथानिवसतं
दिव ॥ ॥ ॐ अग्नेनामकवर्णं संपादयामि स्वा
हा ॥ ॐ कायस्वाहा कसो स्वाहा कर्मसो स्वाहा स्वा
हा धिमाधीताय स्वाहा मनः प्रजापतये स्वाहा वि
हं विहातायादित्ये स्वाहा दित्ये मय्ये स्वाहा दित्ये स
मृतीकायै स्वाहा सवस्वये स्वाहा सवस्वये पावका
यै स्वाहा पूष्णपथाय स्वाहा पूष्णनर्धियाय स्वा
हा त्वष्ट्रस्वाहा त्वष्ट्र उनीषाय स्वाहा त्वष्ट्र पूनूया
य स्वाहा विष्णवे स्वाहा विष्णवे निरुययाय विष्णवे
निषिदिष्यय स्वाहा ॥ ॥ ॐ अग्नेः हतया सनैर्
ये यामि स्वाहा ॥ ॐ याः कलिनीया अहला अपूष्या
याः प्रष्वितीः ॥ इह स्य निषसृतास्तानां मूञ्चत्व ०
हस ॥ ॥ ॐ अग्ने वन्नया सनैर् संपादयामि स्वाहा
॥ ॐ च सविष्यत् विष्णुयथा दवा रिद्यात् ॥ उपय
हः इविष्यनः स्वाहा ॥ ॥ ॐ अग्ने वृषा कवर्णं
संपादयामि स्वाहा ॥ ॐ मूर्ध्ना नदिवा अन्नं पिबे
या वैश्वानरं मृतं आजातमग्निः कवि ० संप्राजः
मतिथिं जनानां सा सन्नायाय जनयन् कदवा ॥ ॥

सं पादया मिस्वाहा ॥ ॐ सुद्धो नं दिवा अं नं दिधि
आ वे ए न न व म न आ का म म नि । क वि ० सं सा जः
म ति धिं ज नाना सा स न्ना पा र्थ ज न य न द वा ॥ ॥

ॐ अ (गः क ५) रु द सं पा द या मि स्वा हा ॥ ॐ रु द
क (५) रि ४ ५ ५ या म द वा रु द प (५) मा क रि य ज
जा ॥ स्ति वे व (गे) सु द्वा ५ स म रि य स म हि द व हि
गं य दाय ॥ ॥ ॐ अ (गः) व र्ण व र्ण नं सं पा द या मि

स्वा हा ॥ ॐ य (थ) मां दार् व क ल्या णी मा व दानि ज न य
५ व द्वा वा ऊ न्ना आ ५ ५ दाय वा या य व स्वा य वा व
५ य वा पि या द वा नां द दि णा ये दा रु वि रु द्वा
स म यं म का म ५ स म द्वा ना म यं मा दान म रु ॥ ॥

ॐ अ न स मा व र्ण नं सं पा द या मि स्वा हा ॥ ॐ अ क
क न व ज सा व र्ण ना नि व र्ण यं न म र्ण म र्ण वा दि न
५ य य न स वि ना व (थ) ना द वा या नि रु व ना नि प ५ न

॥ ॥ ॐ अ (गः) वि वा हा सं पा द या मि स्वा हा ॥ ॐ अ म
कं य जा म रु सु ग नि य वि व द नं । उ द्वा न्क मि व व
ध ना न्क यो म् क्तीय मा म् क ता न् ॥ अ म् कं य जा म रु
सु ग नि य वि व द नं । उ द्वा न्क मि व व ध ना दि ता म्

द्वीयमाभूतः॥ ॥ **ॐ** अग्नेऽसने जाया संपादय
मिस्वाहा॥ **ॐ** काष्ठान्काष्ठान्यवाहनीयद्वयः यत्र
वस्यत्रि। यवानादूधेयतनसहस्रं जगन्नवा॥ ॥
ॐ सकृदग्नेऽसमिधः सकृजिह्वाः सकृसपय
ः सकृधामप्रियाणि सकृदायाः सकृधात्वा यजः
निसकृथानीवायुलस्रधृतनस्वाहा॥ ॐ ति अग्ने
दधक्रिया॥

अग्नेऽधाने॥ **ॐ** मया दृष्टं विद्यायै। किं हस्तं
दृष्टासनं। कृषुस्तुवाहवैवर्क्यकृतं कृत्वा वधि
ति॥ सकृवर्क्यकृतं जिह्वाः प्रवादिदक्षिणं कर्वात्वा
हायत्रीस्तुतावाभ्यागदुर्गानि कर्मसु॥ अग्नेऽधा
नयध्वानमः॥ ॥ अष्टदशसमिहाम॥ **ॐ** समिः
धामिद्वयसगद्युतेष्वधियगानिथि। अस्मिन् ह्याः
शुद्धाग्नस्वाहा॥ ॥ धाउगसमिधहाम॥ **ॐ** तद
वाग्निस्तदादित्यस्तदायस्तद्वन्द्यमाः। तद्वन्द्यं
तद्वन्द्यं ता अपः सपञ्चापनिः॥ सर्वं निमेषाजहि
यविद्युतः॥ यत्र यादध्वाने न सृष्टं नतिर्यङ्मन्मध्य
पविजयत॥ न तस्म्यपतिना अक्रियस्य नाम सहः

तद्धृत्तापः संप्रजापतिः॥ सर्वनिष्ठवाजि
विद्युतः प्रवृत्तादधिने नमूद्वनतिर्यङ्मन्मध्य
पवित्रयुक्तः॥ न तस्मै प्रतिमा अस्ति यस्य नाम स ह
यः॥ दिव्यगुरुं त्वयमासादि ० सीदित्वा य
स्मान्जगतं त्वं वहाहा॥ ॥ **चक्रं तु कान्तं खलु**
चक्रं यत्नीति निधाय॥ ॥ **विष्णुं कान्तं वदन्तु**॥ **तुं**
मनः प्रजापतिं यथाहा॥ **० दं मनः प्रजापतिं यथाः**
ग॥ ॥ **तुं स मां स्थितिं वा मरुतं विमं वीर्यं कृ**॥ **ग** न
वध्नीयात्॥ **तुं स मां स्थितं वधूतं ० वक्रावधूता श्रुवा**
तथादि स्योद्गमिष्यति त्वादि वृत्तु॥ उपयमन कृ
हस्तवन्धनं॥ ॥ **पूजने**॥ **तुं ० नु स वक्रा सिद्धा**
सांस्तथायं वाज ० सता वाजस्य नूय स व सा न न म
हीमदिनि नाम वद सा क वा म ह॥ यस्मादिदं विष्णु
तुवन सा विद्वान्नादं वः स विना धर्म सा विष
त॥ **तुं ० नु स वक्रा हस्त य स वा विषय यत्ने वा व**
गो स नाय न मः॥

ततः प्रजापतिद्वत्तामानसं विषयवक्ता यत्नीतः
वदन्ता कया लावर्तनं॥ **तुं वक्ता न मः**॥ **तुं यत्नीता**

यनमः॥ॐ अग्नय नमः॥ॐ यज्ञवेदाय नमः॥
 ॥ॐ सामवेदाय नमः॥ॐ अथर्ववेदाय नमः॥
 ॐ ऋग्वेदाय नमः॥ॐ अग्नये नमः॥ॐ यमाय नमः॥
 ॥ॐ नैमिषाये नमः॥ॐ वद्वेदाय नमः॥ॐ वायवे नमः॥ॐ कृद्वेदाय नमः॥ॐ ऋषीणां नाय नमः॥
 ॐ अनन्ताय नमः॥ॐ ब्रह्मणे नमः॥ ॥ॐ विष्णवे नमः॥ॐ वरुणाय नमः॥ॐ देवाय नमः॥ॐ दिक्षु नमः॥ॐ विदिक्षु नमः॥ॐ स्वर्गाय नमः॥ॐ मर्यादाय नमः॥ॐ यातालाय नमः॥ॐ गोमये नमः॥ॐ स्कन्दाय नमः॥ॐ सूर्याय नमः॥ॐ चन्द्राय नमः॥ॐ योगीश्वराय नमः॥ॐ कृष्णाय नमः॥ॐ सवित्राय नमः॥ॐ अत्रिष्ये नमः॥ॐ सर्वज्ञाय नमः॥ॐ देवज्ञाय नमः॥ॐ ब्रह्मणे नमः॥ॐ विष्णवे नमः॥ॐ वद्वेदाय नमः॥ ॥
 नमोऽग्निनामकवर्ण॥ॐ द्वाविवाग्नेस्वाहा॥ ॥
 उरुवनमादवस्यः दक्षिणेऽपि रुह्यः स्वधा॥ अथ सव्ये नमिषादकी॥ उपस्यर्गनी॥ ॥ॐॐ नमोऽग्निवे
 यमकृष्णद्वैपायनसुतः॥ अग्नेर्वसुदेवोऽथर्व

उरु न न मा द वं स्यः द (दो (पा (पे रु स्यः स्व धा ॥ अ व
 स य न निला द कं ॥ उ प स्य ग नं ॥ ॐ ॐ न ॐ न्या वी
 य स क (पा दू (धा धि व आ स्ता ॥ अ (न व स द श र्ण व दू
 त्व स व तां त्वां या वा य धि वी अ व त्वां या वा य धि वी
 ॐ ॐ द द द स्य ॐ नु अ र्थ न द वि वा रु त्वा द मः
 अ ति वा अ ति त्वा द ॥ ॐ स्य ल वा दार्ण ॥ ॥
 न नः प ॐ ग य द म ॥ ॐ ॐ वा व ता (ध नू म ता हि रु
 न ० स्र य व सि नी म न व द ग स्या ॥ अ स्त द्वा वा द सी
 वि स्त व न द्वा ध र्थ य धि वी म य र्थः स्वा द ॥ ॐ ॐ द
 वि स्त वि व क म र्थ धा नि द (ध य द ॥ स मू ट म स्य वा
 ५ स न स्वा द ॥ ॐ मान स्ता क न न य मान अ य वि मा
 ना (ग म माना अ (य म्मी वि षः माना वी वा नू द रा
 मि ना व धी र्द वि षा नः स द मि त्वा द वा म द ॥ ॐ न व
 द्वा द वि षा न म्मी न स्ता द्वा क म व व न ॥ य (य म ग व दः
 ग न ॐ व म ग व दः ग न ० ॐ ॐ य म ग व दः ग न स्य
 व वा म ग व दः ग न स दी नाः म्मा म ग व दः ग न म्मी य
 य ग व दः ग न ता न ॥ ॐ वि ष द वा नी मू द ग द नी क
 ॐ म्मी य म व द ग स्या (नः ॥ अ य्या या वा वा य धि

वीऽअनन्तविद्योऽसूर्यऽआत्माजगत्सुखं
स्वाहा॥

तमावद्वाहामः॥ॐ अग्नेयस्वाहा॥ॐ दमग्नेय
स्या॥ॐ सामायस्वाहा॥ॐ दसामायस्याग॥

ॐ अग्निधामास्यास्वाहा॥ॐ दमग्निधामास्यास्याग
॥ॐ अग्नेजिह्वासि सुहृद्व्याधामधाममरु

वज्रयस्वाहा॥॥तमाजिह्वाहामः॥ॐ
दिनप्यायेस्वाहा॥ॐ ददिनप्यायेस्याग॥ॐ क

नकायेस्वाहा॥ॐ दकनकायेस्याग॥ॐ वका
येस्वाहा॥ॐ दवकायेस्याग॥ॐ ककायेस्वाहा

॥ॐ दककायेस्याग॥ॐ सुप्रसायेस्वाहा॥ॐ द
सुप्रसायेस्याग॥ॐ अतिवकायेस्वाहा॥ॐ दमति

वकायेस्याग॥ॐ वद्वपायेस्वाहा॥ॐ दवद्व
वपायेस्याग॥ॐ सकर्तृअग्नेसमिधः सकजि

ह्वाः सकसवयः सकधामधियादि। सकहाणः
सकधाम्वायजनि सकयानीवायुपस्वद्युर्गन्तवा

हा॥ अजिह्वावदनं॥ अजिह्वास्वयनी॥ॐ अग्ने
यसुखि सुखयस्वाहा॥ॐ दमग्नेयसिद्धयस्तथा

सकषात्वायजनिमयानीवायुलस्यद्युर्गनसा
हा॥ अजिह्वाचुदन॥ अजिह्वास्तपनी॥ तुं अग्न
यस्य द्विह्वायसाहा॥ ॐ दमनयसि ह्वायसा
ग॥

गमावदादूति॥ तुं मयदायसाहा॥ ॐ दमयदा
यसाग॥ ॥ तुं दृथिवीसाहा॥ ॐ दृथिवीसाग॥ ॥

तुं अग्नयसाहा॥ ॐ दमनय॥ ॥ तुं ददवस्यः साहा॥ ॐ
ददवस्यः॥ ॥ तुं मविस्यः साहा॥ ॐ दमविस्यः साग॥

तुं वक्रः साहा॥ ॐ दवक्रः॥ ॥ तुं प्रजापतयस्य
हा॥ ॐ दप्रजापतय॥ ॥ तुं ददवस्यः साहा॥ ॐ ददव

स्यः॥ ॥ तुं मविस्यः साहा॥ ॐ दमविस्यः॥ ॥ तुं कुन्दास्य
साहा॥ ॐ दकुन्दास्यः॥ ॥ तुं प्रजापतयसाहा॥ ॐ दप्र

जये॥ ॥ तुं मधायसाहा॥ ॐ दमधाय॥ ॥ तुं सदस्यतय
॥ ॐ दसदस्यतय॥ ॥ तुं अन्नमतय॥ ॐ दअन्नमतय॥ ॥

तुं यशर्वदायसाहा॥ ॐ दयशर्वदायसाग॥ ॥ तुं
अन्नविक्षायसाहा॥ ॐ दअन्नविक्षाय॥ ॥ तुं वाः

यवसाहा॥ ॐ दवायव॥ ॥ तुं कुन्दास्यः साहा॥
ॐ दकुन्दास्यः साग॥ ॥ तुं वक्रः साहादिह॥ ॥

ॐ सामवदाय स्वाहा ॥ ॐ दं सामवदाय स्वाग ॥
ॐ वक्र (९) स्वाहा ॥ ॐ दं वक्र (९) ॥ ॐ कृन्दाय ॥
स्वाहा ॥ ॐ दं कृन्दाय ॥ ॥ ॐ सूर्याय स्वाहा ॥ ॐ दं
सूर्याय ॥ ॥ ॐ दिव स्वाहा ॥ ॐ दं दिव स्वाग ॥
ॐ वक्र (९) स्वाहा ॥ ॐ दं वक्र (९) स्वाग ॥ ॐ प्रजाप
तय स्वाहा ॥ ॐ दं प्रजापतय ॥ ॐ दं वसः स्वाहा ॥ ॐ
दं वसः ॥ ॐ मयि स्वाहा ॥ ॐ दं मयि ॥ ॐ कृन्दाय
॥ ॐ दं कृन्दाय ॥ ॐ प्रदाय स्वाहा ॥ ॐ दं प्रदाय ॥ ॐ म
धाय स्वाहा ॥ ॐ दं मधाय ॥ ॐ मदसस्य तय स्वाहा ॥ ॐ दं
मदसस्य तय ॥ ॐ अनूमतय स्वाहा ॥ ॐ दं अनूमतय ॥
ॐ अथर्ववदाय स्वाहा ॥ ॐ दं अथर्ववदाय स्वाग ॥
ॐ वक्र (९) स्वाहा ॥ ॐ दं वक्र (९) ॥ ॐ कृन्दाय ॥ स्वा
हा ॥ ॐ दं कृन्दाय ॥ ॥ ॐ दिग्म स्वाहा ॥ ॐ दं दिग्म ॥
॥ ॐ वन्द्यम स्वाहा ॥ ॐ दं वन्द्यम स्वाग ॥ ॥ ॐ वक्र
(९) स्वाहा स्वादिता ॥

तत्तत्त्रियं वदामः ॥ ॐ रुः स्वाहा ॥ ॐ दं रुः स्वाग ॥
ॐ रुवः स्वाहा ॥ ॐ दं रुवः ॥ ॐ स्वः स्वाहा ॥ ॐ दं स्व
ः स्वाग ॥ ॥ ॐ रुव स्वः स्वाहा ॥ ॐ दं रुव स्वः स्वाग ॥

[illegible]

यादिस्यापिपतयस्यागा॥ न न मन्त्रुपाद्युगादुति
॥ ॐ नित्यं वा नूपा॥ यं व वा नूपा न संप्रवृत्त
न निधाय॥ ॥ नगागलपतिदूनादिसुसुमन्त्र
पाद्युगादुतिददना॥ ॥ युगादुतिदम॥ ॐ गं
पापनयस्वाहा॥ ॐ दै दूनायिस्वाहा॥ ॐ वदूपास्वा
हा॥ ॐ यलीनायस्वाहा॥ ॐ मग्वदायस्वाहा॥ ॐ य
रुवदायस्वाहा॥ ॐ सामवदायस्वाहा॥ ॐ अथर्व
वदायस्वाहा॥ ॥ ॐ लं ॐ न्दायस्वा
हा॥ ॐ नं अग्नयस्वाहा॥ ॐ सैयमायस्वाहा॥ ॐ दं
नेमस्यायस्वाहा॥ ॐ वं व नूपायस्वाहा॥ ॐ यं वाय
वस्वाहा॥ ॐ मं कवनायस्वाहा॥ ॐ दं ॐ गानायस्वा
हा॥ ॐ अं अन्ननायस्वाहा॥ ॐ वदूपास्वाहा॥ ॥
ॐ आदियस्वाहा॥ ॐ सामायस्वाहा॥ ॐ अंगनाय
स्वाहा॥ ॐ वधायस्वाहा॥ ॐ वृहस्पतस्वाहा॥ ॐ उ
कायस्वाहा॥ ॐ गनेयनायस्वाहा॥ ॐ नाहवस्वा
हा॥ ॐ कं नवस्वाहा॥ ॐ जन्मनेस्वाहा॥ ॥ ॐ अ
थ लाम्नास्वाहा॥ ॐ वलयस्वाहा॥ ॐ आसायस्वाहा
॥ ॐ हनमनस्वाहा॥ ॐ विनीषनायस्वाहा॥ ॐ क

हा॥ **ॐ** कं न व स्वाहा॥ **ॐ** ऊ न न स्वाहा॥ **ॐ** अ
व न्न न स्वाहा॥ **ॐ** व ल य स्वाहा॥ **ॐ** वा सा य स्वाहा
॥ **ॐ** ह न म न स्वाहा॥ **ॐ** वि की ष ना य स्वाहा॥ **ॐ** क
पा य स्वाहा॥ **ॐ** य पु वा सा य स्वाहा॥ **ॐ** मा क (ॐ)
या य स्वाहा॥ **ॐ** मा स या स्वाहा॥ **ॐ** य क्ष या
स्वाहा॥ **ॐ** न क ष स्वाहा॥ **ॐ** मू दू र्ण य स्वाहा॥ **ॐ** धृ
थि य स्वाहा॥ **ॐ** क व (ॐ) या स्वाहा॥ **ॐ** या (ॐ) या स्वा
हा॥ **ॐ** म उ या स्वाहा॥ **ॐ** म न्न स ना य स्वाहा॥ **ॐ** न
गि या स्वाहा॥ **ॐ** व था य स्वाहा॥ **ॐ** व द्वा य स्वाहा॥
ॐ वा व या स्वाहा॥ **ॐ** उ द्द्वि ष य स्वाहा॥ **ॐ** अ न
ला य स्वाहा॥ **ॐ** कू मा ना य स्वाहा॥ **ॐ** म उ ना य स्वा
हा॥ **ॐ** ग व ङा य स्वाहा॥ **ॐ** य रा सा य स्वाहा॥ **ॐ** न
दी या स्वाहा॥ **ॐ** व न्न ग र्ण य स्वाहा॥ **ॐ** वि ष व स्वा
हा॥ **ॐ** व द्वा य स्वाहा॥ **ॐ** कं स मं ग ल द्वा ना य
स्वाहा॥ **ॐ** य था य स्वाहा॥ **ॐ** कं न न्दि न स्वाहा॥ **ॐ**
कं म हा का ला य स्वाहा॥ **ॐ** कं ता व णा य स्वाहा॥ **ॐ**
लं ॐ द्वा य व द्वा ह स्ता य स ना धि य त य स्वाहा॥ **ॐ**
य मो य स्वाहा॥ **ॐ** न अ या य स्वाहा॥ **ॐ** व द्वा ना य स्वा
हा॥

हा॥ **ॐ** वायवस्वाहा॥ **ॐ** कवनायस्वाहा॥ **ॐ** हुनी
गानायस्वाहा॥ **ॐ** अनंतायस्वाहा॥ **ॐ** वक्रा
हा॥ **ॐ** विप्रलक्ष्यास्वाहा॥ **ॐ** कनिकवृक्षायस्वाहा॥
ॐ प्रदम्नगात्रायस्वाहा॥ **ॐ** दीक्षितियगात्रायस्वा
हा॥ **ॐ** रुद्राकायस्वाहा॥ **ॐ** गानिगानायस्वाहा॥
ॐ समरुद्रालायस्वाहा॥ **ॐ** पंचपन्नवायस्वाहा
॥ **ॐ** उदयगिरियवगायस्वाहा॥ **ॐ** सर्वपायस्वाहा
॥ **ॐ** ध्यायस्वाहा॥ **ॐ** रुद्रकायस्वाहा॥ ॥ **ॐ** नै
गलयगयस्वाहा॥ **ॐ** दीपुनवस्वाहा॥ **ॐ** ज्योत्स्ना
गिरिगिरिकलसायस्वाहा॥ ॥ **ॐ** दाक्षिण्यः
सूर्यायस्वाहा॥ ॥ **ॐ** सामायस्वाहा॥ ॥ **ॐ** श्री
गानायस्वाहा॥ ॥ **ॐ** वधायस्वाहा॥ ॥ **ॐ** वृहस्प
तस्वाहा॥ ॥ **ॐ** पुष्पायस्वाहा॥ ॥ **ॐ** गनेश्वरायस्वा
हा॥ ॥ **ॐ** नाहवस्वाहा॥ ॥ **ॐ** कनवस्वाहा॥ ॥
ॐ कुम्भनस्वाहा॥ ॥ **ॐ** रुद्रमः सत्यश्रयामस्वाहा॥
ॐ अश्वत्थमस्वाहा॥ **ॐ** वलयस्वाहा॥ **ॐ** व्यासाय
स्वाहा॥ **ॐ** रुद्रमर्गयस्वाहा॥ **ॐ** विशीषनायस्वा
हा॥ **ॐ** कृपायस्वाहा॥ **ॐ** पुरुषामायस्वाहा॥ **ॐ** म

ॐ अथ नमः स्वाहा ॥ ॐ वल य स्वाहा ॥ ॐ आसा य
स्वाहा ॥ ॐ हन म न य स्वाहा ॥ ॐ विरी य ना य स्वा
हा ॥ ॐ दया य स्वाहा ॥ ॐ य पु न मा य स्वाहा ॥ ॐ म
का ॥ ॐ य स्वाहा ॥ ॥ अथ नमः ॥ ॐ न दिन स्वाहा ॥
ॐ महा काला य स्वाहा ॥ ॐ रु गिन स्वाहा ॥ ॐ विना
य का य स्वाहा ॥ ॐ वृ वरा य स्वाहा ॥ ॐ स्कंदा य स्वा
हा ॥ ॐ दे वी स्वाहा ॥ ॐ व ॐ य स्वाहा ॥ ॐ रुं सः म
रु अ या य स्वाहा ॥ ॥ प्रवान देव ॥ ॐ रुं सः म
पू ल कल सा स्वाहा ॥ ॐ गी ग य य स्वाहा ॥ ॐ को को म
॥ ॐ मू या य स्वाहा ॥ ॐ को मः न माना ना य य स्वा
हा ॥ ॐ को दं द न य स्वाहा ॥ ॐ को नी य स्वाहा ॥ ॐ
को मः न माना ना य य स्वाहा ॥ ॐ को नी ल स्वाहा
द वा य स्वाहा ॥ ॐ को मः न माना ना य य स्वाहा
॥ ॐ रुं सः म रु अ या य स्वाहा ॥ ॐ रुं सः म रु अ
या य उ मा ग कि मं दि ना य स्वाहा ॥ ॐ र्ग क व ना वा
य य स्वाहा ॥ ॐ रु ल गी द वी स्वाहा ॥ ॐ धा य द
वी स्वाहा ॥ ॐ को मः न माना ना य य स्वाहा ॥ ॐ
हो हो मः सदा नि वा य स्वाहा ॥ ॐ अथा ना य स्वाहा

॥ **ॐ** कं सः श्रीगणेश महादेव वासुदेवाय स्वाहा ॥ **ॐ**
कं सः श्रीमन्महादेव वासुदेवाय स्वाहा ॥
उपाधि ॥ **ॐ** कं कं कं सर्वकलत्राय स्वाहा ॥ **ॐ** प्रि
य स्वाहा ॥ **ॐ** लक्ष्मी स्वाहा ॥ **ॐ** यक्षाय स्वाहा ॥ **ॐ** य
क्षत्रे स्वाहा ॥ **ॐ** नागाय स्वाहा ॥ **ॐ** गायत्रि गाय
त्राय स्वाहा ॥ **ॐ** स्वयं नागाय स्वाहा ॥ ॥ सः ॥ **ॐ** कं सः स्वा
हा ॥ ॥ कं वा ॥ श्रीसूर्याय स्वाहा ॥ श्रीपुत्रपतिरुदा
रकाय स्वाहा ॥ **ॐ** गवतनायाय स्वाहा ॥ माना
नी ॥ ॐ ददवगाय स्वाहा ॥ ॐ ददगा ॥ **ॐ** ददगा ना
गाय स्वाहा ॥ ॥ ददगा ॥ ॐ ददगा विव
स्वाहा ॥ ॥ ददगा ॥ **ॐ** सर्वस्यास्तुत्यः सर्वपि
गावस्य ॥ ॐ ददवगाय स्वाहा ॥ ॥ वा ॥ ॐ ददगा ॥
ॐ ददगा ॥ ॥ ना ॥ **ॐ** कं नाटय वाय स्वाहा ॥
॥ गगन ॥ कं कासादी देव वा स्वाहा ॥ ॥ ॐ ददगा
ॐ ददगा ॥ ॥ ददगा ॥ कं महादेव वाय
स्वाहा ॥ ॥ ददगा ॥ ॐ ददगा ॥ ॥ ददगा ॥
ॐ ददगा ॥ ॐ ददगा ॥ ॐ ददगा ॥ ॐ ददगा ॥
ॐ ददगा ॥ ॐ ददगा ॥ ॐ ददगा ॥ ॐ ददगा ॥

स्वाहा॥ ॥ वहुना॥ म्युं॥ वहुना दयो स्वाहा॥ ॥ ग
ना॥ (ओ) पस्तनदी प ॥ दहकी दवो महाधां क
कणपालाय स्वाहा॥ ॥ दमा॥ चं॥ म्युं॥ स्वा
हा॥ ॥ ग॥ गंगाय नमः स्वाहा॥ ॥ मा॥ ॥ ग
मा॥ पुं॥ व(ग) मारुत्या स्वाहा॥ ॥ कामा॥ ॥ नी॥
को कामाय स्वाहा॥ धनवा स्य नका॥ ॥

॥ अ॥ अ॥ या नमः॥ सावा द॥ ॥ गंगाय नमः स्वाहा॥
वाता॥ अ॥ वद॥ ॥ स्वाहा॥ क॥ क॥ मा॥ ॥ ॥ स्वाहा॥
दमा॥ ॥ वै॥ कामा॥ ॥ स्वाहा॥ का॥ ॥ टं॥ वै॥ स्वाहा॥
॥ का॥ ॥ गं॥ वा॥ ॥ स्वाहा॥ व॥ ॥ नि॥ ॥ पं॥ ॥ न्दा॥ ॥ स्वाहा॥
॥ म॥ ॥ न॥ ॥ या॥ ॥ यि॥ ॥ यं॥ वा॥ म॥ ॥ ॥ ॥ स्वाहा॥ वा॥ ॥ उ॥ मा॥ द॥ ॥ गं॥
हा॥ न॥ ॥ म्युं॥ ॥ स्वाहा॥ ॥ उ॥ प॥ न॥ ॥ म्युं॥ ॥ म॥ ॥ ध॥ ॥ पी॥ न॥ य॥ स्वा
हा॥ ॥ ॥ रु॥ न॥ ॥ म्युं॥ ॥ म्युं॥ ॥ म्युं॥ ॥ नि॥ स्वा॥ स्व॥ क॥ न्द
महा॥ रु॥ व॥ वा॥ य॥ स्वा॥ ॥ ॥ न॥ की॥ न॥ ॥ म्युं॥
रु॥ न॥ वी॥ स्वाहा॥ ॥ ॥ रु॥ व॥ ना॥ क॥ ॥ गंगाय नमः स्वाहा॥
हा॥ ॥ को॥ स॥ न॥ माना॥ वा॥ य॥ ला॥ य॥ स्वाहा॥ ॥ ॥ उ॥ न॥ न॥ रु
रु॥ व॥ वा॥ य॥ स्वाहा॥ ॥ ॥ रु॥ न॥ न॥ रु॥ व॥ वा॥ य॥ स्वाहा॥ ॥ को॥ को

मा नो स्वाहा ॥ व धा य स्वाहा ॥ ॥ त व या स ॥ द रु य स्व
हा ॥ रुं री मा य स्वाहा ॥ वे न द्या म्यी स्वाहा ॥ की स
ना वा य ण य स्वाहा ॥ ग्ले ग ल प र थ स्वाहा
॥ व धा य स्वाहा ॥ की का मा य स्वाहा ॥ का नि
वा य स्वाहा ॥ का ख र रु व वा य स्वाहा ॥ ॥ ग न रु स ॥
की स ना वा य ण य स्वाहा ॥ ग्ले ग ल प र थ स्वाहा ॥ ॥
का थ नू स ॥ का रु व वा य स्वाहा ॥ ग्ले ग ल प र थ स्वाहा
की स ना वा य ण य स्वाहा ॥ व ध य स्वाहा ॥ रुं रुं न रु थ
ण वा य स्वाहा ॥ ॥ ऊ ला स ॥ की स ना वा य ण य
स्वाहा ॥ ३ ॥ ग्ले ग ल प र थ स्वाहा ॥ रुं म हा का ला य
स्वाहा ॥ का रु व वा य स्वाहा ॥ ॥ या व वा म ॥ का नि
वा य स्वाहा ॥ रुं का स व स्व री स्वाहा ॥ ग्ले ग ल प र थ
स्वाहा ॥ ॥ वा दा स ॥ ग्ले ग ल प र थ स्वाहा ॥ ॥
गा व मा रु स ॥ ग्ले ग ल प र थ स्वाहा ॥ का नि वा य स्वा
हा ॥ की स ना वा य ण य स्वाहा ॥ व ध य स्वाहा ॥ रुं री
मा य स्वाहा ॥ रुं का स व स्व री स्वाहा ॥ की स ना वा य
ण य स्वाहा ॥ ॥ या रुं म ॥ ग्ले ग ल प र थ स्वाहा ॥ व
धा य स्वाहा ॥ ॥ था वा रु स ॥ रुं का स व स्व री स्वाहा

मायस्वाहा॥ **ॐ** कौं स्रवस्वतीस्वाहा॥ कौं सनात्राय
लायस्वाहा॥ ॥ याकुं ॥ **ॐ** गंगायस्वाहा॥ व
धायस्वाहा॥ ॥ थावाकुं ॥ **ॐ** कौं स्रवस्वतीस्वाहा
॥ वधायस्वाहा॥ कौं महादवायस्वाहा॥ कौं नावा
यलायस्वाहा॥ ॥ द्रवभालस॥ कौं रुगवतिस्वा
हा॥ **ॐ** गंगायस्वाहा॥ कौं महादवायस्वाहा
॥ कौं सनात्रायलायस्वाहा॥ २ ॥ वाकुं ॥ कौं रुववा
यस्वाहा॥ **ॐ** गंगायस्वाहा॥ कौं महादवायस्वा
हा॥ ॥ कौं रुववायस्वाहा॥ **ॐ** कौं नावायनायस्वा
हा॥ २ ॥ **ॐ** गंगायस्वाहा॥ **ॐ** कुं नृस्यवायस्वा
हा॥ **ॐ** जद्वीयुं ॥ स्वाहा॥ ॥ **विश्वी ०** ॥ **ॐ** जद्वीयुं
स्वाहा॥ कौं **ॐ** रुगवतिस्वाहा॥ कौं दक्षिण
स्वाहा॥ **ॐ** गंगायस्वाहा॥ वदवत्स
वायस्वाहा॥ यादकादिनक्रमनी॥ ॥ त्रिपदका
कुं ॥ कौं महादवायस्वाहा॥ २ ॥ **ॐ** कौं सनात्रायला
यस्वाहा॥ **ॐ** गंगायस्वाहा॥ कौं कामायेस्वाहा
॥ **ॐ** गंगायस्वाहा॥ ॥ काकुं ॥ **ॐ** कुं नृस्यवा
यस्वाहा॥ **ॐ** कौं सनात्रायलायस्वाहा॥ २ ॥ **ॐ** कुं ॥

सः स्वाहा ॥ ध्रुं रुगवति स्वाहा ॥ धौ रुवानी सः स्वा
हा ॥ धौ निवाय स्वाहा ॥ २ ॥ (नैगलैगय स्वा
हा ॥ ॥ नवमा ॥ ध्रुं ध्रुं ध्रुं निवाः ॥ चन्द्रमहा रुव
वाय स्वाहा ॥ धौ म ॥ हाद वाय स्वाहा ॥ ३ ॥ धौ
मः नावाय यः स्वाहा ॥ (नैगलैगय स्वाहा ॥ ३ ॥ धौ
दः वाय स्वाहा ॥ धौ वाय स्वाहा ॥ धौ वाम रुक् ॥ ३
रुदाये स्वाहा ॥ धौ निवमाध वाय स्वाहा ॥ ३ ॥ धौ म
हाद वाय स्वाहा ॥ ४ ॥ धौ नव सिहाय स्वाहा ॥ (नैग
लैगय स्वाहा ॥ धौ नावाय यः स्वाहा ॥ २ ॥ धौ स्वा
हा ॥ २ ॥ ॥ वावाकु म ॥ धौ नावाय यः स्वाहा ॥ २ ॥ धौ स्वा
हा ॥ २ ॥ ध्रुं स्वत रुव वाय स्वाहा ॥ (नैगलैगय स्वाहा ॥ २ ॥ धौ स्वा
हा ॥ २ ॥ धौ लाक पाद यः स्वाहा ॥ ध्रुं रुन मः स्वाहा ॥ धौ
हीमाय स्वाहा ॥ ॥ मंग वाकु ॥ धौ मः स्वाहा ॥ २ ॥ धौ स्वा
हा ॥ २ ॥ धौ वकुलाद यः स्वाहा ॥ २ ॥ धौ स्वा
हा ॥ २ ॥ धौ निवाय स्वाहा ॥ २ ॥ धौ नावाय यः स्वाहा ॥ २ ॥ धौ स्वा
हा ॥ ३ ॥ (नैगलैगय स्वाहा ॥ ४ ॥ धौ स्वाहा ॥ ॥ मः स्वा
हा ॥ ३ ॥ धौ रुक् यः स्वाहा ॥ लाक यः स्वाहा ॥ (नैग
लैगय स्वाहा ॥ २ ॥ ॥ यिगा कु म ॥ (नैगलैगय स्वाहा ॥ २ ॥

स्वाहा३॥ (नैग) (९॥ यस्वाहा४॥ निस्वाहा॥ ॥ नस्व
क॥ क्रीं कृष्ण यस्वाहा॥ लोकेश्वरा यस्वाहा॥ (नैग
(९॥ यस्वाहा॥ २॥ ॥ यिना कृष्ण॥ (नैग) (९॥ यस्व
हा॥ क्रीं नात्रा यत्ना यस्वाहा॥ ॥ खलिमास॥ क्रीं
निवा यस्वाहा॥ क्रीं नात्रा यत्ना यस्वाहा॥ क्रीं रुवा नि
सं कना र्था स्वाहा॥ (नैग) (९॥ यस्वाहा॥ ३॥ क्रीं सव
स्वति स्वाहा॥ क्रीं (ग) पिनाथा यस्वाहा॥ क्रीं हविर्गं क
ना र्था स्वाहा॥ क्रीं नाम कृष्ण उरुदा यस्वाहा॥ क्रीं नि
वा यस्वाहा॥ क्रीं धीलक्ष्मी नात्रा यत्ना यस्वाहा॥ आग
म २ स्वाहा॥ क्रीं नात्रा यत्ना यस्वाहा॥ ॥ नवदेव॥
क्रीं निवा यस्वाहा॥ धर्म गिलाये स्वाहा॥ क्रीं वकुला
दये स्वाहा॥ उवाका य आगम २॥ क्रीं नात्रा यत्ना य
स्वाहा॥ क्रीं सदा निवा यस्वाहा॥ क्रीं धर्म गिलाये स्व
हा॥ क्रीं निवा यस्वाहा॥ क्रीं नाग पसारु काये स्वाहा
क्रीं निवा यस्वाहा॥ २॥ क्रीं व (९॥ यस्वाहा॥ क्रीं स
ग कन नात्रा यस्वाहा॥ क्रीं गं कन नात्रा यस्वाहा॥ २
क्रीं व (९॥ यस्वाहा॥ क्रीं जिग यस्वाहा॥ क्रीं जिग यस्वाहा॥
हा॥ क्रीं धीलक्ष्मी नात्रा यत्ना यस्वाहा॥ (९॥ कृष्ण पाल

स्वाहा॥ कं कर्बकं ववाय स्वाहा॥ नाऊकवस्व॥ ॥ यं प
 नाकु॥ (गं गं) लाय स्वाहा॥ ववाय स्वाहा॥ दू॥ स्वा
 हा॥ नवा कं समानक॥ ॥ उपलाक॥ जा॥ न
 नाय लाय स्वाहा॥ ॥ की नाम कं कं उरुदाय स्वा
 हा॥ कां सदा निवाय स्वाहा॥ की ना नाय लाय स्वाहा॥
 वधय स्वाहा॥ कां निवाय स्वाहा॥ ॥ ॥ दं दं शाय स्वा
 हा॥ कं कर्बकं ववाय स्वाहा॥ (गं गं) लाय स्वाहा
 ॥ उं दुं नाटववाय स्वाहा॥ कां रे ववाय स्वाहा॥ म
 धपी॥ दू॥ दू॥ मधपीय स्वाहा॥ ॥

कालाया तन॥ उं विस्तव स्वाहा॥ उं वडाय स्वाहा॥
 उं न्दाय स्वाहा॥ उं यजाय तय स्वाहा॥ उं वेदाय
 स्वाहा॥ उं ववाय स्वाहा॥ उं दुन्दाय स्वाहा॥ उं मख
 य स्वाहा॥ उं प्रवानाय स्वाहा॥ उं गन्धवाय स्वाहा॥
 उं न्दाय स्वाहा॥ उं वक्त्राय स्वाहा॥ उं मासाय
 स्वाहा॥ उं र्दवस्वनाय स्वाहा॥ उं सावयवा स्वाहा॥
 उं दवाय स्वाहा॥ उं अयवम स्वाहा॥ उं दवान्
 माय स्वाहा॥ उं नागाय स्वाहा॥ उं सागवाय स्वाहा॥

स्वाहा॥**ॐ** सर्वस्वाय स्वाहा॥**ॐ** साधयवा स्वाहा॥
ॐ दवा ये स्वाहा॥**ॐ** अयवम स्वाहा॥**ॐ** दवान
गाय स्वाहा॥**ॐ** नागाय स्वाहा॥**ॐ** सागवाय स्वाहा॥
ॐ यवताय स्वाहा॥**ॐ** सास्त्राय स्वाहा॥**ॐ** दिव्यद
वाय स्वाहा॥**ॐ** मानस्त्राय स्वाहा॥**ॐ** नागाय स्वा
हा॥**ॐ** यन्नगाय स्वाहा॥**ॐ** ॐ नवान्ननूदाय
स्वाहा॥**ॐ** यदासि स्वाहा॥**ॐ** नदासि स्वाहा॥**ॐ**
सपत्न्याय स्वाहा॥**ॐ** पितावाय स्वाहा॥**ॐ** पृथिवी
स्वाहा॥**ॐ** डाप्रथय स्वाहा॥**ॐ** यमदेवा स्वाहा॥**ॐ** व
नस्यतय स्वाहा॥**ॐ** रुतममय स्वाहा॥**ॐ** वरुदि
यय स्वाहा॥**ॐ** अपय स्वाहा॥**ॐ** ध्रुवाय स्वाहा॥
ॐ सा माय स्वाहा॥**ॐ** धृतय स्वाहा॥**ॐ** अनिलाय
स्वाहा॥**ॐ** अनलाय स्वाहा॥**ॐ** प्रत्ययाय स्वाहा॥
ॐ प्रकासाय स्वाहा॥**ॐ** वस्यतय स्वाहा॥**ॐ** अ
हनि स्वाहा॥**ॐ** वासवाय स्वाहा॥**ॐ** रुषाय स्वाहा॥
ॐ नवदीपाय स्वाहा॥**ॐ** रुवपाय स्वाहा॥**ॐ** न
राय स्वाहा॥**ॐ** मित्राय स्वाहा॥**ॐ** मूपकावाय स्वा
हा॥**ॐ** कालमनव स्वाहा॥**ॐ** जनाप्ररुतय स्वा

बुलादयस्वाहा॥**हुं**काशिवक्रमनाययस्वा
 हा॥ ॥**र**त्नगणययस्वाहा॥**वं**कजयस्वाहा॥३
 द्यौः कजयालायस्वाहा॥**वं**म्यौः कजयस्वाहा॥**हुं**क
 द्यौः कं कजयस्वाहा॥**हुं**द्वौः कं यकायस्वाहा॥
 कं यद्विनेस्वाहा॥**हुं**द्वौः कं यीयस्वाहा॥**हुं**क
 लक्ष्मीस्वाहा॥**हुं**कं ववकायस्वाहा॥**हुं**ववकायः
 स्वाहा॥**हुं**कुह्यनेस्वाहा॥ ॥**दू**मिनिमाक॥लाहा
 ना॥वकसिका॥गनवा॥गण॥ग्वखन॥अय॥मू
 लमालका॥ ॥**वं**कूल३॥**हुं**कं लं व्वायस्वाहा
 ॥**हुं**कं लं मवीदये॥ ॥मानवनी३॥ ॥**पिं**थू
 सकलं॥विगवसूर्य॥साय२॥यन॥अ२॥ ॥**दू**
 ध्यासकलं॥ ॥थवकयामालकद्युगादूतिवि
 य॥ ॥द्युगादूतिपुष्पा॥**हुं**सकलं अग्नि समिधः
 सकलिकाः सकलसवयः सकलामधियाणि॥स
 कलानाः सकलान्वायजनि सकलानीवायुपस्व
 द्युगनस्वाहा॥**हुं**निद्युगादूति॥ ॥

गताः किलादूतिं कयान्॥**वी**हि पाण्डव तयर्ल॥३

ॐ यल्यल ० नक्षः यल्यल अनातथा निष्क ० न
क्षानिष्कफा अनातथः ॥ अनिलिगासि सयत्तन्दि
दाजिनीत्वादाअथाये समाधि ॥ ॥ यव अक्षर
तिल गधुल यक्ष मृग पीरुल नक्रवसु वाष्क
दन समिधदय नालिकन ऊपमाला ॥ यत हा
मया सुसमय ॥ गायत्री जयता ॥ ॐ नमः शिवाय
विग्रहं नमस्कृत्य यथा मरिचिन्नान् यथा दयात् ॥ ॥ यज
मानस्य धियक् ॥ वाक् ॥ ॐ यद्गुसा त्वेधिषि हि
निर्विद्यार्थक सति ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ यज
वय नमः शिवाय ॥ यजमानादि सर्वेषां वाजा नोषु पु
रायय ॥ सर्वगानिक नवेव सर्वदव यथुष्य
॥ यव मसुष्ट हीत्वा व सर्वगानिक नाम हंसः
वद्विगनागाय लक्ष्मी सर्वार्थसिद्धयन् ॥ ॐ
य ० हविः यजन नमः ॥ अस्तु य ० वीन ० वीन ०
स्वस्त्य ॥ आत्मनि यजानि यजुगानिला कसैः
नरुयगानि अग्निः यजान्वदूला नमः कनान्वनैय
था नमः ॥ अस्मा सुयत् ॥ ॥ यव पूजा ॥ ॐ यमा
सर्जनमः ॥ हस्तार्थः ॥ वन्दनमः ॥ ऊहापवि

नमस्तस्मै नमः ॥ अग्निः प्रजापतिं कृत्वा नमस्तस्मै नमः ॥
यात्र गच्छेत्तस्मात्सुखं ॥ ॥ **उदयपूजा** ॥ ॐ दमा
सर्जनमः ॥ हस्तद्वयं ॥ वन्दनमः ॥ ऊहापवि
तयर्थं नमः ॥ वाक्कादनं अत्र कथनादिप्रवद
याम ॥ **वाक्** ॥ ॐ सर्वालीका प्रसयकं कंकर्णम
दिको निवाकं पुलानिमकृणानि प्रवस्यः प्रतिष्ठ
याम ॥ ॥ **संकल्प** ॥ कारुणिकवशायापनादंगय
थापविमिगिलीकृतिरुहमिस्वाहा ॥ ॥ **वाक्**
लीनजदमालीगृहीत्वा हंसी गृह्यन्ती मृगिन्वा म
य्या गिलीकृतिरुहमसर्वस्यादयाम् ॥ ॥
वास्यतकोसमस्तस्वस्वमस्तु नत्वा यद्वदन ॥ ॥
गिलीकृतिरुहम ॥ ॐ गं गलयतयस्वाहा ॥ ॐ दूदन्म
येस्वाहा ॥ ॥ ॐ वक्त्रं ॥ ॐ वक्त्रं यज्ञानं प्र
थमं यत्र सादिसीमतः सुवक्त्रं वनश्रावः ॥ सवक्त्रा
उदयमाश्रमविद्यामगच्छयानिदमतयविव ॥ **वय**
॥ ॥ ॐ प्रलीनाय स्वाहा ॥ ॐ विष्णुवक्त्रमसिद्विष्णु
॥ ॐ वक्त्रं विष्णुसूत्रमसिद्विष्णुध्वजसिद्विष्णुवमसि
द्विष्णुवत्वा ॥ ॥ ॐ मग्यदाय स्वाहा ॥ ॐ यशुर्व

[illegible]

ह्याय स्वाहा॥ **ॐ** सोमाय स्वाहा॥ **ॐ** अंगाय स्वाहा॥
॥ **ॐ** वधाय स्वाहा॥ **ॐ** वृहस्पतये स्वाहा॥ **ॐ** पुत्राय
स्वाहा॥ **ॐ** मनेष्वनाय स्वाहा॥ **ॐ** वाहवे स्वाहा॥ **ॐ**
कनवे स्वाहा॥ **ॐ** ऊनने स्वाहा॥ ॥ **ॐ** अश्वत्थाय
स्वाहा॥ **ॐ** वलये स्वाहा॥ **ॐ** वासाय स्वाहा॥ **ॐ** रुने
मने स्वाहा॥ **ॐ** विहीषनाय स्वाहा॥ **ॐ** कृषाय स्वाहा॥
ॐ पशुनामाय स्वाहा॥ **ॐ** मार्कण्डेयाय स्वाहा॥ ॥
ॐ मासि स्वाहा॥ **ॐ** पक्षाय स्वाहा॥ **ॐ** नक्षत्राय
स्वाहा॥ **ॐ** मरुताय स्वाहा॥ **ॐ** पृथिव्ये स्वाहा॥ **ॐ** कव
चिन्मये स्वाहा॥ **ॐ** यागिन्मये स्वाहा॥ **ॐ** मरुताय स्वाहा
॥ **ॐ** समस्तनाय स्वाहा॥ **ॐ** बालिन्मये स्वाहा॥ **ॐ** न
थाय स्वाहा॥ **ॐ** वक्राय स्वाहा॥ **ॐ** वानराय स्वाहा॥
ॐ उच्चैष्वदेवाय स्वाहा॥ **ॐ** अनूपाय स्वाहा॥ **ॐ** कर्म
नाय स्वाहा॥ **ॐ** मधुनाय स्वाहा॥ **ॐ** गन्धर्वाय स्वाहा
॥ **ॐ** प्रहाराय स्वाहा॥ **ॐ** नदीनाय स्वाहा॥ **ॐ** वल्ग
वाय स्वाहा॥ **ॐ** विष्णवे स्वाहा॥ **ॐ** रुद्राय स्वाहा॥ ॥
ॐ ईशमंगलदात्राय स्वाहा॥ **ॐ** पथाय स्वाहा॥ **ॐ** ई
शान्देवाय स्वाहा॥ **ॐ** ईशमहाकालाय स्वाहा॥ **ॐ** ईशान

ॐ आय स्वाहा ॥ ॐ विष्णु लक्ष्मणाय स्वाहा ॥ ॐ कनिकट
क्षय स्वाहा ॥ ॐ यदुम्नगाय स्वाहा ॥ ॐ कीर्ति
वशाकाय स्वाहा ॥ ॐ रुद्राकाय स्वाहा ॥ ॐ गान्धिका
वलाय स्वाहा ॥ ॐ सुमङ्गलदाय स्वाहा ॥ ॐ यैव
यन्त्रवाय स्वाहा ॥ ॐ उदयगिरिचक्राय स्वाहा ॥
ॐ सूर्यवाय स्वाहा ॥ ॐ धजाय स्वाहा ॥ ॐ लंछु
यवकादसाय सूत्राधिराज्य स्वाहा ॥ ॐ कुम्भयस्त्र
हा ॥ ॐ यमाय स्वाहा ॥ ॐ नेमिनाय स्वाहा ॥ ॐ वन
नाय स्वाहा ॥ ॐ वायव्य स्वाहा ॥ ॐ कवचाय स्वाहा
॥ ॐ गान्धिकाय स्वाहा ॥ ॐ अर्नगाय स्वाहा ॥ ॐ वक्र
लाय स्वाहा ॥ ॐ हनुकाय स्वाहा ॥ ॐ शम्भुमिन्दुम
विशानमिन्दु ० हवहवसूहव ० गूलमिन्दुम ॥ क
यामिगर्कयन्त्रकमिन्दु ० स्वस्तिनामय ३
वाधान्विन्दुः ॥ ॐ द्युदिकलगाय ॥ ॥ गल
कलगा ॥ ॐ गौगलप्रय स्वाहा ॥ ॐ गलानां त्वा गल
यति ० हवामहप्रियाणां त्वा प्रिययति ० हवामह
निधीनां त्वा निधियति ० हवामहवशासमाश्रु
मजानिषद्वधजात्वमजानिषद्वध ॥ ॥ ॐ यदुम्न

यति० ह्रवा मह प्रिजापीत्वा प्रिय यति० ह्रवा मह
निधीनां त्वानिधि यति० ह्रवा मह वक्षामसा आह
मजानिषद्वधजालमजानिषद्वध॥ ॥ पुनर्व
लगा॥ पुं दौ पुनर्वखाहा॥ पुं दृहस्यतं अति अत
यो अहाय मदिताति क्रुमऊन म्वायदीदयचू
वसः सगयजाननदस्मासूदविर्णीधदिविर्णी॥
॥ निवर्णकि कलगा॥ पुं पुं कंसं द्यौ म्यौ निवर्ण
कि कलसायखाहा॥ पुं नमः गीरु द्यौ वायव
मया रुवायवनमः गीकवायव मयस्क
वायवनमः निवायव निवर्णवायव॥ पुं यी मा
लक्ष्मी वं न विष्म मदि० साः पृथिव्या मीरुवा आय
० हित्वा स्वधिति विजानः यलिनाय महतं मोः
रुगाय॥ ॥ आदित्यादि कलगा॥ पुं दौ दौ सः सूर
यायखाहा॥ पुं सामायखाहा॥ पुं अंगवायखाहा
॥ पुं वक्षायखाहा॥ पुं दृहस्यतं खाहा॥ पुं उकाय
खाहा॥ पुं गीनेयवायखाहा॥ पुं नाहवखाहा॥ पुं
कनवखाहा॥ पुं ऊननखाहा॥ पुं आकृष्यनवः
जसा वरुमानानि वण यन्न मूर्तं मर्त्यवाहिवल्य

यनसवितावधनादवायातिष्ठवनानियथान
॥ ॥ मृत्पुष्पयकलसः ॥ ॐ कंसः मृत्पुष्पयाये
स्वाहा ॥ ॐ अश्वत्थमस्वाहा ॥ ॐ वलथस्वाहा ॥ ॐ
व्यासायस्वाहा ॥ ॐ हनूमतायस्वाहा ॥ ॐ विशीष
नायस्वाहा ॥ ॐ कृपायस्वाहा ॥ ॐ यशुनामायस्वा
हा ॥ ॐ मातुङ्गयस्वाहा ॥ ॐ अश्वत्थयजामह
सुगन्धियविद्वदनी ॥ उवाच कसिद्वदधनान्मत्पा
मृक्षीय मामृतात् ॥ अश्वत्थयजामहसुगन्धिय
विद्वदनी ॥ उवाच केसिद्वदधनादिनामृक्षीयमा
मृताः ॥ ॥ धृष्टिद्वद्वकलसः धृष्टियानी ॥ ॐ न
दिनस्वाहा ॥ ॐ महाकालायस्वाहा ॥ ॐ रुगिनस्वा
हा ॥ ॐ विनायकायस्वाहा ॥ ॐ वृषरायस्वाहा ॥
ॐ स्कन्दायस्वाहा ॥ ॐ दक्षिणायस्वाहा ॥ ॐ वज्रायस्वा
हा ॥ ॐ कंसः मृत्पुष्पयायस्वाहा ॥ ॐ नमः ॥ गिर
वायवमथारुवायवनमः ॥ गिरवायवमथारु
वायवनमः गिरवायवगिरवायव ॥ ॥ यवा
नद्वद्व ॥ ॐ कंसः मृत्पुष्पयायस्वाहा ॥ ॐ अजिद्य
कलसं मया स्वाविर्गत्विन्दवः यनवृक्षानिवरुष

वायव्यनमः शिवायव्यनिवर्तवायव्य ॥ यवा
नद्वय ॥ **ॐ** कंसः मरुतुजयाय स्वाहा ॥ **ॐ** आ जिह्व
कलर्गं मरुत्वाविर्गं त्विन्दवः यूनवृजानिवर्तुष
मानः सहस्रं वेक्ष्णन्वावाययस्वगी यूनमाविर्गता
दयिः ॥ **ॐ** गणपतय स्वाहा ॥ **ॐ** गणानां त्वागण
पतिं ० हवामह प्रियाणां त्वाप्रियपतिं ० हवामह
निधीनां त्वानिधियपतिं ० हवामह वसाममा आहम
जानिषद्भवमान्त्वमजामिषद्वर्षं ॥ **ॐ** कौं सः प्री
सूयाय स्वाहा ॥ **ॐ** आ कृष्ण ॥ **ॐ** कौं सः नमा
नावायणाय स्वाहा ॥ **ॐ** विष्णववाटमसि विष्णुः
अथ कृष्णविष्णुः स्युवसि विष्णुर्ध्रुवासि वेष्णवमसि
विष्णवत्वा ॥ **ॐ** कौं दंदर्जय स्वाहा ॥ **ॐ** ऊत
वदमसूनवामसामसनाती हतानिदहानिवद
शमनः प्रतिपन्नतिदग्गलिविष्णनावधसिधूद
विगायनिः ॥ **ॐ** कौं गीर्ध्र स्वाहा ॥ **ॐ** अस्व अ
स्विक अस्त्वानि कनमानयति कथ्यन्मसस्यथ
कः मरुदिकी कामीलवासिनी ॥ **ॐ** सावित्री ॥
ॐ कौं सः नमानावायणाय स्वाहा ॥ **ॐ** कौं प्रालम्ब

[illegible]

[illegible]

वृषका नली माद्यनाद्यनः शारुनध्वरलीनीं स
 कन्दनानि मिषयकवीनः ॥ १० ॥ मना पूजयन्मा
 कमिन्दुः ॥ ॥ उवाच ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं सर्वकल
 ॥ ॥ स्वाहा ॥ ॐ श्रीजिह्वकल ॥ मन्त्रात्वावि ॥
 त्विन्दवः पूनवृका निवर्तस्वमानः सहस्रं धृष्ट
 वृषावाययस्वगी पूनमाविगादयि ॥ ॥ ॐ प्रि
 ये स्वाहा ॥ ॐ धीं धीं लक्ष्मीं ध्येयत्वावहावायया
 ॥ ध्वनेन्द्राणि नृपमधि नो व्याक ॥ ॐ कनिषा ॥
 मसमयिषा ॥ सर्वलार्कम ॥ ॐ ॥ ॐ लक्ष्मी
 स्वाहा ॥ ॐ श्यां मालक्ष्मी ॥ ॐ यद्वायस्वाहा ॥
 ॐ अग्ने अक्कावदहहनः प्रतिनः समनारुवा
 यनायक सहस्रजिन्म ॥ दिधनदा अमिस्वाहा
 ॥ ॥ ॐ यद्वा ॥ ॐ यद्वा ॥ ॐ यद्वा ॥ ॐ यद्वा ॥
 यूषा यद्वा ॥ ॐ यद्वा ॥ ॐ यद्वा ॥ ॐ यद्वा ॥
 ॐ नागाय स्वाहा ॥ ॐ नमो सुसय्यस्यार्थकवयथि
 वीमन ॥ यज्जन्म विद्वयदिविथयः सय्यस्यानमः
 ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥
 स्वधिसिद्धिपिणानमस्तु अस्तु मामादि ० सी ॥ निव

वीमनू। यः अक विष्णु यदि विद्यः सः सः स्थानमः
॥ ॐ गाय यः लिङ्ग यः स्वाहा ॥ ॐ निवा नासा सि
स्व विनिष्ठ पिता नमः अस्तु मा मादि ० सी ॥ निव
हं याम्ना यः वना या यः प्रजन नाय वायः स्या प्रायः स
यः का स्वायः सूवीर्याय ॥ ॐ स्वयाना गायः स्वाहा
॥ ॐ या ॐ ववा या उधाना नां यः वा वनस्य नीजन
यः वा वटं पृ (गनतः सः) ॥ स (गान) ॥ ॐ ई सः स्वा
हा ॥ ॐ द विष्णु आ अर्षा विष्णु वः सः स्वा विनिः
सूत्र निना मखाक वः सः अयः ५ विनिवर्तः ॥
कः वा ॥ श्री सूर्याय स्वाहा ॥ ॐ आ कृष्ण नवज साव
हं माना निवर्तयन्तः सः सः वा दिव्य यः न स वि
तावः (धनाद वा या निष्ठु वना नि पथ्यन् ॥ ॥ श्री पृ
वति रुद्रा न काय स्वाहा ॥ ॐ या न वृद्ध निवा न नूत्र
या नाया पका निनी ॥ न यान सन्वा गीत मया निविर्त
गारि वा कः गीदि ॥ ॐ ग वृत्त ना नायः लाय स्वाहा ॥
ॐ विष्णु वः वाटं मसि विष्णुः ॥ न कः सः विष्णुः ॥ सूर्याय
विष्णु वः वाटं मसि विष्णु वः ॥ ॥ मान
॥ श्री ॐ वृद्ध वः नाय स्वाहा ॥ ॐ वृद्ध सः अति अत

श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ यद्वा दय च
वस ॥ मयै जानक तदस्मात्सुखं विनिर्धयति ॥ ॥
ॐ ह्रीं क्लीं ॥ ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥
नयति कथं नमः ॥ मयै कथं नमः ॥ मयै कथं नमः ॥
वासिनी ॥ ॐ नमः ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥
कथं नमः ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥
नयति ॥ ॥ ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

मयै कथं नमः ॥ मयै कथं नमः ॥ मयै कथं नमः ॥
दुर्गा ललि विष्णो नाव वसिष्ठं दू विनायकं ॥ ॐ ॐ
मयै कथं नमः ॥ मयै कथं नमः ॥ मयै कथं नमः ॥
मयै कथं नमः ॥ मयै कथं नमः ॥ मयै कथं नमः ॥
मयै कथं नमः ॥ मयै कथं नमः ॥ मयै कथं नमः ॥
॥ ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥
गुलिदू पम विनीत्या रुमा ॥ ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥
ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ ॥ ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥
नाजाय स्वाहा ॥ ॐ नमः ॥ मयै कथं नमः ॥ मयै कथं नमः ॥
वीमनाथं श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ मयै कथं नमः ॥ मयै कथं नमः ॥
॥ ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

वाजाय स्वाहा ॥ **ॐ** नमो भगवते वासुदेवाय ॥ य
वीमनाय अकविन्दयदिविद्यस्यः सव्यस्थानम
॥ ॥ **वसिष्ठा** ॥ **ॐ** वेङ्कटीविद्य स्वाहा ॥ **ॐ** गला
नां स्वागलायति ० हवामह प्रियाणां स्वाप्रियप्रति
० हवामह निधीनां स्वानिधिप्रति ० हवामह वसा
मम ॥ **आह** मजा निवह धजा स्वमजा सिवह धं ॥
ॐ जातवदस ॥ ॥ **ॐ** ॐ मा नृजा जतव स क पदि
नक्षयदीनाय प्रह नामह मती ॥ यथा सः
मसद्विपदवहृष्यदविषं यक्यमम अस्मिन्नना
हृदी ॥ **ॐ** हृत्तं हृत्तयावानः पितृतद्वसीवहाया
वानः पितृतां तनिन्दस्यह विवसि स्वाहा ॥ **ॐ** नमो
वहृणाय व्याधिनन्नानां यतय नमानमानमा रुवस्य
हृत्ते जगतां यतय नमानमानमा नृदायाततायिनक्ष
जाणां यतय नमानमः सूताया हृत्ते वनानां यत
यनमानमः ॥ **ॐ** अर्सेखाता सह प्रालिथ नृदा ॥ अ
धिरुम्मा म ॥ गवा ॥ सह प्रयाजनवंधनानिर्गम
सि ॥ ॥ **दरेवापि स्वा** ॥ **ॐ** सर्वस्वाहृतस्यः सर्वपिः
॥ **ॐ** सर्वस्वदवगायः स्वाहा ॥ **ॐ** समस्वदवगा

धिया मंदद्विषाया ब्रह्मसा नाम ३ आयुः प्रम
षीमो ३ अहं गवद्वीरं विदय गवद विसेद नि ॥
वा ॥ कं व (७) वयं स्वाहा ॥ ॐ जा न व द स ॥
ना ॥ ॐ दू ना ठ व वा य स्वाहा ॥ ॐ या न ब्र द नि
या न नू व द्या वा पा य का नि नी ॥ ग या न स न्वा णं ग म
या नि वि णं ग रि वा क णी हि ॥ ॥ ग ग न ॥ कं का मा
वी रं व यो स्वाहा ॥ ॐ जा न व द स ॥ ॥ ॐ न्दा यः
नी ॥ यं ॐ न्दा य नी स्वाहा ॥ ॐ जा ना व वि न्द स वि ना
व मि न्द ० रु व रु व स रु व ० गू न मि न्दी द्र या मि
ग कं य नू दू ग मि न्द ० स सि ना म द्य वा धा लि न्द ४
॥ ॥ रु व रु ॥ जां म हा रु व वा य स्वाहा ॥ ॐ या न
ब्र द ॥ ॥ व रु वा ॥ म्मी व रु वा द यो स्वाहा ॥ ॐ
व रु स्य न अ नि अ न य ॥ अ हा य म दि रा नि क
म उ म ऊ न य ॥ य द्दी द य रु व स २ ज न य जा न
ग द सा म द वि णं (७) हि वि णं ॥ ॥ ग वा व ॥ (७) व
सु व द्दी य द रु की द वी म हा धां क क य पा ला य व
लि ग द २ स्वाहा ॥ ॐ न मा व रु णा य ॥ ॥ द सा रु
॥ ॐ ग द्वा म्मी स्वाहा ॥ ॐ अ स अ नि क ॥ ॥ ग ॥

दं॥ या न न काला या न न मलुल दृता कृति स
 स्वर्ग विषय ॥ ॥ कल ॥ यति ॥ आ कृति ॥ ॐ
 ई सः स्वाहा ॥ वद ॥ ॐ मना इति ईषता मा इत्य
 दृष्ट स्यति य इति मी मं नान्व विष्ट य इति ० मनि मं
 दधा ॥ विष्ट दवा म ० द सा दय ता मा इति यति
 ॥ लाजा यति ॥ धुवाने त्वाय ॥ ॥ यथा मी द्वा
 कृति ई द्या ॥ ॐ ई सः स्वाहा ॥ ॥ मी द्वा कृति

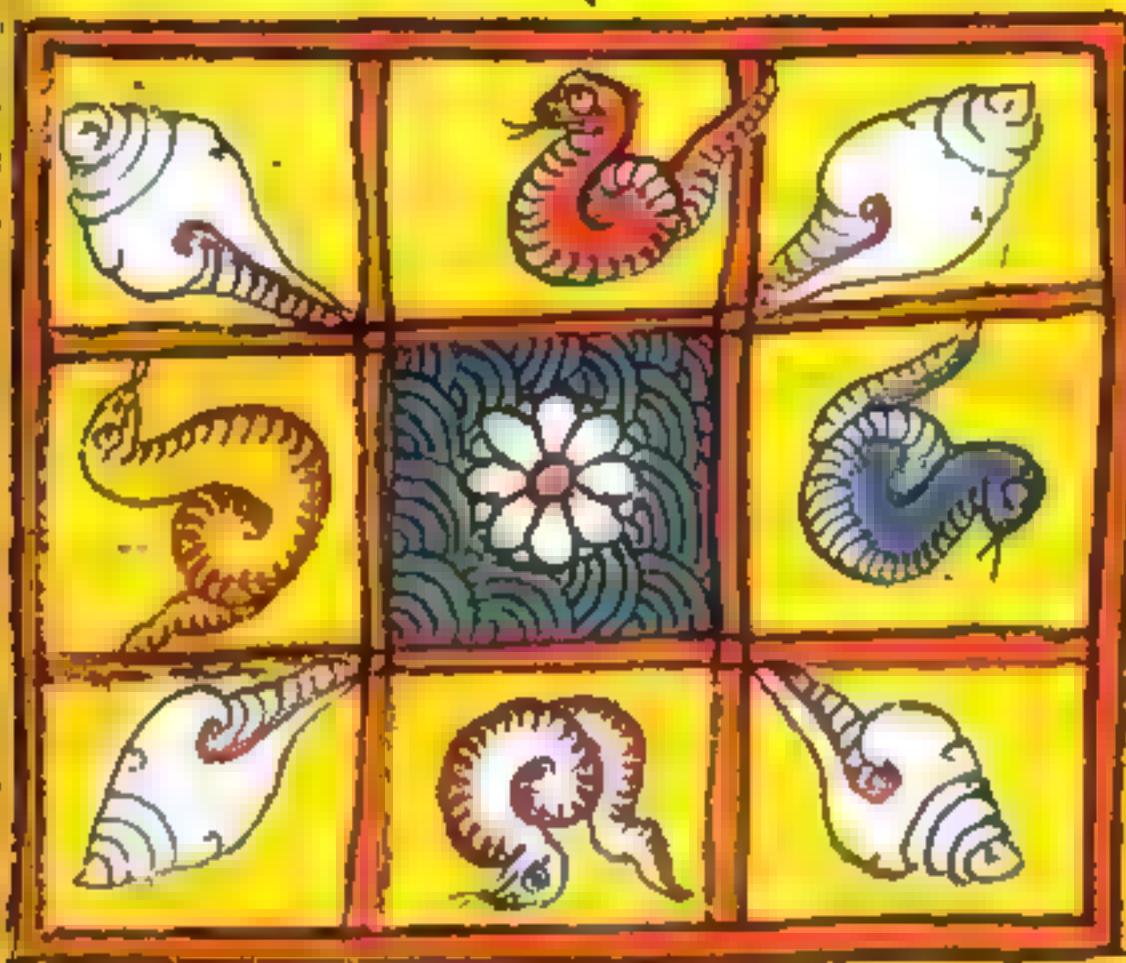
पू० ॥ ॐ अ० संख्यागा सह आलिथ नूदा ॥ अ० लिख
मा मा न आ ॥ सह सथा जन व ध नानि न स सिखा
हा ॥ ॐ नि संख्या कृति पू० ॥

गगा यथा निमि लिख कर्म का न य म ॥ ॥ मूल द्या
न स न्द व ली ख य ॥ मि म्या ल द्वा व न न ॥ नि व द्वा न ॥
ॐ न का ह लं व ल ग ह लं वे क्क वी मि द म ह न व ल
ग मू क्ति ला मि य न्म नि द्वा य म मा र्था नि द्वा न थ
म ह न व ल ग मू क्ति ला मि य न्म स मा ना य म स मा
ना नि द्वा न थ म ह न व ल ग मू क्ति ला मि य न्म स
व न्म स स व न्म नि द्वा न थ म ह न व ल ग मू
क्ति ला मि य न्म स जा ना य म स जा ना नि द्वा ना ॥
रु र्था क्ति ला मि ॥ ॥ व लि ॥ ॐ अ० व वा व द धि ॥
व का य थ मा द धा नि ष क ॥ अ० व स व द्वा मू य न्म
व द्वा य थ मा द धा नि ष क ॥ अ० व स व द्वा मू य न्म
जा मि पु क्क म स म स म सि धा म ना मा सि ॥ पि य न्द वा
ना म ना ध व न्द व य जन म सि ॥ ॥ म ना द्वा ना ल वा
पू० ॥ ॐ अ० नि मू द्वा दि वः क क य तिः पृ थि यो अ

आसिष्ठुक्रमस्यमृगमसिधामनामासि। प्रियन्दवा
नामनाधुन्यवयजनमसि॥ ॥ मनाहृतालवा
पूजा॥ ॐ अग्निमूर्द्धादिवःककृत्यतिःपृथिव्याश्र
यी। अथापुनतापुसिजन्वति॥ ॐ त्वंजविकृदागु
धानःपादि। ॥ ८७७॥ धीनिवःनकागाकमृगमना॥ ॥
मनाहृतालवासगुनंस्वाय॥ ॐ स्वस्तिनामिमीता
मथिनालहाःस्वस्तिगयादिनिनवृण॥ स्वस्तिपूषा
अस्रवापदागुनःस्वस्तिगयापृथिवीसूवहुना॥
स्वस्त्यवायसूयपवामहेमामस्वस्तिहुवनस्यय
स्यतिवृहस्यतिमर्चगणस्वस्त्यस्वस्त्यआदित्या
भारुवहुन॥ विष्णुदवानाअथास्वस्त्यवेष्टानना
वस्रवनिःस्वस्त्ययवाःअरुवकिरुवःस्वस्त्य
स्वस्तिनाबुदःपार्त्तदसः॥ स्वस्तिमिजाववृणस्वस्ति
पथववनि॥ स्वस्तिन०००नुयानि०००स्वस्तिनाअदि
गृधि॥ स्वस्तिपन्ठामनूवमसूयावन्दुमसाविः
व॥ पुनर्दधनाध्रगाजानतामंगममहि। स्वस्त्यन
काश्रमनिष्ठमिमहदूर्गपायसदवतानी। अस्र
वद्यमिन्दुमखंसमस्तुवृहयणानामविमावृह

[illegible]

म॥ ॥ आनति॥ ॐ न जा सि उ क म स म न म सि धा
 म ना सा सि। वि य न्द वा ना म ना ध य न्द व य ऊ न म
 सि॥ ॥ ल सा ना व य क म लु प या ॐ न न का न स
 स्ना न म लु प य न ल ख धा व थ म॥ स्व सि वा व न य
 द य ॥ ॥ स्ना न म लु प स व व की था या व व रु ना
 ग क ल स व उ द्वि ग र्म वा य ॥ य व क्का द द दि ला हा क
 ॥ प वि न ना य उ रु क य ॥ ॥ म लि का दि डा म म न य ॥ ॥



ल ख न हा य ॥ ॐ स्व सि नः
 ॐ न्दा ॥ ॥ व न्द ना सि
 ॥ ॐ य द य क ॥ ॐ र्व
 उ वि ष दा ॥ ॥ य ऊ म
 का ॥ ॐ य क्का य वी र्म
 प न म य वि र्म य ऊ य

न यः स रु ज य व सा न। आ य क्क म य प्र ति म वः
 ॐ य क्का य वी र्म य न म सु न जः ॥ ॐ या रु लि
 नी ॥ ॥ न नः य ऊ न ॥ म य वि ॥ म य दि ॥ वा म् ॥
 का लि क य ना या प न स्ना न क ल सा व क रु यी म य
 य य वा र्म न म ॥ ॐ आ क क्क न न ज सा व रु मा ना

निवर्णयन्नमस्तेमर्त्यवादिन्यथनसविज्ञान(थ
नादवायागिरुवनानिवाप्यन॥ ॥ न्यासः॥ ॐ कं
सः अस्त्रायदुट॥ कन(गाधन॥ ४॥ ॐ कं सः द्रव
यायनमः॥ ॐ कं सः निवसस्वाहा॥ ॐ कं सः नि
खायवीषट्॥ ॐ कं सः कववायदू॥ ॐ कं सः न
सुशयायवषट्॥ ॐ कं सः अस्त्रायदुट॥ ॐ निव
वागन्यासः॥ ॥ धर्मन अर्थपाशपूजा॥ आवाह
नादि॥ (धनमूढा॥ ॥ आत्मपूजा॥ आत्मनसिंद
यन॥ आत्मनवन्दननमः॥ आत्मनयूषनमः॥
आत्मन आत्मासननमः॥ आत्मनमूर्त्यनमः॥
ॐ नि आत्मपूजा॥ ॥ आसन॥ ॐ तत्त्वायामिवः
द्वेषावन्दमानस्तदाशाशुयजमानाहविर्हिः अ
हउमानावन्(लेहवाधून् ॥ ० समान आयू ४
यमाषीः॥ ॥ अत्यदली॥ ॐ दवस्यत्वासविशुः
यसवद्विनावाक्यापूकाहसाया॥ ॥ वरुः
कलसपूजाः॥ पूर्व॥ ॐ नकवर्णनागस्थानम
॥ ॐ द्वात्रसमूदायनमः॥ वरुः ॥ ॐ समूदअष्टा
॥ ॥ लिलस्य मध्यापनानायनित्तसीषमाना॥ ॐः

कलसपूजाः॥ पूर्वं॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय॥
 ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय॥ ॥ वद॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय॥
 ॥ लिलस्य मध्याह्ननायनिकीर्तनीयमाना॥ ॐ॥
 द्यावापृथिवीवसुधावजराश्रयाददीनिहमाः
 हवन्तु॥ ॥ दक्षिण॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय॥
 म॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय॥
 वागाय स्वाहा सलीनाय स्वाहा वागाय स्वाहा अना
 ध्याय स्वाहा वागाय स्वाहा प्रणिध्याय स्वाहा वागा
 य स्वाहा अथ सर्वस्वा वागाय स्वाहा गिरिध्याः
 य स्वाहा वागाय स्वाहा॥ ॥ पश्चिम॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय॥
 नागय नमः॥ ॐ दक्षिणसमूदाय नमः॥ ॐ नमो
 दादुर्गि मध्याह्ना ३ उदा नमः॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय॥
 स्वामानट। चतस्रनामगुर्गयदक्षिणिकादवा
 नाममस्तस्यनामः॥ ॥ उहव॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय॥
 नाग्यनमः॥ ॐ दक्षिणसमूदाय नमः॥ ॐ
 समूदतदयमयनः सत्त्वादिनाकाषधीव
 नायः॥ यत्तु सत्त्वायत्तु यत्तु सूक्ताकोनमावाक
 विष्णुय स्वाहा॥ ॥ महिकापूजा॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय॥

धित्रीनारवानिद्रनालिवगनि। यच्च नः सीमस
यथा॥ ॥ डाषधीयूजा॥ ॐ या डाषधीः पूर्वाजा
तादवस्यसि युगं युवा ममेनवहुता महर्षीणां
मानिसकवः॥ ॥ धर्मकलसादि डाषाधिपुत्रिका
यूजा॥ ॥ ववकीसकापलाग॥ ॥ धर्मसकनग॥ ॥

यवद्वयनगयककलमीन॥ ॥ पार्थनावाक्यलन
॥ ॐ द वद वउगन्नाथस्यसि सदावकावका। निमि
ताय मया द व मदीया मूरवतसा॥ नूनामस्तु वि
की (गावायी) (गावापिकवकवित) कलु महसिग
स्तव कमागी यवमग्ववः॥ गिलिदाषगानि व
हु॥ ॥ नवचुन॥ ॐ वक्षा हर्ष वलगहर्ष वेक
वीमिद महर्ष वलगमूलिकलामियनमनिश्चायम
मास्यानि वखानद महर्ष वलगमूलिकलामियन
समानाय मसमाना निवखानद महर्ष वलगमू
लिकलामियनमसवन्धयमसवन्धनि वखानद म
हर्ष वलगमूलिकलामियनमसजाताय मसजाता
निवखानास्तु र्या किलामि॥ ॥ वलि॥ ॐ अथवाव

क्विलाभियन्मसवन्धयमसवन्धनिवखानंदम
हर्नवलगमूक्विलाभियन्मसजातायमसजाता
निवखानात्कर्णकिंलामि॥ **॥ वलि ॥** **ॐ** अथवाव
दधिवकापुथमादेवादिषकाअहीषसर्वाअ
मयन्मवाय्यापुथान्माधवावीःपवासव॥ ॥
दीया॥ **ॐ** नजासिपुक्रमस्यमृगमसिधामनामा
सि। प्रियन्दवानामनाधुन्यवयजनमसि॥ ॥
मगाहागालवापूजा॥ **ॐ** अग्निमूर्द्धादिवःकक
त्यतिःपृथिव्याअयं। अथा५वगा५सिजन्वनि
॥ **ॐ** स्वजविष्ठदापुषात्रःपाहि। ७७धीनिबः
वकागाकमृगन्मना॥ ॥ **मगाहागालवासपुन**
वायं॥ ॐ स्वस्तिनामिमीनामग्निनारुगःस्वस्तिना
यादिगिनवर्षः॥ स्वस्तिप्रयाअस्रवादधुनः
स्वस्तिशावापृथिवीस्रवधुना॥ स्वस्त्यवायम
पयवामहेमामस्वस्तिवृवनस्ययस्यनिवृहस्य
निःसर्वगलंस्वस्त्यस्वस्त्यआदिर्यामारुवधुनः
॥ विष्वदवानाअथास्वस्त्यवेधानवावस्रवग्नि
ःस्वस्त्यदवा३अरुवनिरुवःस्वस्त्यस्वस्ति

[illegible]

४५ भाषी ४॥ ॥ गंगा मूर्ति का स्नान याचक ॥ ॥

यजमान स्मिन् रवहायक ॥ वाक्मन स्मिन् स्नान याच
क ॥ ॥ पर्वताय मूर्ति का ॥ ॐ देवी वाया अग्र

उवा अग्र यवा य ॐ सम य य रु न य ता य य रु
पति ० सुधा ॐ य रु पति द व यू र्व ॥ ॥ वा ऊ द्वा ल
मूर्ति का ॥ ॐ वा ऊ न्म म ध्व वा णां गायाम रु त स्य दी
दिवि । व द्ध मान ५ ग द म । स न १ पित व सू न व
न सु पा य ना रु । स व स्नान ० स्व सु थ ॥ ॥ पाला
वाल मूर्ति का ॥ ॐ अ व रु त नि र्व य न नि र्व न र सि
नि र्व य न ॥ अ व द वे द व रु त म ना या नि ष म व म
स्य म स्य रु र्ण य न वा द्रा द व र्ष स्या दि ॥ ॥ अ ष्व ॥
रु म ल मूर्ति का ॥ ॐ व द्ध ऊ रु न प्र थ र्म य व रु ता
दि सी म त ० सु न वा व न आ व ॥ स व द्वा ड य मा अ
स्य दि द्वा स त ष्व या नि व स त ष्व वि व ॥ ॥ वाल्मी क
मूर्ति का ॥ ॐ आ या दि ष्ठा म या रु व रु ता न ३ उ ऊ द
धा न न म रु व ला य व रु स ॥ आ व नि व त मा न स
सु स्य रु ऊ य न रु न ४ उ णी व नि मा त न ४ ॥ न र्म
३ अ व रु मा म वा य स्य रु या डि न्द थ आ या ऊ न ३

यथावनः॥ ॥ गजदन्तमूर्धिका॥ ॐ त्वमग्ने
यस्मिन्महाउसस्यनित्वमहास्रमसमनस्यवित्वं
वनस्यस्वभाषधीस्यस्वमीषधीस्यस्वैन्लान्नप
राजायसंयुविः॥ ॥ गजदन्तमूर्धिका॥ ॐ आः
यन्मोघं विप्रकमीदगदन्वागवयूवः॥ विगववप
यंस्वः॥ ॥ यद्वागावमूर्धिका॥ ॐ यद्वा निध
यद्वाहुवयद्वाकीयद्वासरुवागमरुजसिपद्वा
क्षियनस्यक्षूलराम्यरुम्॥ ॥ वः॥ यथमूर्धिका
॥ ॐ यन्मयथासवितः॥ पूषासावलावः॥ सुव
गाग्रनविष्क॥ गरिन्नाग्रयपथिरिः॥ सुगरीव
कावनारः॥ विववृद्धिव॥ ॥ गंगामूर्धिका॥
ॐ अथवान्कवथकान्कविष्ककान्कवसन्धन॥
उद्धतासिववाहन॥ कृष्णनगातवाकून॥ मूर्धिका
हवमयार्थ॥ जनयादृक्कृगंठगं॥ त्वयाहृतंनया
यन॥ सर्वयोधेः॥ यमव्यत॥ ॥ विष्ककपमूर्धिका
॥ ॐ विष्ककववाटमसिद्विष्काः॥ नयेः॥ सुविष्काः॥
सूत्रसिद्विष्काधवासि॥ वेष्कवमसिद्विष्कवत्वा॥
॥ ॥ शिवकपमूर्धिका॥ ॐ खड्गवेष्कववः॥ यथा

का॥ पुं विष्णु वराह मसि विष्णुः न के शु विष्णुः
सूत्र मसि विष्णु ध्रुवा सि विष्णु व मसि विष्णु वत्वा ॥
॥ गिव दक्ष मरुहिका ॥ पुं ख द्वा द्वे ध्रुव व ॥ ५॥
कृष्णः वल्गु गद्वरु सुवद्वरु सुवद्वरु सानिन्द्रा य सु
कवः सि० हामाद्वरुः कृष्ण वारुः पिप्यका ॥ कृ
निष्क ॥ व द्या य विष्णु ध्रुव दाना य ध्रुव व ॥ पुं तिः
मरुहिका स्नानं ॥ ॥ गगा डा ध्रुवी स्नानं ॥ पुं याः
डा ध्रुवीः पुं द्वा डा गा द व स्य लिज गं पुं वाः ॥ मनी
नूक कृष्ण मरु० गरी धा मानि स क व ॥ ॥ स सि धा
द क स्नानं ॥ पुं व वल्गु स्या र्द रु न मसि व वल्गु स्कीः
रु स ऊ नी शु व वल्गु स्य स ग स द न्य सि व वल्गु स्य स
ग स द न मसि व वल्गु स्य स ग स द न मा सी ॥ ॥ कृ
सा द क स्नानं ॥ पुं व वल्गु स्य गं व स स्य य ना सूक
स्य रा धि र न य ध्रु जि न्वा विष्णु र रु दं ऊ न य नि द
वा कृ द द न म पि द ध स वी वा ॥ ॥ ध्रु धा द क ॥
पुं रु विष्णु ती वि मा आ धा रु विष्णु २ आ वि वा स ति
रु विष्णु २ द वा अ ध्रु वा रु विष्णु २ अ रु ध्रु य ॥ ॥
रु ला द क ॥ पुं याः रु लि नी यो अ रु ला अ ध्रु य या

व्यपृषिणी वृहस्पतिप्रसूता नाम ॐ न ०
हसः॥ ॥ गी. उ. वा. द. क. ॥ ॐ द्योद्ययिन्वायवलाय
वचससुपजास्त्रायसहसा अथ जीवो वदः
गी. ॥ ॥ म. न्या. द. क. ॥ ॐ ग. अ. द्यावा दूना धर्मा नि
मयः कवी कृष्णः ॥ ॐ ग. वी. स. व. रू. तानां तामिह
पद्ययिष्यं ॥ ॥ अ. न्या. द. क. ॥ ॐ ॐ दमायः प्रव
हता वयः ॐ म. ल. च. य. त. य. द्या. रि. द्वा. हा. नृ. ग. य.
द्व. ग. य. अ. री. नृ. ल. ॥ ॥ गी. (अ. द. क. ॥ ॐ य. गी. धा.
नियववनि सुकाह मा निषा कि लः ॥ त. वा. ५. स.
ह. अ. या. जन. व. ध. न्ना. नि. त. न्ना. सि. ॥ ॥ गी. खा. द. क. ॥
ॐ त. स्य. त. य. दि. श. य. त. य. दि. श. य. त. स्य. य. त्का. मः. य.
न. त. कृ. क. यं. ॥ ॥ य. अ. नृ. त. न्ना. न. ॥ ॐ य. य. ४. य. धि.
या. य. य. डा. य. धी. य. य. या. दि. द्या. त. वि. द्वा. य. या. धाः. य. य.
स्व. गी. य. दि. लः. सी. उ. म. र्श. ॥ ॥ द. धि. ॥ ॐ द. धि. का. य. रा.
आ. धा. र्श. जि. क्का. न. य. स्य. द्या. जि. न. ॥ सू. व. लि. ना. मू. खा.
क. व. र्श. ल. आ. य. ५. वि. ता. र्श. त. ॥ ॥ य. त. ॥ ॐ ग. ऊ.
सि. उ. क. म. स्य. म. त. म. सि. धा. म. ना. मा. सि. ॥ वि. य. न्द. वा.
ना. म. ना. ध. य. न्द. व. य. ऊ. न. सि. ॥ ॐ य. त. मि. मि. क्कः.

कवलयश्रयः प्रवितायेत ॥ ॥ **द्युतः** ॥ **द्युतः** ॥
सिद्धकमसमस्तमसिधामनामासि। विद्यन्तवा
नामनाधुन्यवयजनसि ॥ **द्युतः** ॥ मिमिक्षः
द्युतमस्यानिर्द्युतपिताद्युतमस्यामाअन
सधमावहमादयस्वसाहाकरीष्टपरुवद्विह
यी ॥ ॥ **मधू** ॥ **द्युतः** ॥ मधूवाताजतायतमधूकसनि
सधवः माधीनः सीतावधी। मधूनकमतावसा
ः मधूमन्याधित्वं वज्र। मधूयीवमुनः पिताम
धूमनावनस्यगीमधूमानअनुसूयः माधीना
वारुवनुनः ॥ ॥ **गङ्गा** ॥ **द्युतः** ॥ नमः गङ्गाय
वमयारुवायवनमः गङ्गायवमयस्कवाय
नमः गिवायवगिवतवायव ॥ ॥ **पद्म** ॥
द्युतः ॥ पविशस्तुवैष्णोसविहृदः यसकडन्यना
मचिद्धलपविशुलस्तुन्यवमिहः ॥ ॥ **जल** ॥
स्नान ॥ **द्युतः** ॥ पद्मनयः सवस्वतीमपिर्यतिसम्रात
मः। सवस्वतीहृपद्मवासादगङ्गावत्सवित ॥ ॥
विहृमिस्त्रीनी ॥ **द्युतः** ॥ अस्वकीयजामरुसूगंधिपूषि
वद्वनम् ॥ उवावकमिववन्धनान्मयाः मयाः मयाः

कीयमासगात॥युसकयउमहसुगभिपति
वदनम॥उवोवुकमिववन्धनादितासुकीय
मासगात॥॥वहुःकलसस्त्रादी॥युव॥ॐसुम
दश्रुकाः॥लिलस्यमधायनानायनितमीमम
ना॥ॐन्दायावजीववजाननाउतश्रयादवीवि
हमाहवहुः॥॥दक्षिण॥ॐसुमदायत्वावाता
यस्वाहासलीनायत्वावातायस्वाहाअनाधुव्या
यत्वावातायस्वाहायतिधुव्यायत्वावातायस्वाहा
अवस्यवत्वावातायस्वाहा॥॥यन्त्रिम॥ॐसुम
दादूमिस्मधुमा॥३॥उदावदूपा॥७॥नासमसुतत्वा
मानटा॥वृत्तस्यनामगुर्कयदक्षिजिह्वादवाना
मसुतेस्यनालिः॥॥उह्व॥ॐसुदुर्गददयः
मस्यनःसत्वाविगानावधीवतायः॥यहस्यत्वाय
हयतसूकाकीनमावाकवि(धयत्वाहा॥॥
सहप्रधान॥ॐवसाः॥पविशमसिगानधौवसा
॥पविशमसिसहप्रधान॥देवस्त्वामवितायूनउ
वसाः॥पविशलगतवानलसूदाकासधुक्॥॥
अथादक॥ॐस्वस्तिनः॥ॐन्दावृद्धप्रवाःस्वस्तिन

१ पवित्रमसिंहरुद्राचारः । देवस्त्वामविनायकः ।
वसाः १ पवित्रलगतवाचसूचकासिधुः ॥
अथोदकः ॥ **ॐ** स्वस्तिनः ॥ ॐ हृदयवाः स्वस्तिनः
ः पूषाविश्ववदाधस्वस्तिनस्तस्मिन्निदमिः स्व
स्तिनाहृदयनिदधौ ॥ ॥ ततस्विश्वकावचः
विश्वदानं ॥ लाहानपूजा ॥ हस्तार्चनं यस्तु य
वीर्ययुक्तः ॥ दक्षिणः ॥ अर्जनमलावियः ॥ **ॐ** तच्च
देवहितायवस्तुक्रमवदताय ॥ यमसावदः ॥ न
जीवमसावदः ॥ न ० ॥ १२ ॥ योमसावदः ॥ न प्रवृत्ता
मसावदः ॥ न मदीनाः ॥ स्यामसावदः ॥ न रूयय ॥
वदः ॥ न तात् ॥ ॥ वसुनवायः ॥ **ॐ** वसाः १ पवित्रम
सि ॥ ॥ वन्दनादिसामना ॥ **ॐ** यदयकेवृहः
हृन्मदग्निरुत्सृज्यः ॥ सर्वतदिदुतवसतत्रलिवि
वतनिमता ॥ अतिविश्वमासासिवावनं ॥ ॥ **ॐ** स्वज
विश्वदापुत्रावः ॥ पाद्वि ॥ १८ ॥ धीगिरः ॥ नक्षत्राकमृत
नना ॥ **ॐ** दधिक्रात्रा ॥ अत्रावजिह्वावयस्यवृजि
न ॥ मन्त्ररिनामखाकवय्य ॥ अयं पूषितावत ॥
॥ स्थान ॥ **ॐ** याः ॥ रुलिनीया ॥ अहला ॥ अयप्याया ॥

प्रविष्टी वृद्धस्यतिष्ठ सुगास्मान्नेनेन ० हस ॥
 दवान्कमनःश्रीव्या ॥ पुनमः ॥ रुवायवम
 आरुवायनमः ॥ रुवायवमयस्कवायनमः
 निवायवनिवतनायव ॥ ॥ म ॥ पुं याः रुनि
 नीया अरुला अरुपयया ॥ प्रविष्टी वृद्धस्यतिष्ठ
 सुगास्मान्नेनेन ० हस ॥ ॥ आवतिष्ठतिष्ठाम
 तव ॥ ॥ दवडुक्तनी ॥ पुं डहिष्ठवद्वलः
 स्यतदवक्तुमह ॥ उपययउमनः सुदानव
 ० ॥ पुं याः सुरुवासवा ॥ ॥ दवजानकयजमान
 न ॥ ॥ रुवम्यादिवायथायक ॥ वाक्कलः स्वस्तिवा
 वनं दउय ॥ पुं स्वस्तिनामिमीतामविनालगः स्व
 स्तिगव्यदिति नव्वल ॥ स्वस्तिप्रसादप्रसादधुनः
 स्वस्तिगवापृथिवीसुवधुना ॥ स्वस्तिगवायमपः
 प्रवासहसामं स्वस्तिगुवनस्ययस्यतिष्ठदस्यति
 सर्वगलं स्वस्तिगव्यमग्निदिग्मासारवधुन ॥ वि
 ॥ दवाना अया स्वस्तिगव्यदेवा जनावसुवग्निः स्व
 स्तिगव्यदवा ॥ अरुवनिरुवः स्वस्तिगव्यस्तिना
 दः पात्वं हस ॥ स्वस्तिमिशवद्वल ॥ स्वस्तिप्रसाद

(१७) दवाना अया स्वसुयवेऽवानवावसुवनिः स्व
सुयदवाः अरुवनिरुवः स्वसुयस्वसिना
दुःपात्वं हसः ॥ स्वसिमिशवद्वला स्वसिप (१८) व
दति ॥ स्वसिनः नुः अग्निस्वसिना अदिग
धि ॥ स्वसिप न्नामनववमसु अविन्दमसा विव
यनदधगाद्यगा जानता संगममहि ॥ स्वस्यनक
अमविद्वनमिमहहृगीयायसंदवगानी ॥ अस
वयमिनु सखंसमस्तु वृहय (१९) नामविमावृह
म ॥ अयं हामवमंगिविगं जयं वस्वस्वाययं म
नसावगा अययतयालिः ॥ वलं ययय स्वसि
वादं अरुयन्ना अमु ॥ ॥ नमस्वस्वायय
न ॥ रुद्रामनगयदवगां ॥ ॐ रुद्रक (२०) लिः ॥
॥ यामदवारुदय (२१) मा अहियजया ॥ रुद्रन
गे सुखवा ॥ समरिद्यसमहिदवदिगं यदाय
॥ ॥ निदाकलसालिसखंसययत ॥ ॐ वाय
ये वाययान्याथातिमगनदानकलसमर्कली
या मय (२२) सुतकलीरिक्कलीनीयाति ॥ दय
निदाकलसं ववसुपा दयत ॥ ॐ का ॥ नका

अन्यनादनीयवृषः प्रवृषस्य वि। पदानादुर्वः
प्रगन्तुमहृषणगतनव॥ ॥ गतायवशि

गत्वनसाधनयाय॥ लाम, विलासन॥ निवनयाः
दत्त॥ पादननिवर्त्त॥ ॐ रुः स्वाहा॥ ॐ कौश्रः

नागत्वायनमः॥ ॐ वृक्षयज्ञानयथमयवस्ता
द्विमीमनः सुववादनश्रावः॥ सवद्वाडयमाश्रय

विष्ठाः॥ गत्ययानिवः॥ गत्यदीवः॥ पादसु॥ ॥
॥ ॐ रुवः स्वाहा॥ ॐ कौविश्रातत्वायनमः॥ ॐ वि

क्कावनाटमसिद्विक्काः॥ नयस्कविक्काः॥ सूत्रसिद्वि
क्काध्रवासि॥ वृक्षवमसिद्विक्कावत्वा॥ नाशो॥ ॥ ॐ

स्वः स्वाहा॥ ॐ कौनिवतत्वायनमः॥ ॐ नमः॥ गत्
वायवमया रुवायवनमः॥ गंकवायवमयस्क

वायवमनः॥ निवायवनिवतवायव॥ धर्ममह
लालामविशामनस्वधनय॥ ॥

पंचसूक्तानदवनिद्राकलसवथाववृक्ष
सी॥ यज्ञसिंहासनसकदंत॥ ॐ कौनिद्रायस्वाः

हा॥ ॐ समखदयाधियासंदक्षिणयावृक्षसा
। नामः॥ आयः॥ प्रभाषीमाः॥ अर्द्धतवदीनविदय

श्री यङ्ग सिंहासन सङ्गदंशः ॥ ॐ ह्रीं नमो भगवते ॥
 हा ॥ ॐ समस्त दयाधिया स दक्षिणया नवदक्षसा
 नामः ॥ आयः प्रभाषीमाः ॥ अहं नवदक्षी न विदय
 नवदक्षी स दक्षिण ॥ निद्राया न आदृति न्वय ॥ ॥
 शिवत्वं नादृति ॥ ॐ हः स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं आत्मतत्त्वं
 य स्वाहा ॥ ॐ बुद्धयङ्ग न ॥ पादसत्त्वाय ॥ ॐ ह्रीं
 वः स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं विद्यातत्त्वाय स्वाहा ॥ ॐ विष्णवे
 नमो ॥ नमो ॥ ॐ स्वः स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं गिव
 तत्त्वाय स्वाहा ॥ ॐ नमः ॥ नमो वाय ॥ नमो ॥ नाम
 विलो नत्त्वाय ॥ ॥ नमः ॥ नमो नत्त्वं न ॥ नमो
 य ॥ ॐ ह्रीं पथी तत्त्वाय ॥ पथी तत्त्वाधिपतय वः
 दक्ष ॥ स्वाहा ॥ ॐ बुद्धयङ्ग न ॥ पादस ॥ ॐ ह्रीं
 ह्रीं विद्या तत्त्वाय ॥ अप नत्त्वाधिपतय विष्णवे स्वा
 हा ॥ ॐ ह्रीं विष्णवे विष्णवे क्रमं धानिद ॥ धयदं स
 नृप सस्य पा ॥ सव स्वाहा ॥ जानो ॥ ॐ ह्रीं गज
 तत्त्वाधिपतय नृपाय स्वाहा ॥ ॐ नमः ॥ नमो वाय
 ॥ नमो ॥ ॐ ह्रीं वाय तत्त्वाधिपतय ॥ नमो ॥ नमो
 य स्वाहा ॥ ॐ नव वाय नृप सवत्त्वं ॥ अमा नव

उत। अथा २ स्यादुलीमहं ॥ इति ॥ ॥ ॐ ह्रीं श्रीः
काशासत्वाय अकाशा विप्रस्य सदा शिवाय स्वाहा
॥ ॐ शिवा नामासि स्वधितिः ऋषिगानमस्तु अस्तु मा
माहि ० सी ॥ निवर्तयामास्य प्रनायाय प्रजननाय
वाय स्यात्वाय सुप्रजा स्वाय सुवीर्याय ॥ मूत्रि ॥ ॐ
तिथि वसव ॥ ॥ यं वाय न मूलमलं
लाभा धयत ॥ धान ३ ॥ ॐ ग्लौगलपतय नमः ॥ ॐ
कांकां सः प्रोक्त्याय नमः ॥ ॐ ह्रीं सः नमाना
यलाय नमः ॥ ॐ ह्रीं दं दूग्नाय नमः ॥ ॐ ह्रीं
सः अस्तुगीमहादेव वाय सदा शिवाय नमः ॥
सजीवश्चकादयक ॥ ॥ मूलन्यासः ॥ धमनियाः
य ॥ ॐ ह्रीं रुट् अन्ननग कि अस्तुय रुट् ॥ कव (भा
धन ४ ॥ ॐ ह्रीं सः सर्वज्ञा ददयाय नमः ॥ ॐ ह्रीं
वामदिकि गिवम स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं ॐ अनादिवा धनि
खोये वोषट् ॥ ॐ ह्रीं दं स्वतनु कव वाय दं ॥ ॐ ह्रीं
अलकग कि ननु ययाय वषट् ॥ ॐ ह्रीं रुट् अन्न
नग कि अस्तुय रुट् ॥ ॐ ति कव वषट् स न्यासः ॥
धान्यासनं ददया धाने धाने सधिय ॥ ॥

अलङ्कारकिंनरुजयायेवमट्॥ ॐ ईं हृट् अन
नङ्कारकिं अष्टाय हृट्॥ ॐ तिक्त्रमडं सन्नासः॥
ध्वानासनं दवया धाने धान सधिय॥ ॥

[illegible]

सुनस्य कल्याणमनस्य पथ्या नून ॥ ॥ ॐ ३ स
: अस्वाय स्वाहा ॥ जातक मयि स्वाहा ॥ ॐ प्राण
य स्वाहा यानाय स्वाहा यानाय स्वाहा वक्षस्व स्वा
हा ॥ ॐ शाय स्वाहा वाक् स्वाहा मनस स्वाहा ॥ ॥
काय उद्ध्व निडा कल मया लखन होय ॥ ॐ म
नुमा सयथा द ॥ था व न ॥ था द न ॥ अ ॥ था य म
स य द वी सा त्स व स्मा द त कि लि प्रा न ॥ ॐ य
सिं ध न द्वा ज ॥ ल ॥ डा हा ॥ अ रु लि ॥ सि धे ल द न
थि व्या य द्वा न ॥ ॥ ॐ ३ सः द द या य नि व
म ना य स्वाहा ॥ ॐ व द्वा य न्ना नं य थ मं य न स्ता
दि सी म नः स न्ना व न आ व ॥ स व द्वा ड य म
अ स्य वि द्वा स न ॥ य या नि व स न ॥ य वि व ॥ ॥ ॐ
३ सः सि न स स्वाहा ॥ ना म क न ना य स्वाहा ॥ ॐ
का य स्वाहा क से स्वाहा क र म से स्वाहा स्वाहा धि
सा धी ना य स्वाहा मनः प्र जा य न य स्वाहा वि लं वि
ह्ना ना या दि ये स्वाहा दि ये म से स्वाहा दि ये स म
॥ का ये स्वाहा स न स्व ले स्वाहा स न स्व ले पा वः
का ये स्वाहा यु ष्ठ य प थ्या य स्वाहा यु ष्ठ न व धिः

हृगायादिथेस्वाहादित्येसस्वाहादित्येसस्व
गीकायेस्वाहासनस्वयेस्वाहासनस्वयेपावः
कायेस्वाहायुष्पयप्रथमयस्वाहायुष्पनर्दधिः
वायस्वाहात्वयस्वाहात्वयुनीपायस्वाहात्व
युपननूपायस्वाहाविक्रवस्वाहाविक्रवनिरु
यपायविक्रवगिपिविष्णयस्वाहा॥ यथा यथा
दवनाम॥ ॥ ॐ ईं सः गिखायस्वाहा॥ रुल
यागनायस्वाहा॥ ॐ याः रुलनीयस्वाहा रुला
यस्वायाः यथप्रियेलाः वृहस्पतिप्रसूतास्ताना
मश्नुत० हसः॥ ॥ ॐ ईं सः कवचायस्वाहा
॥ अन्नयागनायस्वाहा॥ ॐ अन्नयतन्नस्यना
दश्नमीवस्यप्रियेलाः प्रयदाता न नावदुर्क
नाधेहिद्विपदवदुष्यद॥ श्रीवज्रायस्वाहा
यवसाखलीन॥ ॥ ॐ ईं सः ननुययायस्वाहा
॥ वज्रायस्वाहा॥ ॐ मूर्धन्यदिवाअवति
पृथिव्यावेत्यनमस्तस्माज्जगत्सन्नि॥ कवि० ममाज
सतिथिजनानामासन्नायायजनयन्नदवाः॥ लं
डाहाः मूलखल॥ वाक्यरूपीनिष्कायः॥ ॐ शान्त

मिन्दुमविताममिन्दु० हव हवसूहव० पूरमि
न्दु॥ दयामि० कृपनकृतमिन्दु० स्वसिनासद्य
वाधालिन्दु॥ ॥ **हुं** हुं सः श्रुताय स्वाहा॥ कर्मा
रुदाय स्वाहा॥ **हुं** रुदं कर्मा शिः ॥ ८५ ॥ यामदवा
रुदं प॥ यमाकृतिर्यजुः ॥ ८६ ॥ विवेन॥ गेमुकृवा
समृत्तिर्यसमहिदवहिर्नयदाय॥ ॥ **हुं** हुं स
॥ ददयाय स्वाहा॥ वरुवन्नाय स्वाहा॥ **हुं** यथ
मां वारु कल्याणीमावदानिजनस्य॥ वक्रवाजः
न्यास्या ५५॥ दायवाययवस्वायवान्नायवा
विश्यादवानां दक्षिणायदाहुविहृत्तयासमय
मकामः समृद्धतामयदावमनु॥ यज्ञायवीत
यदानं॥ **हुं** वरुदं कर्मा वरुदं कर्मा निर्वृत्तानिः
यज्ञावनस्यतियक्षिः ॥ देवि यियं मनामहं॥ स
मृतीकामरिदयवर्वाधाम॥ यज्ञाय स्वाहा० सूता
थानाश्रुसधस॥ यथायथा दवस्यमयणीयदा
नं॥ ॥ **हुं** हुं सः शिवस्वाहा॥ समावरुनाय स्वा
हा॥ **हुं** श्रुत्तं नवजसावरुनानिर्वृत्तानि नमः
समर्थवाहि नयमनसविताम॥ यनादवाया

न॥ ॥**ॐ** कंसः गिरिवाय स्वाहा॥ समावर्तु नाय स्वा
हा॥**ॐ** अष्टकं न प्रज सावर्तु नानि वः यं न मृ
तं मर्यवा हि वः अ न स विमाना य नाद वा या
गि रुव ना नि यः य न॥ ॥**ॐ** कंसः गिरिवाय स्वाहा
॥ दीक्षा य प्रदाना य स्वाहा॥**ॐ** वरु न दीक्षा मन्त्रा
गि दीक्षा मन्त्रा गि दक्षिणा दक्षिणा प्रक्षामा मन्त्रा गि
प्रक्षया मर्यमा य न॥ ॥**ॐ** कंसः कवचा य
स्वाहा॥ विवाहा य स्वाहा॥**ॐ** अम्वर्क यजाम हं स
गन्धिय वृद्धि व दनं । उवा नूक मिद व न्धना न्मृत्वा
मूदी यमा मता न॥ अम्वर्क यजाम हं स गन्धिय
गि व दनं । उवा नूक मिद व न्धना दिना मूदी यमा
मृता ॥ दवस्य ग कि प्रदानं ॥ ॥**ॐ** अथादि ॥ यथा
यथाना म देवा य ॥ यथा यथाना म्नि दिवा उ स म
हं स प्रदद ॥**ॐ** कादा क्कसा ॥ अदा क्कमा दा क्का
माया दाता । कामः प्रणि पदीता ॥ कामे गतु ॥ क न
रुपी निष्ठा य ॥**ॐ** गता व मिन्द ॥ ॥ सव वृ निष्ठा
न॥**ॐ** अष्टकं ॥ ॥ यथा द य मि निम ॥**ॐ** यजा
पर न न्वद गान्य न्ना विष्वा नूपा लि य विता वरु वा

यत्कामाक्षकशुद्धमस्तु नमस्तु वयं २ स्याम यम
 यात्रयी ॥ ॥ अग्निनिनत्वाय ॥ ॐ निवानाः
 मासिस्वधिति ॥ धिमानमस्तु अस्तु मामाहि ० सी
 ॥ निवर्त्तयामा यषना याय प्रजनना यस्याषा
 यस्तु यजुस्त्यायस्तु वीर्याय ॥ ॥ हासानगाय ॥
 ॐ तव वायव्यतस्तु तत्त्वत्तु जामातवत्तु तत्त्वत्तु अया
 ५ स्यात्तु ॥ ॥ ॥ वृषावनक्तुय ॥ ॐ दीर्घाय
 त्वाय वलाय ववस्तु यजुस्त्याय सहसा अथा
 जीवन्तु वदः ॥ ॥ ॐ ईशः नृणां यथा स्वाहा
 ॥ ॥ अमनजाय स्वाहा ॥ ॐ काष्ठाय स्वाहा ॥ ॐ अत्यन्त
 नीयन्तु वदः यन्तु वदः यन्तु वदः यन्तु वदः यन्तु वदः
 अलगाय नव ॥ ॥ ॥ कथयन्तु कथाय ॥ ॐ ईशः
 अस्तु स्वाहा ॥ ॐ हाय कथयन्तु स्वाहा ॥ ॐ स्वस्ति
 नः ॥ ॐ द्वादशप्रवाः स्वस्तिनः पूजा विश्ववन्द्याः ॥
 स्वस्तिनस्तु अग्निविष्णु नमिः स्वस्तिना वदस्तु नि
 द्वादश ॥ ॥ ॐ तिदवदस्तु कर्मविधि ॥ ॥

ततः निवर्त्तयन्तु साधनं ॥ ध्यायन्तु ॥ ॐ ईशः

द्वितीयः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

नमः शिवाय यथा साधनं ॥ ध्यायतां ॥ ॐ कूं सः
अमृतां यविष्महं मृत्पुष्पं यथा यथा मदिग
नानं यथा दयात् ॥ ॥ नमो जीवन्मासं काय
यत् ॥ धमनि ध्यायतां मन्त्रासः ॥ ॐ कूं रुद्रं न
नमो किं अमृताय रुद्रं ॥ कवः ॥ ध्यानं ॥ ॐ कूं सः स
वृक्षाता ददया यनमः ॥ ॐ कूं यामदि किं निव
सम्बाह ॥ ॐ कूं ॐ अनादि वा धिनि वा ये वीषट
॥ ॐ कूं स्वतन्त्रं कवचाय दूं ॥ ॐ कूं अल्लूकं
किं न यथा यवषट् ॥ ॐ कूं रुद्रं अनं किं
अमृताय रुद्रं ॥ ॥ ॐ नमो वागं न्यासः ॥

धतं ददया के धान धान संन्यास याय ॥ ॥ दगं रा
गजीव यक राग ददय न वराग स्वजीवः ॥ ॥
अधरुतं पुष्टि ॥ ॐ पादादि जानय यं तं पृथिक् न
वदुदसं पीतवर्णं वदुदेव न नमः (ध. लं वी उं
ध्यातः ॥ ॐ जान्वादि नारिय यं नं आयस्क नं ध
नूषो कारं पुष्कवर्णं विष्कदेव नं नमः (ध. वं वी ज

[illegible]

यं बलवन्तं संहं लक्ष्मः त्वत्कवधिवर्मासमदा
स्मिन्कापुष्पापलीवात्मनः श्रेष्ठयदृष्टं ॥ ॐ नमो
ब्रह्मणे ॥

नमो देवस्य ददयन्नाहमर्द्धावेवा मूलमनुष्य
उपतः ॥ गतिं वा ददा मा ॥ ॥ नदप्रतिप्राप्यति
छां कथयति ॥ यथा श्रेष्ठप्राप्यतिष्ठा मनुष्यवत्
विष्णुमहोत्थे वासयः सम्यक्ः सा माथर्वला निवृ
त्ती सि प्राप्य किंप्रदाय वतां श्रीं वीजं क्षीं किः कां
कीलकं प्राप्यतिष्ठा सिद्धार्थ उपविनिथागः ॥ ॥
मनुः ॥ ॐ क्षीं पीतुं श्रीं क्षीं कां यव लवणं संहं हं
सः साहं श्रीमन्मप्राप्य ॐ हप्राप्य श्रीमन्मजीव ॐ
हस्तिनः श्रीमन्मसर्वं द्रियाणि ॐ हस्तिनः श्रीमन्मवा
द्यनवद्वा प्रोक्तप्राप्य प्राप्य ॐ हागत्यागत्य सर्वः
विब्रतिष्ठ नु स्वाहा क्षीं क्षीं श्रीं पीतुं क्षीं क्षीं ॥ ॐ ति प्राप्य
प्रतिष्ठा ॥ ॥ श्रीं नमः ॥ ॐ नमः द्विप्राप्य नमः प
द्मसंस्तुत्यां किं नमः विदुः नमः वागवापान ॥ ॐ लं कया
लदधर्मा कवाहु नमः किं नमः शायल सो मिदवी ॥ ॥
जीवन्मासप्राप्य प्रतिष्ठा ॥ मूलमनुष्यकृति १०० ॥

ॐ शं सः अमृतीमहादेव वां य सदा निवाय न
मः॥ ॐ य वा क्व व स वि सृ या वि व द्म नू दा वा य य
थि व जी व दान मा या मे र यं च नु म सि स्र वा वि मे दी
वा सा २ अनू ति स्ये य उ न्ना धा कृ णी वा सा द य दि
ष दा व (वा सि) ॥ ॐ ति जी व दान ॥

न ना यं ॐ रु त (ग ध न) ॥ मूल म नु ॥ ॐ शं सः अमृः
गी म महा दे व वा य स दा नि वा य न मः ॥ यं व रु त स्व
ध ना य स्वा हा ॥ ३ ॥ ॐ वा व न्क पु न्धा मि पा ल न्क पु न्धा
मि व द्म रु त (ग ध न) ना रि न्क म रु न्क पा य न्क व वि र्
रु त पु न्धा मि ॥ ॥ य ॐ रु त रु त य न्क ॥ आ कृ ति ॥ ॐ म
न रु त आ य य तां वा क् पा ल रु त आ व द्म रु त (ग ध न)
न रु त आ य य तां य रु क् व य दा स्ति र्ग रु त आ य तां नि
स्त्रा य तां ग रु त पु न्धा रु त स महा रु त ॥ ॐ व (ध ना य स्व स
धि र्ग म यी न ० हि ० सी ॥ ॥ आ य रु त य न्क ॥ आ कृ ति
॥ ॐ आ य य रु न क ल्प तां ५ स्वा हा म्या (ग ध न) य रु न क
ल्प तां ५ स्वा हा व द्म य रु न क ल्प तां ५ स्वा हा (ग ध न)
य रु न क ल्प तां ५ स्वा हा वा ग्म रु न क ल्प तां ५ स्वा हा
म ना य रु न क ल्प तां ५ स्वा हा मा त्मा य रु न क ल्प तां ५

ल्यता ५ स्वाहा व दूयै न न कल्यता ५ स्वाहा (धार्ज
य न न कल्यता ५ स्वाहा वाग्य न न कल्यता ५ स्वाहा
मनाय न न कल्यता ५ स्वाहा मात्माय न न कल्यः
ता ५ स्वाहा वक्त्राय न न कल्यता ५ स्वाहा (शक्तिर्य
न न कल्यता ५ स्वाहा स्वयं न न कल्यता ५ मय्य
य न न कल्यता ५ स्वाहा य हाय न न कल्यता ५
स्वाहा ॥ नमो जीवन्मासः ॥

गता रुविद्यादिसक यो वन्मासः ॥ आदुति ॥ ॐ
ः स्वाहा ॥ पादयः ॥ ॥ ॐ उवः स्वाहा ॥ जानी ॥
ॐ स्वः स्वाहा ॥ ददय ॥ ॥ ॐ नयः स्वाहा ॥ क (७) ॥
ॐ मय्य स्वाहा ॥ निवस ॥ ॥ ॐ सक न अ (ग्रसमिध
ः सक जिह्वाः सक जवयः सक धाम प्रियाणि ।
सक हृणः सक धात्राय ज नि सक यानी नायः
पी स्व ध न स्वाहा ॥ त्राय ॥ ॥ गता देव त्या (यध
व व लि विय ॥ गता ॥ ॐ गता ना त्वा गता यति ० ह वा
म द प्रियाणां त्वा प्रिय यति ० ह वा म द नि धा नी त्वा
नि धि यति ० ह वा म द व मा म म । आरु म जा नि व
रु ध जा त्वा म जा सि व रु ध ॥ ॥ व द क ॥ ॐ ॐ मा

नृदायतवसकयदिनकयदीवायययरुनामह
मनीः। यथासमसद्विपदवउव्यदविश्वयुद्धमा
मश्रुस्मिन्ननाहर्दं॥ ॥ **कृष्ण** ॥ **कुं** नभावकूभाय
व्याधिनन्नानांयनयनमानमारुवस्यहल्येऊग
गीषनयनमानमा। नृदायातगायिनक्षशापीय
नयनमानमः सुतायाहन्नेवनानांयनयनमा
नमः॥ ॥ **आगिनी** ॥ **कुं** श्रुम्वश्रुम्विकश्रुम्वालिकन
मानयतिकथन। ससत्यथकः सुरुदिकीकाम्पी
लवासिनी॥ ॥ **दुर्गा** ॥ **कुं** जानवदससूनवासमा
समवागीहगानिदहानिददः। सनः पविषततिः
दूर्गालिद्विष्वा नावदसिधं दूर्वागात्यनिः॥ **ॐ** नित्य
श्रवलि॥ ॥ **नगावजानादुतिदयाग** ॥ **कुं** रं
सः ददयायखाहा॥ **कुं** यऊायतादूनमूदेतिदेव
नदसूकसगतयेवेति। दूर्वगमंआतिषींआतिन
कीतनमंमनः। निवसंकलयमुमु॥ ॥ **कुं** रं सः निव
सखाहा॥ **कुं** सहस्रगीषादूनवः सहस्राक्षः
सहस्रपात। सहमि० सर्वतस्य स्वात्यतिष्ठद
गाहुर्ल॥ ॥ **कुं** रं सः निखायेखाहा॥ **कुं** अद्वा

संखादा॥ **ॐ** सहस्रगोषाधूतः सहस्राक्षः
सहस्रपातः सहस्रमि० सहस्रतस्य स्वात्यतिष्ठद
गाकुली॥ **ॐ** कंसः लिखाये स्वाहा॥ **ॐ** अक्ष
ः समुत्तः पृथिवीवसाच्चविश्वकर्मणिः समव
रुतापोनस्य स्वद्या विदधदुपमतिगन्तार्यस्य
यवत्तमाजानमः॥ **ॐ** कंसः कवचाय स्वा
हा॥ **ॐ** आ०११ गिगानावृषहाननीमाद्यनाद्यनः
क्षारुनध्यर्षणानां सीकन्दनानिमिषप्रकवीन
ः गत० सनाअजयत्साकमिन्दुः॥ **ॐ** कंसः
नृगुण्याय स्वाहा॥ **ॐ** विजाडुहृत्पीवडुसाम्य
मधायदयत्तुपतावविष्कृतमवागमृगाया
अरिबद्धतिर्मनायुजाः यथाप्रयेवृषाविवाज
ति॥ **ॐ** कंसः अम्बाय स्वाहा॥ **ॐ** नमस्कृत्य
मन्यवडगात० प्रदंनमः वाक्यामृगगंनम
ः॥ स्वाय॥ **ॐ** निमृत्तंगदुति॥ **ॐ**
यवानूक्षमणि सुम्बदवाचनं॥ न्मासादि॥ **ॐ** कंसः
अम्बाहृत्॥ **ॐ** कंसः ददयाय नमः॥ **ॐ** कंसः
ः निवस स्वाहा॥ **ॐ** कंसः लिखाये वोषट्॥ **ॐ** कंसः

१ कवचायद् ॥ ॐ शं सः न ग म या य व वट् ॥ ॐ
सः अ म्हा य वट् ॥ ॐ ति क नी ग न्मा सः ॥ ॥ ध न
अ र्ध पा ण यू जा ॥ आ वा रु ना दि ॥ धे नू मू डी ॥
आ ल यू जा ॥ आ त्म न सि व य न् ॥ आ त्म न च न्द न
मः ॥ आ त्म न पू र्ण न मः ॥ आ त्म न आ त्मा स र्ग न म
॥ आ त्म मूर्त्त य न मः ॥ ॐ ति आ त्म यू जा ॥
आ स न ॥ ॐ ग ल्वा या मी व क्त्वा व न्द मा न सु दा ण
सु य उ मा ना ह वि हिः ॥ अ ह उ मा ना व न्द (१) ह वा
ध्व न् ॥ ० स मा न आ यः प्र मा षी ॥ ॥ अ य द् ॥ ॐ
द व स्य त्वा स वि रुः प्र स र्वा वि ना व द् क र्वा यू क्त्वा ह
स्वा र्थी ॥ ॥ ग (१) ॥ सिं हा स ना य न मः ॥ ॐ (१) ग
प य न य न मः ॥ ॥ स र्ग ॥ अ ष्वा स ना य न मः ॥ ॐ
कौं कौं सः धी सु र्या य न मः ॥ ॥ वि ष्णू ॥ ग न्ध र्वा स
ना य न मः ॥ ॐ कौं सः न मा ना वा य णा य न मः ॥
॥ ॥ दू र्ग ॥ सिं हा स ना य न मः ॥ ॐ कौं दू दू र्ग य
न मः ॥ ॥ गो मी ॥ प द्मा स ना य न मः ॥ ॐ कौं गोः
य न मः ॥ ॥ उ मा म ह ष्व न ॥ वृ षा स ना य न मः
॥ सिं हा स ना य न मः ॥ ॐ कौं सः मू र्त्त य या य उ मा

नमः॥ ॥ गोत्री ॥ यथासनाय नमः॥ पुं डी गोः
य नमः॥ ॥ उमा महेश्वर ॥ यथासनाय नमः
॥ सिंहासनाय नमः॥ पुं डी सः मृत्पुत्राय नमः
॥ किं संहिताय नमः॥ ॥ हविर्गकव ॥ यथास
नाय नमः॥ गवूठासनाय नमः॥ डी डी हविः
गकवाय नमः॥ ॥ जागवनादिमूलन ॥ आ
सन ॥ आधनगकय नमः॥ अनकासनाय न
मः॥ स्कन्दासनाय नमः॥ नालासनाय नमः॥
यथासनाय नमः॥ यथासनाय नमः॥ कडीवा
सनाय नमः॥ कर्त्तिकासनाय नमः॥ यथास
नाय नमः॥ ॥ ध्यान ॥ यन्दाकर्त्तनिविलावनीस्मि
तमूर्खयद्यद्ययानः स्मिन्मृदाय पुं मृगादस्म
त्तुविलस्यालिहिमां पुं पुं ॥ काठी वन्दुगलन्मृधा
युगननहावा विरुधादल का न्याविश्वविमाह
नय पुं पुं मृत्पुत्राय नमः॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
गियांजलिः॥ पुं डी सः मृत्पुत्राय नमः॥
सदागिवाय नमः॥ पुं डी सः मृत्पुत्राय नमः॥
किं संहिताय नमः॥ ॥ ॥ ॥ ॥ पुं डी सः मृत्पुत्राय नमः॥

[illegible]

विनिष्ठातिजानः प्रानवायमहं न सा रुगाय ॥ ॥
श्रुवाहनादि ॥ ॥ वहुः स्वस्तिपयः वं व वटवि
स्वादादगदवता अहो गानि प्रकृती तमहायाः
गकनागनी ॥ ॥ ॐ स्वस्तिनः ॐ द्युद्वयवाः स्व
स्तिनः पूषा विष्णवदा ॥ स्वस्तिनस्तु अग्निश्च न
मिः स्वस्तिना वृहस्यतिर्दधातुः ॥ ॥ ॐ ययः पृथि
वी यय उवधी ययया दिव्यं न विष्णु यया धाः यय
स्वती प्रदिशः मनु मर्त्य ॥ ॥ ॐ विश्वं न वाटमसि
विष्णुः प्रथक् स्वविष्णुः सूर्यसि विष्णुर्ध्रुवा सिद्धि
भवमसि विष्णुवत्त्वा ॥ ॥ ॐ अग्निर्देवता वागाः
देवता सूर्या देवता चन्द्रमा देवता वसवा देव
ता ब्रह्मा देवता दिव्या देवता मरुता देवता चित्र
देवा देवता वृहस्यतिर्देवता द्यु देवता चन्द्र (ता
देवता ॥ ॥ ॐ योः गानि वं न विष्णु ० गानिः पृथि
वी गानि नायः गानि वासधयः गानिः ॥ वनस्यत
यः गानि विष्णु देवाः गानि बुध्ना गानिः सर्व ०
गानि वं गानिः सामा गानि वधि ॥ ॥ ध्रुव ॥ ॐ
ध्रुवसि ध्रुव ध्रुव न ध्रुव न यास्मान् ध्रुवति न ध्रु

[illegible]

०८॥ प्रवान् ॥ अथाकृति ॥ वद ॥ पुं किं वारुव वी
 पुं अथाकृति ॥ वद ॥ पुं किं वारुव वी
 पुं अथाकृति ॥ वद ॥ पुं किं वारुव वी

लदेव... आवागक... यजमान... थिस... ॥
 हाववा... ॥ ॐ... ॥ मा... ॥
 ॐ... ॥ मा... ॥
 न्... ॥ स... ॥
 द्वि... ॥ स... ॥
 काना... ॥ य... ॥
 य... ॥ द... ॥
 न... ॥ य... ॥
 नी... ॥ ह... ॥
 ल... ॥ ॐ... ॥
 द... ॥ य... ॥
 गा... ॥ म... ॥
 स... ॥ ॐ... ॥
 य... ॥ ॐ... ॥
 मूल... ॥ ॐ... ॥
 ॥ ॐ... ॥
 ॥ ॐ... ॥

मूलमनुष्यवद्विचारवत्वात्॥०॥तिष्ठितव्येक

॥ ॥यवगावथावका॥रुल.अद्वत.गवा.स्वानम

रुध्वतलय॥ ॥मूलमनुष्यकृतित्वाय॥०॥

ग(पम)॥०॥गंगलयतयखाहा॥०॥गंगानांलागलय

ति०हवामहप्रियाणांत्वाप्रिययति०हवामहनि

धीनीत्यानिधियति०हवामहवसामस।आहमजा

निषहृषजात्वमजामिषहृष॥ ॥सूर्य॥०॥दंडां

॥पीसूर्यायखाहा॥०॥आहृषनवजसावहृनानि

वपयंनमृत्तमय्यच।हिवय्ययनसविगाव(धना

धवायागिउवनानिययन्॥ ॥विष्णु॥०॥दंडांसः

नमोनावाययखाहा॥०॥विष्णुववाटमसिद्विष्णु

॥नमस्तुविष्णुःसूर्यासिद्विष्णुध्रुवासिद्विष्णुवमसि

विष्णुवत्वा॥ ॥दूर्गा॥०॥दंडांदूर्गनयखाहा॥०॥जा

तवदससूनवामसामसनानीहतानिदहातिव

दः।सनःप्रविषततिदूर्गलिविष्णुनाववसिधं

दूवातायनि॥ ॥गोत्री॥०॥दंडां(गोत्रीखाहा

॥०॥०॥अमृअमृकअमृवालिंकनमानयति

कल्पन।समस्ययकःसकृदिकीकाम्यालवासि

[illegible]

ॐ प्रजापतये नमः नन्दवायस्वाहा ॥ मूलमनु ॥ १०
८ ॥ पूजा ॥ ॐ प्रजापतये नमः नन्दवायस्वाहा ॥ न्याद्विष्णवे
पालिपत्रिणावहवायस्वाहा ॥ इन्द्रमस्तुनाश्र
मुद्वय ॥ २ ॥ सामयनयावशीर्षा ॥
गृह्याथ वरं ददन्ममिधहा मयाय ॥ सूर्यया ॥
अर्कपाठसि ॥ जां जां जां सः स्वाहा ॥ ॐ अर्कपूजन
जसावहमानानि वरायन्नस्तु मम सूर्यवा ॥ द्विप्रप्यथ
मम विना वधनादवाया निरुव नानि पश्यत ॥ ॥ सा
मया ॥ लाहासि ॥ आं आं आं स्वाहा ॥ ॐ ॐ मन्दवा ॥ अस्य
त्रे ० सवर्धमहता कथाय महता ये व्याय महतां
नवायथ सौन्दर्याया ॐ मम मम मम मम मम मम मम
सौ विगमववासीवाजा सासास्माकं वाक्कणानां वाजं
॥ ॥ अंगवया ॥ खययसि ॥ जां जां जां सः स्वाहा ॥ ॐ
अग्निमूर्च्छादिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अर्यं अया
० वगापुसिजिन्वति ॥ ॥ वधया ॥ अयोमान ॥ वां वा
वां सः स्वाहा ॥ ॐ उद्वधस्वा ॥ नयति जाट हित्व निष्ठा
पहस ० सुजथा मयश्च ॥ अस्मिन्मधस्तु अयस्वतु व
मिन्विष्वदवायजमानायसीदत ॥ ॥ रुद्रस्यति

॥ वल्लभगमसि ॥ जौं डौं डौं सः स्वाहा ॥ ॐ वृहस्पते नमः ॥
निग्रदथा अविहयि मदिहति कुरु मर्जनम् ॥
यद्यीदयश्च वसुमन्तप्रजापतिस्तस्मात्सुदविनीः
(धदि विर्ज ॥ ॥ उक्रया ॥ दूवलसि ॥ डौं डौं डौं
सः स्वाहा ॥ ॐ अनान्यविष्णो वसुवक्राव्यपि
वसुवक्रं पयसा मयजापतिः ॥ सगनस्यमिदि
यं पिपान ० पूकर्मधसं नुस्यदियमिदं यथा
मर्गमध ॥ ॥ गनेध्वनया ॥ मनिक्का ० सि ॥ श्री श्री
श्री सः स्वाहा ॥ ॐ गन्नादवीनविष्णुयथायानव
नुपीनय ॥ गंजावलिधवनुनः ॥ ॥ नाक्या ॥ उ
वता ॥ जौं डौं डौं सः स्वाहा ॥ ॐ कयानधिगम्य
वदुती सदा वः सखा कयागविष्णुयावता ॥ ॥
कुरुया ॥ क ॥ डौं डौं डौं सः स्वाहा ॥ ॐ कुरुव
नकसवपे ॥ मन्वा अयससु समुषहि वजाय
था ॥ ॥ जनया ॥ वलसि ॥ डौं डौं डौं सः स्वाहा ॥
ॐ गाम्भस्वददाहसः सामः ० पीलकिट्ठनय
॥ जर्मदवानो विष्णुस्त्रिधावावनदिवः ॥ धर्मेय
हया समिधयुजियश्वाववाववदासयाय ॥ ॐ

संसा नार्त्तवदः खपकदहनि निक्कम्यन सर्वदा
पीमत्यश्च मूरवाम्बजादः शुजाय गच्छिना पाशु
वः॥ ॥ पूर्वदक्षिणपश्चिमाहवनिवा पूर्वदिवा
माहिवा। दक्षिणमावदह्नतदूर्गनिलयह्नवम्वना
थायवा। ममनश्ववमादिदवविहजः। मकादि
दूवायहा निर्यान न्दमयी। यमादसखदावल्यादि
पूजाविधिः॥ ॥ सिद्धिबहुक्रियाबहुवृद्धिबहुधन
गम। प्रष्टिबहुगनीयपूगानिबहुगृहगतव॥ सर्व
विष्टिप्रगमनसर्वगानिकवपुर्ह। आयुष्यव
कामंशलक्ष्मीसंनतिवर्धन॥ ॥ यथावलयहा
वापांकवर्वरुवउवायपी। तद्वदेवविधाहृपी
गानिरुवउवायपी॥ पूष्यराजनसमय्यामि॥
॥ लीखनहाय॥ उकारवायवीजं तद्वयविवद्वर्ण
वज्रपालिगद्वर्कालवर्णनयकं तद्वयवियन
मं वक्रिवीजं महर्सी॥ न्दविन्दलयानं सिनकमल
वर्णकीवधावायवर्कद्वद्वद्वर्णनिलयदहनिक्क
लमलं मन्दुल्यदियायी॥ ॥ वः॥ पीखपुवन्दन
दिशं गंधार्थसमनाहर्वा। आरुषितं ललाता। यव

वर्न. कीवधा वायवर्न. दृष्टा दृष्टं उ निल. दहति क
लमल. मन्त्र उल्लिखितार्थः ॥ **॥ व. ॥** पीरव पुवन्दन
दिव्य. गंधार्थं समनाह व. आलुषितं ललाता (य व
न्दन. पुनिगृह्यतां ॥ वन्दनं लपितं यत्पु. पवित्रं पाप
नाशनं ॥ आपदाह वत निल. लक्ष्मी वायव्य सख्यदं ॥

॥ सिद्धं ॥ वीरव्यव्री महावीर. वीर रुस विरुषि
नील लाय कर्षणी दवी. सिद्धं वाक्पु. मरुमं ॥ **॥ अ.**
दवाव ॥ वसुं पवित्रं पदमं. सख मोहा दोग्ये यकं
काव्यासिकं उगतात. वसुं गृह्यत मासुत ॥ **॥ दृष्टि**
॥ स्वर्गमर्थे कया तात. वसुं दृष्टं पदार्थं की. दिव्य वद
रुलायार्थ. दृष्टि कं पुनिगृह्यतां ॥ **॥ कर्षणं पताका ॥**
पुष्टं सिद्धं ववर्षणं. पताका कर्षणं सीरुकां गृह्यतां
पदमं धान. वसुः काष्ठां सुगता रज्जुनां ॥ **॥ पदं पताका ॥**
कर्षणं यगलं दवि. पताका पदं ववर्षणं. पदं सिद्धि
रुलायार्थं गृह्यत नध उमरुमं ॥ **॥ अक्षतं ॥** अक्षतं
अक्षतं कामं धर्मं कामार्थं सिद्धिदं ॥ **॥ अक्षिर्न मवर्नद**
हि. पदं ववर्षणं ॥ **॥ उज्ज्वलं ॥** यद्वायवी तं
पदमं पवित्रं. पुजाय तयत्सह उं पदं स्तान् ॥ अय

[illegible]

वत्रावर्त। तस्य दं दनिर्तयन तस्यै प्रीतिवर्धनम
॥ पुनरुक्तं पुनर्विष्णु पुनर्देवमहं धनं पुनरुक्तं
वज्रगत्तर्वं तस्यै प्रीतिवर्धनमः ॥ **वे** जय नमस्तु
स्थानमः ॥ **वे** जय नमः श्रीपुनरुत्थानमः ॥ **वे** जय न
मावायं पुनरुत्थानमः ॥ **बलि** यथा सनाययादका
॥ थवत्तु मा सनाययादका ॥ या **वे** अन्तर्विद
वर्णं ॥ **वे** जयं सकलं गच्छ मथ निश्चयनं न कि
धाम्न अन्तर्माययत्तु यादका ॥ **वज्र** मूढायामखवत्तु
नी ॥ **वे** जयं दं दं वज्रयत्तु वसाहा ॥ **वज्र** दायस्य
गर्जनी ॥ **वे** वलमकलकलमवलकीकृतं स्वाहा
॥ **न्यासः** ॥ **वे** सकलं गच्छ मथ निश्चयनं न कि
किधाम्न अन्तर्माययत्तु ॥ **कल** गार्धनी ॥ ॥ **वे** पत्र
महं सिनिसर्वज्ञतां किधाम्न अन्तर्माययत्तु नमः ॥
वे निबलिमानंदकृतिं किधाम्न गजनिर्माणमः
॥ **वे** विषमायत्तु वयं मनिश्चयनादीवाधं किधाः
मम ममायत्तु नमः ॥ **वे** विषमायत्तु वयं मनिश्च
नादीवाधं किधाम्न मम ममायत्तु नमः ॥ **वे** सकल
द्विगुणविष्णुं गच्छ निश्चयनं न किधाम्न अन्तर्मा

मिकाश्यां नमः॥ रं सर्वायदाभूषितवलिअलक
गकिधाम्नकनिष्ठाश्यां नमः॥ रं सकलगफ्रयम
थनिअननगकिधाम्नअष्टायकलतलपठ्याश्यां
नमः॥ कवन्यासः॥ ॥ रं नमः सर्वसिद्धियाणि
प्रीत्यः पूर्ववक्तुनाथपादकी॥ रं नमः सर्वसिद्धि
मारुत्यादक्षिणवक्तुनाथपादकी॥ रं नमः निष्ठादि
तानन्दनन्दिनाथेडरुववक्तुनाथपादकी॥ रं सक
लकलवक्तुनाथिकायेपश्चिमवक्तुनाथपादकी
॥ रं रंगवश्येवशुकायालिनेडुववक्तुनाथपाद
की॥ वक्तुन्यासः॥ ॥ रं पत्रमहसिनि सर्वरुताः
गकिधाम्नद्वययनमः॥ रं निबालिमानेदरुपि
गकिधाम्नगिरसखाहा॥ रं विषमायद्वययनम
निअनादिवाधगकिधाम्नगिरायेवषट्॥ रं सक
लद्विगाविष्कृगदलनिस्वतनुगकिधाम्नकव
वाङ्क॥ रं सर्वायदाभूषितवलिअलकगकिधाम्न
भनजययायवोषट्॥ रं सकलगफ्रयमथनि
अननगकिधाम्नअष्टायरुट्॥ ॐ रं न्यासः॥ ॥
गं नमः॥ यं ददि॥ धं नारी॥ रं मुख॥ की वासना

[illegible]

पादकां॥ **रुं** अक्षरपादकां॥ **रुं** वीवरसपाद
कां॥ **रुं** सर्वजनमाहिनीपादकां॥ **रुं** कौंकुंदं
कां॥ **रुं** कानमः॥ **रुं** आत्मनय्यपादकां॥ **रुं** सकल
प्रथमधनिअसुयहट॥ **रुं** ननमलुं॥ **रुं** आत्मसि
वसिसिअयग॥ ३ ॥ **रुं** आत्मवृजा॥ ॥ अथ
जावलीय॥ **रुं** नमः॥ सिद्धिमहाकालिकाये
नमः॥ गेलाकायेनमस्तु, गिरुवननमिसकालि
कविश्वव॥ **रुं** वासवासानकनस्तु गिरुवावननग
नीमिसपादय॥ १ ॥ **रुं** स्वदीर्घविम॥ **रुं** अक
वटगयय॥ **रुं** अकाशानकनस्तु, म॥ **रुं** द्विविष्व
वृषनगिरवववद॥ **रुं** अना॥ **रुं** रुनीय॥ २ ॥ **रुं** वृ
काक॥ **रुं** वृकी, गवगवगवलयाहिमांकाटनाकि
अववासाधबोद, कलितगिरिविगिरवमा रुनन्दसु
नन्द॥ ३ ॥ **रुं** स्वाहाकाव विविक्किप्रनरजनहिगया
धिसिदरुना॥ **रुं** कंकालकालकाल, कलिकलप्र
रुन, सअवासायधान॥ ४ ॥ **रुं** वृकावृषवृषम
मवननिवग, कन्दवकादवस्तु, यामदयामवा
रु, रुनरुनविषमस्तुययगवाह। **रुं** रुमाहः

हन.सञ्चवामाद्यधाम॥४॥ दूवकुं वस्वदूयं म
 मवननिवर्त.कन्दवक्रादवस्व.धामदधामवा
 ह.हनहनविषमस्वटययतवाह।ऊंरुमाहः
 निजिह्व.गगगगगवन्.कालगियाधिवाम.वि
 धवि(गगगगग.किलिकिलिसरु(ग.मनुविद्या
 वगाह।यंयंयंयंयतवाहकलकलकलकलपाग
 कदाविका(य.दिव्यदिव्याधिवाम.खखखखखख
 गमयध्वनावावधाम॥५॥ दूंरुट् दूंरुट् स्वनूयउ
 उउउउमन्.दूंजयस्याधिवाम.विचिं ध्यासुणवा
 म.०००००मन् दक्षकानसूरीम।त्वावन्दकाट
 नादि.वनववनदगान.दक्षकानादनीय.हृहृहृः
 काननाव.प्रवयवदहनम्वमस्वप्रमह॥६॥
 व(उादि.काधनूय.दवदवप्रममसत्सवामां
 लाल.वीववीवानिवाम.मधूमदवरुस.कालिनी
 कालिनास्याव(उउकायनूय.ध्वनितयुविद्यवा
 धाननूयैरुयध्व.रुट् रुट् रुंकावनूय.कहक
 रुममलि.यगरुसायेलिये॥७॥ सावित्रीकाव
 नूय.कहकहवसन.कृष्कृष्कालीवी(ल.दांदां

[illegible]

स्वप्रतिनरुद्धालामुखश्रवणवर्षे अहिरुगः
वनमलुलमधाय (थापनीर्नवलिङ्गद्रु २ वाक्कि
गार्थे ददस्वमदू रूट् स्वाहा ॥ धर्मवद्वक्या ॥ ॥
जननासनाय पादुका ॥ ७ (धूम्र) प्रसन्नवदीयद
सुकीदवी महाध्वं दक्षय पा लाय पादुका ॥
वलिः ॥ ७ ॐ हे वस्तुना विषयययथा नाम्न अ
वर्णवर्ष मलुलमधाय श्रवणवर्ष वरुचुञ्जनिनय
कायस्वदांगरूट् कपूलपाय महाकपालमा
लारुनपाय विष्णुकाटिसमप्ररुच अहिरुगव
नरुचववद्वयपाय (थापयनर्नवलिङ्गद्रु २ समवि
द्यानकुदयकांकां दू रूट् स्वाहा ॥ ॐ कांकांकां
दू दू दू दू दूः स्तनक्षयपालधूपदीपसहिर्नव
लिङ्गद्रु २ स्वाहा ॥ धर्मक्षयया ॥ ॥ ७ सिंहासना
य पादुका ॥ ७ यां यागिनीया पादुका ॥ वलिः ॥ यक
विगं यागिनीयां पी ० जाक्षयजा सहजा यागजा
गर्जजा कलजा सदाहजा यकविद्यागिनीयां
य (थापयन्नानां वलिङ्गद्रु २ समसिद्धिकुर्वन्तुः
दू ३ रूट् स्वाहा ॥ धर्मयागिनीया ॥ ॥ ७ प्रगास

[illegible]

[illegible]

कमस्ववत्रधामसमस्वाहा॥ जगं गी गूं (गूं) (गूं) गूं (गूं)
धीकलग (ल) गवायवलिं गट्ट २ स्वाहा॥ (गूं) (गूं) धी
गूं गूं गूं गलपनयवत्रवत्रवदसवजर्नमवगमा
नयवलिं गट्ट २ स्वाहा॥ धनगलया॥ आवाहननादि
दधु गऊनी यानिविन्दु गजमूर्त्ती॥ जय॥ धी (गूं)
स्वाहा॥ (गूं) स्वाहा॥ यं स्वाहा॥ धूं स्वाहा॥ (गूं) स्वा
हा॥ (गूं) दं जयं गट्टानस्वाहा॥ (गूं) (गूं) (गूं) योऽयं
एकमात्रगगलपनवहिरगं कृष्णं यं यागिनीव वाम
पुत्रपुत्रपादविनरुयहनं विष्णुनाथं गलप॥ य
यायाधूपदीयामिषमधवलिरिष्यवितास्वविता
मीवकर्मयुक्कानामलिमगरुलदाहुकिमः
किप्रदाता॥ यं ववलयं नविधसुसर्वयवियुक्त
मनु॥ ॥ आवाहन॥ (गूं) (गूं) धी यासायवायवा
यवीखड्गस्वरगद्विपी॥ सत्रलाकगतायानिअ
यानुं हं मधुल॥ (गूं) दं आवाहिष्य आवाहयामि
॥ (गूं) (गूं) आवाहन॥ ॥ विदवधूजा॥ (गूं) न वासना
यपादकी॥ (गूं) मयूवासनायपादकी॥ (गूं) (गूं)
यसुवदीयदहकीदवीमहाध्वं कृष्णपालाय

॥ॐ॥ ति आ वा हु न ॥ ॥ वि द व दू जा ॥ खु न वा स ना
य पा दू का ॥ खु म यू वा स ना य पा दू का ॥ खु (थु
य रु व दी य द रु की द वी म हा र्था क क ण पा ला य
पा दू का ॥ व लि ॥ ॥ खु धी डी क ल य ण व दू क ना
था य पा दू का ॥ व लि ॥ ॥ खु गं गी गं ग ॥ (ले धी क ल
ग (ल य वा य पा दू का ॥ व लि ॥ आ वा हु ना दि ॥ ग ऊ
नी द पु ग ज मू डा ॥ ॥ या गि नी ॥ ज मि हा स ना य पा
दू का ॥ ज या या गि नी स्या पा दू का ॥ व लि ॥ आ वा हु ना
दि या नि मू डा ॥ ॥ य मि म द पु लि या व ॥ पु न न म
स्का व ॥ वं डी धी धूं डी ॥ अ ख पु म पु ला काल व्या प
य न व ना व नी ॥ त त्प द द रि ती य न त स्मे ण पु व व
न म ॥ पु व व्वा पु व वि व्वा पु व द व म द व व ॥
पु व द व ज ग त्स व त स्मे ण पु व व न म ॥ वं ज य न
म पु व र्थान म ॥ वं ज य व म वी पु व र्थान म ॥ वं ज
य व मा वा र्थ पु व र्थान म ॥ व लि स य द्या स ना य पा
दू का ॥ अ र्थ या या स ना य पा दू का ॥ थ व क कू मा स
ना य पा दू का ॥ पा (वे अ द ग वि क व ली ॥ वं ज कि
लि २ वि व्वा क क ल ना ये कः अ सु य रु ट् ॥ २ ॥ व द

नूडया मखव वं छनं ॥ विं ग दू रू ट वं का र्थ ज न स्वाहा
॥ व ल म क ल क ल म व ल डी दू रू ट स्वाहा ॥ न्या सः
॥ किलि र वि च का क नार्थे डः अ नु य रू ट पा दू का
क व ॥ ध न ॥ ४ ॥ न मारु ग व नि द त्क म लार्थे डी धी
अं गु का र्थ पा दू का ॥ दू कू डि का र्थे क ल दी पा र्थ
डी धी न कू नी र्थ पा दू का ॥ डी डी दू व व व नि र व
दू धी म व मारु र्थ पा दू का ॥ धा व अ धा व अ धा वा मू
खी व क नू पा र्थे डी अ न नि का र्थ पा दू का ॥ कं कं
म रू ना वि का र्थे डी धी क नि का र्थ पा दू का ॥ किलि र
वि च का क लार्थे डः धी क व र व वृ का र्थ पा दू का ॥
क व न्या सः ॥ न मारु ग व नि द त्क म लार्थे डी डू द
व का र्थ पा दू का ॥ विं ग दू कू डि का र्थे क ल दी पा र्थे
पूर्व व का र्थ पा दू का ॥ विं ग डी डी दू व व व नि र व धी द
क्षि प व का र्थ पा दू का ॥ विं ग धा व अ धा व अ धा वा मू
खी व क नू पा र्थे डी डू व व व का र्थ पा दू का ॥ विं ग कं
कं म रू ना वि का र्थे डी प न्थि म व का र्थ पा दू का ॥ किः
लि र वि च का क लार्थे डी प ना प न व का र्थ पा दू का ॥
०० न्या सः ॥ विं ग न मारु ग व नि द त्क म लार्थे डी

ह्रीं म ह्रीं ना वि का ये धी प न्धि म व कु ये पा द का ॥ किः
लि २ वि च्च का क ला ये धी प ना प न व कु ये पा द का ॥
ॐ कु ना स ॥ ॥ वै ज न मा रु ग व नि द क म ला ये धी
द द या य पा द का ॥ वै ज द्युं क डि का ये क ल द्री पा ये
की लि व स सा द ॥ कां कां द्युं व द न नि ख द्युं धी नि वा
ये वी व ट ॥ वै ज धा व अ धा व अ धा वा म र्त्वी व दू न र्प
ये धी क व वा य द्युं ॥ वै ज द्युं द्युं म ह ना वि का ये धी न
ए य या य व व ट ॥ वै ज कि लि २ वि च्च का क ला ये धी अ
मु य दू ट ॥ ॐ ति अ रु ना स ॥ ॥ ज ल पा ष डू ज ॥ ज
ज ल पा षा स ना य पा द का ॥ वै ज द्युं आ न न द ग कि रे
य वा न न द वी ना वि य त य म् ॥ पा ज म् ल पा ष रु द्वा न
का य पा द का ॥ कां द द ॥ या य र या दि ॥ आ वा ह
ना दि ॥ (ध न मू र्छा ॥ गाय ॥ आ क रि ष व र्म ॥ वै ज क
डि का ये वि द द क ल द्री पा ये धी म हि त ना क डि य
था द या न ॥ ॐ ति ज ल पा ष डू ज ॥ ॥ अ थ अ र्च या ष
डू ज ॥ वै ज अ र्च या षा स ना य पा द का ॥ वै ज कां कां
कू कः प रू व २ धा व २ न व न न २ नू य व ट २ य व न
२ क रू २ व म २ द म २ धा ग य २ वि द्या ग य २ वि धि २ द्युं

[illegible]

व व न रं व वं धी क उं ॥ जं जूं जूं न न मं लु ल धी
आदिद व पा दू की ॥ न वा स ना य पा दू की ॥ म यू स न
य पा दू की ॥ मू वा स ना य पा दू की ॥ १ (प्रो प्र सु न द्दी
प द मू की द वी म हा धी दू दू य पा ना य पा दू की ॥
ज धी को कू ल य व दू क ना थ य पा दू की ॥ १ गं गी
गूं गः (ग्लो धी कू ल ग (पे ध ना य पा दू की ॥ ध रं न व
लि ॥ आ वा रु ना दि ॥ स्व स्व मू डी ॥ ॥ प द्मा स ना य पा
दू की ॥ १ स्व गु नू धी रु की ॥ न न द ना थ द व पा दू की
॥ १ य व म गु नू धी व य नि न द ना थ द व पा दू की ॥ १ प
व म धि गु नू धी मि यान न द ना थ द व पा दू की ॥ १ जं यो
आ न न द ग कि रे व वा न न द वी ना धि य त य मूं ॥ प्रा वि
उ द्वि रु द्वा वि का यो य पा दू की ॥ व लि ॥ आ वा रु
ना दि ॥ (ध नू यानि मू डी ॥ ॥ अं अं अं य रु ट ॥ ४ ॥ क
व (ग ध न ॥ १ कू द द या य न म ॥ कूं गि व स स्वा रु
॥ लैं गि र वा ये वो ष ट ॥ नं क व वा य दूं ॥ डं न उ य या
य व ष ट ॥ अं अं अं य रु ट ॥ क वा न्या स ॥ ॥ १ जं
गि र वा स्ते न पा दू की ॥ सें गि लः कान पा दू की ॥ कूं ल
ला ट पा दू की ॥ मं व रु मं लु ल पा दू की ॥ लैं द द या य

[illegible]

रुयह रुक ॥ ३ ॥ कायविन्दु धनं देव नाना लोका नम
पुर्त। गवपीतं रुवद्वर्णमासनसखसंस्थितं ॥ १॥
वन्दुपनवात्मानं मधुलं पुनमलं। आथयमुप्रय
कात्मा, द्विर्धसिद्धानिमानवा ॥ ८ ॥ ॐ तिष्ठान् ॥
ॐ जयं आनननगकिरेववानन्दवीनाधिपतयम् ॥
धानं वात्मा पुनमधुलरुद्वानिकायपादकां ॥
॥ जयं आनननगकिरेववानन्दपीमहाविद्यावा
ॐ नृपिनी द्यौः पीनवात्मा पुनमधुलरुद्वानिकाय
पादकां ॥ १॥ ॐ नृपिनी ॥ जन्तुं तामहायुजा पुन
मधुलपीकृदिकाये पादकां ॥ नृपमहायुजा
पुनमधुलपीगच्छाये पादकां ॥ द्युपवमसिपु
नमधुलपीदये पादकां ॥ नृपवमपुनमधुल
पीहानाये पादकां ॥ नृपपुनमधुलपीआह्वये
पादकां ॥ पीनिवगत्तपुनमधुलपवाये पादकां ॥
पीविशगत्तपुनमधुलपवायवाये पादकां ॥ पीत्र
त्तगत्तपुनमधुलपवाये पादकां ॥ पीआह्वक
समाये पादकां ॥ पीजयाये पादकां ॥ पीविजयाये
पादकां ॥ पीअजिनाये पादकां ॥ पीअपवाजिना

ये पादकी ॥ श्री हंसा नृगी गये पादकी ॥ श्री अंसा
नृपादकी ॥ श्री नैविद्याये पादकी ॥ श्री वृषभिका
ये पादकी ॥ श्री लंनिवृत्ति पादकी ॥ श्री कुलहे नः
व पादकी ॥ श्री कुलहे न व पादकी ॥ श्री कुल नाः
ध हे न व पादकी ॥ श्री कुल उं व न हे न व पादकी
॥ श्री कुल क पाठ क हे न व पादकी ॥ श्री कुल आ
हा हे न व पादकी ॥ श्री कुल आ हा द वी पादकी ॥
कौं कौं कूंकः केष पा ला य पादकी ॥ कौं श्री महाका
साविका विष्ट पादकी ॥ श्री जय्या आन नृग कि हे न व
न नृवी बा वि प त य म्मी न वा ॥ श्री गु न म लु ल रु
छाविका ये पादकी ॥ श्री ॥ श्री आन नृग कि
हे न वान नृ श्री महा विद्या बा ॥ श्री अथ वी द्या न
वा श्री गु न म लु ल रु छाविका ये पादकी ॥
श्रु द द या य त्या दि ॥ धन न व लि ॥ ॥ श्री द्या न व
कौं थ द्या न कौं थ्या न द्या न न व दू दं सर्वतः सर्व स
व दं कं सः ॥ श्री ब्रह्म ब्रु थ दः पादकी ॥ श्री व द कूः
हिनी दू गे ला क्का क र्प पी कौं का मा न द्या व नी कौंः
श्री म हा कारु का वि ला जे सौ स ॥ श्री पादकी ॥ न

वैकुण्ठसः को ब्रह्म ब्रह्म यः पादका ॥ वैवस्वतः
हिनी ध्रुवे लाया कर्षणी जी कामा रुद्रावनी कोः
मुनिम हाकार कावि लोचन सौ सः पी पादका ॥ न
मारुगवति ध्रुव कृत्ति काये को को धान अधान
अधावा मुखो चं चं किलि २ वि च पादका ॥ ३ ज स
मरु मरु पी ० सिंह सन पी रि पी ० प पी रि कृ पादका
गुप्त दाहाय स दाह दिव सिद्धि स मय वक्र पादका व
लि ग्ट २ खाहा ॥ ७ उ कान क यत्कि थि रु स व वै पी
द द या य पादका ॥ ८ ति प य क वलि ॥ आवाहना
दि ॥ यानि मूडा ॥ विन्दु य ३ ॥ ८ ति उ व म पु ल पूजा
॥ ॥ यदा सनाय पादका ॥ द्वां थी पु व प कि रु दानि
काये पादका ॥ वलि ॥ यदा सनाय पादका ॥ द्वां
पी डा प्र वि क्र म रु दानि काये पादका ॥ वलि ॥ १
८ पा सनाय पादका ॥ सिंह सनाय पादका ॥ ३
द्वां आनन्द ग कि रु व वानन्द वी वा वि य त य द्वां ॥ १
८ क ८ नाथ स्व ग कि सहि नाय पादका ॥ ३ वलि
॥ ८ र्हा सनाय पादका ॥ ८ पा सनाय पादका ॥
मयू बा सनाय पादका ॥ ग वृ ज सनाय पादका ॥

धनासनाय पादुकां ॥ ननासनाय पादुकां ॥ अथा
 ब्रह्माय वन्दविमलवक्त्राय विष्णुपादुकां ॥ अ
 था ब्रह्माय वन्दविमलनादं विष्णुपादुकां ॥
 अथा ब्रह्माय वन्दविमलकोमावि विष्णुपादुकां
 ॥ अथा ब्रह्माय वन्दविमलवैष्णवि विष्णुपादुकां
 ॥ अथा ब्रह्माय वन्दविमलवावाहिविष्णुपादु
 कां ॥ अथा ब्रह्माय वन्दविमलवन्द्याय विष्णुपा
 दुकां ॥ अथा ब्रह्माय वन्दविमलवासुपाय विष्णु
 पादुकां ॥ अथा ब्रह्माय वन्दविमलमहालक्ष्मी
 विष्णुपादुकां ॥ धनं न वलि ॥ ॥ अथा ब्रह्माय पादु
 कां ॥ अननासनाय पादुकां ॥ कनासनाय पादुकां ॥ ना
 नासनाय पादुकां ॥ पनासनाय पादुकां ॥ कनास
 नाय पादुकां ॥ कलिनासनाय पादुकां ॥ यनासना
 य पादुकां ॥ सिनासनाय पादुकां ॥ महिषासनाय
 पादुकां ॥ उमासनाय पादुकां ॥ निउमासनाय पादु
 कां ॥ नमः श्रीगुरुवाय नमः ॥ श्रीगुरुपादुकां ॥
 श्रीगुरुवाय पादुकां ॥ श्रीगुरुवाय पादुकां ॥ श्री
 गुरुवाय पादुकां ॥ श्रीगुरुवाय पादुकां ॥

[illegible]

येकांकीं ध्याव अथाव अथा वामस्विकीं कीं कि
लिश्विचं यादूकीं ॥ जनमार्गवतिस्त्रुं कृदिकोय
मुं मुं मुं ठ अलनम ध्याव अथाव अ ध्या वामस्व
कीं कीं कि लिश्विचं यादूकीं ॥ १ ॥ अरुगवतिस्त्रुं मुं मुं मुं
कृदिकं मुं मुं मुं रव (गं ध्याव अथाव अ ध्या व
मस्विकि लिश्विचं यादूकीं ॥ २ ॥ निष्पत्यकं वलिः ॥ ॥
अथ कवितया गिनी नी पी रि जा द्रु जा सह जा या
गजागर्ज जो कूल जा सह जा अथ कवितया गिनी नी
द्रु वनी रु वली (गा व नी एका द्रु वी द्रु द्रु वी अ द्रु
नी व उ अ द्रु वट् स का द्रु न वा द्रु वी ए र उ गामि
नी नी य (था य य नाना वलिं गट् द्रु २ म म सिद्धि कर्ष
उ द्रु ३ रु ट् स्या हा ॥ ॥ प्रिया अलि ॥ ॥ अ द्रु अ न
नद्रा कि रे वान नद्रु वी वा धि पत य म् ॥ ॥ अ द्रु
विगति कर्म रु द्र वि का ये या दूकीं ॥ ॥ व द्रु लि ॥ ॥
द्व द या य त्या दि ॥ ॥ सम स क म लु पी ० सिंहासन पी
ति पी (प य पी रि द्रु जा य द्रु र्ज स द्रा हा य स द्रा रु दि य
सिद्धि सम य व द्रु या दूकीं वलिं गट् द्रु २ स्या हा ॥ ॥ अ द्रु
का नू कीं यत्किं रु रु रु र्ज यी द्रु द या य या दूकीं

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

नमः॥ वलिसयथासनाय पादुकां॥ धवककुम्भा
सनाय पादुकां॥ पाण्यश्रुतविक्रमं॥ **वेङ्गु**
सकलशुभमथनिश्चननगकिधाम्नश्रुताय
रुटपादुकां॥ वडासुदयामुखवदुन॥ **वेङ्गु**
दुदुटवडापञ्चनखादा॥ **दशायस्यगमि**॥ **खु**व
लमकुलकुलमवलङ्गीदुदुटत्वादा॥ ॥ **न्यासः**
॥ **खु** सकलशुभमथनिश्चननगकिधाम्नश्रुता
यरुट॥ **कवणधनी**॥ ॥ **खु** पत्रमहसिनि सर्वदा
गगकिधाम्नश्रुताय नमः॥ **खु** निर्वाणमागद
रुकिगकिधाम्नगर्जनीयां नमः॥ **खु** विषमाय प्र
वयगमनिश्चनादिवाधगकिधाम्नमधमायां नमः
॥ **खु** सकलदुर्निगाविष्टकगदलनिष्ठगलुगकि
धाम्नश्रुतामिकायां नमः॥ **खु** सदायदाश्रुतिग
वलिश्रुतकगकिधाम्नकनिष्ठायां नमः॥ **खु** स
कलशुभमथनिश्चननगकिधाम्नश्रुताय क
नगलपुष्पायां नमः॥ **कवण्यम**॥ ॥ **खु** नमः स
र्वसिद्धियागिनीयायुर्ववकुनाधपादुकां॥ **खु** न
मः सर्वसिद्धिमाश्रुताय दक्षिणवकुनाधपादुकां॥

॥ खुं नमानिस्थादिमानन्दनन्दितायेडहववकु
नाथपादुकां ॥ खुं सकलकुलवकुनायिकाये
पश्चिमवकुनाथपादुकां ॥ खुं रुगवत्येवमुका
यातिनेडुद्ववकुनाथपादुकां ॥ वकुन्यासः ॥
॥ खुं पद्मसहसिनीसर्वरुगागकिधाम्नद्वदया
यनमः ॥ खुं निर्वानमार्गदरुकिधाम्ननिबसः
ह्याहा ॥ खुं विषमायश्चवयगमनिश्रुनादिवाध
गकिधाम्नगिरायेवषट् ॥ खुं सकलद्वविशानि
षट्कगदलनिस्वगनुगकिधाम्नकवयायद्व ॥
खुं सखापदाम्नाधितवलिश्रुलकगकिधाम्नन
गुगयाययोषट् ॥ खुं सकलगफपथमनिश्रुन
कगकिधाम्नश्रुलकयद्वट् ॥ ॐ र्यगन्यासः ॥
गैश्रम(ॐ) ॥ यैद्वदि ॥ धांनारु ॥ शुं मुख ॥ द्वावामनाग
पूट ॥ द्वादकनागपूट ॥ द्वावामनग ॥ द्वादकनयै ॥
द्वावामक(ॐ) ॥ नलि(ॐ) ॥ मः गुण ॥ ॐ निनतद्वावना
सः ॥ ॥ जलपाणपूजा ॥ खुं द्वायीजलपाणसना
यपादुकां ॥ खुं द्वायीद्वाजलपाणरुद्वविकायपा
दुकां ॥ खुं द्वादयायत्यादि ॥ आवाहनादि ॥ (धनम)

ॐ॥ ॥ जलयात्रयुक्ता ॥ खुं जां जां जलयात्रा सना
ययादूकी ॥ खुं जां जां दूँ जलयात्ररुद्राविकायया
दूकी ॥ खुं ददयायया ॥ दि ॥ आवाहनादि ॥ धनम
डी ॥ गायत्री ॥ खुं यासि ॥ हिलक्षविद्यह्नवव्यधि
कधीमहितनालक्षः ॥ यवादयात ॥ अलिषि ॥ ॥
अथयात्रयुक्ता ॥ खुं जां जां अथयात्रा सनाययादूकी
॥ खुं जां जां दूँ ॥ आनन्दरुद्रवायवोषट् खुं जां जां ॥
मः सः सः ॥ ॥ यवादवी अमर्तवमरेखाहा ॥ उव
॥ गंधर्वा ॥ वि ॥ या ॥ लि ॥ ॐ जां दूँ दूँ दूँ दूँ जां नमः ॥
खुं ददयाययादि ॥ आवाहनादि ॥ यानिमडी ॥ ॥
ककुपमदयात्ररुद्रादि ॥ ॐ जां दूँ दूँ दूँ दूँ जां
ॐ ॥ ॥ आत्मयुक्ता ॥ खुं आत्मनवन्दनयादूकी ॥ खुं
अकर्तयादूकी ॥ खुं वीवरुर्मायादूकी ॥ खुं सर्वजन
माहर्नायादूकी ॥ ॐ जां दूँ दूँ दूँ दूँ जां नमः ॥ आत्मन
ययीयादूकी ॥ खुं सकलगायत्रमथनिअस्तुयहृद्
॥ अननमस्तु ॥ आत्मनिवसिसिद्धयन् ॥ ३ ॥ ॐ निः
आत्मयुक्ता ॥ ॥ आवाहन ॥ खुं जां जां यात्रायात्राया
दवी ॥ खजस्तुखगवृषिणी ॥ सुबलागकगतायानिआ

आनु ॐ ह म पु त ॥ ॐ द आ वा दि ष्य आ वा ह या मि ॥
ॐ ति आ वा ह र्न ॥ ॥ शि व व पू ज ॥ ॥ रं न ना स ना य
पा द की ॥ ॥ रं म य वा स ना य पा द की ॥ ॥ रं मू षा स ना
य पा द की ॥ ॥ रं (ॐ) य स व दी प द म्हा की द वी म हा
र्धा क ष्ण पा ला य पा द की ॥ व लि ॥ ॥ व द क ॥ ॥ रं
की क ल प ष व द क ना थ य पा द की ॥ व लि ॥ ॥ रं
गं गं गू गः (ॐ) क ल ग (ॐ) व ना य पा द की ॥ व लि ॥ आ
वा ह ना दि ॥ ॥ म ऊ नी द पु ग ड म्हा ॥ ॥ या गि नी ॥ सि
हा स ना य पा द की ॥ या या गि नी या पा द की ॥ व लि ॥
आ वा ह ना दि ॥ या नि म्हा ॥ ॥ रं डी पी आ वा व ण का
य न मः ॥ ॥ रं डी पी अ न ना स ना य न मः ॥ ॥ रं डी पी
क न्दा स ना य न मः ॥ ॥ रं डी पी ना वा स ना य न मः ॥
॥ रं डी पी य सा स ना य न मः ॥ ॥ रं डी पी क ण वा स ना
य न मः ॥ ॥ रं डी पी क णि का स ना य न मः ॥ ॥ रं डी पी
प द्मा स ना य न मः ॥ ॥ रं डी पी ध र्मा य न मः ॥ ॥ रं डी
पी क्ता ना स ना य न मः ॥ ॥ रं डी पी वे वा ग्या य न मः
॥ ॥ रं डी पी जै ष्वा य न मः ॥ ॥ अ ध र्मा य न मः ॥ ॥ अ
ह्ना ना य न मः ॥ ॥ अ वे वा ग्या य न मः ॥ ॥ अ ने ष्वा य

धोहानामनायनमः॥ खुंकोपीवेनायनमः॥
॥ खुंकोपीवेनायनमः॥ अथमायनमः॥ अ
हानायनमः॥ अवेनायनमः॥ अनेव्याय
नमः॥ नन्नवदिकापीनयनमः॥ ॥ खुंकोपीले
डाठियानपीनयनमः॥ खुंकोपीवेनालधनपीन
यनमः॥ खुंकोपीवेनूपूगिविपीनयनमः॥ खुंको
पीयंकामनूपपीनयनमः॥ ॥ खुंकोपीनूपयता
सनायनमः॥ ॥ महायतासनायनमः॥ अथ
न॥ ॥ खं महागंजामयीलक्ष्मीवक्षिकाद्यायन
परा॥ पंचवक्त्रादगुरुजा॥ विपंचनयनेयता॥ ॥
॥ स्वतवर्णमहादवी॥ महायतापनिष्ठिता॥ मारुका
कृकम॥ ॥ सिद्धियागिनीपूजिता॥ २॥ दालितास्या
ल्लिहनाका लापूकृकगंगता॥ उकुसाकुसया
गन॥ वालयत्कलपवता॥ ३॥ कविदीर्घकवि
कथ॥ कवित्सीहगवलाता॥ कवित्सीहकवित्यात्य
त्त्वगलुकायवहता॥ ४॥ गानासारुवलेयता॥ उव
गनुदुविरुषिता॥ पागांकुगधवादवी॥ ववदाहय
पालिनी॥ ५॥ सवहसुहृताखड्ग॥ लेलाकृकारुका

वर्क। वा मखदा नमस्वरूपं दक्षि (ग) पूल मरुमी ॥ ३ ॥
॥ अथ नंदक श्रवणं नोदं कृतजा सवयू विर। सवयू हस्त
सकैर्गवे मूर्धु (ग) लिता सादक ॥ १ ॥ वाम उकल
दिव्य महा नलैः पदीयक। एषा यथ मित्रादवी न
नुवा जायदगा ॥ ५ ॥ एक सा न क रुदन दिव्य
अथ वस्त्रिणा। एषा मित्रा महादवी सिद्धि लक्ष्मी ऊय
यदा ॥ २ ॥ ॐ निष्कान ॥ ॥ विष्णु प्रल ॥ ॐ कौं कौं कौं
ॐ कौं कौं नमः पादकौ पूजयामि ॥ ३ ॥ अथ ग वलि
॥ ॥ गायत्री ॥ ॐ सिद्धि लक्ष्मी विष्णु नवत्यधिकषा
महि। नना लक्ष्मीः पदादया ॥ वलि ॥ ॥ अथ माला
मल ॥ ॐ नमः सर्व सिद्धि योगिनी स्थानमः सर्व सि
द्धि मारु स्थानमानीत्यादि नन्दन निगाये सकल कूः
लव दाना यिकाये रुग वल्ये वपु काया लिन्ये मयध
ॐ कौं कौं कौं कौं कौं नमः ॐ पय मह सिनि निर्वा
लमाने ददवी विषमा ययव यम नि सकल दवि
ता विष्णु कदं गेलनि सर्व पिदा म् विर वलि सकल
गण प्रमथ निदवी आग वृ २ हस २ वल्ल २ नन व वि
ना नुवसारु कलि मम स्वग क म ह २ खादि २ वि पूल

गाविष्कृदं गेलनि, सर्वोपदासु विन बलि सकल
 गच्छ प्रमथनिदवी आगच्छ २ हस २ वत्स २ नव ब्रुवि
 नातु वसारु कलि मम स्वर्ग के मर्द्ध २ खादि २ विपुल
 नहि निदि २ कि निदि २ ख प्रन ता उय २ कृदय २ गाव या
 वनमम सकल मना वधान्माधय २ यत्र मका बलि
 क. रुगवति महा के नव दूय धा विणी विद गव वन
 मिता सकल मनु मात पण गजन वत्स लदवी महा
 कालिया लना निद्रु ३ प्रसीद मदन नातु वा कर्ला क
 नू २ सु बा रा व क न्य कां कीं पी दू रुट ३ खा हा ॥ धर्ग न
 वलि ॥ ॐ ति मा लाम नु ॥ ॥ रुं रुद यो यत्पादि ॥ आर्वा
 रुनादि ॥ यानि मूर्धा ॥ ॥ दग दि दू ॥ ॐ ज लो लू ॐ रु
 यव डा रु स्त य सु बा वि प त य पा दू कां ॥ ॐ वलि ॥
 ॐ ज मां नू अ न य ग कि रु स्त य ग आ वि प त य पा दू कां
 ॥ व ॐ लि ॥ ॐ ज मां अ य मा य द लु रु स्त य य ता वि
 प त य पा दू कां ॥ वलि ॥ ॐ ज मां क ने म त्या य ख
 य रु स्त य बा क सा वि प त य पा दू ॐ कां ॥ वलि ॥ ॐ
 ज मां व व नू य पा ग रु स्त य अ बा वि प त य पा दू कां
 ॥ ॐ वलि ॥ ॐ ज रुं यं वा य य ध ज रु स्त य य व

[illegible]

वीरनाथपीपादकी॥**झीं**पीदगकन्दनाथपीपादकी
॥**झीं**पीकाधमूनिनाथपीपादकी॥**झीं**पीवसिष्ठम
निनाथपीपादकी॥**झीं**पीउयदथनाथपीपादकी॥
झींपीकंकालडाम्बीशम्भापीपादकी॥**झीं**पीमातङ्गी
शम्भापीपादकी॥**झीं**पीवीनावलिडामिनीशम्भापी
पादकी॥**झीं**पीविठ्ठवनन्दनाथपीपादकी॥**झीं**पी
विजयनाथपीपादकी॥**झीं**पीवामदवपीपादकी
॥**झीं**पीगङ्गनन्दनाथपीपादकी॥**झीं**पीरुडागोत्र
श्वरनाथपीपादकी॥**झीं**पीयज्ञानन्दनाथपीपादकी
॥**झीं**पीरुक्कनन्दपीपादकी॥**झीं**पीशुभवकुनन्द
नाथपीपादकी॥**झीं**पीविज्ञानन्दनाथपीपादकी॥
झींपीवाधानन्दनाथपीपादकी॥**धर्मनवल्लि**॥ ॥
गंगाजम्बुनादि॥**खूं**मूंजंजम्बुनीपादकी॥**खूं**मूंनै
रुम्बुनीपादकी॥**खूं**मूंमंमाहनीपादकी॥**खूं**
मूंमूंआकर्षणीपादकी॥**धर्मनवल्लि**॥ ॥गंगा
शुद्धदलवक्त्रादि॥**झीं**पी**खूं**जंजम्बुनीदवीशु
सिगाम्बुनवनाथसहिनाथपादकी॥**वलि**॥**झीं**पी
खूंकंमाहृषीदवीनून्हेवनाथसहिनाथपाद

कां॥ **झीं** धीं **रुं** वं **क्रा** मा वि द वी च लु रे न व स हि ताः
प्र पा द कां॥ **झीं** धीं **रुं** टं वे स वी का ध रे न व ना थ स
हि ता य पा द कां॥ **झीं** धीं **रुं** नं वा ना हि द वी ड न्न रु
रे न व ना थ स हि ता य पा द कां॥ **झीं** धीं **रुं** पं ॐ न्द्रा
ली द वी क ली ग रे न व ना थ स हि ता य पा द कां॥ **झीं** धीं
रुं यं वा म् पु द वी री व ल रे न व ना थ स हि ता य
पा द कां॥ **झीं** धीं **रुं** नं म ह ल क्षी द वी स ह न रे न व
ना थ स हि ता य पा द कां॥ **धनं नं वलिः॥ धनं अक्षमा**
रुका॥ ॥ **नमः निवादि॥** **वे** **झीं** धीं **रुं** नि वा द वी अ
म्बा धी पा द कां॥ वलि॥ **वे** **झीं** धीं **रुं** व ग व ती द वी अम्बा
धी पा द कां॥ **वे** **झीं** धीं **रुं** मा या द वी अम्बा धी पा द कां
॥ **वे** **झीं** धीं **रुं** रु द्रा द वी अम्बा धी पा द कां॥ **वे** **झीं** धीं **रुं**
शि वि नी द वी अम्बा धी पा द कां॥ **वे** **झीं** धीं **रुं** वि ण
ली द वी अम्बा धी पा द कां॥ **वे** **झीं** धीं **रुं** य म जि द्रा द
वी अम्बा धी पा द कां॥ **वे** **झीं** धीं **रुं** त्व क क ल द वी अ
म्बा धी पा द कां॥ **वे** **झीं** धीं **रुं** दृ ण द वी द वी अम्बा धी पा
द कां॥ **वे** **झीं** धीं **रुं** वी न मा ता द वी अम्बा धी पा द कां॥
वे **झीं** धीं **रुं** उ लू की द वी अम्बा धी पा द कां॥ **वे** **झीं**

[illegible]

वाकिनी अस्वाधी यादूकी ॥ वं डों यों खूं मों काकि
 नी अस्वाधी यादूकी ॥ वं डों यों खूं मों साकि
 नी अस्वाधी यादूकी ॥ वं डों यों खूं मों हाकिनी
 अस्वाधी यादूकी ॥ छुनि छुनि कि ॥ ॥ खूं जा
 ली धवयी भय यादूकी ॥ खूं धूल निविधी भय यादू
 की ॥ खूं काम नूययी भय यादूकी ॥ खूं डाडि या नयी
 भय यादूकी ॥ धन न वलि ॥ न्नि व पुः पी ० १ ॥ ॥
 गत निग कि पूजा ॥ यों डों डूं व ड वेल व नी य
 डूं डूं डूं डूं खा हा ॥ डूं डों व गला मुखि सर्व दू का
 नां म र्वे वा र्वे सु सु य जि द्वां की ल य २ व दि ना भ य
 डों डूं डूं खा हा ॥ डूं डों ना ज य द डूं डूं य व पु व ण
 म दि नी डूं डूं स दा व द २ तां मां ई ॥ स १ म सु द न
 न मः खा हा ॥ धन न वलि ॥ निग कि ॥ ॥ गतां द व पु
 जा ॥ (धूं डों यों सकल स हा व वला ल क ट द व या लः
 धी या दूकी ॥ वलि ॥ ॥ य व व ॥ डूं महा वः
 पु ग ज सं क र्ष लि कालि म न्ढा न ह ॥ व १ ॥ हं श्री
 को हि महा सिद्ध स म य खूं ले व विद्या व ल द्वा व द य
 द खा हा ॥ व १ ॥ श्री हि हं महा सु दि व पु ल द्वा

पुनः कर्मफलिकालि मन्त्र न हः॥ वल् १॥ हं श्री
कां हि महा सिद्ध सम य खं ले व विद्या बल श्री व न प
द सा हा॥ वल् २॥ श्री हि हं महा सु वि व पु ल श्री
सिद्ध वि वि हं रु ट॥ वल् १॥ श्री श्री हं हं रु ट सा हाः
॥ वल् २॥ खं न मो रु ग व ति सिद्ध ल श्री वि नी रु ट सा
हा॥ वल् १॥ ध र न व लि॥ ॐ ति यं व व कु पू ज॥ ॥
ग गः ग सु द ग र्क पू ज॥ ॥ ग गः ग सु द ग र्क पू ज॥
श्री श्री खं व न द ना थ श्री पा द का पू ज या मि न मः॥ व
लिः॥ श्री श्री खं अ रु य ना थ श्री पा द का॥ श्री श्री खं क
ल ना थ श्री पा द का॥ श्री श्री खं ख द्वा ग ना थ श्री पा द
का॥ श्री श्री खं म उ ना थ श्री पा द का॥ श्री श्री खं वि भू
न ना थ श्री पा द का॥ श्री श्री खं अ कृ ण ना थ श्री पा द
का॥ श्री श्री खं ख ङ्ग ना थ श्री पा द का॥ श्री श्री खं क पा
ल ना थ श्री पा द का॥ श्री श्री खं पा ण ना थ पा द का
पू ज या मि॥ ध र न व लि॥ ॐ ति ग सु द ग र्क पू ज॥ ॥
ॐ श्री आ न न्द ग कि ले व वा न न्द वी ना धि प त य
या॥ श्री पा द का॥ व लि॥ ॥ ॐ श्री अ द्या व द्वा थ द्या
व द्वा थ द्या व न न व द्वा हं सर्व त सर्व सर्व

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ॐ ह्रीं श्रीं ॥ वक्राणीदवीपादूकी ॥ ॐ जं के रं गं धं दं
साहं ॥ वमीदवीपादूकी ॥ ॐ जं वं दं जं सें ॐ को सा वि
दवीपादूकी ॥ ॐ जं टं ॐ उं रं लं वे स्रवीपादूकी ॥ ॐ जं
गं धं दं धं नं वा बाहीदवीपादूकी ॥ ॐ जं यं रं वं रं सें ॐ
न्दाणीदवीपादूकी ॥ ॐ जं यं नं लं वं वा मू लादवीपा
दूकी ॥ ॐ जं गं वं सें हं महा लक्ष्मीदवीपादूकी ॥ धनं
नं वलिः ॥ वक्राणादि ॥ ॥ गतः ॥ प्रयागादि ॥ ॐ ह्रीं
प्रयागक्षयपालायपादूकी ॥ ॐ ह्रीं वा बा लसीक्षय
पालायपादूकी ॥ ॐ ह्रीं कालाप्रवक्षयपालायपा
दूकी ॥ ॐ ह्रीं अट्टहासक्षयपालायपादूकी ॥ ॐ
ह्रीं जयनिप्रवक्षयपालायपादूकी ॥ ॐ ह्रीं वनि
प्रक्षयपालायपादूकी ॥ ॐ ह्रीं प्रकाप्रवक्षयपा
लायपादूकी ॥ ॐ ह्रीं दवीकाटक्षयपालायपादू
की ॥ धनं नं वलिः ॥ नृनिप्रयागादि ॥ ॥ प्रयागक्ष
यपालयूजा ॥ ॐ जं अं ॥ अं प्रमखदीय अकलाद
वीसिद्धिसेविक्षयपालायपादूकी ॥ वलिः ॥ ॥ ॐ
जं अं ॥ आनन्ददीप अननादवीपालकीर्तक्षयपा
लपादूकी ॥ २ ॥ ॐ जं ॐ ॥ वलिः ॥ इरुदीप ॐ नृमगीद

मानं गी लक्ष्मणपालपादकां ॥ ३ ॥ **वे** जह्नी वन्द्यदी
पद्मी नीदजमक्ष्मणपालपादकां ॥ ४ ॥ **वे** जड
४ यवर्ग रुदी उग्रवधुदवी महाद्वन्द्वपालः
पादकां ॥ **वे** जडुः पधुदी तसुनादवी वलियरुद
णपालपादकां ॥ ५ ॥ **वे** जमः दधुयूवदी यमधम
मीदवी (गानन्दक्ष्मणपालपादकां ॥ ६ ॥ **वे** जमः
(गायत्री नदी यरुक्कायीदवी मनीवक्ष्मणपालपा
दकां ॥ ७ ॥ **वे** ज०४ सुववासदी ययरुक्कायीदवी
सरुदक्ष्मणपालपादकां ॥ ८ ॥ **वे** ज०४ बलदी य
खनास्यादवी उद्वेकं गक्ष्मणपालपादकां ॥ ९ ॥ **वे**
ज०४ अगस्त्यदी यरुक्कायीदवी वैश्वानरक्ष्मणपा
लपादकां ॥ १० ॥ **वे** ज०४ लोकवासदी यडाका नः
दवी सुवासुवसानक्ष्मणपालपादकां ॥ ११ ॥ **वे** ज
३४ (गानक्ष्मणपालपादकां ॥ १२ ॥ **वे** ज
३४ (गानक्ष्मणपालपादकां ॥ १३ ॥ **वे** ज०४ डाद्यदी यज्जुयसुखाद
वीरुदक्ष्मणपालपादकां ॥ १४ ॥ **वे** ज०४ नरुदी यज्जु
मनिदवी सिद्धनक्ष्मणपालपादकां ॥ १५ ॥ **वे** ज०४
४ अनरुदी यज्जुमनं गीदगी महारुदक्ष्मणपालपा

वीरुदक्षायपालपादकी॥१४॥ अ० नरुदीप
मनिदवीसिंहनक्षत्रायपालपादकी॥१५॥ अ०
१० नरुदीपमनवंगीदगीमहारुदक्षायपालपा
दकी॥१६॥ अ० क० कन्यदीपमनाहनादवीमहाः
विष्णुक्षायपालपादकी॥१७॥ अ० ख० सिंहलदीप
कनादवीमगसिक्षायपालपादकी॥१८॥ अ० ग०
११ सवर्णदीपसूयकक्षदीपवपुनाथक्षायपाल
पादकी॥१९॥ अ० घ० कक्षदीपयननवादवीगज
कक्षक्षायपालपादकी॥२०॥ अ० ङ० स्वामुखदीप
विष्णुनिदवीगणक्षायपालपादकी॥२१॥ अ० च०
सूयसनदीपवक्षदीपमहाजिह्वक्षायपालपा
दकी॥२२॥ अ० छ० डाडिदीपकालनाथिदवीविज
यनाथक्षायपालपादकी॥२३॥ अ० ज० जालंधरदी
पक्षालनिदवीजालाक्षक्षायपालपादकी॥२४॥
अ० झ० अ० क० पाददीपसूरुडादवीविश्वामक्षायपा
लपादकी॥२५॥ अ० ञ० यवदीपपुरुडादवीर्वा
क्षायपालपादकी॥२६॥ अ० ट० क० सदीपगंगाद
वीजयरुदपालपादकी॥२७॥ अ० थ० ग० मलदी

पद्मास्त्री देवी वसन्तक्षेत्रपाल यादूकी ॥ २८ ॥ ज
जो चीनदी पञ्चमनी देवी देवी वक्षेत्रपाल यादू
की ॥ २९ ॥ ज जो कुमावदी पञ्चमदी देवी कुमाव
क्षेत्रपाल यादूकी ॥ ३० ॥ ज (प्रो) यवदी पवला दे
वी यमदक्षेत्रपाल यादूकी ॥ ३१ ॥ ज जो यस्कः
वदी पदनुवा देवी प्रीतिवक्षेत्रपाल यादूकी
॥ ३२ ॥ ज (प्रो) कटाहदी पदविनी देवी महावीक्ष
क्षेत्रपाल यादूकी ॥ ३३ ॥ ज जो वन्दुदी पञ्चनूपा
देवी महानन्दक्षेत्रपाल यादूकी ॥ ३४ ॥ ज (प्रो) ज
नदी प. समवा देवी सुगन्धि क्षेत्रपाल यादूकी ॥ ३
५ ॥ ज जो काला पवदी पका देवी (ग) पाल क्षेत्रपा
ल यादूकी ॥ ३६ ॥ ज (प्रो) वलदी पधमवती देवी वा
का वाक क्षेत्रपाल यादूकी ॥ ३७ ॥ ज जो सवदी प
विलावति देवी पव्यनन्द क्षेत्रपाल यादूकी ॥ ३८
॥ ज (प्रो) (ग) मधदी पवका देवी धनन्द क्षेत्रपाल
पाल यादूकी ॥ ३९ ॥ ज जो पहादी पल्लव देवी मे
खनी उक्षेत्रपाल यादूकी ॥ ४० ॥ ज (प्रो) सूर्यदी प
मनात्मनी देवी अम्बुवक्षेत्रपाल यादूकी ॥ ४१

पालपादकी ॥३२॥ जंघादीय रुक्मादवीम
खनीजक्षयपालपादकी ॥४०॥ जंघासूर्यदीप
मनात्मनीदवी अम्बुवन्दयपालपादकी ॥४१॥
॥ जंघासूर्यदीपहयवंगदवी पुष्पाक्षयपा
लपादकी ॥४२॥ जंघासूर्यदीपविष्वक्किष्काद
वीविदालाक्षयपालपादकी ॥४३॥ जंघावसन्त
दीपडलखादवीमहाजक्षयपालपादकी ॥
४४॥ जंघागन्धदीपवविष्कादवीपुष्पानन्दक्षय
पालपादकी ॥४५॥ जंघाअम्बुगाक्षदीपगाव
त्रीदवीकामक्षयपालपादकी ॥४६॥ जंघाश्रीः
नन्ददीपनागादवीदवधवन्दयपालपादकी ॥
४७॥ जंघागन्धर्वदीपनदीदवीदीपवन्दय
पालपादकी ॥४८॥ जंघापीमर्दगावदीपनादास्याद
वीविजालाक्षयपालपादकी ॥४९॥ जंघासर्वसू
दीपसर्वप्रसीदवीकान्तिवलमहाक्षयपालपाद
की ॥५०॥ धर्मनवलि ॥ ॐ तिर्थनागक्षयपालपाद
॥ शुभानखनरुद्रय ॥ विद्याश्रुति ॥ जंघाक्षीर्ण
गिरासकुन्दमहारुद्रवायपादकी ॥ वलि ॥

रुद्रव्याशुकायुजनं वलिं चर्वकमलं ॥ ॥ साक्षा
 पारुष्यं ॥ ॥ बाभारुद्रव्यं ॥ ॥ दूरुद्रव्यं ॥ ॥
 यातिरुद्रव्यं ॥ ॥ तिरुद्रव्यं ॥ ॥ दालकधीम
 रुद्रव्यं ॥ ॥ खिलीरुद्रव्यं ॥ ॥ खिलीरुद्रव्यं ॥ ॥
 याशुलिः ॥ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥
 रुद्रव्यं ॥ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥
 वलिं ॥ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

॥ वलिं ॥ ॥ कादरुगवति ॥ विद्याभूति ॥ ॐ न
 ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ उपवसुविद्यमदनीर्दुःखं सदा
 नक्षत्रं त्वां मां ईशः सत्यं हवयादूका ॥ वलिं ॥ ॥
 म॥ नक्षत्रं निखा ॥ मनुष्यवत् ॥ वलिं ॥ ॥ उपवसाह
 न ॥ ॐ नमो गंधर्वदीपनदीद्वीविद्यामन्त्राय याल
 यपादूका ॥ वलिं ॥ ॥ काथवा ॥ ॐ नमो गंधर्वमहा
 वनयमात्रमयसां दूरे रूट्खाहा ॥ ३ ॥ वलिं ॥ ॥
 तं दालरु नव ॥ मनुष्यवत् ॥ वलिं ॥ ॥ ॐ नमो
 नक्षत्रं ॥ ॐ नमो गंधर्वदीपनदीद्वीविद्यामन्त्राय याल
 लक्ष्मणाय नमः ॥ ३ ॥ वलिं ॥ ॥ लाकालादका
 ॥ ॐ नमो गंधर्वमन्त्रदीपविद्यजिज्ञाविज्ञालक्ष्मणाय नमः ॥

नद्वका॥ वे० ज० ग० ल० लि० दी० य० न० न० वा० स० ह० ए० क० पा०
ल० द० य० आ० ला० य० न० म० ॥ ३ ॥ वलि॥ ॥ ला० का० ला० द० का०
॥ वे० ज० आ० व० म० न० दी० य० वि० य० जि० का० वि० ज० ल० द० य० आ० ला०
य० न० म० ॥ ३ ॥ वलि॥ ॥ व० सि० न० य० ॥ शि० या० ॥ ॥ गुं
रु० ग० ॥ व० य० म० हा० व० न० य० न० क० मा० य० म० ॥ ३ ॥ द० र० द० द०
हा० ॥ वलि॥ ॥ ग० ल० र० न० द० ॥ शि० या० ॥ ॥ का० र्म० हा० व०
र० न० वा० य० या० द० का० ॥ वलि॥ ॥ उ० व० ॥ ना० य० ॥ शि० या०
ज० लि॥ ग० ग० ग० ग० ॥ (नै० प्री० क० ल० ग०) ॥ व० वा० य० या० द० का०
॥ वलि॥ ॥ न० द० मा० वा० र० न० द० ॥ म० न० द० व० व० न० ॥ वलि॥
॥ ॥ ॥ थ० लि॥ ॥ का० र्म० हा० व० र० न० वा० य० या० द० का० ॥ ३ ॥
वलि॥ ॥ रु० ति० द० का० ॥ ज० नै० ग० रा० द० दी० य० द० का० द० वी०
वि० य० न० क० य० आ० ला० य० न० म० ॥ ३ ॥ वलि॥ ॥ ॥ ना० य० द० व०
॥ म० ग० न० ॥ वे० ज० का० का० का० म० हा० क० ल० वी० न० म० ग० ना० य० या०
द० का० ॥ ३ ॥ वलि॥ ॥ वा० न० म० ग० न० ॥ वे० ज० का० का० का० का०
म० ग० न० म० हा० र० न० वा० य० म० य० ॥ का० का० का० का० का० का० का०
ग० कि० स० हि० ता० य० या० द० का० ॥ ३ ॥ वलि॥ ॥ म० ग० न०
ग० ल० ग० ॥ म० न० ॥ वे० ज० ग० ग० ग० ग० ग० ग० ग० ग० ग० ग० ग० ग० ग०
ल० ग० ल० ग० य० या० द० का० ॥ ३ ॥ वलि॥ ॥ म० ग० न० र० न०

व॥ **हूं हूं हूं** गिरासु कन्दमहारे नवाय पादका
॥३॥ व॥ **लि॥** ॥ **ग॥ ल॥ ग॥ वा॥ ला॥ व॥** ॥ **वं ज॥ गं॥ गी॥ गूं**
गें॥ गी॥ गः॥ गूं॥ (लो॥ धी॥ क॥ ल॥ ग॥ ल॥ वा॥ य॥ पा॥ द॥ का॥) ॥ व॥ लि॥ ॥
वा॥ क॥ ल॥ क॥ ॥ **वं ज॥ ठं॥ दूं॥ दूं॥ दूं॥ दूं॥** सिद्धि मात॥ (ग॥ य॥
वा॥ य॥ की॥ मूं॥) **ठं॥ दूं॥ दूं॥ दूं॥** सिद्धि **मूं॥** मात॥ (ग॥ य॥ वा॥ द॥
वी॥ पा॥ द॥) **मूं॥** का॥ ॥३॥ व॥ लि॥ ॥ **ना॥ टं॥** **य॥ न॥ व॥ क॥ व॥**
वि॥ या॥ ज॥ **लि॥** ॥ **वं ज॥ दूं॥** न॥ ल॥ य॥ न॥ म॥ ह॥ रे॥ न॥ वा॥ य॥ मूं॥
न॥ ल॥ य॥ ल॥ **ग॥ कि॥ म॥** **मूं॥** हि॥ ना॥ य॥ पा॥ द॥ का॥ ॥ व॥ लि॥ **मूं॥**
॥ ॥ **ज॥ ज॥ मा॥ ज॥** ॥ **वं ज॥** **दूं॥** आ॥ न॥ न॥ द॥ ग॥ कि॥ रे॥ न॥ वा॥ न॥
क॥ वी॥ वा॥ धि॥ य॥ न॥ य॥ मूं॥ **पी॥** **मूं॥** य॥ वि॥ म॥ मूल॥ ल॥ ल॥ न॥ रु॥
छा॥ वि॥ का॥ य॥ पा॥ द॥ **मूं॥** का॥ ॥३॥ व॥ लि॥ ॥ **ह॥ न॥ म॥ रु॥**
वं ज॥ ठं॥ दूं॥ दूं॥ रु॥ ज॥ ॥ **दूं॥ दूं॥ रु॥ द्वा॥ द्वा॥** ॥३॥ व॥ लि॥ ॥
ग॥ ल॥ ग॥ **ठं॥ य॥ ना॥ द्वा॥** ॥ **वं ज॥ गं॥ गी॥ गूं॥** (लो॥ धी॥ क॥ ल॥
ग॥ ल॥ वा॥ य॥ पा॥ द॥ का॥) ॥३॥ व॥ लि॥ ॥ **ग॥ ल॥ ग॥ या॥ ज॥ का॥ य॥**
ज॥ न॥ व॥ लि॥ **य॥ व॥ क॥ म॥ ल॥** ॥ **ठं॥ य॥ ना॥ द्वा॥** **ना॥ टं॥ य॥ न॥** ॥ **म॥**
रु॥ द्वा॥ व॥ व॥ न॥ ॥ व॥ लि॥ ॥ **वा॥ द्वा॥ ना॥ टं॥ य॥ न॥ म॥ रु॥ द्वा॥ व॥ व॥ न॥**
॥ व॥ लि॥ ॥ **वा॥ द्वा॥ वा॥ द्वा॥ न॥ ज॥ ग॥ म॥** ॥ **वि॥ या॥ ज॥** **लि॥** ॥ **वं ज॥**
धी॥ रू॥ द्वा॥ ॥ रु॥ ग॥ व॥ ति॥ द्वा॥ न॥ द्वा॥ द्वा॥ कि॥ क॥ द्वा॥ द्वा॥ द्वा॥ द्वा॥ द्वा॥

[illegible]

[illegible]

आध्यात्म॥ श्रियाः ॥ जहाँ जहाँ दे न रहे
प्रदाय पादकों॥ वलि॥ ॥ नाथ्यवः कलाकु॥ म
नु पूर्ववत्॥ वलि॥ ॥ गलनववदाल॥ मनु
पूर्ववत्॥ वलि॥ ॥ वनवाजकुल॥ श्रियाः ॥
लि॥ वैजं द्यापीवधिममूलरुद्राविका
यपाद॥ ॥ ३॥ वलि॥ ॥ श्रीमन्मवववा
ल॥ वैजं ॥ ॥ १॥ ॥ श्रीमन्मवववमहा
रुद्रवायपादकों॥ ३॥ वलि॥ ॥ नाट्यम
यावावा॥ मनु पूर्ववत्॥ वलि॥ ॥ गलनकु
ल॥ मनु पूर्ववत्॥ वलि॥ ॥ महावलिवा
रुद्रव॥ मनु पूर्ववत्॥ वलि॥ ॥ वाधस्वालवा
रुद्रव॥ मनु पूर्ववत्॥ वलि॥ ॥ गलनयाकि
वा॥ मनु पूर्ववत्॥ वलि॥ ॥ माह्ववीकुम्भ
॥ वैजं करवंगद्यं देवु माह्ववीदवीपादकों
॥ ३॥ वलि॥ ॥ ॥ गलनलमरु॥ मनु पू
र्ववत्॥ ॥ श्रीमन्मखलवावा॥ मनु पूर्ववत्॥
वलि॥ ॥ गलनयाकु॥ मनु पूर्ववत्॥ वलि
॥ ॥ वावकासावियाकु॥ वैजं ॥ ॥ ॥

मौं पीवानकामानिकाविश्वयादुर्का ॥३॥ वलि ॥

गणेशगोलाहलं ॥ मस्तुष्टुवदन् ॥ वलि ॥

रुमः स्वयं शक्यं लिख ॥ मन्त्र पूर्ववत् ॥ वलि

॥ गणेशनिप्रकाशः ॥ मलयपूर्ववर्गः ॥ वलिः ॥

॥ दनिमागम ॥ जिया अलि ॥ वं डी डी डी डी

१ रुगवतिद्यानं दू कडुकेद्वयं दू दू ठलेलनम

[illegible]

असंख्यं त्वं वा वा ला ल्या ध का उ अ न्ना वा द्वा दू उ
या वि ॥ वृद्धि ॥ ॥ इति अष्टादशोऽध्यायः ॥

ॐ ह्रीं क्लीं श्रीगणेशाय नमः ॥ ३

वर्लि ॥ ॥ गणेशाय नमः ॥ सकल सुखदायक ॥ वर्लि ॥ ॥

रुगवर्गियागलेग॥मनुष्यवर्गवर्ग॥॥रु॥

वसिष्ठाक्षः॥ मन्त्रपूर्ववत्॥ वलिः॥ ॥ नाट्यव्यक्त

ॐ ॥ मन्त्र पूर्ववत् ॥ वलि ॥ ॥ नमो उक्तो माजी ॥ ॐ ॥

वैकुण्ठं संतं नमो कोमा नीदये वादका ॥३॥ वलि ॥

॥ वशिष्ठे ॥ गलल्लानकण ॥ मल्लद्वयवता ॥ व

नि॥ ॥ गणेशाय नमः ॥ मन्त्रः ॥ वलिः ॥

क्षमा आगम पञ्चि नमूल ॥ मनु प्रवृत्त ॥ वलि ॥ ॥

[illegible]

[illegible]

लक॥ मनु पूर्ववत्॥ वलि॥ ॥ गणेश नन्द बोका
थक॥ मनु पूर्ववत्॥ वलि॥ ॥ वृन्दाणी॥ वैजयंठं
वंरं मंयां वृन्दाणी देव्या दूकी॥ ३॥ वलि॥ ॥ गण
गकृप॥ लाक॥ मनु पूर्ववत्॥ वलि॥ ॥ रुद्रव
मालदवलक॥ मनु पूर्ववत्॥ वलि॥ ॥ चयाक
आगम॥ वैजयां आनन्दगकिरेववानन्दवीनाधिप
नयन्त्यां या॥ पश्चिममूलरुद्रकाययादू
की॥ ३॥ वलि॥ ॥ वृन्दाणी॥ वैजयंठं
दंका॥ क्रान्तमः॥ ३॥ ॥ वृन्दा॥ जवां वीं वृन्दा
ः मं वृन्दा महारुद्रवायनमः॥ ३॥ वलि॥ ॥ वृ
न्दा॥ वृन्दा॥ मनु पूर्ववत्॥ वलि॥ ॥ गणेश
वलीकासावि॥ मनु पूर्ववत्॥ वलि॥ ॥ रुद्रव
थवाजकलक॥ मनु पूर्ववत्॥ मण॥ नरुद्रवमूल
नीवलि॥ ॥ वाजकलाक॥ वैजयंठं २ द्यां सिद्धि
मार्गगणेशवायम्यां वैजयंठं २ सिद्धिमार्गगणेश
दवीयादूकी॥ ३॥ वलि॥ ॥ वाजकलक॥ म
नु पूर्ववत्॥ वलि॥ ॥ विद्यापीठगणेशम
नु पूर्ववत्॥ वलि॥ ॥ विद्यापीठगणेशम॥ मालक

[illegible]

मृकोदंयो महाध्वं कृद् उपावाय पादूको ॥ व
मः वलि ॥ ॥ ठाह खला कायाव वलिविय ॥ वं
योधुं द्रोः अउ वयाप कृद् ॥ ॐ उवाव सरेव
व ॥ ॐ नृमृति ध्य उला स उका ॥ उविद सदनः
॥ ॥ समूक एक काय ॥ ६ ला पाद कद कृद् ॥
वाव सय डाया म् डा मधीन स ॥ ५ व ॥ २ ॥ अ न का
अथ वा कृद् ॥ क मल ॥ य र व न न ॥ १ ॥ म र व ॥ वे व र्ध
ठाला ॥ ६ ॥ न य पु पा व क ॥ ३ ॥ कृ ठा ठा पा उ ठालाः
र ॥ म क्रा वा ॥ ४ ॥ रु य व न ॥ ४ ॥ कृ पा लि स ॥ था व न ॥ ५ ॥
द रु य उा म न ॥ ४ ॥ ४ ॥ कृ क ॥ ५ ॥ न मी का न ॥ स ति रु स
वि व स ॥ था ॥ द रु वा ध न द ॥ वे व ॥ ना ग क ॥ ५ ॥ ५ ॥ व पु
वान् ॥ ५ ॥ ५ ॥ रु का वा वा व सिं ह ॥ य ॥ रु कृ ठा का म द र
म न ॥ ५ ॥ य ग ॥ ना वा व व ॥ वे व ॥ ल न्ना ॥ का व स स ॥ था ॥ ५
क उ पुः ॥ व जाला स ॥ ५ ॥ स न सा द कृ द स ॥ था ॥ ५ ॥ द या
न क मृ य वा ॥ ५ ॥ कृ य पा ला उ द द न ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ य ॥
५ ॥ व ॥ मृ द्वा व ॥ स न स ॥ ५ ॥ कृ य पा ल का ॥ ५ ॥ ५ ॥ व
५ ॥ वि ही ना रु ॥ कृ य पा ला ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ य क लि
५ ॥ व द्वा ॥ ५ ॥ ५ ॥ न व रु या व र्दी ॥ महा ल ॥ व

[illegible]

स्तुतिनाथेऽथ कर्मसूत्रादौ वाच्यते ॥ १० ॥ द्वाष्टावा
 येऽथ गीताथे स्तुतिनाथकामदा सदा ॥ ११ ॥ अ
 मृकायश्च वनवत् ॥ १२ ॥ कथयामास महाबलकपिलः
 जटाशायकामुनि ॥ १३ ॥ विनयकालामुखगन्धर्व
 र्थवर्तिषूजागृह्ण ॥ १४ ॥ रुच्यवचनं यत्पुनरुच्यवचनं
 खलु ॥ १५ ॥ मृदाजामवापि यत्पुनरुच्यवचनं
 पुनरुच्यवचनं ॥ १६ ॥ ॥ अथ कथयामास
 जयदेव जयन्ती यात्रयाजिना नन्दारुद्रायया
 श्रीमा कलावेवास्तु कनका ॥ १७ ॥ दिव्यायानि महाः
 यानि सिद्धि यानि गणेश्वरी ॥ १८ ॥ सा किनी कालवापीव
 उद्धर्कणी निगमयती ॥ १९ ॥ गम्भीराया प्रणीतुला य
 वनाम्नी उलामिका ॥ २० ॥ श्रीप्रणवमहानन्द कालामु
 खी गणेश्वरी ॥ २१ ॥ पिशाची हस्तिनीव यन्मणीषू
 ऊटीकथा ॥ २२ ॥ विषरुद्रसर्वसिद्धि सुविष्णुका गणेश्वरी
 वव ॥ २३ ॥ द्रुकावीराश्वरी दीर्घा वृषाक्षी कलहः
 प्रिया ॥ २४ ॥ मातङ्गी काकटक्षी वनगन्धर्वी वानककी
 ॥ २५ ॥ बाह्वीया वनाद्याव वकाक्षी विश्ववृषिणी
 ॥ २६ ॥ रुच्यवचनी वदनी रुक्मी ॥ २७ ॥ उक्ताक्षी नवराजनी ॥ २८ ॥

वीवरुडमहाकाली, कङ्कालीविद्यमानना। कोष
वालीमरुदाव. वायवंगमरुयानना॥१॥ वाकीव
वेसूवीनीदी, वरिचिकाणी. वीनीमथा। वावाहीनारहि
हीव. गिवदूनीवहुः प्रदिका॥१॥ वन्दनकासहाया
नि. वलिगुद्रुमसदा॥ कीवीसगीयागिनीसावलि
गुद्रुसर्वगतिकुद्रुसर्वविप्रिविनागय. सर्ववा
गायगातिकुद्रुसर्वदुष्टवाहा॥ वनिवासधियागिनी
वलि॥ ॥ वैजकुर्कुर्वयी (० व. ज. गनया विपूवा
वानककादिकि (० स्वगिवगाल, अग्निजिह्वा नुनेम
त॥१॥ कालाखीवानु (० यी (० वायुवानु कनालिनीउ
हवश्चकपादनु. येगान्नीलीमद्वयकी॥२॥ पनयीण
विपायी (० वाजवाजयवास्तुता॥ पवामद्वसिताधी
न्य. अष्टाष्टकमहावला॥३॥ उषयी (० स्वसन्दाहः
स्तथानेः सर्वतः स्मिता॥ केशकेशसथानगय. ग्राम
ग्रामनिवासिनः॥ ४॥ अधिकावशिवाधिका. तपिकुः
वनिपालका॥ विद्युद्वयाः सुनाणः, वीवाणीसिद्धि
मिद्वती॥ ५॥ तपश्चुडालिकुर्वन्ति. धर्मसयनिकिवना
वितामः केशाकवयनिर्हीन. पुनूणावमथादिती॥ ६

चान्नपालकाः॥विद्युद्ब्रूयाःसूनालच्छ्रुवाभाजाःसाह
 मिदुर्गाः॥५॥गपञ्चदालिकुर्वन्तिध्वंसयन्तिवना
 विनाः॥कृशाकृशवयविह्वीनःपुत्रजायमथादिताः॥६॥
 ॥अनूष्णानगिलकन्दस्यसन्मन्वृटविरुद्धिनाःक
 ण्यमाश्रवाद्यन्तःसधवालिङ्गमसिद्धिर्ग॥७॥अथा
 निलाकृलासावाःन्नाकृशयन्त्यालकाकृवीकादिगा
 नानुवेक्षयापामास्वेतादिनान्ग॥८॥यादिवाहा
 ष्ट्रवाःष्वेवपी०वेयादिवान्ग॥९॥दिहान्नाश्व
 नगवाः॥१०॥नानासाः॥यदीहिताः॥११॥स्ववाप्राउताः
 पी०स्यादीयारवायः॥नानिवः॥कृशयामयवस्येवः
 लक्षयित्वानिवाकृती॥१२॥पालकस्याकृवयणपद
 नवरादादिर्ग॥नउवन्नादिर्मनान्ननमध्वपी०संयू
 र्ग॥१३॥कवर्लुयदानेवसपी०रादादिर्ग॥यव
 र्ग॥१४॥धालिङ्गकृयाद्वर्गपद्विपद॥१५॥यवयवरा
 थायवयवान्यः॥कृलादिर्ग॥वलस्योम्यवउर्ध्व
 ष्ट्रीववर्कदिगादिर्ग॥१६॥पी०वृहपर्वमध्वदी
 यवृहव्यवस्थिर्ग॥यस्माकृवस्ययस्मन्गणक
 यन्ममवयव॥१७॥यथादोवनमध्वान्पी०ही

ननलस्यग।सयी ६नुगदाप्रार्थु लिङ्गमूर्त्ययद
कन ॥१॥ विहो नयवनकावस्यादिविकाट्टका
वकी।उ७।युवयुवदस्यास्यस्यया७७कावकी
॥१३॥ ययययादोवखवा।सुगगययपालकाः।
अधिमव्यावसानु।लक्षयत्यालकाकव॥००॥
रुनक्षयवलि॥ ॥वे७॥दीसर्वयी॥०॥ययी०॥नि
द्यायद्यावमवव।क्षयायक्षयसन्दाहाःसर्वदि
गगसंस्तिताः॥आगिनीयागवीबन्दाःसर्वगणस
मागताः॥००॥दंर्षमहावर्कसीना॥०॥यववदामम
॥२॥ यरुकाः॥०॥सनदवि॥उ७॥यादावर्नवताः।
सर्वसिद्धिप्रसादान्ददिविगर्वाहवत्स॥३॥वीना
०॥आगिनीनीव॥यद्विषकिमहीकलीगदहाय
वलिंदवि॥समयावावमलक॥४॥प्रतिस्मृतिसन
ःयुद्धिमीसमदास्तिजीवितं।निकनयनुदूखना
यागिनीगणसंकुलाः॥५॥कुदूकानिकुखयानिः
दुर्निमिहान्दूरावितान।निकनयनुदूखनाया
गिनीगणसंकुलाः॥६॥कुकावादिषययी०॥सुयः
तामाःयकीहिता॥०॥ययी०॥ययी०॥ययी०॥ययी०॥

दूनिमिहान्द्रुविमाननिहकनयनुदूदानीया
गिनीगणसकला॥७॥कुंकावादिप्रथमोणमुच्यः
साक्षाःप्रकीर्तिताउषधीधातुसंदाहादिगामुवि
दिसुव॥१॥महीयातालवृक्षाएवमवस्तुनानकवधू
व।योगिन्यायोगयक्षात्मासमयतिष्ठतुसाधका॥
८॥वीवकससुवीवदुःसयतिष्ठतुदवता॥सिद्धा
ध्यप्रणकावाय्याःसाधकाःकितिगायिनः॥९॥नग
वंवाथग्रामवाजुठव्याम्बानदववायीकृपेकठक
वा॥मगानमारुमधुल॥१०॥नानादुपधवान्पायिः
वठजाविविधानिय।तवसद्विस्नुकावलिगः
क्रुतुसर्वतः॥११॥गवलागतायादुनकासर्वमेत
हूलप्रदी।पानर्थयनायाकसायकविद्यामिय
रुतः॥१२॥वतियस्यप्रदाननसनुष्ठासमविन
का॥सर्वकमालिसिक्खुसर्वदावाः॥यगानुम॥
१३॥गवगकिप्रसादनपीककावाननसाम्यदं॥१४
॥००॥सिसमयवलि॥॥वेजयकनेवकापुरव
पुपिवद्विदसागिन्धुगिन्धुप्रवधा।नानकाकक
वक्यपुपिगितयतत्यदगापुनका।वदनिद्या

नवाकाकनकनगिनिता, तापुवातिठगम्हा, दवा
वर्कविकोर्, स्वयमितिदटवावन्दिताक्यनाय
॥१॥ **वि** ७ उर्द्धवकापुतावादिविगगलतलरुतल
निःकलवा, पातालवानलवागलिलयवनयाय
कचलितावाकचपी० यपी० दिष्वकतयदाय
यधूपादिकन, पीतादयाः सदानः पुरुवलिविधि
नायाशुवीनन्दवन्माः अलिपिसितवलियूजां टक्का
२ ममगा निष्कद्वरसर्वविधिप्रणमनाय ० सां वलि
टक्का २ खाहा ॥ ०० तिगा निवलि ॥ ॥ वैज वैज वैज वैज
द्वन्द्वयद्वन्द्वनाकसहसाय, वगालाकचयालका
जाकिन्मयतथासागा, धूतनाटकयूजनी ॥ १ ॥ पी०
जाकचजा ॥ वैव, गरुजा सहजाकथा ॥ योगजामरु
जा ॥ वैव, कलजा ॥ वि० प्रतः ॥ २ ॥ नानाभूषध्व
ध्वान्मा, यागिन्मावलवनकगानानादगनिवासिन्मा
अस्ति ॥ ३ ॥ सप्तया ॥ नयवान्मा, त
थाववलिकोदि ॥ ४ ॥ रुयीतजसवेदिक्कोर्नयधूषी
दिहल्लुवे ॥ ४ ॥ रुकाददलुभकामान, वादिताथ
यदलुभ ॥ ५ ॥ द्वन्द्वयद्वन्द्ववलिटक्का २ खाहा ॥ ०० तिडय

धाववालि कादि ॥ रुयात आसवे दिव्ये नेत्रपथ्य
 दिहल्लुवे ॥ ४॥ रुकादद लुभकामान् वीक्षितार्थ
 ददस्वम ॥ ५॥ २८८२ वलि ८८२ स्वाहा ॥ ६॥ तिडय
 वलावलि ॥ ॥ ७॥ निवारुगवती च व. माया रुडात
 येवव ॥ कि कि नी विमलाली व. यम जि द्वा लव कव
 ॥ ८॥ ९॥ दवी वी व माता कि कि पी का कि नी तथा
 ॥ सिद्धिलक्ष्मी सुयादय्यां वलि ८८२ लुग सदा ॥ सर्व
 विष्टि विना साय. सर्व ग. निवार ॥ सिद्धिलक्ष्मी
 तनिर्य. सर्व साय विष्टि वि ॥ १०॥ यया द ॥ मलायकः
 ॥ सिद्धिलक्ष्मी सावलि ८८२ २८२ २८८ स्वाहा ॥ ११॥ ति
 सिद्धिलक्ष्मी वलि ॥ १२॥ १३॥ एक वल्लुके १ का नूप पल
 विष्टलगत जालयी ॥ १४॥ जया स्व. षड्दि ॥ १५॥ मध्या ॥ १६॥ पि
 यथ गति यगाद विष्टल कार्व ॥ आचार्यः सिद्धि सद्य
 रुदनू कलियू ॥ १७॥ षष्ठ्या गिनिष्टु न्दे. यू का ह्य वका
 द्य ॥ १८॥ बलक सहजा. दव दवी न सा मि ॥ निवा ॥ म
 वलि ॥ १९॥ २०॥ वलाव ॥ २१॥ द वि यथा तथ्य जीव
 स्या ॥ २२॥ रुसा मया ॥ नागला कय व न म्म ॥ अस्मि न
 मलावलि ॥ २३॥ २४॥ तिष्ठत विद्या ॥ अविद्या वल्लदप्यि

दधिना। गाण्टदीनामहादवि, संसावकयनासिनी
॥००॥ यंविद्यामहादवि, प०मानाण्टहकिता। नंशा
वल्लितिविद्याना, सर्वसिद्धिप्रदायिका॥ ॥ ॥ जंया
रुदिव्यायानकक, दगदिगिनुवन, सकपागालसु
लं कृषंयी। पयी। ० विषमवउय। ५, मकैनेवा॥
॥ ॥ मन॥ सि। (मीतीवेककृक। उदविउरुतट, धुम
कावावगानं, कालयायूष्मगिष्यामधवयूवववः
अधियानयधानं॥ जालाखयागमुखकलपतिन
गय, कामयूयसुयूय, उडुन्यामटहासयदपटह
ववलाउदं। गयदं। ग। प्री। निलयाविजानं, यमुपति
निलयहमविन्याचलनयीभाकावाउदं। गमवग
पथगिबो, जाकिनीगाकिनीनां॥ का॥ मीववदुदं। ग
दविउमलयकवकवाहकूलूत, प्रीवाध्रहकण
काउवनिविनकक, सिद्धकृषंउहाव। ययूयायावि
जातहिमगिबिगिखवकाप्रिदं। गयया। ग। सीवायू।
मयूवदं। ग। रु। पुयववगवकागवकासूकवा॥ का॥
टकाक। ०। वा। मगधयवववकपूकडुकलि। नव
का। मरुं। सवाहहिमवकयटलयाटलं। जमवारवा।

म ध्रुवः (गुरु) पुत्र वन गवका गनका म्कवा ॥ काष्ण
ठका क (ग) वास गधय व व व क क क क कलि (म व
का म र्क स वा रु हि म व क य ट ल या ट ल ज म वा र्वा
अ (मो ह मा रु व क म नि ग ल नि ल य ज ह व व नु टा
(ग) वा सो य य य वा र्वा गि वि ग हि व पु ह वा क व सि
ह ना य ॥ व मा र्वा री म ना द वि प थ म नि य (० पु ह र
ल व मा (ने म् क न म् क माल म ल य गि वि पु ह व
ध्रुवः (ग) पुत्र वा ॥ रु डा (म मूल लु न य क ति य व ल
य सि ह क (म ग ग (क वि (ग) वि ध्या म म (य म व व
व ग य न ग क वा र्वा ल ल म् ॥ या गि न्या म पु ज वि
वि ध व ध न ता मा न व स्ता म् व लु य ॥ सि द्धा ॥ सु सि
द्वा ॥ वि ति ध व ध न ता दि य सि धि न्य द नु ॥ र व ड् म् वा म
लु सि धि य व व न वि गि त र व ग ति वा व न ता ग गुरु
म वि द्यु णं व लि य लि त ज य म् क न न स व वि ध्या ॥ यी
या य य क वि न्नि नि वि व म गु टि का या दू का का म सि
धि स व न्नि न्ना द द नु लु लि वि गि त व ता र व व ला
न व का ॥ य दू (ग) वा वि मा वि य द ग ल ग व ल वि द्य
न्या म न (ग) वा ना ज द्वा व ज लो य वि द्य ट य लु रु य

आयिगवममम॥ चैं चैं हं कावयनी हह हह हह
सिरे श्वयनी पिवनी नखनी मनु माता किलिः
किलिग किलिः को वरा धात्रि वनी साधु का काम
पाय बल वयत हा हा हं कावनादा उडि का नील
कल मम व सुदयया विन्दु मृद्वि प्रगसा ॥ हं हं हं
कावयनी वने नू धि वरा खा यमाना सवावा जि का
यं लालयनी लललललललला दावयनी पिवनी
। कल का माता दूनी मम व उल नता विन्दु नादान
लीना गक न सिद्धि दा मा पव मय द गता वहि ता व
मम मा ॥ पाग काला कयाली ग मय म नय ना यार्थि
वै नानयका प्रलल विन्दु यका कल कम ललला
ना विपी क उलारवा ॥ विखा ता न डग किः सवदि गउ
गिर्व सी वली रुदकाली का की कू का म नू या अ कल
कल गता द विपी रुदयनी सा मयी कडि कारवा वि
तय उय य मी वा म द व र मा र्य वा मू उ को ल मा (ने
कल क म म म य को लिनी का कलारवा ॥ आख्या ता वा
म मा (ने प्र कटि त निल या मा लिनी विन्दु द हा उं का
व म उल वा अ कल कल मया या गिव क प्र वि दू ॥

कलकमसमयकोलिनीकोकलाखा॥ आख्यातावा
ममा(ने)प्रकटितनिलयामालिनीविन्ददहाउंका
वसधुलवाअकलकलमयायागिवकप्रविष्ठा॥
धीना(धा)लमगमाप्रववमूनिग(ए)वविताहीममू
लिःसादवीलाकमातागिवमकलमूखायाउधीना
धवक।पीकलायश्चमानावहुयगसहितामय
लि(अ)न्विकारवापी०सुषुनयनीवकवविगक।
लाकोलमा(ने)दिताहा॥ नानापीकडिकारवापिय
धगतिग्रमायकनापियकावा। नानवीनोमिरुकी
प्रकटितनिलयापंवकायनलिना। कालीकका
लनूपाकलितनननवाहीषलीरुअयनी। साम
पीकडिकामाप्रकटयउमहाकानदिद्योयमा
र्य॥ जांतेजांतेजांतेजांतेजांतेजांतेजांते॥ सद्धि
दहिमिद्धिदहिहानंदहिआय दहिधनंदहि
धान्यदहि० मांमहावलिंठक२अमृतावद्यसा
हा॥ १०७५ वाविद्यामहाविद्या। शिषूलाकप्रदन्त
रा। यत्प्रतिष्ठमखदद्या। समूकानाशर्गय॥
रुतवनालयका॥ १०७५ उक्तकावकवाकसा॥ वि

आत्मबलमात्रेण यत्किंचिदपि ॥ १४ ॥ अत्राय
कंचिद्वदन् वदन् वदन् वदन् वदन् ॥ आत्मबलमात्रेण
द्विजिवत्प्राथम्येण यत्किंचिदपि ॥ १५ ॥ अत्राय
महापर्वेषु यत्किंचिदपि ॥ १६ ॥ अत्राय
माधवकेशसु यत्किंचिदपि ॥ १७ ॥ अत्राय
यत्किंचिदपि ॥ १८ ॥ अत्राय
वदन् वदन् वदन् वदन् वदन् ॥ १९ ॥ अत्राय
॥ २० ॥ अत्राय
॥ २१ ॥ अत्राय
॥ २२ ॥ अत्राय
॥ २३ ॥ अत्राय
॥ २४ ॥ अत्राय
॥ २५ ॥ अत्राय
॥ २६ ॥ अत्राय
॥ २७ ॥ अत्राय
॥ २८ ॥ अत्राय
॥ २९ ॥ अत्राय
॥ ३० ॥ अत्राय

ह्व॥ ॥ वायव्यदल॥ ॐ कं एकपि न वायव्यनमः स्वा
हा॥ ॐ कं (पुनः) विगलायनमः स्वाहा॥ ॐ कं कृष्णः
पि न लायनमः स्वाहा॥ ॐ कं मधु विगलायनमः
स्वाहा॥ ४॥ नयनमः स्वाहा॥ ॥ पश्चिमदल॥ ॐ कं श्रु
नकायनमः स्वाहा॥ ॐ कं आदायनमः स्वाहा॥ ॐ
कं सुस्कायनमः स्वाहा॥ ॐ कं अवयवागलायनमः
स्वाहा॥ ४॥ नैमल्यदल॥ ॐ कं कनालायनमः स्वा
हा॥ ॐ कं विकनालायनमः स्वाहा॥ २॥ मायातलः
॥ ॥ दक्षिणदल॥ ॐ कं सहस्रगीर्वायनमः स्वा
हा॥ ॐ कं सहस्रवक्रायनमः स्वाहा॥ ॐ कं सहस्र
कनकवक्रायनमः स्वाहा॥ ॐ कं सहस्रलिकामन
मः स्वाहा॥ विशातल॥ ॥ आनयदल॥ ॐ कं ए
कजठायनमः स्वाहा॥ ॐ कं द्विजठायनमः स्वाः
हा॥ ॐ कं त्रिजठायनमः स्वाहा॥ ॐ कं स्वाहाका
लायनमः स्वाहा॥ ॐ कं खधाकालायनमः स्वाहा॥
॥ ॐ कं वषट्कावायनमः स्वाहा॥ ॐ कं वनतल॥
॥ पूर्वदल॥ ॐ कं रुतयतयनमः स्वाहा॥ ॐ
कं मलारुतयतयनमः स्वाहा॥ ॐ कं पञ्चयतय

नमः स्वाहा॥ ॐ ईं उमाय नमः स्वाहा॥ ॐ ईं
सर्वप्रथम नमः स्वाहा॥ ॐ ईं कायाविप्र नमः
स्वाहा॥ गिव नमः॥ ॥ मध्यम॥ ॐ ईं उमायैक
रूपधालिन नमः स्वाहा॥ मध्यमहायक॥ ॥ ॐ
ईं नृदण्डनिष्ठवत्सा, वसावासाविनागनी, नवासा
मध्यमहायक, दवाय ननवमस॥ यथानयनरुस
रुगिः कलहानिष्ठजायता, यथयाथाविनस्यः
नि, रुवनिवनप्रमका॥ मावीवात्ययनेयन, म
नर्तव्यगृह्यका, गवृपतत्यकालन, नृपवाय
जजायता॥ दूर्ध्वकलेवपीश्वर, वायु, न्यास
दानु, लेगला, यथविद्वत्, जातव, अयनक
॥ पिनामास्त्रवाचैव, कन्दलायहर्तगृह॥ यथः
निचकपिस्त्र, वीजं, क्षुल्लवाहति, गवाधय
गव, धैव, दासाकर्मकबासुथ॥ गृहहितावि
वृक्षक, तथगान्निष्ठयाजयता, दूपावागजवय
ज, पृष्ठवर्ग, अरि यता॥ गाववानाहता, धैव, अव
निबूविर्नवका, दवता, धैव, वृद्धा, न्यनिकिच
वसनिच॥ अकालयुष्टितावृद्धा, रुलितग्याः

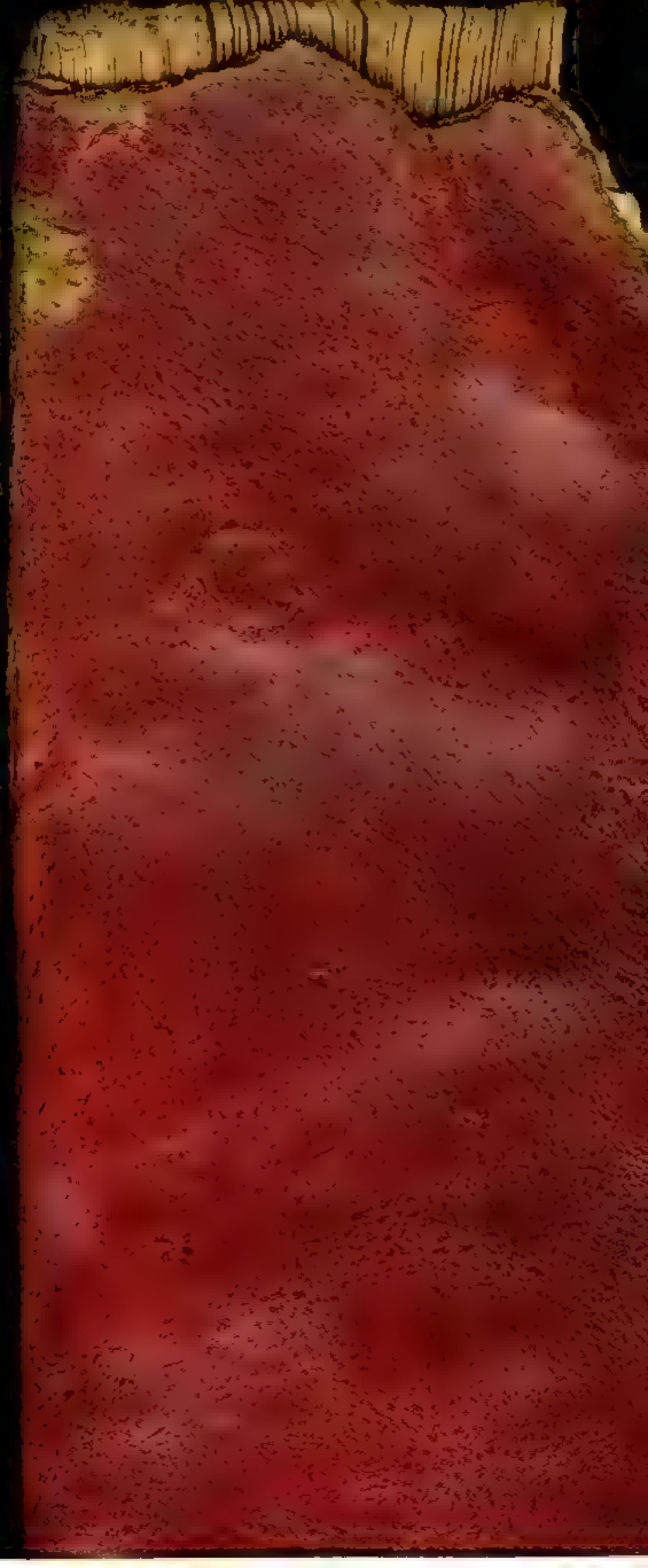
उ. पु. छ. व. ङ. ष. रि. श. त. ॥ गा. न. वा. ना. ह. ता. (ये. व. अ. व.
नि. वृ. वि. न. व. क्ता. द. व. ता. (ये. व. वृ. क्ता. ष. न. ह. य. नि. व.
व. स. नि. व. ॥ अ. का. ल. य. वि. ता. वृ. क्ता. ॥ इ. लि. ता. ष. ॥
य. न. क. स. ॥ उ. ल्का. या. ता. ष. जा. य. न. क. रु. मि. क. ल्का. ष.
दा. वृ. ङ. ॥ नि. मि. ल्के. व. पु. रु. व. रि. व. ले. ष. वि. स. दा. वृ.
(ले. ॥ य. का. य. य. य. ता. रु. त्वा. त. ष. ङ. नि. व. य. अ. य.
न. ॥ वृ. ङ. नि. स. म. ल्का. क. दा. व. क्ता. मि. ग. ल्का. ॥
॥ ॐ. ॐ. ॐ. क. न. २. व. लि. नि. २. वृ. डा. नि. व. ता. ना. द.
व. द. व. वि. ङ. ख. ह. न. ह. न. ॥ द. ह. द. ह. य. व. २. म. थ. २.
उ. वृ. २. म. वृ. २. वृ. ङ. नि. स. न. स. म. वृ. क्ता. वि. न. ल.
अ. का. व. पि. सा. वा. वि. य. त. य. वि. (ये. ष. वा. य. न. म. ॥ स्वा.
हा. ॥ ॐ. ॐ. ॐ. म. वा. वि. न. वा. म. वृ. या. य. स. वृ. वा. वि.
न. नि. वा. य. अ. ना. था. य. अ. ना. पि. ना. य. अ. वा. य. अ. न.
का. य. नि. व. त. त्वा. य. न. म. ॥ स्वा. हा. ॥ ॐ. नि. स. (वा. ॥
पू. वृ. द. ल. ॥ ॐ. ॐ. ॐ. वा. य. न. म. ॥ स्वा. हा. ॥ ॐ. ॐ. ॐ.
म. थ. ॥ य. स. लि. ना. य. न. म. ॥ स्वा. हा. ॥ ॐ. ॐ. नि. र्थ. या.
नि. न. न. म. ॥ स्वा. हा. ॥ ॐ. ॐ. वा. ना. हा. वा. य. न. म. ॥ स्वा.
हा. ॥ ॐ. ॐ. ॐ. न. म. ॥ नि. वा. य. न. म. ॥ स्वा. हा. ॥ ॐ. स. वृ.

परुवन् ॥ नमः शिवाय नमः स्वाहा ॥ ॐ शं गायत्र्य नमः
वक्राय नमः स्वाहा ॥ ॐ शं गायत्र्य नमः स्वाहा ॥ ॐ
शं महाशिव तत्त्वाय नमः स्वाहा ॥ ॥ अग्निदत्त ॥
ॐ शं अथाप दद्याय नमः स्वाहा ॥ ॐ शं वामदे
वप्रहाय नमः स्वाहा ॥ ॐ शं सद्योजात मूर्धन्य नमः
स्वाहा ॥ ॐ शं नमानमः ॥ ॐ शं पुष्पाक्षि पुष्पाय नमः
स्वाहा ॥ ॐ शं गायत्र्य नमः स्वाहा ॥ ॐ शं अग्निधना
य नमः स्वाहा ॥ ॐ शं सर्वथागि विरुताय नमः स्वा
हा ॥ ॐ शं अतिशूपाय नमः स्वाहा ॥ ॐ शं शिवा न
माय नमः स्वाहा ॥ ॐ शं ॐ श्वय तत्त्वाय नमः स्वाहा
॥ ॥ दक्षिणदत्त ॥ ॐ शं पद्मसंश्रयत्रयाय नमः
स्वाहा ॥ ॐ शं अथ तनावतन व्यामिन व्यापिन न
मः ॥ ॐ शं अनूपिन यमथ नमः ॥ ॐ शं कर्कश अतिन
मः विद्या तत्त्वाय नमः ॥ ॐ शं एकनशाय नमः स्वा
हा ॥ ॥ नैमल्यदत्त ॥ ॐ शं अक्षय अनग्नि अक्षु
मक्षरस अनादन नाना ॐ शं ॐ श्वय नमः
स्वाहा ॥ ॐ शं एकवक्षाय नमः ॥ ॐ शं माया तत्त्वाय
नमः स्वाहा ॥ ॥ पश्चिमदत्त ॥ ॐ ॐ ॐ स्वअग्निध

[illegible]







1874-1875

2244 I



वानस्य यावत् ॥ पञ्चाङ्गनकनकसाक्षा, दिव्यायुगे
विषयः ॥ अगल्ययनिमिहाको दगाङ्गान्यादिकः
सामान्यवनिष्ठक, मानीयावन्त्यवहयत् ॥ ॥
किनिष्ठकथाकर्म, वस्याद्याटनमाजी (८) नयदा
लीयकालसाङ्गानिकनानिष्ठक ॥ ॥ धनमूदम
नि ॥ ॥ नगाविष्णुगानिकवलि ॥ ॥ नमस्कारगवतवा
सूदवायनमाइनकाय, सहस्रगीमयि, कवादाः
ध्वजगयिन (गधरागययकाय, गवत्तवाहनाय
अजाय, अजाय, अजिताय, अयवाजिताय अमि
ताय, धीमवास्तसवास्तूदव, गंकर्षणप्रयन्नामा
निष्ठागिवावनाहनवसिंहवामनचितिक्रमवा
मवामनामववयुधनमाइनसाराहा ॥ ॥ अमृत
देववानवयकवाकसहस्रपमपिगावकवापु
सिद्धिगानिनीजकिनीकन्यययागान्नयहनकथ
यहाङ्गान्मानहन २ यव २ मय २ विधि २ मय २ विद्याव
य २ गीरवनवेलावलापुलनगदयामुखननह
ननहसीकव २ सहस्रवाहासहस्रयहनलायमि
जय २ विजय २ अजित अमित, अयवाजित अय

सिद्धि शानिनी जाकिनी लब्ध प्रयाग नृप हन कृप
ग्रहाभ्यान्मान हन २ प्रव २ मध २ विध २ मय २ विधाव
य २ शीखन वेला वला पलन गदया मुख नन ह
लन ह सीक व २ सह प्रवाहा सह प्रप्र हन पायुषि
जय २ विजय २ अजित अमित अयवाजित अय
तिरुत सह प्रनया दालन न दाल २ प्रदाल २ विध
द्वय वद्वय प्रव न ह मध सुदन महाव वाहा अतम
हाय न व व कल नाना य पय दाना रु (गा) विन्द दाम
दव दक्षी क ग व स स स क द न सर्व रुत व ग क
व सर्व ग रु प्रम द न सर्व य रु प्र रु न सर्व वा
ग प्रम द न सर्व द व म ह प्र न सर्व व द विमो द ह
प सर्व हि न प्रम द न सर्व द ल विना ग न सर्व य रु
विमो व प सर्व पा य प्रम द न सर्व द र विना ग न
जना द न न म २ सुत स्वाहा न म स स न ध अरु
य अजित अमित अयव अयवाजित य ० तिसिद्ध
सम तिसिद्ध य जान (रु) म ध व अरु न्वति सा वि
शी ग र पि जा ग व ग म मान सा क सब कति य व नि
भाव लि सो दानि नि अदित विन ग (गो) वी ग न्व वि ना
सिद्धि क य (ग) द ग य वा दिनी व क वा दिनी व क
वा दिनी काली का प्रालिनी क वाल न्व स व य यो

[illegible]

मन्त्रियुक्तिस्त्रिभिर्विद्वन्निष्कामोक्तः। काम
द्वयं सर्वकामवद्वयं सर्वरुतं धृतीधिर्युक्तं
श्वाहा॥ **ॐ** आकलिप्रवसनिष्कालामालिनी। सु
प्रसिद्धा नृपतिनी। नापिनी मया मदिनी। **ॐ**
प्रणी सन्नाहनि महानीलनीलयनाक महानी
वी महानीवी महप्रिय महानय महवादी म
हानीदी महामायवी आदिप्रवणिजाकविद्यमे
यः॥ किलि२ विन्कामलि सुवा सुवात्यनसर्वका
मद्वययथा मनिविर्गकार्यं नमसिधुस्वाहा
॥ **ॐ** रुः स्वाहा **ॐ** रुः स्वाहा **ॐ** रुः स्वाहा॥ **ॐ** रुः
रुः स्वाहा॥ **ॐ** यनवागनीपापं नृवयति
गुरुस्वाहा॥ **ॐ** वलस्वाहा **ॐ** अवलस्वाहा॥ यस्या
१ प्रलीमनयूयं गुरुवाय नमयदि। प्रियतवाल
कायस्याः काकवन्ध्यावयारुवत॥ रुययुक्त
मीविद्या लिखित्वावावययदि। नृदेष्टोन्नलिख
त। पुरुगं प्रिनीरुवत॥ व। वाजकृतशूत नि
र्युक्तयारुवत॥ **ॐ** रुववावययवा समवका
वालि॥ पुनमृलादिवागनी। दिष्टनामवतय

ॐ गिनागदवापा ॥ नमो नमो सर्वदेहिना ॥ ॐ
सिद्धिस्तु ॥ ॥ नमो वापुषतवलि ॥ ॥ यनास
नायनमः ॥ ॐ नमो रगवतपापुपनाय ॥ ॐ
लवलवीथ ॥ यनासमायविप्यवनयनायना
नामूयनानायरुवपायनायसर्वसिवकायति
नीउदयसर्वविद्यनिष्ठननाहायसर्वसिद्धि
पदाय ॥ रुका ननु कपिनाय ॥ असखवकु ॥ उज
पादाय ॥ परिमसिद्धाय ॥ साकिनीका ॥ रुनकायया
विनिग्रहकाबलायायरुकाय ॥ सामसूयानि न
गाय ॥ विष्णव ॥ चक्रहसाय ॥ ॐ नुवडाहसाय ॥ यम
दलाय ॥ वनूपायागाय ॥ नुदशि ॥ लोय ॥ दानन ॥ जि
कायसर्वभागविद्यावनाय ॥ ग्रहनिग्रहनिकावि ॥
दरुनागदयकावि ॥ ॐ रुकादिगलायरुट ॥ ॐ
कुमायरुट ॥ ॐ वडाहसायरुट ॥ ॐ ॐ नुदायरुट ॥
ॐ गिरासाय ॥ रुट ॥ ॐ कववासाय ॥ रुट ॥ ॐ नवाय
रुट ॥ ॐ महासायेरुट ॥ ॐ गववासाय ॥ रुट ॥ ॐ द
ववासाय ॥ रुट ॥ ॐ वादेसासाय ॥ रुट ॥ ॐ दानवाः
साय ॥ रुट ॥ ॐ रुकासाय ॥ रुट ॥ ॐ रुकासाय ॥ रुट ॥

रुट्. तुं महासाय रुट् तुं गन्धसाय रुट् तुं य
ब्रह्मासाय रुट् तुं ब्रह्मेसाय रुट् तुं दानवाः
साय रुट् तुं येकासाय रुट् तुं हस्त्रसाय रुट् तुं
क्षः नमसिहासाय रुट् तुं वोनासाय रुट् तुं सेना
साय रुट्. तुं यः रुट् तुं लरुट् तुं यरुट् तुं मरु
रुट् तुं गीरुट् तुं धारुट् तुं धीरुट् तुं रुः रुट् तुं रु
वरुट्. तुं स्वरुट् तुं मरुट् तुं जनरुट् तुं नय
रुट्. तुं सखीरुट् तुं सर्वमासाय रुट् तुं सर्वसत्त्व
धारीरुट् तुं मनोदिरुट् तुं सर्वकालेन रुट् तुं
क्षीरुट् तुं दूरुट् तुं क्षीरुट्. तुं लरुट् तुं रुनेवा
साय रुट् तुं मायासाय रुट्. तुं कामासाय रुट्
तुं कायासाय रुट् तुं क्षयासाय रुट् तुं कुवासा
यरुट्. तुं राक्षसाय रुट्. तुं वन्द्यासाय रुट्. तुं
विश्वेषेसाय रुट् तुं रवीरुट् तुं क्षीरुट् तुं
जामय २ रुट् तुं मनोयसय २ रुट्. तुं दूदय २ रु
ट् तुं दन्तलयरुट्. ॥ नित्यायुषमवलिः ॥
शिया ॥ वंज (धुं) यस्मिन् दीपदम्बकी दवीम
हाधीनक्षयया लायया दकी ॥ घट्टन ॥ वलि ॥

निर्वानकाय॥ स्वाकमहावलिः॥ ॐ क्रीं क्रीं क्रीं
१ कृष्णालायवलिं गृह्ण २ स्वाहा॥ ॐ क्रीं क्रीं क्रीं
३ वट्टकनाथायवलिं गृह्ण २ स्वाहा॥ ॐ गं गं गं
४ ग्लोकलगलेनायवलिं गृह्ण २ स्वाहा॥ ॐ क्रीं
५ कनवीवभगानाधियतयवलिं गृह्ण २ स्वाहा॥
६ क्रीं निधिवामूलेनायवलिं गृह्ण २ स्वाहा॥ ॐ
७ क्रीं गवाविंसीसवर्गस्यावलिं गृह्ण २ स्वाहा॥ स
र्वस्याहं सत्यः पिता वल्यः सर्वस्याहं वदवताया
वलिं गृह्ण २ स्वाहा॥ ॐ तिस्राकमहावलिः॥ ॐ
हनादि॥ या निमूडा॥ ॥ धूप॥ दिव्यगन्धसमायु
क्तं सर्वदेवायि यावह॥ आधानं सर्वदेवानां धू
पायं यतिगृह्णी॥ धूपाहावपूरुगवान् विष्णु
यीमहेश्वरि॥ धूपनान्नयदयसि सखा नोयवम
श्वरि॥ ॥ धूप॥ सयकाणा महागर्जं सर्वतस्मि
न्निवापहं॥ गवाकस्य नन्दयानि दीपायं यतिगृह्णी
ता॥ अतिदयसि॥ ॥ नेवय॥ अन्नं महावसदि
व्यं अणाय सर्वसन्निता॥ मयानि वदितं रुक्मा गृह्णी
तायवमश्वनी॥ नेवयं गृह्णीतां देवी रुक्मि मश्व

[illegible]

मधुलाकारं व्याकथयन् वलाचनं । तस्य दंदलि
नयनं तस्मै श्रीगुरुव नमः ॥ ॥ श्रीमहाशैवता
य ॥ श्रीदय्युवाच ॥ श्रीसत्वरुममलुलानककमय
दनिहिगानन्दः किं सुरासा सुखन्यायवतुस्त
अकलकलगनं पंचकवान्यवद्वं । चत्वार्यव
कान्यं पुनरपि वतुर्वं प्राउगाहावि (गया) दया
स्त्रीमूर्तिम (ध) रुमखरुलकलाविन्दूष्याक्रम
द्य ॥ वृद्धक्रीमानवाली पत्रमणिवकलाचकद
वीक्रमान्या श्रीनार्थं वन्द्यपूर्या नवनवकलिनी
यमरुदगुमानं । शिखरं सिद्धावतानं पथमक
लिय (ग) काकनखाधिकारं तेषां वैयुगणिषा
नवपूत्रममरु तेषाम (ध) दिव्ये ॥ सनान (ग)
वपिष्ठं कलकमसकली प्राउगाहाकामान्क आ
द्योदममलुलाद्ये पवित्रिमरुमली पूषसकावः
वृन्दं । आदावस्तुदगानं कलकमसकली म
लुलस्तनयवृत्तं सीस्कानं शिष्यमरुत्युजनरुय
कद्विन्दुसिद्धिनिवा (गो) ॥ म (ध) विद्यामरुमिप्ररु
वमनरुयं प्रत्ययं स्वाधिनं सीसुखं यनतस्मै न

ॐ लल्लनयुर्व सैस्कात्रिष्यमस्तु न्यधुजनरुय
 कृद्विन्दुसिद्धिगिवाग्ने॥ मध्वविधामस्तुसिधु
 वमनरुयप्रत्ययस्वाधिन सैसुष्टयनगस्तेन
 मगउन्नवर्नरेववधीकृजगं॥ ॥ यथासागकि
 र्गमरवा विषयगतिरुगा विद्वन्ना विप्रकावाज
 गस्यापीडाधियान पत्रकनसहिर्गमध्वसैस्स
 दीर्घ॥ ॐ गङ्गाजीवधनारवायकटितनिलयद
 द्विदेवकाष्ठापीवाभग्रापूर्णापी० यधुजनरुय
 कृत्यविर्गयनविष्य॥ ॐ नस्यायकासद्वय मद
 नकलियगं सर्वसिद्धा लयैव ॐ शिकापानकस
 मस्तु पत्रमगिदकलालं कर्गयागवृन्द॥ ॐ गन
 ध्वदिवालिङ्ग पत्रमस्तुखकन विन्दुनूपैखनूपै
 ॐ निग्यानन्दस्वनूपै गदूपनियत्रमं पद्यकाः
 नद्विहिन्ना लुविद्यारागापगम्य मन्नरुयविमल
 विषयी० लल्लाट जेचर्वयार्कसमस्तैस्सिलयज
 ननी नूदगकिमिरुदा॥ जेनगस्तुदवदवी अ
 कलकलसया नन्दध्वसिस्वननू ॐ सवर्गः
 विन्दुस्तुपधुजनरुवपीसिद्धिदिव्योद्यनूपा

कौनियकिनासका रुगमूदिनयदा नन्ददा सि
यसिद्धा ~~क~~ कर्वकिनलकामान्द्रुहिगववतः
नृपीकजान्नमामि ॥ ~~उ~~ सक्तानेभनूमा (नेला
अन्वयंगुदवता निर्ममः प्रीति ~~उ~~ काव सिद्धा
नययका रिता ॥ ~~र~~ क्क रुगी उहावासी वृद्ध (वे
वकदम्वकः ~~स~~ र्वनल्यवितंथाकं अन्वावउ
रुवासिनी ~~र~~ रुवन्दुर्वथाकं रुदामक्तानले
वर्व ॥ गणमलिकादवी वाममा (नेष्टकल्ययत
॥ अन्वयं प्रत्ययं ~~अ~~ न सविकावयका क (ने
ऊन्मवदगिलाकन स्थितिपीकामद्रूपक ॥ का
रिन्निक्किनिवृक्कउ सिद्धि (वेवउसागव ~~उ~~ क्काहं
नस्यदवनि याजानागिकलक्रम ॥ ~~प्रा~~ उभा ~~अ~~ न
रुदन न्यासकूटंक्रममथा ~~पू~~ जिनीसिद्धिगुरुदः
पुनिक्कायनिवदयत ॥ ॥ नमानुगमहामाय
सूक्ष्मदहयवायव ~~पे~~ काकिनिविपुधान्ननादा
रवाविन्दमालिनी ॥ अदहायसमत्यन ~~अ~~ वयवि
धधानिणी ॥ महाकपुलनीनित्य हंसम (धव्यव
स्तिता ॥ सामसूर्योनिमयस्क ~~आ~~ मव्याविपवाय

स्वविन्दमालिनी॥ अदहायसमस्त्यन्त्रे अत्रवि
ध्वानिणी॥ महाकुलनीनिर्यहंसम(ध्व)व
स्तिता॥ सामसूर्योनिमध्वस्तु, व्यामव्याविद्यवाय
न। **उं**कात्रविग्रहावरु, रुकात्राद्वध्वानिणी॥ व
लायगामध्वस्तु, अनन्तवाक्यावयय। रुकात्राः
द्वकलाध्वन, यद्यकिंजल्कमाप्रिग॥ सकलास्वम
हामाय, वनदलाकपूजिता। **य**कैकनादिसध्वस्तु
सम्मसकैकरुदिनि॥ **अ**कुरुसत्कलादवी शदि
नीवकनबंध(गा)विध्वस्तुगानिरादवि, रुजंगकृति
लाकृति॥ वक्याविष्कृष्यबोदुष्य, वीध्वनयसदाः
निवध्वनयचमहायता, यादमूलव्यवस्तिता॥
गलाकृजनीदवि, नमस्तुगकि, नृपिणी॥ **व**ं
पिस्तलमध्वस्तु, मृणालगलुनृपिणी॥ विन्दम(ध्व)
गमादवी, कृटिलावाद्धवन्दिता। **उ**मानकनिका
रास, द्वादशाकावलम्बिनी॥ **उ**माद्धद्वम(गी)नी
द्वादशादित्यवर्चसं। **ग**ून्मगून्मानकनावस्तु, हंस
स्वयापध्वानिणी॥ लीवास्वयनसादवि, दन्दि(ग)
रुद्रगामिनी॥ नासायवसमस्तु(ग), म(ध्व)स्तुय

वाहिनी॥ दन्त्रखपत्रमानन्द, गालमूर्द्धिद्यवसि
न॥ नादद्यष्टिकसद्युष्टु, उल्लुङ्गकसमन्वित॥ सु
लसूक्ष्मत्वसंयुक्त, धर्माधर्मयुतद्वयाकार्यको
नलकलत्वं, शिष्टन्यनादविग्रह॥ यवायनयव
पुष्ट, वेगन्यगणवत्प्रवृत्तिः सर्ववर्णधनीदवीउ
श्रुतत्वसि विग्रह॥ गकि मूलमहायूह, विन्दुवी
जसमन्वित॥ अगनीनमहालाग, सीसावाल्क्य
गानिणी॥ जयावविजयावेव, जयनीयायवाः
जिगा॥ उर्व्वुवीजमयस्क, नमस्कपाप्रमाचनी
॥ वन्धमास्ककवीदवी, प्राङ्गनाकायवसिक्त॥ उ
मनीगकि गूलन, महायूहसमन्वित॥ उमणी
शामनीगो, मायायुष्यवाहिनी॥ स्वच्छन्दरुद्र
वीदवी, काष्ठदन्तरुद्रवी॥ यैवसवर्णवृषस्क
स्वयानूडाप्रकीर्तिता॥ अमृताखनूयुष्टु, न
मस्कज्ञानरुद्रवी॥ दक्षत्कटविद्युक्तिक्ष, गानका
कीरुयानन॥ नमामिदवदवनि, अथावद्याववि
क्रम॥ क्षालामूर्खीवगवती, उमादवीनमासुत॥
यागिणीवष्टयादवी, गोनीलम्बीसवस्वती॥ हंस

क्षीरयानम। नमामिदददवनि। अद्यावद्याव
क्रम॥ कालासूरीवगवनी। उमादवीनमामुता॥
यागिणीवष्टयादवी। (नेत्रीलक्ष्मीसबस्यनी। हंस
स्वनाद्वेकदवि। (गामूरीगकिमालिनी॥ कायका
गुरुगदवी। दूगकायायणीतथा। निर्याकिना
समाखाता। नकायकादवायमा॥ वाक्कीमाद्व
नीवेव। कोमानिवेकदीतथा। वावाहीवेवमाद्व
वाम। अर्चयानना॥ यागणीर्लहिदवनि। कला
कविस्त्रिणा। अष्टाष्टकधनीदवी। लक्ष्मीर्लवः
कनूपिणी॥ चन्दीवेवकुआ। नया। याम्यानेमय
वावणी॥ वाम्यावेवकोवनी। वीणा। एवउदाद
ता॥ ययागावनीकांक्षा। अष्टहासाजयनिक
। चविणकाप्रकवेव। दवीकाटं तथा। अमं॥ तथा
कालाउमादवी। दवदूनीनमामुता॥ रुडाकाली
महामाय। वर्मसू। अरुयावह॥ महासूक्ष्ममहा
सान्। नमस्तुगकिनूपिणी॥ रुर्लवस्वतिस्वाहान
दयानार्थकनूद्यम॥ नानार्थिकामहामाय। एत
द्विष्ठासिवदिष्टं। यस्मिदपथनस्तु। विस्वयं

[illegible]

स्तु॥ ॥ॐ स्वाहा नीलिमासाप्रवववनमिमासा
ष्टया ममलाखा सागोनी सावदूर्गगवतिष्ठ
रुद्रा माहकाष्टममपु। सावकासावविष्णु
हगलसकलारुद्रवीक्षयाला सावकानकेन्द्र
याविविधगुद्रयायागिनित्वीनमाप्ति॥ ॥ॐ न
मध्यप्रकाशे॥ वकापीवकासाविशीवकागत्व
निवदिनी। वरुर्जुजं वरुर्वर्क वरुर्वदयमाय
पी॥ वरुर्जुजविलम्बापि वरुर्गयमायपी। हं
सयूकविमानम्हा सीमन्तुयीपिनामही॥ यक्षक
जायमालाश्च वरुदाकययानयी। पीनयूष्यन
नीदवी पीनामीपीनवाससा॥ पीनायहावसेतु
ष्टा पीनगभानूलपि। उदम्बनमलावस्तु प्रयाग
क्षत्रवासिनी॥ यूर्वपी० स्त्रिगानिर्णयकागकिः
नमास्तुत॥ ॥ माहृष्टवीमहादवी माहृमायानि
वञ्जनी॥ महाठहृरुमावृटा महादूकाननादिनी
॥ हंसवकुनिरुदहं कपालगणिगयवि। शिला
वनशिष्टलीव अक्षस्तुष्टकमपुर्ल॥ हाजालका
वसवामी यक्षि। एनववयदा। हृदिस्त्रिनिविना

गानां सर्वव्यापि सूत्रं ध्वनी ॥ (ध्वनयव्यवर्गादवी
(ध्वनाम्नी (ध्वनवा ससा (ध्वनवसुयवीधाना मूक
रुद्रलध्वनिणी ॥ वा नालस्यी महाक्षय ताल व
दनिवासिनी ॥ आग्नेयाश्च स्त्रिगायी ० माह ध्व
विनभा सुत ॥ ॥ वालराव महावाडी कोमावी
वकलावनी ॥ वकवसुयवीधाना सिन्दुवानः
लविग्रहात ॥ वहुर्जुजाकि सुर्ण सिद्धियाण
ध्वनं गुरी कोमार्न यवमैकि मयूत्रवववाहि
नी ॥ वकपूव्यवर्गादवी वकमी सावसासिनी ॥
कालापूर्या महाक्षय वटवृद्धनिवासिनी ॥ य
सयी ० स्त्रिगानिर्य कोमावी वनभा सुत ॥ ॥ वे
कवी विष्णुमायाश्च देवदूतननासिनी ॥ रुनीः
गयामवर्णाङ्गी गनूजायनि सैस्त्रिता ॥ ० र्ववः
कगदाहस्त वहुवद्वि विरुषिना ॥ वल्लवाला
महाजीजा नानावल्न विरुषिना ॥ रुनी पूव्यवर्ग
ध्वनं सदाहविनधाविणी ॥ स्वर्गमर्थश्च याताल
स्त्रिनिवृथलसैस्त्रिता ॥ अट्टहासमहाक्षय क
दम्वट्टववासिनी ॥ निष्ठनियी ० नेअथ नावाय

ॐ स्वस्ति सदा हावतवावली ॥ स्वस्ति सदा हावतवावली ॥
स्तिनिवृत्तपलसस्तिता ॥ अट्टहासमहादक्ष, क
दम्बट्टकवासिनी ॥ तिष्ठति यी ० ने जय, नानाय
लिनमासुत ॥ ॥ वावाहीद्याननकाजी, नकक
गीमहादक्षी ॥ दक्षकवालगम्भीरा, वालाकगजः
लायनी ॥ कपालमालिकामाला, विविगयूय ॥
रिता ॥ महामहिषमानुष, कलिगानिसमूयर्ग
॥ मीनीकृष्णकरिकाया, हाजकवलरुषिता ॥ वि
नर्तकलिगंदर्द, दक्षदय्यविनागिनी ॥ ऊयन्की
क्षमस्वन, निम्बट्टकसमावृता ॥ नागयी ॥ स्ति
गानिर्य, कालवृषिनमासुत ॥ ॥ गच्छवनीसह
यादी, कृष्णमानुषविग्रहा ॥ सुवस्वनीसददवीस
वर्लकावरुषिता ॥ वधुर्जुजाविगालादी, कृष्ण
द्यष्टविधविणी ॥ महावदधनीदवी, स्तिस्तिज
वावतागजा ॥ नानायूयवर्गादवी, नानावत्तविरु
षिता ॥ नानागम्भविप्रिकाजी, नानावसुविवाजिन
॥ वनिश्वमहादक्ष, कट्टम्वट्टकवासिनी ॥ वाय
यी ॥ स्तिगानिर्य, गच्छवनिनमासुत ॥ ॥

वाम्पुत्रवतीकावती, वपुत्रवतीसुधाविणी, वपु
द्वहामवती, यवपुत्रवतीहासिनी ॥ दक्षकवा
लवका, कपिलकणीकफद्वी, कृष्णकणी
षणीवादी, जिह्वाललनरीषणी ॥ महाप्रणाम
नामूता, रुजाश्रुकरुणी, असिद्वर्मयगाह
का, उमर्षवद्वानुधाविणी ॥ कर्दकापालहस्ता
मी, वनदारुयहपिना, ननवर्मयगाद्वी, दीपि
वर्मकटिस्त्रिणा ॥ महप्रसूर्यसंकाशी, वामकूप
प्रतिप्रति ॥ दालामालाकुलादहा, गणित्कटि
समप्रका, रुतवंगालदाकिनी, पवित्रानवनाः
कसी ॥ एकाप्रकमहाकृष्ण, श्रुवत्कृष्णवासि
नी ॥ पीठउदवर्षसुय, वामपुत्रयनमासुता ॥ ॥
महालक्ष्मीमहाद्वी, सोलाग्यसूत्रसूत्रवी, वेद
य्यादकावृता, सिंहासनाप्रविस्त्रिणी ॥ वदुत
जाविष्णवादी, खड्गकृष्णधाविणी ॥ नूप्रवहावः
कयूना, वल्लकृष्णधाविणी ॥ वल्लखचित्तसर्वा
मी, वीजामनिविरुषणी ॥ विविष्टयुष्यवल्लकृष्ण
सुगन्धानलपिनी ॥ ऐलावस्यापिनीद्वी, सर्वसु

कं यूना वत्त कलुलधाविणी ॥ वत्ताख विहसवा
मी श्रीजामनि विरूषणी ॥ विविध यूप्यवत्त ॥ व
सुगन्धानलपिनी ॥ ऐलाक्यापिनी देवी, सर्व सु
मय वाचनं ॥ सिद्धिर्गंधर्वनमिता, विद्याधविमूढा
विता ॥ देवीकाटमहायुद्धं, महावायुकलाक्रमं
॥ श्रीगानपी ० सीसुनं, महालक्ष्मीनमामुता ॥ ॥
अष्टकशक्तिर्गादेवी, अष्टकनिवासिनी ॥ अष्ट
रुद्रवर्षयुक्तं, अष्टमारुनमामुता ॥ जननी सः
वत्तानी, सर्वसत्त्वप्रकाशिनी ॥ सर्वदाप्रदवाः
न्दवी, सीसावपाणकदनी ॥ त्वमेव सर्वगोस्त्व
त्वमेव आगवपिनी ॥ त्वमेव लक्ष्मिर्माहव, त्वमेव
स्तिविबुधिनी ॥ त्वमेव सर्ववृषाणी, त्वमेव विध्यः
वृषिणी ॥ पी ० १०० वं महादेवं, देवदेवं महेश्वरं ॥
हे नर्वही वरुणी नोदं, धावाङ्गम्रीनवृषि ॥ नीलाज
नतिरुदकं, महाकायमहासुव ॥ नानाशुभस
माकीर्णं, नानागन्धनापुर्णं ॥ शिलावर्णमहात
ऊं, अग्निसूर्यसमयुक्तं ॥ बुद्धिवासासमस्तुर्व, दाः
वाग्निसमतेजसा ॥ शिष्टलमृष्टुखदाहं, उमर्वत

ऊनी वज्रं ॥ प्राणिजाता के मे मानि खड्ग वर्म धना
उत्तरी ॥ प्राणि कुण्ड वर्म धर्म वज्र ध्वजी गदा धर्म ॥ क
पाल कर्हि के वज्र गज वर्म वज्र उणिनी ॥ दंड क
जाल वदना व्याघ्र वर्म कटि वृता ॥ साल का लन
सर्वा न ननास्ति पूष्य ॥ गारिता ॥ गीर्ष माला धर्म ध
र्म कपाल मालि कारु म ॥ वृज मलि महा गज क
पाल वन्द्य रूपी ॥ महा प्रताप नानि र्ण न ह्य गी
त सदा प्रिय ॥ सर्वाल लनि र्वर्ण ॥ जट विद्रु म
सनि र्ण ॥ वज्र वी ॥ १० स्ति गानि र्ण अरुद्र यनि वा
सिनी ॥ अरुद्र मुहि स्ति तादवी अरुद्र कयानि पि
या रुद्र वी ॥ १० स्ति गानि र्ण रुद्र कालि समा युता ॥
रुद्र का वल कर्ण वी वरुद्र नमा युता ॥ अणि ता
म नू नू ॥ १० स्ति व ॥ १० स्ति का धर्म व ॥ १० स्ति रुद्र व
॥ १० स्ति कपाली री वल सथा ॥ सीता नी वे व अरुद्र
रुद्र वा क क नमा युता ॥ स्वत्वा न स्वाधिका वा ॥ स्व
स्व नू पा स्व वी र्य का ॥ स्व स्व का र्य वरुद्र न दि वा ॥
नै क य रु मि सा ॥ द ॥ दि द्रु क य पाल द ॥ १० स्ति
व व रुद्र ॥ १० स्ति य ॥ १० स्ति य पाल ॥ १० स्ति य पाल न

स्वयं पास्वदीयं कास्वस्वकायं वरुं न दिव्याः
नैकं यस्मिन्मिसा ॥ दशदिक्कक्षयपालाक्षकाः
वचसुदशः ॥ यश्च ॥ १॥ कृष्णपालाक्षः कृष्णपालेन
सामुद्रः ॥ नाथनाथमहानाथं आदिनाथं महात्म
न ॥ श्रीनाथः सिद्धिनाथश्च मीननाथं नमामुद्रः ॥ द
शनाथं वयं ॥ १॥ दीपनाथं महात्मनः ॥ धृतनाथ
श्च रुद्रश्च वटुकनाथं नमामुद्रः ॥ विनाथानवना
थश्च धातुसन्नाथमूलमी ॥ सकाविंशतिर्यवासा
वोनाथानि नमामुद्रः ॥ सर्वान्नाथसिद्धानां सन्ना
नैकलवृद्धयः ॥ यागसयथावीनातस्तश्च नमामु
द्रः ॥ एककालं द्विकालम्वा त्रिकालीयः ॥ १०॥ न
वः ॥ समीपं वरुं यश्च पात्रातिप्रियमूलमी ॥
नाथयत्साकविकानि नाथयद्विद्विदवता ॥ नाथ
यत्कलहनागालि नाथयदः खरागिनी ॥ नाथय
रुयदात्रिदं नाथयद्विपुसलमी ॥ नाथयद्विनिवो
नालि नाथयदाजकाधकं ॥ नाथयत्सद्विषयावः
नाथयद्वसिवावकृतं ॥ नाथयत्साकव्यामि नाथ
यत्सर्वपाठकेशायेनाग्यमेष्वयं धनधान्यं

विबद्धन ॥ धर्मार्थकाममादानी ॥ असौ कुरु
मुरुमी ॥ अद्विसिद्धिप्रियलक्ष्मी ॥ विद्याह्वनसुस
निनी ॥ वद्विप्रहासमिर्जव ॥ वद्विन्नवदिनदि
न ॥ सकलमवलनस्य ॥ उत्थातनाथसदा ॥ स
वभागप्रगस्यनि ॥ दीर्घमायवलस्यत ॥ ॐ तिषी
पी ॥ नृत्त्यध्वामनपी ॥ वरावसुर्वसमार्क ॥ ॥
वक्रवर्णविनशाव ॥ वालनूयी महेश्वरी ॥ वाजल
क्षीवर्वदहि ॥ व ॥ पुष्पविनमासुत ॥ ॥ पानावः
ककपालमूर्च्छलनलक ॥ ॥ मूवावः वयः सर्वा
॥ ॥ उरवानहानधवलदद्यास्त्रिमालाप्रजः वि
यक्तिद्विप्रयसाधनविधिरुथापिसंस्तुतयाः
पायान्नः पत्रयावसानसमयकापालिकागिक
वः ॥ ॥ अनन्तगकिप्रविमलितमलुगर्क ॥ गत्वा
ननूपमखिलार्थविधानरुड ॥ अष्टादशसाधनक
नपत्रमगमूहि ॥ नाट्यवर्षसकलसिद्धिकर्षनमा
मि ॥ ॥ वक्रवर्णवहुवर्क ॥ अष्टमालादिपूल
काकपालविन्दुहस्ताव ॥ वक्रवर्णविनमासुत ॥ ॥
वहुवर्णजागनूजावरा ॥ गीतवक्रगदाधवा ॥ गोव

[illegible]

[illegible]

विष्णोः (१) वीष्णोः सद्सर्वं वदामि सद्सर्वं नानि साः
 द्याविष्णोः विरुद्धं कसकल गणना पाउद्धो विष्णोः वल्गु
 ४५ ॥ अद्भुतमनुसिद्धिस्तु वदन्त्यसर्गं स्वर्गं
 लावर्नवा. गुरुसुसुं विद्युत्तां अलिवलि विदन्सु
 सुर्नसर्वविद्या। दीर्घायुष्यं कतिस्वं निधिं वसुधै
 का. पादूका कामसिद्धि. सर्वाविनादवन्त अलिव
 लिसहिता. केववानान्ययुक्ताः॥ ॥ ५५॥ मानवका
 विनयास्तनुरुवपमिना. मरुमार्गगगामी. दिग्वा
 घीवावूनयायुधगवजयना. मखलावत्त (१॥ ५॥
 । दवा (१) वसु (१॥ ५॥ वदन्त्यसुसुं वदन्त्यसुसुं वदन्त्यसुसुं
 रावा. सासुपाकुडिकारवाविनयुगसासुनदि
 योद्यमाद्यः॥ ॥ वन्धूकयुतिसतिनी विनयनी
 सिंहासनी सुन्दरी. सर्ववामिह सर्वगुरुवल्गु
 उक्तामवार्तुविनी। मस्याष्टादशपालियद्यविम
 लीवाक्कादुलार्थयदी. गावन्दमहिषास्तवयुमथ
 नीरुन्धेयवीनोमर्दः॥ ॥ काकाः १११ कसमीवल्गुः
 कदहल्गुः कायः कविः सुमना. कवका कजनाद
 नः कुरुजगः कन्दः कदवास्तुः कल्याणावर्तु

नूनः प्रमृदिनः प्रसिद्धिया गन्धर्व कीर्तिनाट
कनायको विजयनंदनामहादेवः ॥ ॥ म
हाकाली महावीर्य महाकृष्ण नयरी स्तुत
नूप महाकार्य करुणाया ललाविणी ॥ खड्ग
ठ धर्वदर्व विनय कलनयरी नमस्तु महा
काली गङ्गा सीता वका विणी ॥ ॥ मार्कण्डेया वि
प्रभु रुद्रना नूप हयावनाल वक्रमस्य प्रवृत्ति
कनका प्रवृत्ति वक्रकल्या देव्या च दयमृदिन
गिरि साधन कृष्णरावा सायंदव्यारुद्र रुद्र
नाधीयमवलि कायो ॥ ॥ यादवी मधुकेतु
यमथनी यावत्तु मृत्तु दिनी यासाया महिषास
वक्रयकनी यावत्तु वीजा प्रया यासाधुं रुनिष्ठ
रुद्रैर्यद्वली यादवदवा प्रिया सादवी ममवक्र
वक्रा प्रवृत्ति यष्टी जया वक्रु ॥ ॥ उक्तु नानुज
कर्त्तिका प्रविगता प्रसिद्धि लक्ष्मी पवा कर्पू वक्र
ठिक नूक प्रवृत्ति निःशेष पाप प्रहा सीता वा
ल वक्रः खर्वक दहनी निरुक्त्य नैरुवदा प्रीमत्य
प्रमृत्ता नूजादः प्रवृत्ति नाया प्रवृत्ति ॥ ॥

टिकन्दकृष्णधवलानिःशेषपापप्रहारासमावा
र्त्तवदःखपेकदहनीनिस्कमर्नसर्वदापीमस्य
श्रमस्वाम्जादःशुभाथनस्तुगापाहुवः॥
आसायनलिपायहाविलिजगन्तुःखोद्यविद्याव
लीकसाद्यानलिवेविमानलिसद्योसमावभाहान
की।।प्रयस्कननिकावनसुववनयापीयस्यवाः
विनस्वीसध्याविज्ञनामरिक्तहलदायासिद्धि
लक्ष्मिनिमः॥ ॥यासानककानिकदवास्तुतिरा
स्वदूपासासाकवद्विषिपापादलमयसंस्तुवि
वर्गविरुद्विषयाद्विलीनरावास्वाहावरावि
तिप्रवायसामिकाली॥ ॥वेन्दुलोवसदासन
स्यनधनीमथललाटयसीसोःकीकानिमव
कगवनीवसीदस्यानस्वनीसर्वतः॥यसासोतिप
वाद्यदिद्विगिद्वीसीसोसदाशुस्तुगा।।ष्टिन्याद्यस
हसायवेष्टिप्रवयथागिमयीवाक्यी॥ ॥मार्य
कृष्णलिनीक्रियामधुमनीकालीकलामालिनीमा
टगीविजयाऊयारागावरीदवीनिवाणीरुवि।।
किः॥कवदन्त्रलाशिषयनीवाग्यादिनीहववी

क्रीकात्रीषिप्रवापदमयीमानाकमानीलसि॥ ॥
नमस्तुतवदवलि. सिद्धिलक्ष्मीमहाजसा। प्रत्य
गिनामहादवी. वाञ्छलक्ष्मीनमास्तुत॥ ॥ यथा
वापयहावापकववस्तुवतिवावली. नद्वदव
विधाधानी. नानिर्गुवहुवावली॥ स्वस्त्यनक्षत्रया
लाय. वद्वक्यादिश्रुतिगाममहादेववसहिता
य. गलवटुकयागिनीक्षत्रयालाय. साक्षायसग
लस्यविवावाय. दिगविदिब्न्दादिलाकयाला
यसूचीगाववादारुवेनु॥ यजमानस्यसगस्यवि
वावाप्रांशूयवावाग्यमेवयजिनधनलक्ष्मीसक्त
तिसक्तानदृष्टिनमु. यथागाक्षकदलवलदाः
यिनारुवनु॥ अन्मण्डावलीनास्ति. स्वमवडावली
ममागसात्कावृष्यरावन. वद्वनक्षत्रपदमस्यवि
॥ ॥ समयकाय॥ नव्येन॥ प्रसिद्धतासमस्तः
रुवरुयद्वरुवलेववास्तुमूर्तिव्यष्टीवष्टीसन
स्तगलपुनवटुकालाकयालादनीन्द्रावकाय
काःसूतीक्ष्णःपिण्डगलसकलामाननाःक्षत्रया
ला. यागिनीयागयकाःस्तलजलववखववाः

लुगलुगुनवट्टकालाकयालाहनीन्द्राधनकाय
 काःसुतीद्वाःपिष्टगलसकलामाननाःक्षयपा
 ला.यागिन्मांथागयकाःसुलजलववखववाः
 :यानवतसिबन्तु॥पिबन्तुदवताःसर्वाःसन्
 दाःसगलपिष्टाःयागिन्माःक्षयपालाश्वतवद
 रुद्रवसिताः॥नमःधीनाथाय॥नमःधीसिद्धि
 नाथाय॥नमःधीकुञ्जनाथायनमानमः॥ ॥
 दवन्नागीवद्वि॥यकासुर्हिबलेकधाराजिजगति
 ने॥ष्वबीदद्वि॥ज्ञानागम्यकुञ्जबीकुलग
 लेवात्रप्यदिद्रायिकापीवामायवमासिविष्व
 जननीदलेष्वबीसिद्धिदा॥ ॥स्वान्नागीवद्वि॥
 जंजम्बयुर्वगर्तपदंरुगवतिवेतन्यदूपास्मि
 का.ज्ञानंस्तुवद्वानाथाहविद्वोवद्वामबीवि
 शयी।रास्त्रेववयंवर्कंनदनवपीयागिनीप
 यर्क.वन्द्याकीवमबीविषद्वममल्लमांयाउनि
 लुनिर्त्यकुञ्ज॥वलजलदोव.वलिविसर्जनया
 य॥दगद्वयर्कलालक॥वाजनसूक्ष्मा॥न्तिदग
 वलिद्विषिःसमाका॥ ॥दगवलिपार्तश्रद्धा॥

ॐ नमः श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥
इति श्री गणेशाय नमः ॥ नमः ॥ ५ ॥ सहस्रं यथा जगत्तद्वत्
निर्गममिति वाच्यम् ॥

ॐ नमः श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥
दूकाल्या नमः ॥ अथ कर्मवर्तित्वविधिरिति वाच्यम् ॥
॥ यजमानाय नमः ॥ अथ यथादि वाच्यम् ॥
यजमानस्य कालिकेव तायाय नमः कर्मवर्तित्वं
नकर्तुं यथा राजानस्य समप्रयामि ॥ श्री गणेशाय
मधुवा नमः कर्मयदनिहितानन्दः किं सुखमा
सृष्टिं न्यायं वदुर्लक्षं कलकलगतं यद्वर्तित्वं
नमः ॥ वत्तावायं वक्तान्यन्यत्र विवदुर्लक्षं
नमः ॥ मधुलक्षं दसं ॥ ५ ॥ यजमानस्य नमः ॥
वदुर्लक्षं वदुर्लक्षं ॥ ॥ यथा मावकाजिनः ॥
नमः ॥ वदुर्लक्षं मित्तमः ॥ मित्तमः ॥ विष्वाक्षी वाच्यम्
नमः ॥ यथा वदुर्लक्षं मित्तमः ॥ वदुर्लक्षं मित्तमः ॥
नमः ॥ वदुर्लक्षं मित्तमः ॥ वदुर्लक्षं मित्तमः ॥
नमः ॥ वदुर्लक्षं मित्तमः ॥ वदुर्लक्षं मित्तमः ॥
नमः ॥ वदुर्लक्षं मित्तमः ॥ वदुर्लक्षं मित्तमः ॥

[illegible]

दिदृक्षापहा. निर्यानन्दमयीप्रसादसुखदाव
त्वादियुगाविधि॥ ॥ सिद्धिबन्धुक्रियावन्मृदुदि
बन्धुधनोगम। यद्विबन्धुगन्त्रीवन्धुगान्तिबन्धुग
हस्तव॥ सर्वविधिप्रणमनं. सर्वगान्तिकवपुर्
। आर्ययुगप्रकाशमव. लक्ष्मीमन्त्रविवर्धन॥ ॥
यथावत्प्रहासनालंकारवचंरुवत्प्रवाचनं। तद्वद
वविधाहृत्पांशान्तिरुवत्प्रवाचनं॥ यथाहृत्पांशान्ति
ममयथासि॥ ॥ लखनहाय॥ दुर्कारनवायुवी
ज। तद्वद्विबन्धुलं वद्व्यालिंगद्वन्द्वं. कालं वपु
नयकं तद्वद्विबन्धुमं. वद्विबीजं सहस्रं॥ ॥
विन्दुलयाकं सिक्तकमलवर्नं. कीवधायाप्रवर्नं
दृष्टुं कृष्टुं निर्या. दहति कुलमलं. मन्त्रुली
दिपायी॥ ॥ यथा॥ श्रीखण्डवन्दनं दिव्यं गंधार्थं
सुमनाहनी। आरुषिर्गललासाप्रवन्दनं। प्रति
गच्छती॥ वन्दनं लघितं यूप्यं. पविर्गं पापनास
नी। आर्यदाहवतनिर्णयं. लक्ष्मीवायुसुखप्रदं॥ ॥
सिद्धुव॥ वीजं वनीमहावीजं. वीजलस्य विरुविर्त
। जिलोकाकवलीयवी. सिद्धुवावृणमूलमी॥ ॥

न। अथ दाहवत निर्यं लक्ष्मी वाक् सुखप्रदा॥
सिद्धय॥ वीर्यवती महावीर्य वीर्यरुसविह्वलित
। तिलोक्ता कवलीय वी। सिद्धना नृणामुत्तम॥ ॥
अथ दाह॥ वसुं पवित्रपदमं सुखसौभाग्यदाय
कं। कायासिद्धिं जगत्मातु वसुं गृह्णन्मा मुत॥ ॥
दृष्टि॥ स्वर्गमलोकपानाल वसुं ददति प्रददति। दिः
अथ दाहलाभार्थं दृष्टिं दत्तं प्रतिगृह्णती॥ ॥ कर्म
पताका॥ पुष्टं सिद्धं वसुं लक्ष्मीं पताकां कर्णं संहर्षं
। गृह्णाति पदमं गान वसुं कापी सुगोचरी॥ ॥ धी
वपताका॥ कर्णार्थं अगलं दत्तं पताकां धीव वः
ल्लिंकां। धीव सिद्धिदलाभार्थं गृह्णाति नक्षत्रं मुत्तमं
॥ ॥ अथ दाह॥ अथ दाहं अथ दाहं कामं धर्मं कामा
र्थसिद्धिदं॥ विनं मवर्तयति पदं वपताका
नि॥ ॥ जजमका॥ यक्षपवीनं पदमं पवित्रं
पजापतयत्सहजं पदमातु। अथ यक्षमर्थं प्रः
तिमं वसुं यक्षपवीनं वलं मनुजं॥ ॥ स्वा
व॥ नाना यक्षसर्गं धानि मालाया कसुमादय।
सौभाग्यसिद्धिदं रुद्रं यक्षपवीनं मनुजं॥ ॥

विनतनादमय ॥ द्रो अन्त नत्वा यत्वाहा ॥ द्रो वि
या नत्वा यत्वाहा ॥ द्रो वि नत्वा यत्वाहा ॥ द्रो वि
॥ अथादि ॥ वाक् ॥ यजमानस्य कारु कवनाया
यनकर्मवल्या च न कर्तुं पा सु आ यज पा अर्थ
नमः ॥ वल्गु नीवी जमवृत्त्य तस्याप विनिर्वन्यम
त ॥ आदिमध्यावमानस्य अग्निपय विरु विरु ॥ म
मेला दीपिनी कृत्वा सा विष्णवे वमद्वये त ॥ पुष
कूठववः ॥ धृष्टा महा मारु पुष्टे ववः ॥ अर्थनम
॥ यर्थनमः ॥ द्रो ग्री महा मारु पुष्टे ववायनम
॥ ॥ पुन न दी कृत्वा ॥ वे द्रो ग्री पुष्टे ॥ अख
पुमपुलाकारं व्याकथनववाच वी ॥ तत्पदं द
निर्णयन तस्मै ग्री पुनवनमः ॥ पुनवृक्ष पुनवृ
विष्णु पुनवृक्ष महव्वनः ॥ पुनवृक्ष उग तसर्व तस्मै
ग्री पुनवनमः ॥ वे ज यनमपुनस्थानमः ॥ वे ज
यनमपुनस्थानमः ॥ वे ज यनमावाय पुनस्थान
नमः ॥ यदास्त्राय पादुका ॥ कृष्णमनाय पादुका
॥ पा ॥ अथ न वि कवर्ण ॥ किलि श विवका कला
यदः ॥ अथ यदः ॥ वदामदया मुखवदः ॥ वे

नमः॥ पद्मास्त्राय पादुका॥ कृष्णाय नमः॥ पादुका
॥ पादुकास्त्राय विष्णवे॥ किलिश्चिचका कला
येकः॥ अस्त्राय रुट॥ वदामुदयामुखवदुन॥ वे
जवेकुं रुट वदामेजवसाहा॥ दशानवस्यनि
॥ जेजवलमेकुलकुलमवलडो॥ कुं रुट साहा
॥ ॥ न्यासः॥ किलिश्चिचका कलायेकः॥ अस्त्राय
रुट पादुका॥ कजः॥ धर्मः॥ नमो रुगवति द
त्तमलायेकापी अष्टास्य पादुका॥ कुं कुडिः
कायेकुलदीपायेकापी गजनीस्य पादुका॥
कोको कुं वववनिखकुं पीमः॥ मास्य पादुका
॥ धाव अथाव अथाव मुखीवदुव पायेकापी
अनामिकास्य पादुका॥ कुं कुं महकनिकायेः
कोपी कनिष्ठास्य पादुका॥ किलिश्चिचका क
लायेकः॥ पी कननयष्टास्य पादुका॥ ॥ ॥
न्यासः॥ ॥ नमो रुगवति दत्तमलायेकापी कु
ववकाये पादुका॥ कुं कुडिकायेकुलदीपाये
पी वववकाये पादुका॥ कोको कुं वववनि
खपी दक्षिणवकाये पादुका॥ धाव अथाव अ

ध्यानामस्वीवक्रवृषायेपीडरुववक्रायेपाद
 कां॥ ॐ ॐ महनाविक्रायेपीपथिमवक्रायेपा
 दकां॥ किलि२ विवक्राकृपायेपीपवापववक्रा
 येपादकां॥ ॐ निवक्रानामः॥ ॥ नमारुगवति
 दत्तमलायेकाददयायपादकां॥ ॐ कृदिकी
 येकलदीपायेकां निवसत्ताहा॥ कां ॐ
 वववनिखदुं पीनिखायेदीषट्॥ ध्यावश्रया
 वश्रयावामस्वीवक्रवृषायेकेकववायदुं॥ ॐ
 ॐ महनाविक्रायेकां नशययायववट्॥ कि
 लि२ विवक्राकृपायेकाः श्रुतायरुट्॥ ॐ निश्र
 न्नानामः॥ ॥ जलयाययुजा॥ जलयायास्ताः
 यपादकां॥ ॐ जद्रां श्राननदं किरेववाननदवी
 वाधियतययुं॥ ॐ पीजलयायरुट्वाविक्राये
 पादकां॥ ॐ काददयाययादि॥ श्रवा
 रुनादि॥ ॐ नमूडा॥ गायया॥ अलिषवनं॥
 ॐ जकृदिक्रायेविद्यह कलदीपायेपीमहि न
 नाकृदिषवादयात्॥ ॥ श्रवयाययुजा॥ श्र
 ययायासनायपादकां॥ ॐ जकांकांकांकाः प्र

[illegible]

त्वं तज्जवद्वनि ॥ १ ॥ जननी सर्वस्वतानां स्यान्न
 सिन्धवस्तिता । मातावीणावलीदवा कावर्ण्यक
 वद्वल ॥ २ ॥ उच्यते यत्र मन्त्रनिर्वाणस्य
 कृतिगता मयीनिःसृताश्च कव्या यवाहान
 गकिस्वमिच्छा क्रिया मङ्गला मद्भिर्वखापूनः स
 फनागन्तुल्यलाकावद्व्याप्युन्नोदगकिस्व
 संगीयत रासुवायनिर्वाणसुव्यानिवाश्च
 नामावमाधवादीश्च नारवाविकोविन्दुव्यावधुता
 द्ववन्द्यास्तिस्रश्चिकाणां अडनकावकावज
 कावसंथाश्च सखमाययत तत्त्वव्याख्यव्या
 रुगाकाववहयिनी आदितः कान्ततत्त्वाख्याः
 यनिर्वाणसुव्याप्यकः समहिणी वृद्धमाता तथ
 नक्तगकिः सप्तस्त्रिमुहिववायसिनी रावद्व
 गी तिथीमातिकास्तु नरुगाहवाखावमणी गरी
 गी गमथातिका नयह ग द्वितोत्तमहासनसमा
 हिनी वाडगाना मन्त्राविन्दु सदाहिनी सन्दह
 गा (१) वधामकयानानन्दनिर्वाणसोख्ययद रुव
 वीरुववायानकोशान् गकयवामालिनी वृद्धमाल

हिनी वा ७११ नाम ता वि न् सदा हिनी स्य न्द्र ह्
ता ७१२ व ११ म क यानान न्द्र नि व ११ सो ख य द् र व
वी र्ने व वा यान को ११ नू ११ क य वा मालिनी नू ११ माल
चित्त द्द्र ११ कि ११ ख ११ ग सि द्द्र या ११ ग ११ व ११ सि द्द्रि मा गा वि
७११ द्द्र वा ११ सि था न्द्रा ११ वी वा ग्नि ७११ सि द्द्रि सि द्द्रि
वा ११ ग ११ व ११ मारु का सि द्द्र नि द्द्र क्रि या म न्द्र ला सि द्द्रि
ल न्द्रा वि द्द्र ति ११ स र्द्र ति र्ने ति ११ ग ११ व ११ मारु का सि द्द्रि मा गा
य ११ व ११ क व ११ अ क लाल द्द्र ११ ली म न्द्र या म हा द्द्र
आ था ग पि या र्द्र ज र्द्र जि गा व द्द्र स मा हि नी र्द्र
न वा न्द्रा नू ११ द्द्र व स वा र्द्र ग याना नि गा म न्द्र मा र्द्र
नू ११ गे मालि रि मारु रि वी वि याना नू ११ व ११ स र्द्र क
११ य ११ म य ११ स द्द्र वि य ११ म न्द्र ति द्द्रि य यानो द्द्र व म् ११
की का व का यालिनी ११ क ज न्द्रा दि ज न्द्रा जि ज न्द्रा
७११ प ११ प ११ स क ज न्द्रा द्द्र ११ स म्द्र व ११ स ११ व नान
११ उ ११ ११ द्द्र लो रि स य ११ स म य मा स पि य था ग वि य
व गा द्द्रा रि रि म् ११ उ की काल का यालि के दि द्द्र व य
नू ११ द्द्र म् ११ न म् ११ स का व ११ का व स वा द्द्रा स वा का व वा
प ११ व ११ प ११ का व द्द्र का व द्द्र ट् का व जा रि रि व ११

महाकवीचाविरिचोमहसुस्तिभवनसूत्राव
लीजायिरिः साधकैः प्रयुक्तं साहसिर्मल्लुले
दिनेयोगिरियोगिनीचन्द्रमलाप्रकेन्द्रकीज
वसेः प्रयुक्तं साधिनीयागसिद्धिपदद्वित्वं यद्य
यथाभेन्नावनः स्रष्टुं प्रयुक्तं प्रयुक्तं गत्यदि
व्याकविन्दस्तितामकपातालसंखचनीसिद्धि
काहतावतावहं गुरुकितायः य(०)दुर्गपक
कार्द्विकालीप्रिकालीवधुः पंचवटसकवा
पुकिः मंसवयः सदामानवः सावित्रीवाग्नि
मालावयवता(न)पिसंवरुसदवीप्रयुक्तानु
गमनालक्ष्मीपदद्वमवीवान्यदावानुवक
वक्तव्यमहादाषद्वद्विमन्त्रिर्मस्यद्वि
वदीयं मुखं प्रयुक्तं वन्दानकात्रीसुवद्विषमा
वासुक्तं पुलायुष्टगुप्तुलीयपिवदाद्विर्व
नेनागया(ने)जावद्वयादागलसुपित्वनाम
संकीर्तनाद्विषयान्तिद्यावमहाव्याधिरिः
सुखयादावविन्दद्वयकमहाकालकालानित
जपकस्तुन्द(ग)विन्दवक्तुवन्दार्कप्रयाम्

स को लो न द वि य यो नि द्या व मे हा व्या धि रिः स
 स्म ल्य पा दा व दि न्द द य न्न म हा का ल का ला ग्नि त
 उ प रु स्त न्द ग वि न्द व द्द न्द व द्द क य प्प म्प
 म्प लो मो लि मा ला लि स न्य द्य किं ज ल्द स पिं उ वः
 स व वी वा चि क ले व वी ले व स्त ग व प्प ग गार्ह द्द
 म स्त य न्द व द्द म स्त य न्द व द्द गि व ॥ प व उ ता म हा
 द वी ले व व ल म हा म न ॥ त गालि इ वि वि रि य नि
 गे ता य व म ग्ग वी ॥ रु ति मा लि नी द पु र्क स मा यः
 ॥ ॥ प व व लि वि य ॥ उं ज म य्प न्द स ना य पा द्द का
 ॥ उं ज प्प ज्जि क्क ल य्प व द्द क ना था य पा द्द का ॥ व
 लि ॥ उं ज न वा स ना य पा द्द का ॥ उं ज (प) य स्त व द्द
 य द्द रु की द वी म हा द्वा द्द द्द य पा ला य पा द्द का ॥
 व लि ॥ उं ज ग वा स ना य पा द्द का ॥ उं ज य्प यो गिः
 नी स्त पा द्द का ॥ उं ज य्प क वि न्द यो गि नी नी यी ०
 जा द्द रु ज म हा द्वा ग ज ग द्द जा क्क ल जा स द्वा
 द्द जा य क वि यो गि नी नी ख व वी रु व वी (ग) व वी
 य का द्द वी द्द द्द वी य द्द वी व रुः य व व द्द स द्वा
 द्द न वा द्द वी प्प नी य ग म्पि नी नी य (था) य प न्द न्द

[illegible]

कवान्न वद्व। वत्वा वा यव कोन्न नूनना पवतु
नं सतत्व गोमपु लदं सः ॥ ७४ ॥ जननसमे नमनिउ
नूवर्न रुनवपीकु उः ॥ ७५ ॥ दं आवाहिवा आवाः
हयामि ॥ ॥ ७६ ॥ अननक मपुलपी आदिदवपा
दकी ॥ नवा सनाय पादकी ॥ मयु वा सनाय पा
दकी ॥ मृवा सनाय पादकी ॥ ७७ ॥ प्रसु नदीयव
नकी दवी महाधी ककु उपा वाय पादकी ॥ पी डी
कूल यव दकनाथाय पादकी ॥ गंगा गंगः (लोक
लगः) ॥ यवाय पादकी ॥ धन न वलिः ॥ आवाह ना
दि ॥ स्वस्व मूडा ॥ शिख वयुजा ॥ ॥ अथ वलि मव
उलियाय ॥ शिख वना वम ॥ जो आत्म तत्वाय स्वाहा
जो विद्या तत्वाय स्वाहा ॥ कुनिव तत्वाय स्वाहा ॥ ॥ ७८ ॥
वनमस्काद ॥ अख पु मपुला कार्ज ॥ धार्क थन व
वाचन ॥ सत्य दं दनि तीथन ॥ ससेपी पु ववन मः ॥ ७९ ॥
नूवद पा पु वविष् ॥ पु वद वम रु यव ॥ पु वद व
उगल सव ॥ ससेपी पु ववन मः ॥ १०० ॥ यव मपु नूः
स्थान मः ॥ १०१ ॥ यव मळी पु वस्थान मः ॥ १०२ ॥ यव
मावाय पु वस्थान मः ॥ वलिस यवा सनाय पादकी

॥ जल पाशामनाय पादुका ॥ अर्ध पाशामनायः
पादुका ॥ धवक कुम्भासनाय पादुका ॥ पाश्वर्ध अ
क्षत विक्रयी ॥ ऐं ग कि लि र वि च्च का क्का ये ह ४
अस्त्राय हट ॥ वक्रा मुखयामुखवद्वनी ॥ ऐं ग ह्र ह
ट वक्रा पंज वे स्वा हा ॥ वलमकुलकुलमवलकी
ह्र हट स्वा हा ॥ न्यासः ॥ कि लि र वि च्च का क्का ये ह
४ अस्त्राय हट पादुका ॥ कवः ॥ धनः ४ ॥ नमो रुग
वति हल्लमला ये ह्रीं श्रीं गु षा र्यां पादुका ॥ ह्र
कुडि का ये कुलदी पा ये ह्रीं श्रीं नी र्यां पादु
का ॥ कां कां ह्र व व न नि र्व ह्र श्रीं म धा मा र्यां पादु
का ॥ धा व अ धा व अ धा वा मुखी व द्रु पा ये ह्रीं श्रीं
अनामिका र्यां पादुका ॥ कां ह्रीं मह ना वि ये ह्रीं श्रीं
क नि षा र्यां पादुका ॥ कि लि र वि च्च का क्का ये हः
श्रीं क व र त न य षा र्यां पादुका ॥ क व न्या सः ॥ ॥
नमो रुगवति हल्लमला ये श्रीं ह्र व का ये पादुः
का ॥ ह्र कुडि का ये कुलदी पा ये श्रीं पूर्व व का ये
पादुका ॥ कां कां ह्र व व न नि र्व श्रीं द कि ण व का ये
पादुका ॥ धा व अ धा व अ धा वा मुखी व द्रु पा ये

का॥ ध्रुं कुडिकायै कलदीपायै श्रीपूववकायै
पादकी॥ कांकां कुं वचन निखंधी दक्षिणवकायै
पादकी॥ ध्याव अथाव अथानामस्वीवदूयुपायै
पीडलववकायै पादकी॥ चूं चूं महं ताविकाः
ये श्रीपविमवकायै पादकी॥ किलिश विचकाक
लायै श्रीपवायववकायै पादकी॥ वका न्यासः
॥ ॥ नमारुगवति हलक मलायै कां हदयाय पा
दकी॥ ध्रुं कुडिकायै कलदीपायै कां निवसखाल
॥ कांकां कुं वचन निखंधी निखायै वीषट्॥ ध्याव
अथाव अथानामस्वीवदूयुपायै कैकववायै
॥ चूं चूं महं ताविकायै को नपययाय वषट्॥
किलिश विचकाक लायै कां अन्नाय हट्॥ ॐ तिस्र
मन्त्रासः॥ ॥ जलपात्रासनाय पादकी॥ वैजयं
आनन्दगकिरेववानन्दवीनाधिपतयमूं पीज
लपात्ररुहाविकायै पादकी॥ वषट्॥ ॐ आवा
हनादि॥ धनमूढा॥ गायत्रि॥ अरिषव नै॥ वैज
कुडिकायै विषह कलदीपायै धामहि ननाकडि
यवाययात्॥ ॥ अर्धपात्र पूजा॥ अर्धपात्रासना

[illegible]

स्वकलकलगतपवकवान्यवद्व। वलावापः
वकान्यनवपिवउर्वततत्वतामउलदसं॥१॥
ऊनमसो. नमसिउववर्नरेववंप्राकजग॥॥
दशावाहियाआवाहयामि॥ ॥७॥ अनेननमः
लप्राआदिदवपादका॥ नवासनायपादका॥ म
यूवासनायपादका॥ मूवासनायपादका॥ १.
(प्रोपकवदीपदमकीदवीधोंककउपायायय
दका॥ प्रोकीकलपुणवटकनाथयपादका॥ १
गोगोगंगः (गो) कलग(ग) वनामपादका॥ धर्तन
वलि॥ आवाहनादि॥ स्वस्वमूडी॥ ॥ यदासनाः
यपादका॥ १ स्वउवउकीगानन्दनाथदवपाद
का॥ १ यवमउवपीवयानन्दनाथदवपादका
॥ १ यवमसिउवपामिजानन्दनाथदवपादका
॥ १ यदा आनन्दगकिरेववानन्दवीनाधिपत
यमा॥ १ विउदिरुटादिकायेकादका॥ वलिः
॥ १ आवाहनादि॥ (धन) यानिमूडी॥ ॥
॥ १ अरुयदुट॥ ४॥ कव(ग) धर्न॥ १ यदद
यायनमः॥ १ गिनसखाहा॥ १ गित्वायेवीव

८॥ नमो कवचाय ॥ ॐ नमो जयवायव्य ॥ ॐ
श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ नमो कवचाय ॥ ॥ जहं गिरि
सुभयादूकी ॥ सं गिरि ॥ सुभयादूकी ॥ कलले
ठपादूकी ॥ मंद कुमल पादूकी ॥ लक्ष्म्या
यपादूकी ॥ वं नारि पादूकी ॥ वं गुण पादूकी ॥
यं जानी पादूकी ॥ ॐ पाद दया पादूकी ॥ ॐ सर्व
रूपादूकी ॥ नवात्मनामः ॥ ॐ गंगा न
वान्माना सरुदा वि काय पादूकी ॥ व
लिः ॥ ॥ यमा मनाय पादूकी ॥ गवा स
य पादूकी ॥ ॐ ॥ यमा मन गव सव द गव
कुं गिरि चर्न ॥ ख व ॥ म हा दी र्ण सर्व लक्ष
पार्थ यर्न ॥ १ ॥ ख व ॥ पृ व व कु लु द दि (पृ व
सु (गिरि ॥ ॐ ल न पी न व ॥ सु द द व क र्ण
दिर्ण ॥ २ ॥ न क स्य द दि (पृ व ॥ ॐ न मू ल न म
व व ॥ न दू द पी न व ॥ पी न स्या कु सु द दि
॥ ३ ॥ व क मू ल न नि र्या दू सु द द ॥ ॐ न मू ल
मी ॥ न क द ग ॥ उ जा द व ॥ क व धा हा व रु पिर्ण ॥
४ ॥ ख व ॥ रु द ध र्ण द व ॥ गिरि ल म क र्ण ति धा ॥ सु

॥३॥ बकं मूलं वनिह्यदूक्तं दूदं (विहमूलं
 मं। अष्टादशं जादवं कवं धादो वरुषिनी ॥
 ४॥ खड्गं दूधं वंदं विष्टलमदूगतिता। सु
 र्गकमपुलं (अष्टं) उमनूखद्वान्मं वव ॥५॥ वा
 लं धनः ससंयकं पुरुषं लाम् (गतिनी) वक्र
 (देवगदायापि) वनदालयदूक्तं ॥६॥ कायं
 विन्दुधवं वं नानालकावमपुर्गं। गवपीतं
 रुवं दूधं मासनसुखसंस्तिनी ॥७॥ पर्वं नूयं
 नवात्मानं मपुलं पुनमपुलं। कायदसुखय
 कान्मादि। पिसिद्वान्मानवाध ॥८॥ **ॐ नमो न**
 ॥ **ॐ नमो** आनन्दं गकिरेववानन्दवीवाधि
 पदयन्मू। **ॐ** पीनवात्मा पुनमपुलरुष्टानिः
 कायं **ॐ** पादकां। **ॐ नमो** आनन्दं गकि
 रेववा **ॐ** नन्दपीमहाविद्या **ॐ** वाजध्वनी
 पीनवात्मा पुनमपुलरुष्टानि **ॐ** काये पाद
 कां ॥ **॥ गणेशाय नमः ॥** **ॐ नमो** महापूजा पुनम
 पुलकृदिकाये पादकां ॥ **ॐ नमो** महापूजा पुन
 मपुलपी **॥** काये पादकां ॥ **ॐ नमो** पवनमक्षिउ

[illegible]

१ द्रव्यालाय पादका ॥ गंगा गङ्गा ॥ (लाघा कल
गलाय पादका ॥ पीडी कल यव दकन
थाय पादका ॥ कापी महाको साविका विद्य पाद
का ॥ १ ज द्या आन नद ॥ किरे नवान नदवी वाधि प
तय न्या ॥ नवासा उव म उल रुदाविका य
पा ॥ दका ॥ हा द दया यथादि ॥ धर्म
वलि ॥ ॥ अद्याव द्वाथ द्या न द्या व द्या न
न व द्वा स व त ॥ स व स व द्वा स ॥ द्वा न द व
प द्वा ॥ पादका ॥ व द्वा क डि नी द्वा जे ला द्वा क
प पी डी का मा रु द्वा व नी द्वा सी महा द्वा रु द्वा वि
पी जे सी स ॥ पी पादका ॥ न मा रु ग व नि द्वा क डि
का ये द्वा द्वा द्वा द्वा व अ द्या व अ द्या वाम र्वी द्वा
द्वा किलि २ वि द्वा पादका ॥ स म स म रु पी ० सि द्वा
स न पी ० पी ० य पी ० क था य द्वा स द्वा द्वा य स
दा द्वा दि द्वा सि द्वा स म य व द्वा पादका ॥ ७ उ द्वा
न द्वा य कि द्वा स व द्वा द्वा द्वा य पादका ॥
० ति य स र्व वलि ॥ आ वा रु ना दि ॥ या नि मू डा
॥ वि न्द य ३ ॥ ० ति उ व म उ ल द्वा ॥ ॥

यथासनाय पादुकां ॥ वैजयां पीठवृत्तिरु
 द्धविकाये पादुकां ॥ वलि ॥ यथासनाय प
 द्दुकां ॥ वैजयां पीठवृत्तिरु मरुदाविकाये
 पादुकां ॥ वृत्ति ॥ यासन पादुकां ॥ सिंहासन पा
 द्दुकां ॥ वैजयां आनन्दगकिरेव वानन्दवीनाधि
 पतयन् ॥ पीठलनाथस्वगकिमहिनायव
 द्दुकां ॥ वलि ॥ हंसासन पादुकां ॥ वृत्ति
 सन पादुकां ॥ मयूरासन पादुकां ॥ गरुडा
 सन पादुकां ॥ महिषासन पादुकां ॥ गजासन
 पादुकां ॥ यथासन पादुकां ॥ नवासन पादुकां
 ॥ अथवा नमो भगवते नमो भगवते नमो भगवते
 च पादुकां ॥ अथवा नमो भगवते नमो भगवते नमो भगवते
 रुद्रवीविच पादुकां ॥ अथवा नमो भगवते नमो भगवते नमो भगवते
 वीमलकोमविच पादुकां ॥ अथवा नमो भगवते नमो भगवते नमो भगवते
 धववदवीमलकोमवीविच पादुकां ॥ अथवा नमो भगवते नमो भगवते नमो भगवते
 नमो भगवते नमो भगवते नमो भगवते नमो भगवते नमो भगवते
 अथवा नमो भगवते नमो भगवते नमो भगवते नमो भगवते नमो भगवते
 पादुकां ॥ अथवा नमो भगवते नमो भगवते नमो भगवते नमो भगवते नमो भगवते

[illegible]

ईसः सूर्य हवन सः पादुका ॥ धर्म नीवलिः
 ॥ ॥ यथा सन पादुका ॥ जनी गलि पिं गटी क
 २ कछु ये साहावा गवनी छद सहेता त्रिका
 वि च पादुका ॥ वलि ॥ ॥ आधा वः कय पादु
 का ॥ अन ना सनाय पादुका ॥ कन्या सनाय य
 दूका ॥ नावा सनाय पादुका ॥ यथा सनाय पा
 दूका ॥ कः ना सनाय पादूका ॥ कलि का सना
 य पादूका ॥ यथा सनाय पादूका ॥ यव धना
 सन पादूका ॥ दो साहाव क्रि यता सन पादूका
 ॥ मिहा सन पादूका ॥ ॥ ॥ अथा वः धा वः
 धा वः धा वः नः धः सर्वः सर्वः सर्वः सर्वः
 ॥ जो नू य नू यः पादूका ॥ ॥ ॥ अत्र कः कः किनि
 धुं वे ला का क वनी का का मांग डा वलि का मः
 हो का रु का विलि वे सो सः पादूका ॥ ॥ ॥ जन माः
 रु ग व ति धुं कः डि का ये का का धुं धा वः अथा वः
 अथा ना मरि वः कः किलि २ वि च पादूका ॥
 ॥ ॥ जन मा रु ग व ति धुं कः डि का ये का का धुं द
 अण न म अथा ना मरि वः कः किलि २ वि च

[illegible]

[illegible]

पुनः सनाय पादका ॥ ६ ॥ मधुला विधनय
००१ स्वयं सनाय पादका ॥ ७ ॥ किं मधुला वि
पतय सदा गिवय सनाय पादका ॥ ८ ॥ स
न पादका ॥ ९ ॥ सिंहासन पादका ॥ १० ॥ ध्यान ॥ ११ ॥ वृष
सिंहि तं दवं स्ववर्णं नृपगालि तं ॥ एकवक्त्रं वि
नयश्च कुजा द्वा दशधा विपि ॥ १२ ॥ ॐ मन्त्रं यत्तु ता
लीं व स्वप्न मद्रुग व द्वा का ॥ १३ ॥ स्ववर्णं वीर्य वायं व व
नदा व नद किं ॥ १४ ॥ २ ॥ वा मख द्वा मद्रुग लक्ष्मण
१ रुल क पाग की ॥ १५ ॥ कपाल वेन ॥ १६ ॥ अरु या
रुय नागर्ण ॥ १७ ॥ ३ ॥ यदन व द्वा मद्रुग वा मा नृका
वद वती ॥ १८ ॥ एकवक्त्रं विनया व अ नृपा व प्लव
लिता ॥ १९ ॥ ४ ॥ द्वि कुजा व नदा द्वा सिंह मद्रुग रुय
मद्य स ॥ २० ॥ नाना रुवण ॥ २१ ॥ सलक्ष्मण ल
क्ष्मण ॥ २२ ॥ ५ ॥ नृवान न नृपायं अ नृपा न अ नृपा
किं लिता ॥ २३ ॥ ६ ॥ ध्यान महा दवं द्वि य सिद्ध किम
नदा ॥ २४ ॥ ध्यान ॥ २५ ॥ अद्या व द्वा ध्या व द्वा ध्या
व द्वा न न नृपायं सर्व मद्रुग सर्व मद्रुग सर्व मद्रुग
व द्वा न न नृपायं सर्व मद्रुग सर्व मद्रुग सर्व मद्रुग
व द्वा न न नृपायं सर्व मद्रुग सर्व मद्रुग सर्व मद्रुग

[illegible]

दूका॥ पिजम्बु॥ आनन्द॥ कुरुवा यनन्द॥
महाविद्या ॥ वाजपयी दू॥ धीमूलस्तनरु
दाविकायेया दूका॥ का ॥ ददयायया
दि॥ मूलमनुपवलि॥ मम ॥ सुमनुपी ॥ सि
हासनपीरिपी ॥ पपीरिद्विशापक्षयसीदाः
हापसीदाहदियासिद्धिसमयवक्रपादूका॥ वे
जडकानकयलिक्किहसर्ववेपीददयायया
दूका॥ धननवलि॥ आवाहनादि॥ यानिमूदी॥
विन्दुयिय३॥ ॥ यियाजलि॥ वेजदू॥ धीमूल
धनीययपादूका॥ वलि॥ ॥ वेज ॥ दू॥ दू॥
दू॥ गिरास्वकुन्दमहाकुरुवायया दूका॥
वलि॥ ॥ ममहाकालायापादूका॥ ३॥ वलि
॥ ॥ वेज ॥ दू॥ वाजपयददू॥ डयव ॥ विपम
दनीदू॥ सदावद्व ॥ र्त्वासा ॥ र्त्वासा ॥ मयहवपा
दूका॥ ३॥ वलि॥ वरुग ॥ आवाहनादि॥ यानिमू
दी॥ ॥ गिरास्वकुन्दमहाकुरुवायया दूका॥
वलि॥ ॥ गिरास्वकुन्दमहाकुरुवायया दूका॥
वेज ॥ अख ॥ म ॥ गुलाकाली ॥ वार्कय ॥ नववावरी

गन्धदं दलितं यन. तस्मै पीतु व वनमः॥ उव
वृद्धा उव विष्णु. उव द व म ह ष्व वः॥ उव द व
उगत्तर्व. तस्मै पीतु व वनमः॥ **वे** य व म उव
स्थानमः॥ **वे** य व म षी उव स्थानमः॥ **वे** य व म
वाय उव स्थानमः॥ यदा सनाय पादकी॥ कू
मा सनाय पादकी॥ या। **वै** श्रुत विव वली॥
वे ७ रं सकल ग फ प्रथम निश्रु न न ग कि धा
म श्रु श्रु य रुट पादकी॥ व द म द या म ख व व
नी॥ **वे** ७ रं दू रुट व द पं ज व स्वाहा॥ द ग दान
म ग नी॥ रं व ल म क ल क ल म व ल डी दू रुट
स्वाहा॥ ॥ न्या मः॥ रं सकल ग फ प्रथम निश्रु
न न ग कि धा म श्रु श्रु य रुट॥ क व (ग ध नी ४॥
रं य व म हं सि नि सु व क्ता तो ग कि धा म श्रु श्रु
र्या न मः॥ रं नि बा ण मा (न द रु फि ग कि धा म
न ऊ नी र्या न मः॥ रं वि ष मा य द्र व य ग म निः
अ ना दी वा ध ग कि धा म म ध मा र्या न मः॥ रं स
क ल द वि ता वि ष क्ता द ल नि स्व त नु ग कि धा
म श्रु ना मि का र्या न मः॥ रं स वा य द म्हा वि तः

[illegible]

याम्हा विमविलिखल फल कि धाम्न न लजया य
वोषट् ॥ खं सकल ॥ फल प्रमथ निश्रुन न ॥
कि धाम्न न श्रुता य रुट् ॥ ॐ र्यग न्यासः ॥ ॥ गं लू
म (ध) ॥ अं ददि ॥ धा नो लो ॥ उं मख ॥ को वा मना
॥ यट् ॥ दू द दना ॥ यट् ॥ हा वा म न ॥ दू द
द न ॥ को वा म क (ध) ॥ को द द क (ध) ॥ न लि
(ध) ॥ मः ॥ उ ॥ ॐ नि न व द्वा व न्यासः ॥ ॥ जलः
पाण पूजा ॥ खं को धी जल पाण सनाय पादः
को ॥ खं को धी द्या जल पाण रु द्वा वि काय पादः
को ॥ खं द द द्या या य र्या दि ॥ आ वा ह ना दि
॥ धे न मू डा ॥ गं य र्या ॥ खं सि द्धि लक्ष्मी वि द्य रु
न व र्य वि क धा म हि न नाल लक्ष्मीः य वा द या र ॥
श्रु ति वि श्रु न ॥ ॥ अ र्य पाण पूजा ॥ खं को धी अ
र्य पाण सनाय पादः को ॥ खं को धी द्या आ न न
रु व वा ये वोषट् ॥ खं को धी र्वा मः ॥ मः मः
य वा द वी अ म न व म २ स्वा हा ॥ द द्या (ध) ध न
॥ रियां जलि ॥ उं को दू द द द द द को न मः ॥ ३ ॥
खं द द या य र्या दि ॥ आ वा ह ना दि ॥ या नि मू डा

पचादवाजमस्तवमस्वाहा॥द्वयमस्तव
 ॥शिरांजलि॥ॐ ह्रीं कूं हूं हूं हूं कानमः॥३॥
 खूं हूं दयाय सादि॥आवाहनादि॥यानिमूर्त्ता
 ॥॥ककुप्रमदयास्तवउद्धिः॥ॐ ह्रीं धीं धूं
 ह्रीं ह्रीं धूं धीं धीं वे॥॥आत्मपूजा॥खूं आत्म
 न वन्द नं पादका॥खूं अक्षतं पादका॥खूं वी
 नरुस्य पादका॥खूं सबजनमाहिनी पादका
 ॥ॐ ह्रीं कूं हूं हूं हूं कानमः॥आत्मनय्यं पा
 दका॥खूं सकलगणकृपमथनिश्चयदृष्ट॥
 अननमस्तु॥आत्मसिन्धुमिष्टयन॥३॥ध्व
 नं आत्मपूजा॥॥आवाहनं॥खूं ह्रीं धीं यासा
 पनायनाय देवी खण्डखगनूपिणी॥सूत्रलाक
 गतायानि॥आयानुहं मधुल॥ॐ ह्रीं आवाहि
 य आवाहयामि॥॥शिवद्वयपूजा॥खूं ननास
 नाय पादका॥खूं मयनासनाय पादका॥खूं मू
 षासनाय पादका॥खूं (ध्रुव) यस्तु वदी पदमूर्त्ती
 दवी महाधी कन्दर्पया लाय पादका॥वलि
 ॥खूं धीं धीं कूलपूजवदकनाथाय पादका॥

वलिः॥ खूं गं गी गूं गः॥ (लौ कूलगणेश्वराय वा
दूकां॥ वलिः॥ आवाहनादि॥ गऊं नी दलु ग
ऊमूडां॥ ॥ यागिनी॥ सिंहासनाय वादूकां
॥ ॐ यां यागिनी स्वायादूकां॥ वलि॥ आवाहना
दि॥ यानिमूडां॥ ॥ दद्यासनयूजा॥ खूं डीं प्री
आधावः॥ कथं नमः॥ डीं प्री अनन्तासनायः
नमः॥ डीं प्री अनन्तासनाय नमः॥ डीं प्री क
न्दासनाय नमः॥ डीं प्री नात्रासनाय नमः॥ डीं
प्री यथासनाय नमः॥ डीं प्री यथासनाय नमः॥
॥ डीं प्री कः॥ नासनाय नमः॥ डीं प्री कर्त्तिकास
नाय नमः॥ धर्माय नमः॥ हानासनाय नमः॥
॥ वेवाग्याय नमः॥ ऐश्वर्याय नमः॥ अधर्माय
नमः॥ अहानाय नमः॥ अवेवाग्याय नमः॥ व
त्तवदिकापीठाय नमः॥ लंडाठियानपीठाय
नमः॥ वंजालीधलपीठाय नमः॥ वं घूर्णगिनि
पीठाय नमः॥ र्यं कामवृषपीठाय नमः॥ ॐः
डीं प्री ब्रह्मयथासनाय नमः॥ श्री महायथाः
सनाय नमः॥ ॥ ध्वनी॥ ॐ ॐ खूं महां न काम

प्राणयनमः॥ यकोमदूयप्राणयनमः॥ ॐ
कीं प्रीतुं यतासनायनमः॥ श्रीमहायताः
सनायनमः॥ ॥ श्री ॥ ॐ ॥ महातजाम
शीलक्षी, वसिष्ठाद्यमृतयरा। पंचवक्त्रादश
शुभा, विषयवनयनयूता॥ १ ॥ ॥ ॐ ॥ महातजाम
दवी, महायतायविस्मिता। मारुकाष्टकमध्या
ॐ, सिद्धियागिनीयुजिता॥ २ ॥ दावितास्यान्तः
लिहना, दालादूयकृत्तनजगुता। उक्तासाकु
सया। गण, वालयन्कलयवतान्॥ ३ ॥ कविदी
थन्कावित्कथा, कविर्त्तननमवलाग। कवित्
जत्कवित्याल्य, स्वतन्त्रकायवरुते॥ ४ ॥ ॐ
नासारुवलेयका, उव। गन्धविस्मिता। याग
कृष्णधवादवी, ववदारुययालिनी॥ ५ ॥ सव्य
हस्तेद्वर्तयद्, जेलायका। रुकावर्त। वामरव
दाहमरूपं, दक्षिणगुलमूतम॥ ६ ॥ अथर्व
कथर्वनीदं, कृष्णजामवपूविनी। सव्यहस्ते
कृष्णवे, मूर्ध्नि। गालितसादक॥ ७ ॥ वामशुक्रः
लसंदिया, महावत्तयदीयकी। यथापश्यति

[illegible]

[illegible]

[illegible]

गंगा उन्मुखी मयूजा ॥ जी प्री व न नाथ प्री पादुका ॥
 ॥ जी प्री द ग क न न नाथ प्री पादुका ॥ जी प्री क्रा ध
 मूनि नाथ प्री पादुका ॥ जी प्री व नि ष मूनि नाथ
 प्री पादुका ॥ जी प्री ज य द ध नाथ प्री पादुका ॥
 जी प्री क काल डा म्बी अम्बा पादुका ॥ जी प्री मा न
 की अम्बा प्री पादुका ॥ जी प्री वी रा व लि डा सि नी
 अम्बा प्री पादुका ॥ जी प्री खि रु व न न न न नाथ प्री
 पादुका ॥ जी प्री वि ज य नाथ पादुका ॥ जी प्री व
 म द व प्री पादुका ॥ जी प्री ग द्वा न न न नाथ प्री पा
 दुका ॥ जी प्री रु डा र नी व ष व न नाथ प्री पादुका ॥
 जी प्री य द्वा न न न नाथ प्री पादुका ॥ जी प्री ण् क
 न न नाथ प्री पादुका ॥ जी प्री अ उ व द्वा न न न ना
 थ प्री पादुका ॥ जी प्री वि न न नाथ प्री पादुका ॥ जी
 प्री वा धा न न न नाथ प्री पादुका ॥ ध र न व लि ॥ ॥
 गंगा उन्मुखी मयूजा ॥ रं मू उं ज मू नी पादुका
 ॥ रं मू रु मू नी पादुका ॥ रं मू मं मा रु नी
 पादुका ॥ रं मू अं अ क र णी पादुका ॥
 ध र न व लि ॥ ॥ गंगा उन्मुखी मयूजा ॥ रं

[illegible]

अम्बायादूका॥ जे १ को प्रीखु खीखेनीदवी अम्बाया
दूका॥ जे १ को प्रीखु विजालीदवी अम्बायादूका॥
जे १ को प्रीखु यमजिह्वादवी अम्बायादूका॥ जे
१ को प्रीखु जम्बूकणी अम्बायादूका॥ जे १ को प्री
खु यथादवीदवी अम्बायादूका॥ जे १ को प्रीखु
बोवमातादवी अम्बायादूका॥ जे १ को प्रीखु उ
लूकीदवी अम्बायादूका॥ जे १ को प्रीखु कर्व कि
नीदवी अम्बायादूका॥ जे १ को प्रीखु काकिनीद
वी अम्बायादूका॥ धननवल्लि॥ ॥ ननासुवदू॥
को पादूका॥ प्री पादूका॥ खू पादूका॥ धननवल्लि
॥ ॥ वद्धापवाक्यप्रशङ्गा॥ खू यत्रमदं सिनिमवदू
तागकिदयनाथप्रीपादूका॥ खू निबोपमार्ग
यनिर्यरुकितागकिगिवनाथप्रीपादूका॥ खू वि
षमायप्रवप्रशमनिश्रुनादिवाधगिरवानाथप्री
पादूका॥ खू सकलद्विगाविद्युक्तादलनिस्व
तनुतागकि कवचनाथप्रीपादूका॥ खू सबायदी
काधिनननिश्रुलूकतागकिनयनाथप्रीपादूका
॥ खू सकलग्रयसमनिश्रुननतागकिअशुना

धधियादूकी॥ धननवलि॥ ॥ मन्दा॥ (मन्दा
नयूजा॥ वेज्या॥ जाकिनीअवायादूकी॥ वेज्या
धोखेनावाकिवेनीअवायादूकी॥ वेज्याधोः
खेनावेलाकिनीअम्वाधियादूकी॥ वेज्याका
किवेनीअवाधियादूकी॥ वेज्या॥ किनीअ
वाधियादूकी॥ वेज्या॥ हाकिनीअम्वाधियादू
की॥ धननवलि॥ ॥ वेज्या॥ जादूजा॥ खेजाली
धनपीभययादूकी॥ खेयू॥ गिविपीभययादू
की॥ खेकामनूयपीभययादूकी॥ खेडाठियान
पीभययादूकी॥ धननवलि॥ ॥ नगाविगकि
यूजा॥ धो॥ दूवेवडावेलावनीयदूदूदूदूदूदूः
खाहा॥ उं॥ दूवगलामूखीमद्वदूखीनीमूखीवावे
सूयजिदूकीलीयश्वदिनागयदू॥ उं॥ खाहा
॥ उं॥ दूवाजप्रददू॥ उं॥ व(उं॥ वगमदिनीदू॥ उं॥
सदावदू॥ रत्नीमां॥ रत्नीसू॥ रत्नीनमः॥ खाहा॥ ध
ननवलि॥ ॥ नगासध॥ दूयूजा॥ (धू॥ धो॥ धीः
मकलसीहाववलाकटकेयपालधियादूकी॥ धू॥
महाव(उं॥ रत्नीकषणिकालिसन्धानदू॥ रत्नीकी॥

गनवाल ॥ ॥ गतामय द्रव्य पूजा ॥ (ध्रुवाग्रः
 सकल सहाय वलात्कटकेण पालयिष्यादकां ॥ ध्रुवा
 महावपुर्गसं कर्षयित्वा लिसन्धुनदं हं श्रीं कां
 हिं महासिद्धसमयं हेनविद्यावलम्ब्य वनप्रद
 स्वाहा ॥ श्रीं हिं कां महासुखि वपुलम्ब्य सिद्धं वि
 रुद्रं ॥ कां धीं रुद्रं रुद्रं स्वाहा ॥ रुद्रं नमस्कृत्य विसि
 द्धं लम्ब्य वीरुद्रं स्वाहा ॥ वलि ॥ ॥ गन्धपूजा ॥ कां
 धीं रुद्रं वनप्रदनाथं धीं पादकां ॥ कां धीं रुद्रं अरुणना
 थं धीं पादकां ॥ कां धीं रुद्रं कलनाथं धीं पादकां ॥
 कां धीं रुद्रं खड्गनाथं धीं पादकां ॥ कां धीं रुद्रं मूषुन
 थं धीं पादकां ॥ कां धीं रुद्रं शिखलनाथं धीं पादकां ॥
 कां धीं रुद्रं अंकां नाथं धीं पादकां ॥ कां धीं रुद्रं खड्गना
 थं धीं पादकां ॥ कां धीं रुद्रं कपालनाथं धीं पादकां
 ॥ कां धीं रुद्रं यागनाथं धीं पादकां ॥ जं जं द्यौं आनन्द
 गकिरे ववानन्दवीना विपत्तयम् ॥ पादकां
 ॥ वलि ॥ ॥ जं जं अद्यावदां धीं धीं न ॥ कां धीं
 नद्यान्नं नदं सर्वतः सर्वं सर्वं सर्वं सर्वं ॥
 कां नूतनं नूतनं नूतनं ॥ जं जं वदं कडिनि

धुं गला कर्म नीला कासांगदा वलि कां मुं स
 हा का रुका विलिखे सो सः पादकां ॥ वे ज न मा
 रुग वति धुं कृदिका ये कां कां दू या व अ या व अ
 या वा म खि कं कं किलि २ वि च पादकां ॥ वे ज
 न मा रुग वति धुं कृदिका ये मूं मूं मूं दू अ प न
 म अ या वा म खि कं कं किलि २ वि च पादकां
 ॥ वे ज रुग वति सिद्ध मूं मूं मूं कृदिका ये मूं मूं मूं
 ख ग वे या व अ या व अ या वा म खि कि
 लि २ वि च पादकां ॥ धन न वलिः ॥ ॥ रिया जलि
 ॥ दुं कां दू हां दुं कां कां न मः पादकां ॥ वलिः ॥ म
 उं ग ॥ गायत्री ॥ रुं सिद्धि क वानि कां दू मूं दू न मः सा हा पा
 दकां ॥ ३ ॥ वलिः ॥ ॥ रिया जलि ॥ वे कां पां वे कां
 सोः कां व क व क म हा या न यी ॥ १० ॥ य य य ना
 था ॥ न क रु या द ग वि का य क जा प ह्व य
 स य ॥ कि रु य नी न क न न क्रिया ग ना नी न

साः कुर्वन् वक्रवक्रमहान्यानां प्राचिनाना
था नृपतकस्य दशविषयकजाग्रत्स्वप्न
सुषुप्तिरुपयुक्तानि तन्महानक्रियाः प्राक्तनीत
पर्वदेवकस्वप्नपरादिप्रामाण्यविषयसूच
नीददीनृपिपादकाः ॥३॥ वलिः ॥ ॥ शिवांजलि
॥ ॐ ह्रीं कूं हूं लूं दूं कूं नमः पादकाः ॥३॥ वलिः
॥ गायत्रि ॥ ॐ सिद्धिलक्ष्मि विद्महे नवत्यधिकधाम
हि। सन्नालक्ष्मीः प्रदादयाग ॥ वलिः ॥ ॐ ॥ आवा
हनादि ॥ यानि मूर्धा ॥ नयले ॥ ॐ तिष्ठ हवदगुलि
विधि ॥ ॥ गंगाधारासालकावलि पूजादानक ॥
काङ्कपाटसवलिम् ॥ ॥ गुदनमस्कन ॥ न्यासः
॥ वः ॐ श्रुमाय रुट् ॥ कवलाधन ॥ ४ ॥ वां कनिष्ठा
स्यां नमः ॥ वां श्रुनामिकास्यां नमः ॥ वूं मध्यमास्यां
नमः ॥ वां मूर्धनीत्यां नमः ॥ वां श्रुगुळास्यां नमः
॥ वां कवतत्रपुळास्यां नमः ॥ कव न्यासः ॥ ॥ वां
द्वययायनमः ॥ वां शिबमस्वाहा ॥ वूं शिखायवा
षट् ॥ वां कववायदू ॥ वां नृपस्योयवषट् ॥ वः
ॐ श्रुमाय रुट् ॥ ॥ जलपाशपूजा ॥ जलपाशस

नायपादकी॥ वं॥ उलयाषरुहावकायपादकी
॥ षष्ठं॥ आवा॥ हुनादि॥ धनमूडी॥ गायत्री
॥ ॥ अथ पाषण्डा॥ अथ पाषासनायपाः
दकी॥ लंलंलंलंलंलंलं पवमाननअथपाषासा
यपादकी॥ वं॥ धीअथपाषरुहाविकायेपाद
की॥ षष्ठं॥ आवाहुनादि॥ यानिमूडी॥ ॥
रुतपुद्धि॥ आत्मपूजा॥ धीर्षवहमिपुत्रानेक
मयदनिहिनानन्द॥ किंमूलीमासुद्धिनायव
पुष्कलकलकलगनीपवकवान्मषदं॥ वल्लभा
पवकान्मत्यनत्रपिचवुर्वततल्लगामपुलद
संष्टकननसो॥ नमतिपुत्रवर्वरुवर्वधीक
जं॥ ॥ वंदंआवादिष्यआवाहयामि॥ ॥ विदव
॥ नवासनायपादकी॥ मयूनासनायपादकी॥
मूसासनायपादकी॥ वैजं॥ वं॥ कन्यदीपमः
नाहुनादविविक्ककणयाला॥ यपादकी॥
जं॥ धीकलपुषवदकनाथायपादकी॥ वैज
गंगीगंग॥ धीकलगलववायपादकी॥ आवाह
नादि॥ तं॥ कनीदपुगजमूडी॥ ॥ यागिनी॥ जगवा

जकायाकलपुवदकनाधायपादका॥विज
गांगीगंगःप्रीकलगापववायपादका॥आवाह
नादि॥गऊनीदपुगऊमूडी॥॥यागिनी॥जगवा
सनायपादका॥जयायागिनीयापादका॥यर्ष
सनायपादका॥गवजसनायपादका॥ध्वनी
वेष्मवीवमहागजाकुष्मवपुवउरुजा॥मूक
टनविविषलजटादूटनमलुग॥॥कल्लकुपु
लविस्तीर्णविगालनयनापुला॥पू(र्ण)न्दमखव
पूलाकम्पयीवासु(र्ण)रुना॥२॥ववदावक्रदा
सूर्यागदाकम्पधवायवा॥सर्वलक्षणासंयन्ना
वनमालाविरुचिता॥३॥वामान्नगामहगानि
दक्षि(र्ण)वपुर्लविगा॥सुप(र्ण)रुमहादिव्यादिव्या
रुव(र्ण)रुविगा॥४॥दृष्टाकावान्नतापीनजगद
मपमापुला॥दावकयव(र्ण)राद्यावेष्मद्यामू
लिबुरुमा॥॥यविवावपूजा॥विगावीपादका
॥रुक्मिनीपादका॥पूजटीपादका॥विषरुद्रः
पादका॥सर्वसिद्धिपादका॥सुमिपादका॥॥
कायपादका॥वलिः॥॥मध्वपूजा॥टप्राक

लानककपि ॥ ययादादकी ॥ ॐ अट्टहास दशायय
दकी ॥ वट्टकी गट्टयादकी ॥ गट्टरुदतीयादकी
॥ अग्निजिह्वा दशययायादादकी ॥ शिखांजलि ॥
ॐ अट्ट ० ॐ टं लं वा पीवेकवीविद्ययादकी ॥ मेम
वन्दनायकेको ॥ उरुववाययादकी ॥ वलिः ॥
॥ ममानयुजामनु ॥ ॐ अट्ट ० ॥ नेनेमस्यापी ॥
विकावअग्निजिह्वायावादकावममानाधिपत
यमहादेववायसामायसगणस्यविवावायन
मः ॥ शिखांजलि ॥ अट्टग ॥ वलिः ॥ ॥ स्वाकमहा
वलि ॥ आं आं दः दशयालायवलिगट्ट २ स्वाहा
॥ आं आं कलप्रवट्टकनाथायवलिगट्ट २ स्वाहा
॥ गं गं गं गं ॥ स्त्रीकलगणववायवलिगट्ट २ स्वा
हा ॥ दं महाकनवीवममानाधिपतयवलिगट्ट
२ स्वाहा ॥ आं सिद्धिवासा ॥ पुष्पवीवलिगट्ट २ स्वाहा
॥ आकाश ॥ वाविनीसवर्गस्यावलिगट्ट २ स्वाहा
॥ सर्वस्यास्तस्यापिगावत्यः सर्वस्य ॐ ददवता
स्यावलिगट्ट २ स्वाहा ॥ ॐ तिस्राकमहावलि ॥ आ
वाहनादि ॥ गं रवमूर्धा ॥ धनकादुपागवलिमः ॥ ॥

[illegible]

स्रीपादकी॥ कूं कूं मदननाविकाये को प्रीक निष्ठा
स्रीपादकी॥ किलि २ विचका कृष्ण ये दः प्रीक
वतल पृष्ठा स्रीपादकी॥ कर्पना सः॥ ॥ न मा
रुगवति दत्त मलाये पीडु व व व काये पाद
की॥ धूं कृडि काये कुलदीपाये पी पृष्ठ व का
ये पा दकी॥ जां जां धूं व व व निख पी द द्दि ल
व काये पादकी॥ ध्या व अ ध्या व अ ध्या वा मूखी व
दू नू पाये पी ड रु व व काये पादकी॥ कूं कूं म
दं नाविकाये पी प मि म व काये पादकी॥ किलि
२ विचका कृष्ण ये पी प ना प व व काये पादकी॥
व कृणा सः॥ ॥ वं जन मा रुगवति दत्त मलाये
जां पी द द या य पादकी॥ धूं कृडि काये कुलदी
पाये जां पी नि व स खा हा॥ जां जां धूं व व व नि
खं धूं पी नि ख ये वी व ट॥ ध्या व अ ध्या व अ ध्या वा मू
खी व दू नू पाये दे पी क व वा थ दू॥ कूं कूं म दं
नाविकाये जां पी न व य या य व व ट॥ किलि २ वि
चका कृष्ण ये दः अ म्हा य दू ट॥ ॥ ने नि मू न न्याः
सः॥ ॥ सिद्धि ल का न्या सः॥ ॥ रे स क ल ग रु प

गात्रिकायै नमः ॥ अथ यद्वट ॥ किल २ वि
धेया कृष्णाय नमः ॥ अथ यद्वट ॥ ॐ नमः ॥
सः ॥ ॥ सिद्धिलक्ष्म्या नमः ॥ ॐ सकलं शुभं
सधनि अननकं किं धाम्न अमु यद्वट ॥ कवणा
धनं ॥ ॐ प्रबम हंसि नि सर्वं कृष्णं किं धाम्न
अमु यद्वट ॥ ॐ निवलिमा नमः ॥ किं धाम्न
अमु यद्वट ॥ ॐ विषमा यद्वट ॥ मनि अ
नादि वाधं किं धाम्न मध्मा नमः ॥ ॐ सक
लद्विगा विष्णु कृष्णं दलनि सुगन्धं किं धाम्न अ
नामिच्छा नमः ॥ ॐ सदा यद्वट ॥ धितवलि अ
लफं किं धाम्न कनिष्ठा नमः ॥ ॐ सकलं
कुपमधनि अननकं किं धाम्न अमु यद्वट ॥
यद्वट ॥ कवणा नमः ॥ ॐ नमः ॥ सर्व
सिद्धि यागिनी नमः ॥ पूर्ववक्तु नाथ यादवकी ॥ ॐ न
मः ॥ सर्वसिद्धि मा रुद्रा दक्षिण वक्तु नाथ यादवकी
॥ ॐ नमः ॥ निर्यादिता नन्दन निता ये ड ह व वक्तु
नाथ यादवकी ॥ ॐ सकल कल वक्तु नाथ यादवकी
यन्मि स वक्तु नाथ यादवकी ॥ ॐ रग वक्तु वक्तु

पालिनेउद्धवकुनाथयादकी॥वकुन्यास॥
खं पवमदंसिनि सवहुता॥किधाम्नददयाय
नमः॥खं निबानमोनेदरुकि॥किधाम्ननिब
सखाहा॥खं विषमायद्रवय॥मनिअनादिवा
ध॥किधाम्ननिखायेववट॥खं सकलद्विता
विषक॥दलनिस्वतनु॥किधाम्नकववायदू
॥खं सवधयदाकाधितवलिअलक॥किधाम्न
नजुययायवोषट॥खं सकल॥फयमथनिः
अनन॥किधाम्नअसुयदुट॥००॥गन्यासः
॥ ॥गंजुमध॥यददि॥थानोको॥कुं मुख॥की
वामना॥यट॥दुंददना॥यट॥हं वामनज
॥दुंददनज॥कावामक॥॥कोददक॥
नंलि॥मः॥००॥निनवद्वान्यासः॥ ॥
जलयाययूजा॥वेजखंकीप्रजलयायासना
ययादकी॥वेजया॥आनन्य॥किरेववानन्यः
वीवाधियनय॥वेजया॥प्रजलयायरुद्वान
काययादकी॥वेजया॥कुंकीदुंदहंकुंकीः
कोनमः॥षडंग॥आ॥वाहनादि॥धनमदी

[illegible]

दिगानन्दगकिस्त्रीमासुष्टिन्नाथचरुर्ध्वस्वक
लकुलगर्ग्यचर्कवान्यषट्क। चत्वात्रायचक्रान्य
नूननविचरुर्नगत्त्वगामलुलदसंष्टुऊन
नसो नममिगुववर्ननेनवर्ग्याकऊ॥६०॥
वादिष्यन्वाहयामि॥ ॥ यं ववलिदिय॥ वै ज
मयनासनायपादका॥ वै ज धीकीकुलपूव
दकनाथायपादका॥ वलि॥ वै जनवासनायय
दका॥ वै ज (थो) पस्तबद्धीपदमृकादवीमहाधी
कृष्णपालायपादका॥ वलि॥ वै ज गवासनाय
पादका॥ वै ज यागिनीयापादका॥ वै ज यक
विनयागिनीनीपी॥ काकृष्णसहजाकागजाग
कृजाकुलजासीदाहजायकविनयागिनीनीश्व
वीरुवनी (गा) वनी एकाद्वनी द्वद्वनी श्रद्धनी च
उः यं वषट्सकासूनवाद्धवीर्णागीर्यगामिनीनी
य (था) पपन्नोनी वलिगृह्ण २ स्वाहा॥ यागिनी वलि
॥ वै ज गवासनायपादका॥ वै ज धीमीसिद्धिवा
म (लु) ध्वनी वलिगृह्ण २ स्वाहा॥ ना ॥ अ॥ वलि॥
॥ वै ज मूवासनायपादका॥ वै ज गंगीगंगी (गंगी)

[illegible]

[illegible]

रुद्राविद्याय पात्रं नृदूकं ॥ अथ जन्म ॥ आनन्द
किं नृवानन्द ॥ श्रीमहाविद्याया ॥ जन्मनीः
ध्यायानवासायुवमधुलरुद्राविका ॥ येयादूका
॥ ॥ रुद्रदयाययादि ॥ आवाहनादि ॥ यात्रिः
मन्दो ॥ ॥ यथासनाययादूका ॥ जन्म ॥ ध्याय
नृपकिरुद्राविकायेयादूका ॥ वलिः ॥ ॥ य
थासनाययादूका ॥ जन्म ॥ ध्यायविक्रमरु
द्राविकायेयादूका ॥ व ॥ लिः ॥ रुद्रासनाय
यादूका ॥ सिंहासनाययादूका ॥ जन्म ॥ आन
न्द ॥ किं नृवानन्दवीनाविपनयम् ॥ ॥ ध्याय
॥ नाथस्व ॥ किं सिंहाययादूका ॥ ॥ वलि
॥ ॥ वक्रान्नादिपूजा ॥ गहं सास ॥ नाययादू
का ॥ जन्म ॥ सासनाययादूका ॥ मयूनासनायया
दूका ॥ गन्ध ॥ सासनाययादूका ॥ महिषासनाय
यादूका ॥ यथासनाययादूका ॥ नवासनायया
दूका ॥ जन्म ॥ अथावअमाद्यववदविमलवक्र
यपीविद्ययादूका ॥ जन्म ॥ अथावअमाद्यववदवि
मलमाह ॥ ध्यायविद्ययादूका ॥ जन्म ॥ अथावअमाद्य

वन्दे विमलकोमावी विश्वपादकी ॥ वै ज अथाव
अमाद्यवन्दे विमलवैष्णवी विश्वपादकी ॥ वै ज
अथाव अमाद्यवन्दे विमलवैष्णवी विश्वपादकी ॥
वै ज अथाव अमाद्यवन्दे विमलवानादिवि
श्वपादकी ॥ वै ज अथाव अमाद्यवन्दे विमल
नामणी विश्वपादकी ॥ वै ज अथाव अमाद्यवन्दे
विमलवाम्ना विश्वपादकी ॥ वै ज अथाव अमा
द्यवन्दे विमलमहालक्ष्मी विश्वपादकी ॥ ॥ वै ज
द्वंस महाकालाय पादकी ॥ वै ज द्वा द्वा द्वा द्वा
णपालाय पादकी ॥ ज अथाव ग कथ पादकी ॥ अ
ननासनाय पादकी ॥ कन्यासनाय पादकी ॥ ना
वासनाय पादकी ॥ पशासनाय पादकी ॥ क
वासनाय पादकी ॥ कर्लिकासनाय पादकी ॥ प
द्यासनाय पादकी ॥ सिंहासनाय पादकी ॥ महि
षासनाय पादकी ॥ उम्हासनाय पादकी ॥ निउ
म्हासनाय पादकी ॥ नमः प्रीती वलुवाय नम
ः प्रीती पादकी ॥ प्री नन्द वलुवाये पादकी ॥ प्री प्रव
लुवाये पादकी ॥ प्री वलुवाये पादकी ॥ प्री वलुवाये

सनायपादकी॥ नमः॥ श्रीकावधुवायनम
॥ श्रीकापादकी॥ श्रीकूदवधुयेपादकी॥ श्रीप्रव
धुयेपादकी॥ श्रीवधुयेपादकी॥ श्रीवधुन
यिकायेपादकी॥ श्रीवधुयेपादकी॥ श्रीवधुव
येपादकी॥ श्रीवधुवृपायेपादकी॥ श्रीश्रुतिव
धुकायेपादकी॥ **वे** जय श्रीसिद्धिवासुधुध्वनी
पादकी॥ वलिः॥ **उं** का **ॐ** वाजप्रदं **ॐ** उग्रवधु
विष्णुमर्दनकूटं सदाबद्धरत्नीमं **ॐ** सः नृत्त्य
हवनमः॥ पादकी॥ वलिः॥ **वे** जयसासनाय
पादकी॥ **वे** जयगण्डिपिंगदीकृष्टकधुयेस्वाह
वागध्वनीवृद्धमर्दनविकाविधुपादकी॥ वलिः
॥ **आ** वाहनादि॥ **आ** निमूडी॥ ॥ कर्मपूजा॥ **आ**
धावगकल्यादि॥ नाथपुत्रमधुवासनायपाद
की॥ पंथयतासनायपादकी॥ सिंहासनायपा
दकी॥ **ॐ** स्वाहावद्विधुतासनायपादकी॥ **वे** ज
श्रुवावकाधवावकाधवावकावकवद्वंद्वं सर्वत
॥ सर्वसर्वद्वंद्वं **ॐ** कूदवृष्टः पादकी॥ **वे** ज
ककाकडिनी **ॐ** यलाकाकवलीकीकामाकडा

वनी ह्रीं श्री महा कारुका विली जं सौ मः श्री यादूका
॥ जं जनमाल गवति धुं कृदिक काये डां डां दूयाव
अथाव अथावामरि कं कं किलि रवि च यादूका
॥ जं जनमाल गवति धुं कृदिक कं कं कं दूयाव
मथाव अथाव अथाव नामरि कं कं किलि रवि च
यादूका ॥ जं जं गवति सिद्धं दूयाव दूयाव दूयाव
दूयाव गवति धुं कृदिक कं कं किलि रवि च
विच यादूका ॥ जं जं जं जं जं जं जं जं जं जं
रुद्रवानन्द वीना धियत यथा ॥ जं जं जं जं जं
निकर्म रुद्राविकाये यादूका ॥ जं जं जं जं जं
नन्दानन्द धीम हाविया वा ॥ जं जं जं जं जं
ध्वनी दूयाव धी अष्टाविंशतिका मरुद्राविकाये या
दूका ॥ जं जं जं जं जं जं जं जं जं जं जं जं जं
नादि ॥ धनया निम्न ॥ ॥ जं जं जं जं जं जं जं
यागि निर्या यादूका ॥ जं जं जं जं जं जं जं जं
कां ॥ जं जं जं जं जं जं जं जं जं जं जं जं जं
अनादि विमल पर्वक र्या यादूका ॥ जं जं जं जं
दिता किन्मादि शषट्क र्या यादूका ॥ जं जं जं जं

[illegible]

दूकी॥ **ॐ** जन्मद्विदशालाकपालस्यः पादूकी
॥ **ॐ** जन्मवक्रादिपंचरुतवक्रस्यः पादूकी॥ **ॐ**
जन्मभानस्यापादूकी॥ **ॐ** जन्मसमूहस्यापादूकी
॥ **ॐ** जन्मकवन्धस्यापादूकी॥ **ॐ** जन्मलायेपादूकी
॥ **ॐ** मध्यापादूकी॥ **ॐ** जन्मविशेषायेपादूकी॥
विशेषजलि॥ **ॐ** मन्त्रा॥ **ॐ** वलि॥ **ॐ** दददयायस्या
दि॥ जन्मसमूहस्य मन्त्रायी॥ **ॐ** सिद्धासनपीरि
पी॥ **ॐ** पयायि **ॐ** दशायकस्य सदाहायस्य
दाहदिव्यसिद्धिसमयवक्रपादूकी॥ जन्मकान्
कयत्किञ्चिदुत्तमवन्ध्यायस्यापादूकी॥ **ॐ**
वाहनादि॥ **ॐ** नयानिमूढी॥ **ॐ** सिद्धिमयूजा॥
ॐ जन्मपद्मासनायपादूकी॥ **ॐ** जन्मप्रीकदखण्ड
मारुखण्डमन्त्रखण्डपीरिखण्ड **ॐ** रुद्राविका
येपादूकी॥ **ॐ** वलि॥ **ॐ** विखण्डमूढी ॥ ॥ मूलस्य
नयूजा॥ पद्मासनायपादूकी॥ पंचयतासना
यपादूकी॥ **ॐ** जन्मपद्मासनायपादूकी॥ **ॐ** जन्मसिः
हासनायपादूकी॥ **ॐ** विशेषजलि॥ **ॐ** जन्मप्रीकदखण्ड
मारुखण्डमन्त्रखण्डपीरिखण्ड **ॐ** रुद्राविका

यथादका॥ जे जे वरा मनाय पादका॥ जे जे सिः
हासनाय पादका॥ शिरांजलि॥ जे जे द्रुं आनन्द
गकिरे बवानन्दवीनाधियमयम्यु॥ श्रीपति
समूहस्तनरुहावकायपाद॥ का॥ जे जे
द्रुं॥ आनन्दगकिरे बवानन्द श्रीमहाविद्या
वाजपेयी द्रुं॥ श्रीपति समूहस्तनरुहावि
कायपाद॥ का॥ षष्ठं॥ वलिः॥ ॥ सम
स्तमन्त्र॥ डकान्॥ का॥ आवाहनादि॥ यानिमूर्त्ति
॥ विन्दुयं॥ ॥ शिरांजलि॥ जे जे द्रुं श्रीपति
वरीदये पादका॥ वलिः॥ ॥ जे जे द्रुं द्रुं द्रुं
श्रीगिरास्वकुन्दमहादेववायपाद॥ का॥
॥ जे जे द्रुं महाकालाय सर्वगुरुयमदनाय
महादेववायपादका॥ ३॥ ॥ जे जे द्रुं वाजपे
यि द्रुं उग्रव॥ पुत्रियमदनी द्रुं द्रुं सदाबद्धरत्ना
मां ईशः मरुहव पादका॥ ३॥ वलिः॥ षष्ठं
॥ आवाहनादि॥ यानिमूर्त्ति॥ ॥ शिखण्डमूढया
आवाहनं॥ यासायवायवादेवी स्वप्नस्तुखगनु
धिणी॥ स्रवलाकगतायानि॥ आयातुं ह मउल

पी ३ सिद्धिलक्ष्मीदद्याथेव दंश वाहिष्य आवास
यामि ॥ आध्यात्मिकयनमः ॥ अनन्तसनायनम
॥ कन्दसनायनमः ॥ नाभासनायनमः ॥ कं
नासनायनमः ॥ यज्ञसनायनमः ॥ कलिका
सनायनमः ॥ यदासनायनमः ॥ लंडाडिया
नयी ॥ यनमः ॥ वंजालंधवयी ॥ यनमः ॥ न
पूर्वगिनिपी ॥ यनमः ॥ यं कामदूयपी ॥ यन
मः ॥ **कुं** डीपी ॥ यनमः ॥ यमासनायनमः ॥ दोमहाः
यमासनायनमः ॥ ॥ **अध्यात्म** ॥ **व** जखु महा
गङ्गा मयीलक्ष्मी, वणिक्कोययतयरा ॥ यवव
कादगा रुजा, शिष्यवनयनेयमा ॥ १ ॥ (एतवधू
महादवी, महायमापविस्तिता ॥ मारुका वृकम
(धृष्ट, सिद्धियागिनी पूजिता ॥ २ ॥ दावितास्यान्त्र
लिहना, कालाधूर्ष्टकृती जगताडकुसाकुस
यागिनी, बालयत्कलप्रवर्ताना ॥ ३ ॥ कविद्वीषाः
कवित्कय, कविर्लीकवगवलाता ॥ कवित्कज
कविन्यान्त्र, त्वतन्त्रकाप्रवर्तते ॥ ४ ॥ (गानासार
वलेयमाडवगन्धविह्विता ॥ पाणीकृष्णधवा
वी, ववदारुयपालिनी ॥ ५ ॥ सर्वदुर्मेधर्तखड्ग
गिलाकृष्णकावकी ॥ वामखट्वाङ्गमरुपी दकि
(॥ ६ ॥ नमः ॥ ॥ ७ ॥ नमः ॥ ॥ ८ ॥ नमः ॥ ॥ ९ ॥ नमः ॥ ॥ १० ॥ नमः ॥

[illegible]

[illegible]

वायवायपादका॥सूक्तववायपादका॥दू००॥
 गानायपादका॥श्रुश्रुननायपादका॥दु०वेक
 (९)पादका॥धननवल्लि॥॥झींभीकमगल
 पतिनाथभीपादका॥झींभीकमगलपतिवल्ल
 राश्रवाभीपादका॥झींभीकमवदकनाथभी
 पादका॥झींभीकमवदकवल्लराश्रवाभीपाद
 का॥झींभीकुंकावया०नाथभीपादका॥झींभी
 कसंकननाथभीपादका॥झींभीसर्वसंहाविनी
 श्रवाभीपादका॥झींभीमहाकनवीवभगानभी
 पादका॥(धुं)झींभीसकलसंहाववल्लक्तक
 यपालायभीपादका॥झींभीगदवल्लराश्रवाभी
 पादका॥वल्लि॥॥गगायवपूजा॥झींभीवीन
 नाथभीपादका॥झींभीदशकन्दनाथभीपादका
 ॥झींभीकाधमनिनाथभीपादका॥झींभीवलिष्ठ
 मनिनाथभीपादका॥झींभीजयदधनाथभीपा
 दका॥झींभीकैकालडाम्बीश्रवापादका॥झींभी
 मातङ्गीश्रवाभीपादका॥झींभीवीनावलिडाम्बा
 भीपादका॥झींभीविठुवनन्दनाथभीपादका॥

ॐ श्री विजयनाथ श्री पादुकां ॥ ॐ श्री वामदेव श्री
पादुकां ॥ ॐ श्री गङ्गानन्दनाथ श्री पादुकां ॥ ॐ श्री
रुद्रागोत्रेश्वरनाथ श्री पादुकां ॥ ॐ श्री यक्षानः
नन्दनाथ श्री पादुकां ॥ ॐ श्री स्कन्दनाथ श्री पा
दुकां ॥ ॐ श्री अजवक्त्रानन्दनाथ श्री पादुकां ॥ ॐ
श्री विन्दनाथ श्री पादुकां ॥ ॐ श्री वाधानन्दनाथः
श्री पादुकां ॥ धनं न वलिः ॥ ॥ गंगाजम्बुनादिपू
जा ॥ ॐ श्री जम्बुनी पादुकां ॥ ॐ श्री सुन्दरीः
पादुकां ॥ ॐ श्री ममाहनी पादुकां ॥ ॐ श्री
मां श्री कर्षणी पादुकां ॥ धनं न वलिः ॥ ॥

गंगा अक्षयलवक्षानादिपूजा ॥ ॐ श्री खं श्री
वक्त्राणी देवी असिनामरुद्रवनाथ सहिनाय पा
दुकां ॥ ॐ श्री खं कं माहेश्वरी देवी वनरुद्रवना
थ सहिनाय पादुकां ॥ ॐ श्री खं वं कामाक्षी देवी
वसुदेववनाथ सहिनाय पादुकां ॥ ॐ श्री खं ठं
वैष्णवी देवी काधरुद्रवनाथ सहिनाय पादुकां
॥ ॐ श्री खं गं वागहि देवी डन्मल्लरुद्रवनाथ स
हिनाय पादुकां ॥ ॐ श्री खं पं पून्दाणी देवी कयाः

वैष्णवाय दवाकाधरु बवनाथ साहिनाय पादका
॥ श्री श्री खुं न वावाहि दवी ड न सह रे बवनाथ स
हिनाय पादका ॥ श्री श्री खुं पं न्दाली दवी कयाः
ली गले बवनाथ सहिनाय पादका ॥ श्री श्री खुं यं
वाम पुा दवी रीष पले बवनाथ सहिनाय पाद
का ॥ श्री श्री खुं गं महा लक्ष्मी दवी महा बरे बवना
थ सहिनाय पादका ॥ धन न वलिः ॥ ॥ गगः नि
वादि पूजा ॥ वै श्री श्री खुं निवा दवी प्री पादका ॥ वै
श्री श्री खुं वग वगी दवी अम्बा प्री पादका ॥ वै श्री श्री
खुं माया दवी अम्बा प्री पादका ॥ वै श्री श्री खुं रुद्रा
दवी अम्बा प्री पादका ॥ वै श्री श्री खुं सिखिनी दवी
अम्बा प्री पादका ॥ वै श्री श्री खुं विशाली दवी अम्बा प्री
पादका ॥ वै श्री श्री खुं यम जिह्वा दवी अम्बा प्री पा
दका ॥ वै श्री श्री खुं सदा कर्ण अम्बा प्री पादका ॥
वै श्री श्री खुं यण दवी दवी अम्बा प्री पादका ॥ वै श्री
श्री खुं बीवमाना दवी अम्बा प्री पादका ॥ वै श्री श्री
खुं डलूकी दवी अम्बा प्री पादका ॥ वै श्री श्री खुं क
बीकिनी दवी अम्बा प्री पादका ॥ वै श्री श्री खुं काः

किनीदवीश्रम्भायीपादकां॥धनंनवलि॥ ॥
 नमस्त्रिवंशपूजा॥कीपादकां॥यीपादकां॥खंपा
 दकां॥धनंनवलि॥ ॥षडंगवद्धा॥षडपूजा॥खं
 पदमहंतिनिस्तवज्ञानागकिद्वयनाथयीपा
 दकां॥खंनिष्ठागमार्गदनिस्तवकितागकिगि
 वनाथयीपादकां॥खंविस्वमापप्रवप्रमनि
 श्रनादिवाधगिरानाथयीपादकां॥खंसकल
 दविताविष्णुगदलनिस्तवगकिवैवचनाथ
 यीपादकां॥खंसर्वायदांकाधिनवनिश्रलक
 गकिनरुनाथयीपादकां॥खंसकलगप्रस
 मनिश्रनकतागकिनाथयीपादकां॥धनंनवलि
 ॥ ॥षडङ्गा॥षडपूजाकिनीपूजा॥वेकीयीखंशुग
 किनीश्रवापादकां॥वेकीयीखंमांवाकिनी
 श्रवापादकां॥वेकीयीखंलाकिनीश्र
 म्वापादकां॥वेकीयीखंकाकिनीश्रम्भाः
 यीपादकां॥वेकीयीखंमांमाकिनीश्रम्भायी
 पादकां॥वेकीयीखंमांकिनीश्रम्भायी
 दकां॥धनंनवलि॥ ॥षडङ्गा॥षडपूजा॥खं

[illegible]

[illegible]

स्वाहा पादका॥ वलि॥ वलि॥ वलि॥ वलि॥ वलि॥
पद्मासनाय पादका॥ वलि॥ वलि॥ वलि॥ वलि॥ वलि॥
उत्तिष्ठानय॥ वलि॥ वलि॥ वलि॥ वलि॥ वलि॥
पद्मसन्दीपय॥ वलि॥ वलि॥ वलि॥ वलि॥ वलि॥
दूका॥ वलि॥ वलि॥ वलि॥ वलि॥ वलि॥
दूका॥ वलि॥ वलि॥ वलि॥ वलि॥ वलि॥
गयति॥ वलि॥ वलि॥ वलि॥ वलि॥ वलि॥
कधीमहि॥ वलि॥ वलि॥ वलि॥ वलि॥ वलि॥
वारुनादि॥ वलि॥ वलि॥ वलि॥ वलि॥ वलि॥
॥ वलि॥ वलि॥ वलि॥ वलि॥ वलि॥
उन्नमसका॥ वलि॥ वलि॥ वलि॥ वलि॥ वलि॥
॥ वलि॥ वलि॥ वलि॥ वलि॥ वलि॥
यरुट॥ वलि॥ वलि॥ वलि॥ वलि॥ वलि॥
॥ वलि॥ वलि॥ वलि॥ वलि॥ वलि॥
कववायदू॥ वलि॥ वलि॥ वलि॥ वलि॥ वलि॥
अस्तु यरुट॥ वलि॥ वलि॥ वलि॥ वलि॥ वलि॥
कुन्नास॥ वलि॥ वलि॥ वलि॥ वलि॥ वलि॥
उत्तिष्ठ॥ वलि॥ वलि॥ वलि॥ वलि॥ वलि॥

सनायनमः॥ ॐ धर्मायनमः॥ ॐ ज्ञानायनमः॥
॥ ॐ वेवाहायनमः॥ ॐ लंश्वर्यायनमः॥ अ
ग्न्यादिब्रह्मनान्दी॥ ॥ ॐ अर्धमायनमः॥ ॐ
अज्ञानायनमः॥ ॐ अवेवाहायनमः॥ ॐ अने
सूर्यायनमः॥ घृवादिउहवान्दी॥ ॥ ॐ यद्यास
नायनमः॥ ॐ अग्निमपुलायनमः॥ ॐ लंश्वर
मपुलायनमः॥ ॐ सूर्यमपुलायनमः॥ कर्त्ति
क॥ ॥ ॐ श्रीसनायनमः॥ मध्या॥ ॐ यंजक
ननमः॥ पूर्व॥ ॐ नृमादननमः॥ दक्षिण॥ ॐ
लंश्वरननमः॥ पश्चिम॥ ॐ यंजनननमः॥ उ
हव॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ यथासनायनमः॥ मध्या॥ ॥
वार्त्ता॥ ॐ यंवरकुंमहारीमं विर्यवनसुमव
व। सूर्यकाकवारुसं कपिवकुंमनजसं॥ १॥
दशरिक्तकवयकं नखवावलित्तीकुकं। दक्ष
कलालववनं रुक्मटीकुटिलदनं॥ २॥ कलः
त्वंदीकलसप्र। कलकुक्षतनवह। मुखदावः
वरुत्वाला। यलायदहनदनं॥ ३॥ खड्गशिख
लखदीम। पाशशकृपावर्त। कुमादकोनथासु

लक्ष्मीवल्लभाय नमः ॥ १ ॥ वरुणात्मिकाय नमः ॥ २ ॥
वदन्त्यालाय नमः ॥ ३ ॥ खड्गप्रिय
लख्मीय नमः ॥ ४ ॥ प्रवर्तमानाया नमः ॥ ५ ॥
मङ्गलमूर्तिवर्तिन्याय नमः ॥ ६ ॥ यथावद्व्यवस्थाय नमः ॥ ७ ॥
लक्ष्मीय (धारुमं) यथासनाय विष्णुनामाय
नमः ॥ ८ ॥ वक्राक्षवर्धन्याय नमः ॥ ९ ॥
नलपत्नीय नमः ॥ १० ॥ दृष्टान्तविषयस्य काटिसमम
ति ॥ ११ ॥ नमो वदन्ति वक्रं नानासिद्धमहाव
ली ॥ अख्यं न जावयुषं लीषणं न यनामनी ॥ १२ ॥
पश्चिमंगवर्धनं वक्राक्षं महावली सर्वरु
तयसमनी विषवागनिष्ठकनी ॥ १३ ॥ उरुव
क्रवमुखं वावाहं लीषणं मनः ॥ कक्राक्षननिर्
नोदं दालमानमहावली ॥ १४ ॥ दक्षकपालवि
कर्तृ सावयधानवावली ॥ पातालसिद्धिदाताव
दाववागनिविनागनी ॥ १५ ॥ यहाप्रसावगमनी स
मिषरुविमर्दनी ॥ खवनी नृपिकावासा सातव
विमर्दनी ॥ १६ ॥ उद्धखवागनी धारणी लीषणी नोद
नृपिनी ॥ कर्तृतिखवणी दृष्टदृष्टानी स्मृटनी दृदि

दि॥१२॥ नमः सन्तु महादीक्षा वाजवजः स्ववज्र
सः॥ सर्वसिद्धिजनसन्तु सर्वकामरुतप्रद॥१३॥
सर्वलिहनेषां सन्तु सर्वदुष्टविमर्दनी यत्र वक्र
प्रमथनं यत्राशु धनिनासनं॥१४॥ यत्र सद्यः
गमनं गच्छनां च वक्रकननीं वीर्यादिदवदवर्ण
०० त्याहुरुगन्तु वि॥ ०० तिष्ठानि॥ ॥ चियांजलि
॥ ॐ ॐ ॐ हनू सन्तु महावलवीर्यप्रदा क्रमाय
४ सर्वदुष्टारुञ्जय २ वृक्षाय २ कुक्षु ३ रुट ३ स्वा
हा पूर्वा वक्राय नमः॥ वक्रपूजयेत्॥ ॥ ॐ ॐ
सर्वदुष्टप्रमर्दनीं ३ रुट दक्षिण वक्राय नमः
॥ पीनपूजयेत्॥ वलि॥ ॥ ॐ ॐ वावाहहन २ दह
२ सर्वविघ्नाय ३ रुट ३ रुट ३ वक्राय नमः
॥ कृष्णपूजयेत्॥ वलि॥ ॥ ॐ ॐ क्रीं क्रीं रुट स्वा
हा हन २ दह २ सर्वदुष्टाय रु ३ रुट ३ पश्चिमवे
क्राय नमः॥ खगपूजयेत्॥ वलि॥ ॥ ॐ ॐ खं
खर्द ॥ क ३ रुट सर्वदुष्टदुष्टानक क ३ रुट
उद्ध वक्राय नमः॥ कृष्णपूजयेत्॥ वलि॥ ०० ति
पव वक्रपूजा॥ ॥ ॐ ॐ ॐ सर्वदुष्टपवित्रान

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

८॥ नः श्रुतयदुष्ट॥ ॐ नमो कर्वा न्यासः ॥ ॥
जलपाशयुजा॥ जलपाशासनाय पादकी॥ ॐ न
मो जलपाशरुद्राविकाय पादकी॥ बाहदयाय
॥ ॐ नमो॥ आवाहनादि॥ धनमूडी॥ गायत्री॥

॥ अथ पाशयुजा॥ अथ पा
शासनाय पादकी॥ शिद्वमूदया॥ लेस्त्रेस्त्रेस्त्रे
नूपववत्ताय पादकी॥ ॐ नमो॥ अथ पाशरुद्रा
विकाये पादकी॥ बाहदयाय ॥ ॐ नमो॥ आवाह
नादि॥ धानिमूडी॥ ॥ रुद्रमुद्रि॥ अन्तयुजा॥
॥ ॥ आवाहन॥ श्रीसर्वस्वमपुत्रानककमपदनि
दिगानन्दः किं सुरीमा स्त्रिनिनाय वरुक्षत्तक
लकुलगतपवर्कवान्मषद्व। वत्तावापवका
न्यन्यनवपि वरुवर्ततत्तनामपुलदसंष्टुष्टज
नतस्तेनमस्तुवर्वरेवर्वपीकुञ्जः॥ ॐ नमो॥ आवा
हिष्य आवाहयामि॥ ॥ शिद्व॥ नवासनाय पाद
की॥ मयवासनाय पादकी॥ नृवासनाय पाद
की॥ ॥ थोपुस्तवदीपदम्बकीदवीमहाधाकृष्ट

पालायपादकी॥पीछीकुलपूजवदकनाथा
यपादकी॥गंगीगंग॥गंगीप्रकलग॥एवना
यपादकी॥धननवल्लि॥आवाहनादि॥गङ्गा
नीखससुदी॥॥आधावगकयपादकी॥अन
नासनायपादकी॥कन्यासनायपादकी॥ना
वासनायपादकी॥पञ्चासनायपादकी॥क
वासनायपादकी॥कर्त्तिनायपादकी॥प
द्यासनायपादकी॥हंसासनायनमः॥आर्च॥
अष्टावृटायवाकायादिकयष्टावृटायकः॥कुस
सी॥गालकावना॥नका॥नरुषलाति॥वामलम्ब
नयालि॥स्माद्वदि॥मयपापधक॥पालयामध
वदन्त॥अष्टावृटायवादिहिर्यतः॥शियोजलि॥बौबी
बूबौबीवः॥बौबवन्तमहादेववायनमः॥आवाह
नादि॥धन॥सुदी॥त्वाकमहावलि॥॥लीमस
नपातस॥शि॥नत्वनआवम॥॥उन्नमस्तकव
नामः॥पुंकांरुअष्टायदुट॥पुंकांरुकनिषाय
नमः॥पुंकांरुअनामिकायेवषट॥पुंकांरुम
धमायवोषट॥पुंकांरुसर्जन्यायेदु॥पुंकांरु

नमः॥ पुंकां रुं अमु यदुट॥ पुंकां रुं कानि वाय
नमः॥ पुंकां रुं अनामिका ये वषट॥ पुंकां रुं म
धमाय वोषट॥ पुंकां रुं तर्जुना ये दूं॥ पुंकां रुं
कनिष्ठायां नमः॥ पुंकां रुं अमु यदुट॥ ॥ पुंकां
रुं हृदयाय नमः॥ पुंकां रुं निवस स्वाहा॥ पुंकां रुं नि
खाये वोषट॥ पुंकां रुं कवचाय दूं॥ पुंकां रुं नखाय
यवषट॥ पुंकां रुं अमु यदुट॥ ॥ जलपाशम
नाय पादुकां॥ पुंकां रुं जलपाश रुद्राविकाय पा
दुकां॥ पुंकां रुं हृदयाय वूं स्वादि॥ आवाहनादि॥ ॥ ध
नमूडां॥ गायत्रि॥ अरिष्वन॥ पुंकां रुं निखानाः
धाय विद्महे स्वदुन्द्याय धीमहि॥ तन्ना नो द्युपवाय
यात॥ ॥ अथ याशमनाय पादुकां॥ नूं नूं नूं नूं
नूं पें वनत्राय पादुकां॥ नूं॥ अथ याश रुद्राविका
ये पादुकां॥ वूं नूं॥ आवा वूं हनादि॥ यानि मूडां
॥ रुं नूं पुदि॥ आलम दूजा॥ ॥ आवाहन॥ धी सर्व
हो मधुना नृक मय दनि हि तान न्यहा कि सुहो मा
सुखि न्याय वरु र्क लक लक लग नं यव र्क वान
मद॥ वत्स वार्य वका न्यून नव पि वरु र्क न तत्वः

गामउलदंसी॥ छुडनमस्तेनमतपुनर्वरेव
वंपीकृडं॥ ॐ दं आवाहिष्य आवाहयामि॥
सिद्धव॥ नवासनाय पादुकां॥ मयूनासनाय प
दुकां॥ मूषासनाय पादुकां॥ (प्रो) यस्तु वक्ष्ये य
दस्तु कीदृशी महाधातु क्षयालाय पादुकां
॥ श्री कौकुल पशुवदुकनाथाय पादुकां॥ गंगा
मं ग॥ (स्तो) श्री कूलराज्यय पादुकां॥ धनं व
वलि॥ आवाहनादि॥ गऊनी स्वस्वमूदी॥
ॐ दं अग्निनामरेव वायव्याली॥ किमहिता
य पादुकां॥ ॐ दं वनुरेव वायव्याली॥ कि
महिताय पादुकां॥ ॐ दं वपुरेव वायव्याली॥
कीमहिताय पादुकां॥ ॐ दं काधरेव
वायव्याली॥ किमहिताय पादुकां॥ ॐ दं डः
सरु रेव वायव्याली॥ किमहिताय पादुकां
ॐ दं कपाली॥ रेव वायव्याली॥ किमहि
ताय पादुकां॥ ॐ दं रीवनुरेव वायव्याली॥
किमहिताय पादुकां॥ ॐ दं सहावरेव वायः
महालक्ष्मी॥ किमहिताय पादुकां॥ धनं वलि

गायपादका॥ वडा रान नरु नवाय वामुलुग
किमहि गायपादका॥ वडा रान नरु नवायः
महालक्ष्मी॥ किमहि गायपादका॥ धर्मन वलि
॥ अथात्र काथ पाव जी पाव पावन नरु नरु सर्व
तः सर्व सर्व कुरुं सः को नरु नरु पादका॥
वज्र वज्र कुडि निरुं लला कुरु नरु को का
मीग दावलि को म हा कुरु का विलि वं मी सः
पी पादका॥ वलिः॥ ॥ अवका॥ वज्र को अरु को
आ को ०० को ०० को सर्व रुग रान मः॥ वलिः॥
खवला का क॥ वं को कुरु ली महा रुगि नरु को ३
रुट् राना॥ वलिः॥ ॥ आधा वरु कथ पादका
॥ अनन्ता सनाय पादका॥ कन्या सनाय पादका॥
नाना सनाय पादका॥ पञ्च सनाय पादका॥ कुरु
वा सनाय पादका॥ कर्लु का सनाय पादका॥ प
का सनाय पादका॥ नवा सनाय नमः॥ धर्मन॥ ड
अदा दिरु री का मी रुज गवत मति री॥ गदा य व
कुरुं दव न री मी विनया मरु॥ शिरी अलि॥ राना
रु री री सः॥ अरु री मवा ली धर्मन महा रु ववा यन

म१॥ व० ग॥ वलि१॥ आवाहना॥ गजमूर्धा॥ स्वाक म
 हावलि॥ ॥ डापतिदूजा॥ गवासनाय नमः॥ वि
 र्यांजलि१॥ ॐ ह्रीं श्रीं धीं डापतिदयाय नमः॥ व
 ० ग॥ वलि१॥ आवाहनादि॥ यानिमूर्धा॥ स्वा
 क म हावलि॥ ॐ ह्रीं श्रीं धीं दशपालाय वलिं गृ
 द्वा२ स्वाहा॥ ॐ ह्रीं श्रीं कृष्णवट्टकनाथाय वलिं गृ
 द्वा२ स्वाहा॥ ॐ गौं गं ग॥ ॐ कृष्णलगाय वलिं
 गृ द्वा२ स्वाहा॥ ॐ महाकनवीनमनाधिपतय
 वलिं गृ द्वा२ स्वाहा॥ ॐ ह्रीं सिद्धिवासाय वलिं गृ
 द्वा२ स्वाहा॥ ॐ आकाशवायव्यी सवर्णाय वलिं
 गृ द्वा२ स्वाहा॥ सर्वस्यारुतस्यापि गायत्र्यः सर्वस्य
 ॐ ह्रीं ददताया वलिं गृ द्वा२ स्वाहा॥ ॐ ति स्वाक म
 हावलि॥ ॥

॥
 दासूखाकायाववलिदिय॥ ॐ ह्रीं श्रीं धीं ह्रीं ॥
 अ० न० य० य० क० न० य० ॐ न० वा० न० य० व० ॐ न०
 मूर्ति० य० ड० ल० य० ड० य० ॐ वि० पू० स० व० न० ॥ म० म० क०
 ० य० का० य० य० ० ला० पा० द० क० द० क० ॥ ॐ न० व० न० य० ड०
 य० म० ॐ य० धी० ग० स० था० य० व० ॥ अ० न० क० अ० र्थ० वा० क० य०

मूलेऽप्युल्लेख्यः सुखोऽप्युल्लेख्यः सुखोऽप्युल्लेख्यः सुखोऽप्युल्लेख्यः
० फकायथ्य दलापादेकदष्टकः। जेनावतथ्यउ
याम्बुओषधीः। सुथायवः॥ अककाश्रुथवाक्य
कमलथ्यखवाननः। गोमुखः। थैवद्यः। लालादी
नथ्यपुधावकः॥ कटापाजटालाखा, मका नाः
थ्रुटथ्यवः। टकपालिसुथावान्, कापूदरु
थ्यजामवः॥ टट्टकः। नगीकान्, सुतिहः। सुवि
वसुथा। दनुनाधनदथ्यव. नागकः। थवपुवा
न॥ रुकावावीवसिंहथ्य. रुकटाकामद्यरासूव
॥ थगाकानोववथ्यव. लम्बाथ्यव. ललसुथा॥ पु
कथुपुः। यजालासुः। सुनासादककसुथा॥ कया
नकसुयथ्य। कथपालाडदादना॥ यीवाः। व
लेसुकाव. सुलसुः। कथपालकाः। गवावलेवि
हीनासु. कथपालाथ्यपुदगा॥ एकलिगवदूका
वी. ॥ गानवक्यावदी. महालम्बावनद्यावका
लामुखावसुसदा॥ एकदकवठवाथ. विजाल
वदनावसुता. थलावावापुदावास. यदवपुज
लाम्बवः॥ सकेमसुविधावाग्यः। पदवसमनसु

धानिभक्ष्यप्रवलिष्टवहा निधानमलिहृदकः॥
 वसन्धक्षधनाधका यद्वाटं प्रकाशकः॥ अत्र
 प्यगवर्तविद्या दयानमधकवः सगः॥ वहुष
 विमहावीर्याः यालयित्वासिनाजगतामशक
 तसदाकालं वलिष्टुजानिवदयन्॥ वत्सावस्त
 गरूपाल द्विजाद्यागृहगतवलिः॥ रुरवगगनप्रपदा
 वस्वावाविवलिकादिः॥ नित्याधिकावत्वाव
 १ कथादाब् तनजन वचनः॥ पिङ्गकः॥ प्यः
 ननु पिङ्गलावनः॥ दंष्ट्राकबालाश्रयः॥ कथा
 लारुनः॥ दलाधकाभीनवन्दुग्रीवः॥ नृग
 लिमीनरुल्लुषः॥ पृथ्वीवन्दुसुधाचक्षुः॥ दीपेद
 येसुगुल्लुषः॥ राविमानमरिवायेः॥ क्रमपूजा
 पनायलेः॥ द्यः॥ वायेः॥ गीगायेः॥ सुपिनाकासः
 दासदा॥ वः॥ अष्टुः॥ दंष्ट्राकः॥ अमकायः॥ अवतवः॥ दक्ष
 यालमहावलकपिलजटातानरासुनः॥ विनज
 द्वालासुरवगर्भपृथ्वीवलिष्टुजागृहः॥ रुरववन्दु
 पृथ्वीवन्दुसुधाचक्षुः॥ दंष्ट्राकः॥ दंष्ट्राकः॥ महाजामवाधि
 पतयस्वाहा॥ ॐ नमोऽस्तुते॥ विरुववलिः॥ ॥

छालासुरवगन्धधूपवालपूजाः ८ प्रारं वचनूप
८१७ नू२ मू२ खरुल २ रुं रुं रुं १ महाशमवाधि
पतयस्वाहा ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
नन्दारुद्राय यारुमा कलावेवाय कनका ॥ दिव्य
आग्निमहानि सिद्धिआग्निगणेश्वरी ॥ साकिनी काल
वाशीव डुद्ध कर्णी निमावनी ॥ गङ्गा वाद्या प्रणी सु
ला पवनानी डलामिका ॥ श्री प्रणवमहानन्द का
लामुखी नथे वव ॥ विष्णु वाह किनी वेव यक्षणी
धूर्जटी गथा विप्ररुद्र सर्व सिद्धि मुष्टि ॐ कागथे
वव ॥ द्रुका नीलाश्वरी दीया धूम्राक्षी कलह प्रिया
माननी काकटक्षी व गथा विप्रवचनकी ॥ वाद
णी ध्यान नादा व वकाक्षी विश्ववृषिणी ॥ नय कनी
वीरवीरुली ॥ उक्ताक्षी नवराजनी ॥ वीर रुद्र म
हाकाल ककाली विष्णुगानना ॥ काधनाही मरुद
व वायवंगारुयानना ॥ वाक्कावेव सुवीवीदी व
चिका ॐ श्वरी गथा ॥ वावाही नान सिद्धी व निवद

गी वः षष्ठिका ॥ ॐ दं द व्या महा आग्नि वलिं
 कं उ म स द्या ॥ द्वा वि स ण आग्नि नी स्वा वलिं गट् द्वा
 स व गानि क् व २ स व वि च्चि वि न मा य स व वा
 ग्य य गानि क् व २ द्वा रु ट् स्वा हा ॥ ॐ ति वो स ण
 आग्नि नी वलि ॥

जंजकां सर्वयी (अथयी) नि. द्वाया यद्वात्र मंदव
 ॥ द्वाया यद्वात्र मंदव ॥ सर्वदिग्हागर्भस्त्रिणा ॥
 यागिनीयागवीचन्द्रः सर्वतन्त्रसमागमाः ॥ ॐ दं
 यद्वा महां चक्रं पीना (थाव) वदा मम ॥ अरुकाः
 गा मन्त्रदविष्णु वपादा च नवनाः ॥ सर्वसिद्धिप
 दामन्त्रदविष्णु वपादा च नवनाः ॥ वाचा लं यागिनीनीच
 अदिषन्निमहीतलं ॥ नंदराजवल्लिंदवि. समः
 यावात्र मलका ॥ अहिस्त्रिभुवनः पूष्टि. मीसम
 द्वाहिजीविनी ॥ निहन्तयन्तुद्वयानी यागिनीगः
 ॥ सीकला ॥ द्वाका निहन्तयन्तुद्वयानी यागिनीगले
 द्वाका विज्ञान ॥ निहन्तयन्तुद्वयानी यागिनीगले
 सकला ॥ जंजकादिष्ययीणी सुयः सावा ॥ य
 कोहिना ॥ ॐ यथा धातुसंदाहादिगा सुविदिगा

दूकः विना नानि कृतं यत्तु दूकः नाना आगिना गल
 सकलाः ॥ जेका वादि यथ पीपी सुयः सावाः ॥ ५
 कोलिना डो मधा धातु सदा हा दिगा सुविदिगा
 सवः ॥ मही पाताल वक्रा ॥ ७ ॥ सर्व लाना न वक्र
 वा ॥ यागिना याग यकात्मा समय निष्ठ नु सा धः
 का ॥ १ ॥ वी वक्र मसू वी वक्राः ॥ २ ॥ स र्ध निष्ठ नु द वरा
 ॥ सिद्धा यथ यका वायाः ॥ साधकाः ॥ क्रि ति गा यिः
 नः ॥ न ग व वा ध य म वा ॥ अट व्यान्ता स विद्व न ॥ वा
 पि कू ये क वृ क्वा ॥ ३ ॥ न मारु म पु ल ॥ नाना वृ
 य ध वा न पि वट जा वि वि धा नि वा न व सर्व पि स
 नु क्वा वलि ग्ट क्वा लु स व र ॥ ४ ॥ न व ला ग ना य द न
 ॥ सर्व म र ल य दी पा व र्थ य न्न या क म य
 क वि व्या मि य र्हा र ॥ वलि य य प्र दान न स नु क्वा
 म म वि न्क दा ॥ ५ ॥ सर्व क म लि सि धि क्वा लु स व दा
 वा ॥ ६ ॥ नु म ॥ नि व र कि य द न पा क्वा वा न
 न मा म्भ र्हा ॥ ७ ॥ नि स म य व लि ॥

जे व क्वा न व क्वा ॥ ८ ॥ ख पु पि व क्वा वि व स दा नि ध
 नि ध य व द्वा नान क्वा क्वा व द्वा ॥ ९ ॥ पि नि ग य न

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ वन्दे निधानं ब्रह्माकाशं
नगिनिना, नाशुवातिष्ठान् दत्तवर्कविकीर्ण
स्वयमिति वदता वन्दि तान् यन्नाह ॥ ॐ नमो
कालवलि ॥

[illegible]

सहसाध्य दंगालाक्षय्यालका ॥ ओकि न्यस्यत
धामाता पूतनाटकपूजना ॥ श्री ० जाक्षय्याल
व. ग. क. जासहजास्तथा ॥ यागजामनुजास्थेव
कलजास्थविशिष्टतः ॥ नाना नूपधवाधन्याथा
गिन्नावलवक्तवा ॥ नाना नूपनिष्ठागिन्यः अस्मि
नवकुलसागता ॥ समयास्तनयवान्या तथाव
वेलिकादिर्लं ॥ रुद्रकलासर्वद्विष्टः गर्भपूर्व
दिहन्तः ॥ रुद्रकददन्तमकामानवौदितार्थ

नवकुसुमागता॥समयास्तुनयवान्मागधव
वेलिकांक्षिणी॥रुद्रकलासर्वद्विष्टेर्गन्धर्व
दिरुद्रुष्टे॥रुद्राददनुमकासान्वीक्षितार्थ
ददस्वम॥द्वं२रुद्रवलिगुद्र२स्वाहा॥ॐतिड्य
वधुवलि॥॥खुंतिवारुगवनीवेव
मायारुद्रागधेवव॥किंकिनीविमलालीव॥य
मजिद्रावदकवली॥द्य(प्रादवीचावमाताः
किंकिणीकाकिनीगथा॥सिद्धिलक्ष्मीमुयादस्या
वलिगुद्रनुतसदा॥सर्वविष्टिविनासाय॥स
र्वगुणनिवावली॥सिद्धिलक्ष्मीपुननिर्गुणसर्व
साधनियुविली॥यथादगमलायकप्रसिद्धिः
लक्ष्मीश्चावलिगुद्र२द्वं३रुद्र२स्वाहा॥ॐनिः
सिद्धिलक्ष्मीवलि॥॥वज्रकवली॥कामवृष
पलविपलनिर्गुणालयी॥जयाश्वषट्का॥म
धयी॥शिवधगतिरूपादविष्टिज्ञानकार्य॥आ
वायुः॥सिद्धसंघेस्तदनुकलियुगवधुयानिनि
कन्देयकारुण्यवकायेउदलकसहजादवद
वीन्रमानि॥निर्वाणमहावलि॥

जीवकावाच ॥ ७७ ॥ दविद्यथागस्तु जीवस्याथ
 कृतमया नागलाकयववम् अस्तिसुनमः
 हावली ॥ गयेषांतिष्ठतविद्या अविद्यावनवधि
 गागागृहीतामहादवि संसावरुयनासि ॥ ७७
 यविद्यामहादवि पथमानागृहीतिका कृपा
 वलीतिविकाना सर्वसिद्धिप्रदायिका ॥ ७७ ॥ या
 रुदियानुवक्त दगादिगिरुवनसकपागाल
 मूलक्षयपी ॥ ७७ ॥ विषमवयुप्रथमलक
 वाग्मगा नासि ॥ श्रीस्त्रीवक्तव्य उदधिगुरुन
 ट ७७ ॥ प्रकाशवता व कोलयोयुग्मगियासधव
 प्रवववे अदिया नपधान ॥ १ ॥ जालाखयाग
 मखकलयतिनगवकामनूयसूनुय उऊ ६
 न्यामटहासयटयटहववलाउद ॥ ७७ ॥ यद ॥ ७७
 १ ॥ ७७ ॥ लेलयाविजातयउयतिनिलयहसविन्ना
 चलन श्रीभाकावाउद ॥ ७७ ॥ सवतयथगिबोता
 किनीगा किनीना ॥ २ ॥ काष्मीववन्दुद ॥ ७७ ॥ वि
 उमलयवक्तवाहकलन श्रीवायहकताक
 उवसिविक्ताकसिद्धकणउहाल ॥ ७७ ॥ या

क्रिनागाक्रिनाना॥२॥ का॥ मा॥ व॥ व॥ द॥ ग॥ डा॥ व॥
उमलयवक्कवाहकलम॥ स्त्रीवायहक॥ ठा॥
उ॥ व॥ सि॥ वि॥ क॥ क॥ सि॥ ह॥ क॥ उ॥ ड॥ हा॥ ल॥ ॥ व॥ दू॥ या॥ या॥
वि॥ जा॥ न॥ हि॥ म॥ गि॥ वि॥ गि॥ र॥ व॥ का॥ छि॥ द॥ ॥ ॥ घ॥ या॥ ॥ ग॥
सो॥ वा॥ दू॥ म॥ य॥ द॥ ॥ ॥ रु॥ गु॥ प॥ व॥ न॥ ग॥ व॥ का॥ म॥ न॥ का॥
म॥ क॥ वा॥ ॥ ३ ॥ का॥ ल॥ ठ॥ का॥ क॥ ॥ ॥ वा॥ म॥ ग॥ ध॥ य॥ व॥ व॥
क॥ ल॥ क॥ क॥ क॥ लि॥ म॥ व॥ क॥ म॥ ह॥ स॥ वा॥ ह॥ हि॥ म॥ व॥ क॥
य॥ ट॥ ल॥ या॥ ट॥ ल॥ ठा॥ क॥ वा॥ र॥ वा॥ ॥ अ॥ ॥ को॥ ह॥ र॥ मा॥ ल॥ व॥ क॥
म॥ नि॥ ग॥ ल॥ नि॥ ल॥ य॥ ठा॥ ह॥ व॥ व॥ द॥ ॥ ॥ वा॥ सो॥ व॥ प॥
व्या॥ वा॥ र॥ वा॥ नि॥ वि॥ ग॥ हि॥ व॥ गु॥ ह॥ वा॥ क॥ व॥ सि॥ ह॥ ना॥ द॥ ॥
४ ॥ व॥ ज्ञा॥ र॥ वा॥ री॥ म॥ ना॥ द॥ गि॥ व॥ य॥ व॥ न॥ ग॥ व॥ रु॥ ड॥ मू॥ ल॥
ज॥ या॥ र॥ वा॥ पी॥ वि॥ न्ना॥ र॥ वा॥ क॥ क॥ ल॥ य॥ व॥ व॥ गि॥ वि॥ ग॥ ट॥
य॥ द॥ क॥ म॥ व॥ ल॥ द॥ वा॥ वा॥ ल॥ म्मी॥ वि॥ ग॥ ल॥ वि॥ य॥ य॥
म॥ नि॥ य॥ ॥ ५ ॥ उ॥ द॥ क॥ ल॥ व॥ मा॥ ॥ न॥ म॥ न॥ क॥ म॥ न॥ क॥ मा॥
ल॥ म॥ ल॥ य॥ गि॥ वि॥ गु॥ हा॥ व॥ क॥ द॥ ॥ ॥ य॥ व॥ वा॥ ॥ १ ॥ रु॥
डा॥ क॥ मू॥ ल॥ था॥ न॥ य॥ द॥ ति॥ य॥ वा॥ ल॥ य॥ सि॥ ह॥ क॥ ॥ ॥ ग॥
गा॥ क॥ वि॥ ॥ ॥ वि॥ या॥ म॥ म॥ ॥ ॥ म॥ व॥ व॥ व॥ ग॥ य॥ न॥ ग॥ क॥
वा॥ र॥ वा॥ क॥ ल॥ म॥ या॥ गि॥ न्या॥ म॥ उ॥ जा॥ ॥ वि॥ वि॥ ध॥ व॥

नूनां मातृवत्कृत्स्नानुद्धाः सिद्धाः सुसिद्धाविवि
धवधननादिव्यसिद्धिन्ददनु॥७॥ रव्यन्मामनु
सिद्धिप्रवववविगदंरवगतिवावनन्वा॥१॥ कृत्स्
नं विधनं वलियलितजयं कृत्स्नं सर्वविद्या
दाद्यायुष्यकवित्वनिधिबसुटिकायादकाः
कामसिद्धिः सदा (१) वाददनुश्रुतिपिनिगवः
नालेवदणानुवकाः॥१॥ दूष (२) वाविमावि
यहगणगवलविश्रयार्तव (३) वा वाजदावज
लोद्यविद्य० यशुरयं ध्यायितुं यममम (४) वाः
दुंदकावयनी हहहहहसिनेयवयनीपि
वनी नृप्यनीमनुमानाकिलिकिलितकिलि
१ कोलराध्राद्रिवनी॥८॥ साधुकाकामदूयय
वलवयटहासाहदूकावनादाउलिछानील
कणामवसुदययाविन्दुसुदियगलादुंद
दकावयनी वववविश्रयगवायमानासवावा
जिद्वार्पलालयनी ललललललललतादावयनी
पिवनी॥९॥ कृष्णकासाखदूनीश्रमदगुणन
मादिदवादाकलीया११ कृत्स्नसिद्धिदामायव

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 विवर्णा ॥ २ ॥ कृष्णकासाखदृशीश्रमदुषण
 गाविन्दनादानकलीनागकनसिद्धिदामायत्र
 मयदगतावद्विगावद्भमद्गी ॥ पागर्हालाकपा
 लीगामममनयूतायार्थिवनानूयकाः प्रकृष्ट
 विन्दूयकाः कूलकमलवर्णानात्रिलीकृष्टुलाल
 ॥ १० ॥ विख्याताकृष्टाकिः सवदिः दुर्गिर्वरीष
 लीरुद्रकालीकाकीकृष्णामनूयाश्रुकूलकूल
 गताद्विषाश्रुद्रयनी ॥ साभधीकृष्टिकाख्यावि
 त्रयुयवर्मवासदिवान्वमाद्यवासूपाकोल
 माग्नकूलकमसमयकोलिनीकाकृष्टाख्या ॥ ११
 ॥ आख्यातावासमाग्नप्रकटितनिलयामालि
 नीविन्दूदहाष्टकावमपुलवाश्रुकूलकूलमय
 यागिद्वकप्रविष्टापीनाथासूदगासायववम
 निग(एवचिन्तालीमसूहिः सादवीलाकमानाति
 वसकलसूखायाशुपीनाथवक्त्र ॥ १२ ॥ श्रीकृष्ण
 लब्धमानावशुयगसहितामध्वलिः (कनिकाः
 रत्नापीठसूययनीवक्त्रवकिन्तकलाकोलमा

[illegible]

नमो वावदुःखं वदवदुःखं वावदुःखं वावदुःखं वावदुःखं
ननासयद्वि सत्यं सत्यं नवान्नथा ॥ कावदी
वावदीनाम विद्याय वायवाजिता ॥ विननास्य
वद्वि सवपास्यव सम्यदा ॥ नवपाथकृतं
यस्य सोरुद्रः प्रियं जसं ॥ महापर्वेषु पर्वेषु
नय्यं वलिपूर्वकं ॥ कवाउसाधकसमुक्तं
सूर्ययवदुःखं वावदुःखं वावदुःखं वावदुःखं
हृदलिङ्गद्रु २ स्वाहा ॥ नमस्तु वद्वाममस्वाहा
वलिङ्गद्रु २ स्वाहा ॥ ॐ नमस्तु वलि ॥

यजमानश्रिया ॥ लिङ्गाय ॥ निर्वानकाय ॥
त्वाकमहावलि ॥ क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं
लिङ्गद्रु २ स्वाहा ॥ पीं पीं पीं पीं पीं पीं पीं पीं पीं पीं
वलिङ्गद्रु २ स्वाहा ॥ गं गं गं गं गं गं गं गं गं गं
वायवलिङ्गद्रु २ स्वाहा ॥ दूं महाकनवीव ॥
नाधिपतयवलिङ्गद्रु २ स्वाहा ॥ श्रीं सिद्धिदाम
॥ श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं
नी सवर्णस्यावलिङ्गद्रु २ स्वाहा ॥ सर्वस्यावलिङ्गद्रु २ स्वाहा ॥

धिगावल्गः सर्वस्य ॐ वृद्धवशात्वावलिं गृह्ण २
 स्वाहा ॥ ॐ गित्वा कसहावलि ॥ ॥ ॥
 धूप ॥ दिव्यगन्धसमायुक्तं सर्वदेवाविद्याब्रह्मा
 आद्यानं सर्वदेवानां धूपार्थं प्रतिगृह्यता ॥
 धूपादाय प्ररुगवानविश्वदूषी महेश्वरी ॥ धू
 पनान्नयदद्यसि सुखी गीयवमेश्वरी ॥
 दीप ॥ सुप्रकाशमहागर्जं सर्वतस्मिन्निवाप
 र्ही गवाक्षात्कनकव्याति दीपार्थं प्रतिगृह्यताः
 आतिदग्धमि ॥ ॥ माहनीरुय ॥ यदासनाय
 नमः ॥ ॐ नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 दक्षी ॥ ३ ॥ ॐ नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 महाबर्मादि ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 निवदिर्गुरुका गृहालयवमेश्वरी ॥ नैवयैगृह्य
 गां दवीरुकि मश्रुवर्वाकव ॥ अयमस्य हर्षदवि
 पवश्रुवपवीगति ॥ रुलयव्यतां वल धूपदीप
 ॐ दं नैवयै नमः ॥ ॥ जय ॥ विद्वत् ॥ श्रीगणेशाय
 १० ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 १० ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

वनवकलिर्ग. अगमरुदुसादी. विनर्त्तसिद्धाः
वसादी. यथमकलियू. (ग. काकनखाविकानेन
षां वै यशसिष्या. नवयूवममन. नवम. (अदिः
नक्षो ॥ सन्तानं (गा. विपु. कलकमसकलः
या. उभा. नाकमानं. आदोक्षमपुलाद्ये. यविशि
मरुमली. यूजसकावटुन्द. आदावस्तदगानं
कलकमसकल. मपुलस्तनपूर्व. सीस्तदीशि
व्यमन. त्यउजनरुयक. दिन्दुसिद्धिगिवा. (गो
म. (अविप्रामरुमि. परुवमनरुय. यत्ययस्ता
धिकान. सीरुष्टयनतस्त. नमनपुववदीरेन
दंष्ट्रीकजर्ग ॥

॥ येयासागकिरुगरवा
विपथगनियता. विक्रवाविप्रकावा. नस्यापि
डाठियान. पवकवसहिर्ग. मयससुदीर्क.
जोगह्दीजानेधवाखा. पकटिनिलय. दद्वि. (प
वेवका. (प. श्रीवामपीयू. (प. (० यपुजनरुय
क. त्युविर्गयनविष्व ॥ द्यु. नस्या. (यका. मरुय. म
वनकलियुर्ग. सर्वसि. बालयव. द्वा. विवा
आनसमस्तपवगिवकलालीकनयागवुन्द. द्यु.

द्यः। तदा न गयना वः। द्यु न स्यात्। य काम नूय म
दन कलियुगं सर्वसि द्वालय च द्वा वि का
न न स मरु प न गि व क लाल क र्ग या ग व न दं का
न त्म (प्र) दि य लिङ्गं य न स स र व क र्ब वि न्द नू य र व
द यं क्री नि र्गान न न्द स व र्पं ग दू य वि य व र्मं प द्य
का न वि र्गि न्नी। तं वि श्या रा ग प ग म्म न न रु य वि
म ली वि य पी ॥ ० ल ला ठ। जे प र व या र्क स म र्क स्मि
तिल य ऊ न नी न द ग कि सि रु द्या। जे न ग र्क द व
द वी अ क ल क ल म या न न द धा वि स र त न्द। उं उः
वो क्ता वि न्द र्क ता य उ ज न रु व ली सि द्धि दि द्याः
य दू या। क्री नि र्गान न न्द स व र्क। रु ग म्म दि त य द्या
न न द्या वि य सि द्धा क्री क र्ब नि र्ग त्व का मा न्द र्क
ग व न ग न्नी पी क्क जा द्या न्म मा मि ॥। जे स न्ना न
म न्म मा (ग) ण अ न्व र्ग य त ग द व ता। नि र्ग म ३ यी वि
उं का र्ब सि द्धान्व य य की लि ता। गू क्की र्क ता उ द्या
वा सी व द्वा वि व क द म्ब क ॥ म्ख न स वि र्ग या
क्री अ म्बा व ग उ द्वा सि नी। ए ट ह्म य न्द य र्ब धा क्री क
दा म न्क न रु व र्ब। (ग) ण अ म लि का द वी वा म मा

(नैयकल्ययत॥ अन्वयैयत्ययंवा. स धिका व
 यथाका (८॥) जेन वक्तु गिला रुत न् सि नि पी का
 न वृ प क ॥ का हि धि धि नि वृ द्वा उ सि धि (ये व रु
 सा ग व ॥ उ छ रु त स द व गि या जा ना नि क लाः
 क र्म । वा उ ग ॥ वा व रु द न न्या सी दू ट क र्म ग थ ॥
 । यु जि र्ग सि धि र्द रु द्वा स नि ध्या य नि व द य त ॥ ॥
 न मो रु त म हा मा य . सू द्वा द रु द वा प व । ५ काः
 कि नि वि धि धा र्म . ना दा र्म वि न्द मा लि नी ॥ अ द हा
 य स म स्य त्र . अ व द वि धि धा वि ली । म हा कृ षु ल
 नी नि र्म रु स म (ध्या व रु ति ता ॥ सा म सू यो नि म
 ध्या र्म . वा म द्या पि य वा प व । उं का व वि य हा व रु
 रु का वा द्वा र्म वि ली ॥ वा ला य ग न धा सू द्वा अ न
 न वा द्वा य वा य । रु का वा द्वा क ला धा व . प द्वा कि
 उ र्म मा पि त ॥ स क ला र्म म हा मा य . व व द ला
 क यु जि र्ग । ५ क क ना दि म (ध्या र्म . म र्म क क प रु
 दि नी ॥ अ रु रु स क ला द वि . रु दि नी व द्वा र्म धा ग
 । वि य न्द मा नि रु द वि रु उ र्ग क टि ला रु ति ॥ व द्वा
 वि रु य वी द्वा र्म ॥ ५ व द्वा य स दा नि व ॥ ५ न य द

दिना ॥ श्री गुरु सत्कलादा वि. री दिना विद्वत्प्रधान
 विद्युत्प्रधान निराद वि. रुजंग कटिला कति ॥ वद
 विष्णु प्रदीप प्रदीप ॥ वद प्रदीप सदा निव ॥ पत यं व
 महा प्रदीप पाद मूल वद विष्णु ॥ पला वद ऊन नी
 द वि. नमस्तु ग कि नू पिपी ॥ ॐ ज पि मल मधु सु
 म ॥ वद नू नू पिपी ॥ विन्दु म (प्र ग ना द वी कटि
 ला वा द व दिव ॥ पुषा व क नि कारा स द द सान्नी
 वली विनी ॥ उ मा द द नू ग (गो वी द द ग दि र्य व र्व
 स ॥ सून्य प्र न्या न वा व सु रं सार व या ल धा पिपी
 ॥ ली वा र्व य व म द वि द वि (ला रु व ग मि नी ॥ ना सा
 (य व स म ली (ला म धा सु र य वा हि नी ॥ द न्त्र ख प
 व मान न्य गाल नू द्वि य व र्व ॥ ना द द वि क र्म
 द ॥ उ ला व क म म नि र्ता ॥ सु ल सु र्व र्व र्म क र्व
 ध मा धि र्म प र द र्थ ॥ का य का र्म क र्व र्व र्म र्म र्म
 न्म ना द वि र्म ॥ य वा य व य र्म उ र्व र्व र्म र्म र्म र्म
 र्व ॥ स र्व र्व र्व र्व र्व र्व र्व र्व र्व र्व र्व र्व र्व र्व र्व र्व
 ग कि सु ल म ल व र्व र्व विन्दु वी ज स नि र्ता ॥ अ ग र्म
 र्म म ल र्म र्म र्म र्म र्म र्म र्म र्म र्म र्म र्म र्म र्म र्म

मादेव जयनी वाप नाजिना ॥ उद्वद्वीजमध
रुनमसुपायमावनी । वन्धमाककवीदविष्ठा
उमा नाववस्तिन ॥ अमनीगकि ॥ लन मदा
यूहसमनिन ॥ उमली डा मली गोत्री मायाय
पुपवाहिणी ॥ स्वकुन्दरुनवीदविष्ठा ॥ उमाह
रुनवी ॥ यंवासेवपुनपसु ल्वयाबडा ॥ यकी
हिना ॥ अमनाखनद्वय ॥ पुनमसुहानरु
नवी ॥ दंष्ट्रकटविद्युजिह्वा ॥ गालकादीरुयान
न ॥ नमासिदवदवणी ॥ अथावधावविष्ठा
दालामरवीदगवनी ॥ उमादवीनमामुत ॥ या
गिणीवपुयादवी ॥ गोत्रीलक्ष्मीसवस्वनी ॥ हंस
स्वबाह्वकदवि ॥ गामरवीगकिमालिनी ॥ कोष्
कीपुरुगादवी ॥ दूर्गाकास्यायनीनथा ॥ निर्यक्ति
नासमाख्याता ॥ वका ॥ काकनावना ॥ वाक्कीमाह
॥ यवीवेव ॥ कोमानवीवेवनीनथा ॥ वावाहीवेवमा
हन्दी ॥ वामुताल्वरुयानना ॥ यागगील्वहिदव
णी ॥ कलावृकल्विविष्ठा ॥ अष्टाष्टकधनीदवी
लक्ष्मील्ववद्वपिणी ॥ वन्दीवेवहुआ ॥ गन्याया

हृद्यो वामोऽलं रुयानना ॥ यागनात्वा हृदयः
 गी. कलाष्टकं रवि विविता अष्टाष्टकधनीदवी
 लक्ष्मीर्वदूदू पिपी ॥ वन्द्यो देवदुःशा (नर्या) या
 म्माने सत्यवा वृणी ॥ वायव्यां देवकी वनी ॥ ॐ गा (१)
 वडदा दना ॥ प्रयागा व वृणी ॥ कान्हा ॥ अष्टहासा
 उयनिका ॥ वविणका मुर्क देव. दवी काटं तथा
 धर्म ॥ तथा काली उमा दवि. द वदूती नमा मुता ॥
 रुद्र काली महा माय. वर्म मूला रुया वड ॥ म
 हाष्टमहासान्. नमस्तु गकि वृ पिपी ॥ त्रु
 वस्व गित्वा हान्. दयानाथ क्व वृक्ष म ॥ हानाथि
 नामहा माय. एगदिष्ठातिवदिर्गु ॥ यस्मिदं य
 गस्तारु. विर्मथा (देवमानः ॥ या प्राति विनिता
 कामान् मृगीणां रुव रुवन्त रु ॥ ॐ गिपी गिव
 किममेव सत्वं महा माया को न समाक ॥ ॥

पिङ्गाक्षी वक्त्रकणां. किलिकिलिववर्. किंकिणी
 मालजालं. दक्षस्य क्व वराव. सकल रुयद्व
 पायद्वर्क वनादी. सव्यकं सिंह नाद. ललललल

लवलं ववर्वया मगलं स्वतः प्रमादिना धंयह
गलनमिति कथय्यालनमामि॥

वका वलिं दालनपि नः ऊठा कलापं दाला व
नी वतिवथः दधवयवधुं। सुथ्या दया कल
ककानकलसंग (गोवी) (गोवी) सुतः वदकनाथ
मिहं नमामि॥ ॥ हंता या द्वा तदः रं समिति नः

रुवरुयं सर्वविद्या नकाय गगो गं (गेखउ) (न
गगल गलिगनं सिद्धि सर्वार्थ सावा (उं) दूं मूडा
गजा दू गगय वल गनः आषया नक मं सु. उं
क्रो दूं दं गल (ग) द्वि वद विख गल विधि नाथः
नमस्तु॥ ॥ ॐ कृत्वा नी क्रिया सा. सुववव

नमिना साष्टया मङ्गलाख्या सा (गोवी) सा वदग्न
रुगवति उरु द्वा. मा रुका धर्म मूठा सा वका
सा वविष्णु यह गल स कला. ले ववी कथया लामा
नका नक बुया विविध उव दया या गिनी ली न
सामि॥ ॥ उका ना निर्यया द्वा. हस दूमन

उया वाधवग्नि लिङ्ग वायु वा द्या जिना न
गनिस क वलि ना विन ना द्वा द्यु का निजि न

मा।मा।

॥ उका नानि रयया दो. हस दमन

उया. वाधन अग्निलिङ्ग. वायवां ह्या जिना न

गगिसक वलिवा. विन्दनादा द्वयका॥ निजिने

गाम्धवा. मयूय वमकला. रेववा मनुमूरु

याया दवानवात्मा. गकल उवव वरु वरु वी

कृञ्ग ॥ १॥

॥ वकाणी कमलन्द सो मवद

नि. माहृष्वीली लया. कोमाली विप्रद व्यपास

नकवि. वकाय धावे सुवी. वावाही गलया न

यद्यन मनि. जन्दीष्व वकाय धा. वा मूला गल

नाथ रेवव गल वरु उरु मारुका॥

म(ध) रुरु सनसु. मद मदि न मरुवि. वकाप

धापी प्रगा. वकाप्या दृष्ट पट. स्ववदि गपलव

धी पयाग विद्व. युका गका विग काप. वग

वसह सन्. वका सिंह सुवति. साय विगालि

रुद. काम कल गलगा. पाउ दार्थि सवप्न ॥

मद म्ना मनु सिद्धि. स्य वद वव्य सन. रव गयला

वनीया. गफु सु म्नि वृष्ण. अलि वलि विदय

सु म्नुन सव विद्या. दी धाय रु कविस्व. निधिव

सद्यष्टिका पादका कामसिद्धि. सर्वाष्टिनादवन्त
अलिदलिमहिता श्रेयवन्त्यान्ययुक्ताः॥

ग्यामावका विनया. सुपा रवणमिता. मरुमा ट
गगामि. विष्वास्तिवावनशा. दृधु नवजयनाम
ववानवत्तसारु. दवा (मवसुसारु. वववववकुस
म. वववववकगहार. सामधीकुडिकाखा. विनव
उतवसा. हानदिवाद्यमाद्यः॥ ॥ वन्धूकयति

संनिर्णयि विनयनीमिहासनीमिन्दवी. सर्वप्राप्ति
रुसवगकुदवली. उक्ताम्वनाखविता. यस्यास्य
दगयालिपयविमलीवाकुरुलार्थप्रदीतीवः
न्दमहिषासूवप्रमथनीउम्वध्वानीनोम्वहः॥

काकासः कःमीवणकुदहनः कायकविश्वर
वाकावकाकजनादन. कुरुजगः कुरुकदवा
सूवः कल्याणावरुनीनतययनः प्रसिद्धिया
(गध्व. कीदापाठकपायकाविजयनदवाम
हाहेववः॥ ॥ महाकावमहाबोड. महाक

काजनयरी. सुवदूयमहाकार्य. कुरुकापाल
काविपी. रवकुरुटध्वदव विनैनदालनयरी.

हारे ववः॥

॥ महाकाव महाबाह महाक

कावनयरी। सुवदूय महाकार्य कर्ककापाल

धाविर्षा। रवम दृढ धर्षदर्व विर्षेन दालनयरी।

नमस्क सुमहाकाली। ॥ सुमहावनामनी॥ ॥

माकर् (पुयाविपु रुवना नयहायावनाव वः

कयस्य प्रवृत्ति कव (पु व कपी व क क ल्य। दे

स्या क द य मूदि न सिव सा उ ग रु प हा वा साय

धया रु व रु व ना पीय स व पु का यी॥ ॥

याद वी मधु के ट रु प्र म थ नी या व लु मू उ दि ला

या मा या म हि षा सु व द य क वी या व क वी का पि

या। या सा उ म् नि उ म् दे स्य द व ली या द व द वाः

पिया सा द वी म म व द न द प रु जे प्य ली ज या

व द रुः॥ ॥ उ ह् न्ना म्बु ज क र्त्तिका प वि ग

ना पी सि द्दि ल म्बु प ना क प्य व रु ठि क न्द क पु ध

व ना नि ध क या या य हा। सी सा ना त्र व दः ख य कः

ऊ रु नि नि त्क म्बु सी स र्व दा पी म र्य म्बु म्बु त्वा म्बु जा द

॥ लु जा पु ग र्त्ति ना पा रु वः॥ ॥ आ सा पू व नि

पा य हा व नि ज ग म दः खी क वि डा व पी क सा द

वयं देवि मा न नि सदा स सा न मा हा न न की ॥ प्र य
स्का न नि का न न स न व व य ना य स वा वि न्य स्वी
स या वि ल ग ल ल स रु द्रा धी सि द्धि ल क्ष्मी न मः ॥

॥ या मा न का नि क रु द्रा स्ति ति रा ख नू या सा
मा क्त व द्धि वि प थ द ल म ध र्म स्तु ॥ वि च न वि
रु वि ष या द्धि वि ली न रा वा स्वा रा व रा वि ति प्र वा
य र मा मि का ली ॥ ॥ वे नु (वे व स दा स न

स्य द ध नी म ध ल ला ट प र्णो सोः का नि म व
वृ ग व नी व सी द स्या म म्म नी स र्व न ॥ ॥ या सो वि
प या द्धि दि द्धि ति वि वो र्मा सो स दा रु हि ता ग्नि ना
द स रु या य व सि य व द्य था ति र्मा यी वा द्य र्था ॥

॥ मा या कृ णु लि नी क्रि या म धू म नी का ली क
ला मा लि नी मा टं गी वि ज या ऊ या रु ग व नी व नी नि
वा र्ण रू वि ॥ ॥ कि १ ग क व व न्न रु वि ण य नी बा ग्य
दि नी रु व नी का का नी वि य ना य ना प व म यी मा
ना क्म मा नी र्थ सि ॥ ॥ वे क्म वी वि षू मा र्थ वः

दे र्य दू ग्ना के ना मि नी ॥ रु वी त स्मा न व धू र्मी ग
वृ णा य वि र्मि ति ती ॥ ॥ र व व क ग दा रु स्ता व रु वी

नादमावासास ॥ ॥ वसुधाविवसुमायावः
देवदूतनिकेनामिनी ॥ हवीतस्मानवधुकी. ग
वृथापविर्मास्तिता ॥ गंखवक्रगदाहृक्का. वउवा
द्विविह्विताः ॥ वलदाला महाकीर्ति. नानावन
विविह्विता ॥ हवीपूव्यंजगंधः. सदाह्विता
विनी ॥ स्वर्गमयवपाताल. स्तिनिवृथपसंस्तिता
॥ अहहासमहाक्षर. कउम्वट्टदवासिनी ॥
तिस्तिनिः ॥ पी० नेअर्थ. नावायपीनमास्तुत ॥ ॥
उंकावासनमादृष्टा. मधुपयप्रसंस्तिता ॥ सर्व
आपिपदांशुम्भावनदहंवकुलववी ॥ ॥
नमस्तुहवनवाद्यकल्पवीनंयवायवाहववा
यसूरीमाय. वक्रवयनमास्तुत ॥ ॥
उंकावासनमादृष्टा. वक्रपदापविस्तिता ॥ वय
कावगतांदवी. पीकडिकीनमाम्बई ॥ ॥
सूर्यप्रणामहावाक. कायाहृदयनन्दनी ॥ उव
नक्रनमसानि. वर्वगायनमास्तुत ॥ ॥ नम
स्तुलीमदवाय. कीवकवलमावि. लापथिमस्तु
यावव. उहवागिनिस्वामिन ॥ ॥ पूर्वदक्षिण

पञ्चिमाहवर्गिवा पूर्वदिवासासिका. क्षत्र(गाव
दृष्टतदूर्गहवर्गहवसुनाथायवा. गगनभव
मादिदवद्विभुजः साकादिदाप्रयहा. निर्या न
न्यप्रयीप्रमादितसदावल्पादिदूजाविधि॥ ॥
यथावापयहावापी. कत्रवन्ववतिवावर्पी. ग
ददवविधानीना. गानिहवहुवावर्पी. स्वस्वा
नक्षत्रयालाय. वक्ता न्यादिअसिनाममहाशैः
ववसहिनाय. गणवद्वकथागिनीक्षत्रयालाय
सामावाय. सगणस्यविवावाय. दिगविदिगिर्ः
न्यादिलोकयालायसूचीदाववदारुर्वहु. यज
मानससगणस्यविवापी. आयआवाहमेव
यजजनधनलक्ष्मीसन्निर्गाननट्टिद्वस्तु. यथा
साक्षाद्दलदायनारुवस्तु॥ अन्यशगवर्पीना
स्ति. त्वमवशवर्पीममः। नसात्कानूयरावन
नक्षत्रवक्षयवमभववी॥ ॥ नय्यल॥ श्रीगंध
नासनस्तुवस्तुयहव(गलेववास्तुसूरिः
श्रीवल्गुसनस्तुगणपुत्रवद्वकालाकयालाह
नीलाः। वक्षायक्षाः। सुनीक्षाः। पिरुगणसकला

नाम नस्तु रुव रुय रुव (८) रुव रुव मनु मू (९) रु
ली वल्लु म नस्तु ग ८ पु नू व द्वा ला क पा ला रु
नी न्दा १ व द्वा य द्वा १ सु नी द्वा १ पि रु ग ८ स क ला
मा न वा १ क्ष य पा ला. या नि न्मा या ग य द्वा १ रु ल
ज ल व न र व द्वा १ पा न व न र व द्वा १ पि व नू द
व द्वा १ स व १ स नू द १ स ग ८ पि द्वा १ या नि न्मा १
द श पा ला १ व न व द्वा १ रु व द्वा १ रु व द्वा १ न मः प्री ना
धाय ॥ न मः सि धि ना धाय ॥ न मः प्री कृ उ ण ना
धाय न मः ॥ **॥ द व द्वा गी द्वा ॥** ए को मू लि न
न क धा रि क ग ती. पू (९) रु वी वा स व रु ग गी ग
(८) प मा रु ग व ती निः (९) रु वी द द्वा (८) रु ना गः
म य कृ उ रु वी कृ ल उ पा वा नू ध दि न्मा य द्वा. प्री
वा मा य ८ मा मि वि रु ज न नी द (९) रु वी सि धि द्वा
॥ **॥ स्वा न्मा गी द्वा ॥** अ न्म पू र्व ग ती य वी रु
ग व ती वे र न नू पा लि का रु न क व द्वा ला रु धाः
रु वि रु वी व द्वा म वी वि रु यी. रु व रु व व य व
कृ न व नू व प्री या नि नी र्प व कृ व द्वा को व म वी
व ष द्वा वि म ली मा पा रु नि रु प्री कृ जा ॥ स्वा न क

कायनैवदव॥ माहनीकाय॥ खानविद्य॥ माह
 नीतिवक॥ यजमानआदिनखानविद्यमालका
 स्ता॥ ॥ वलिविस्कर्जनयाय॥ मण्डोय॥ ॥
 साक्षिधाय॥ ॥ वलिक्वायथवथवथायस॥ व
 निकर्मवल्याचनविधिसमाकः॥ ॥
 कर्मवलिया रं आकृति॥ वं १ टं ० ७ टं लं वां वां
 वूं वां पी वे क्वा वि ध्व स्वाहा॥ वं १ द्वां मूं स्वाहा॥
 वूं वूं वूं वूं वूं वूं वूं वूं वूं वूं स्वाहा
 ॥ वूं जा न व द स स न वा म सा म वूं म वा नी
 रु गानि द हा ति वे दः॥ स नः॥ प्र ति ष त ति दू ग न लि
 वि ष्वा ना व द सि धू दू नि ता स नि॥ स्वाय॥ ॥

यजमानवतियार्तं यं व ग य विद्य॥ वूं प वि र
 स्वा वे क्वा स वि रु वं प स व ड नू ना म्प चि द ल
 प वि रु ल सू य न मि लि त स्य त प वि रु प त वि रु
 पू न स्य य त्का मः पू न न क्क क यं॥ ॥ वि वि ध्वं
 म दान क॥ ॥ वा र्म त क पू जा या य॥ ॥ धर्म
 लि स म र्म य र्म स र्म का जा न क॥ आ कृ ति वि द्या॥

पूनस्य यत्कामः पूनं न चकथ ॥ ॥ वाधिध्वध
 मदानक ॥ ॥ वास्मिन्तक पूजायाय ॥ ॥ धर्म
 लि समस्त यश्च सृष्टकाजानक ॥ आकृतिविय ॥
 पुं जाजन्ममध्वनां (गायात्र्यस्य द्वादिवि) वदमान
 ५ (एवम) स नः पिता वसुनव (नरुजायना ह) स
 खानत्यस्त ॥ ॥ पुं दीयाय स्वाय वलाय वदस
 ॥ स्रयजा स्वाय स ह सा अ (धजीवस्य वद) मी ॥ ॥
 पूननाकृति ॥ वासिन्तक पूजाय ॥ पुं वनाकृतिरुज
 ना मा स्रस्य दृष्टस्य मि स्र मिमना त्रि व दस ॥
 समिधं दध्याय ॥ वि (एव द वा स ० रु मा द य गा मा द
 यमिध ॥ स्रयमिध वा व द रु व रु ॥ खान ॥ ॥

१॥ श्री ३ गणेशाय नमः ॥ पुनर्यादूकार्या नमः ॥
अथ महावलि नूयया विधि निरखतः ॥
अथ संकल्पः ॥ अथ स्थादि ॥ वाक् ॥ मानव ॥
धीधीऊय रुपगीनु मन्त्रदववस्माह महास्वा
नामस्व० हानेकं यथाकिं यत्र योशादि स
स्वयाधुनादि रुलाका हविष पूर्वक कल्याय
सस्वर्गवासान ननवनिवसाय अरुलनिवला

कमलहृत्कामसकलगात्रप्रसमननिवलाक
याद्यर्थसूत्रगङ्गिनिविल्वहृलयथागाकिर्न
नावाञ्जनसूययकान्नसहितादनमहावलि
कविषा ॥ ॥ अथयुञ्जन ॥ चित्तत्वेनावम ॥
जांआत्मतत्वायस्वाहा ॥ जांविद्यातत्वायस्वाहा
कुंनिवतत्वायस्वाहा ॥ ॐ अथादि ॥ वाक् ॥ सूः
योय ॥ माहाध्यानात्मनानां जनानांज्ञानव
स्मरिः ॥ कृत्तमूर्ध्ववर्त्यन तनोमिनिवरात्क
र्व ॥ ॐ वनमस्तु ॥ अथपुमपुलाकारं व्याक
थनववावर्वातत्यर्दयतिर्तयन तसोप्रापुवव
नमः ॥ ॥ न्यासः ॥ ॐ ईं सः ॥ अथायदुट ॥ ४ ॥
कवः ॥ धनी ॥ ॐ ईं सः ॥ अथुवास्यां नमः ॥ ॐ ईं
सः ॥ ईं नीत्यां नमः ॥ ॐ ईं सः ॥ मध्यामास्यां नमः
॥ ॐ ईं सः ॥ अनामिकास्यां नमः ॥ ॐ ईं सः ॥ कनि
ष्ठास्यां नमः ॥ ॐ ईं सः ॥ कवतलपुष्ठास्यां नमः ॥
ॐ तिक्कवन्मासः ॥ ॥ ॐ ईं सः ॥ द्वादयाय नमः
॥ ॐ ईं सः ॥ निवसस्वाहा ॥ ॐ ईं सः ॥ निखायवो
षठ ॥ ॐ ईं सः ॥ कववायदं ॥ ॐ ईं सः ॥ नवशः

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ कं सः ददयाय नमः
॥ ॐ कं सः निवस स्वाहा ॥ ॐ कं सः निखाय वो
षट् ॥ ॐ कं सः कववाय दू ॥ ॐ कं सः नववः
याये वषट् ॥ ॐ कं सः अमुय दूट ॥ ॐ नमो
गन्नाम ॥ ॥ अथ याचयुजा ॥ षडं नयुजा ॥ आ
वाहनादि ॥ (धनु मर्दादगय न ॥ ॥ रुत उदि ॥
ॐ कं कानि वृत्तिकलाया गाय दू दूट ॥ ॐ कं कानि
पतिष्ठा कलाया गाय दू दूट ॥ ॐ कं कानि विद्या क
लाया गाय दू दूट ॥ ॐ कं कानि कलाया गाय
दू दूट ॥ ॐ कं कानि न्यागीत कलाया गाय दू दू
ट ॥ ॐ कं सः अमनी मरे ववाय नमः ॥ ॥
ॐ तायुजा ॥ आत्मनसि वय न ॥ आत्मन वन्द
नं नमः ॥ आत्मन यर्षी नमः ॥ आत्मा सनाय न
मः ॥ आत्म मूर्तय नमः ॥ ॐ नमो आत्म युजा ॥
॥ अथ यैव वलि ॥ वै ज म यु वा सनाय वा
दू की ॥ वै ज प्री की कल य ज व दू कनाथाय वा
दू की ॥ वै ज न वा सनाय वा दू की ॥ वै ज (प्रो य
रु व दी पद रु की दवी महा धा दू दू य वाला

यथादूकां॥**वं** जगवा सनायथादूकां॥**वं** जयं
यागिनीयाथादूकां॥**ध**तनवलि॥**वं** जयकवि
नयागिनीनापी० जाकृण जा सहजाजागजाग
कृजाकृलजासदाहजा यकवि यागिनीनाख
वनीरुवनी (गवनी) एकाद्वनीद्वद्वनीयाद्वनी
द्वशुः यव वटसकाछानवाद्वनीलीनीयगमि
नीनाय (थापयेनानावलिगटक्र २ स्वाहा॥ यागि-
वलि॥ ॥**वं** जगवा सनायथादूकां॥**वं** जयं
यासिद्धि वामुष्यवनीवलिगटक्र स्वाहा॥ वा-
मूषावलि॥**वं** जमूषा सनायथादूकां॥**वं** जगंगी
गं (गंगंगंगं) (लोपी) कृलगलष्यवायवलिगटक्र २
स्वाहा॥ गगयनिवलि॥ आवाहनादि॥ दपु गऊ
नी यागि विन्दु गऊ मूषां॥ ॥ जय॥ ली डी स्वा
हा॥ (थी) स्वाहा॥ या स्वाहा॥ ध्रु स्वाहा॥ (लो) स्वाहा
॥ ॥**स्वाहा**॥ (लो) या यि र्गु कृ १० मार्वगगलनन
द्वद्वद्वकं यागिनीवि वामुषा वपु वृषा द
विगुरुयहन विद्विहानगलणी॥ पव्या या ध्रु
पदी यागिनिवमधवलि वि वविहा रुविगा मव

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
विश्वरूपं यद्वर्णं विद्विहानं गणेशं ॥ पृथ्वाया धृ
पदी पानिखमध्वलिहि वर्विगारुविगामैव
कसंयुक्तकानां विविधजनहिगायुकिमूकिः
यदागा ॥ धर्मं यद्वल्ल्याचनं ॥ ॥ शिवद्वयं
॥ नमो नमो नायपादकां ॥ मयूनामनायदूकां ॥ मू
षासनायपादकां ॥ ॥ ॐ ॥ प्रसन्नवद्वीपदमूकां
दवीमहाध्वं कुरुयावायपादकां ॥ ॐ ॐ क
लपुण्यवद्वकनाथायपादकां ॥ गंगागंगा ॥ ग्लोक
लग्ना ॥ ॐ ॐ नायपादकां ॥ धर्मं नवल्लि ॥ आवाह
नादि ॥ स्वस्वमूदी ॥ ॐ ॐ शिवद्वयं ॥
वसुः संस्कार ॥ ॐ ॐ संः अमृतां गमहादेववा
यसदागिवायनमः ॥ निबोधनी ॥ ॥ ॐ ॐ संः
अमृतायद्व ॥ याद्वनी ॥ ॥ ॐ ॐ संः अमृतायद्व
ट ॥ सादनी ॥ ॥ ॐ ॐ संः कववायद्व ॥ ववउ
ने ॥ ॐ ॐ मूदी ॥ ॐ ॐ वसुः संस्कार ॥ ॥ आस
न ॥ आधावगकयनमः ॥ अनन्तासनायनमः
॥ कन्दासनायनमः ॥ नावासनायनमः ॥ यव

सनायनमः॥ कः॥ वासनायनमः॥ कर्त्तृकाः
सनायनमः॥ यथासनायनमः॥ वृषासनाय
नमः॥ सिंहासनायनमः॥ अथ ध्यानः॥ ॐ कं पु
द्गलकसंकाशं कन्दन्दहिमसन्निभं। पुत्रमूर्त्ति
वहावयुः सिंगवन्दनरुषितं॥ सामसुलम
धस्तु मकवर्कशिलावनी। सिंगयथापविष्टं
वद्वयथासननव॥ वहुर्लुङ्गविगालाक्षं वव
दारुययातिनं। पूर्णवन्दनिरुपुर्णकलशं क
मृतायमं॥ दक्षदक्षप्रकलशं वामवचन्दम
पुली। वामावत्सुक्तं दवि मकवर्कशिलाव
नी॥ ॥ अथ वत्सु महादीर्घं ववदारुययातिनां
। ॥ रावर्कवधवां दवी सर्वकामप्रदायिनी॥ नः
हान्तरुः अयन्दव ममृतां अवरुं वव॥ अर्ववः
आयमानाहं सर्वयायदयायव॥ ॥ निध्यान
प्रथममः॥ शिवा अलि॥ ॐ कं सः मृत् अ याय
नमः॥ ३॥ प्रथम॥ ॐ कं सः अमृतां ॥ अविद्यः
हं मरुदवायधीमहि तन्नानुः अवा दयात
॥ ॥ अथ युजन॥ ॐ कं अ वकायने नमः॥ ३

[illegible]

कृतवृषाय नमः स्वाहा ॥ उरुवयश्च योनूष्वयं
ववृषानां वृषा ॥ ॐ एकवृषाय नमः
स्वाहा ॥ ॐ ध्वजपिङ्गलाय नमः स्वाहा ॥ ॐ कृष्ण
पिङ्गलाय नमः स्वाहा ॥ ॐ मध्वपिङ्गलाय नमः
स्वाहा ॥ नियमो वायुपञ्च ॥ वलि ॥ ॐ अन
नाय नमः स्वाहा ॥ ॐ आद्याय नमः स्वाहा ॥ ॐ
यथागलाय नमः स्वाहा ॥ कालगतवृषाय नमः
स्वाहा ॥ वलि ॥ ॐ कृत्वालाय नमः स्वाहा ॥
ॐ विक्वालाय नमः स्वाहा ॥ क्षीमाया गतवने नमः
स्वाहा ॥ वलि ॥ ॐ सहस्रशाय नमः स्वा
हा ॥ ॐ सहस्रवक्राय नमः स्वाहा ॥ ॐ सहस्र
कवचवलाय नमः स्वाहा ॥ ॐ सहस्रलिङ्गाय
नमः स्वाहा ॥ सहस्रसंज्ञाविद्या गतवन्दिते ल
ल ॥ वलि ॥ ॐ एकजटाय नमः स्वाहा ॥
ॐ द्विजटाय नमः स्वाहा ॥ ॐ त्रिजटाय नमः
स्वाहा ॥ ॐ स्वाहाकावाय नमः स्वाहा ॥ ॐ स्वधा
कावाय नमः स्वाहा ॥ ॐ वषट्कावाय नमः
स्वाहा ॥ वलि ॥ ॐ वषट्कवले विज्ञा वृषा ॥ व

स्वाहा॥ तु स्वाहा का वाय नमः स्वाहा॥ तु स्वाहा
का वाय नमः स्वाहा॥ तु वषट् का वाय नमः
स्वाहा॥ वक्षि पञ्च॥ ॐ श्व व न त्वे स्ति गा नू द॥ व
लि॥ ॥ तु रु न थ न मः स्वाहा॥ तु महा रु
न थ न मः स्वाहा॥ तु पञ्च प न थ न मः स्वाहा॥
तु ड मा प न थ न मः स्वाहा॥ तु काला धि प न थ
न मः स्वाहा॥ सदा नि व न त्व व ष ट् पू र्व द ल॥ व
लि॥ ॥ तु ड मा ये क नू प धा वि (ल) न मः स्वा
हा॥ तु क नू २ नू त्रि नि २ नू द्वा सि द वा नां द वं श नि
वान रु न २ द रु २ प च २ म थ २ शु व २ सू व २ नू दः
॥ नि म नू स न व द्वा कृ पि म ल अ काल पि णा वाः
धि य नि वि (ल) श्व वा य न मः॥ नू त्य मा म रु श्व वाः
क र्त्ति का यां नि व न त्व॥ व लि॥ ॥ तु वा म वा
पि न वा म नू पा य स च वा पि (ल) नि वा य अ न ना
य अ ना थ य अ ना पि ना य कृ वा य नू ति नि व न
त्वन व ष दानि॥ ॥ तु गा श्व ना य आ ग पी ० स्ति
गा य नि र्म या नि न धा न हा वा य॥ ॥ तु न मः नि
वा य॥ स च प रु वा य नि वा य पू र्व द ल सा दा स्वा

ॐ गानमस्तु यि न त्प न स व क्ता य अ ध्या न द द
या य वा म द व उ क्ता य स धा जा न मू र्ख य तु न
मान मः ॥ ॐ उ क्ता ति उ क्ता य ग ॥ अ ति ध ना य
स र्व या ग वि कृ ता य क ति नू या य ॐ ॥ व न त ल्व
२ नि द ल ॥ व लि ॥ ॥ ॐ य व म धे वा य ॥ अ व
न ना थ न न वा मि २ धा पि २ अ नू पि २ प्र थ म न
ऊ म् क ञा या ति २ वि धा न त्व या म्य दि ग्द ल ॥ व लि
॥ ॥ ॐ अ नू पा अ न नि ॥ अ धू म अ रु स्म अ न
दि ना ३ धू ३ ॐ रु ३ ॐ रु वः मा या न त्व ने म ल्य द
ल ॥ व लि ॥ ॥ ॐ स्वः अ नि ध न नि ध न नि ध
ना रु व ति व स र्व य व मा न्न न म रु ॥ व व म हा द
व क्ता ल ग त्व का नू ण द ल ॥ ॥ ॐ स रु व ॥ व
व म हा न ज या ग वि य न य मू व २ य म थ २ स र्व
२ रु व २ रु वा रु व स र्व रु त मू र्व य द वा य व द
ल नि य ति न त्व ॥ व लि ॥ ॥ ॐ स र्व ग नि थ
क व व क्ता विल नू य य वः अ वि न अ न वि न अ
मु न मु न पू र्व स्ति न २ सा दि २ रु नू २ य न न २ पि
न २ य नू य ग त्व ड रु व द ल ॥ व लि ॥ ॥ ॐ रु
न रु न ग व २ मू र्ख २ ति व स र्व दः ॐ न मः ति वा
य ॐ न मान मः ति वा य न मान मः ॥ य क ति न त्व
मी ॥ अ नू य ॥ व लि ॥ ॥ ॐ नू य ॥ व लि ॥

[illegible]

[illegible]

सर्वगानिकुनर ०० दं मया प्रपद्य प्रदीपधूः
जामया (धायनी गानिकुनर लिखित लिखित लिखित लिखित
द्रु २ उ न २ म न २ ल २ र व २ र वा हि २ र प ड द ग (लाः
पगानिकुनर ०० दं मया प्रपद्य प्रदीपधूः
२ न २ द २ म म स्या य वा (धे स्वा हा ॥ बलि ॥ ०० ति न २
गानिकुनर ॥ ध न मूल बलि म ॥ ॥ दू व बलि
पूजा ॥ पू व न २ दि ॥ वि द व ॥ न वा म ना य या दू की
॥ म यु ना म ना य या दू की ॥ मू धा म ना य या दू की
॥ ७ (धे) य क व दी प द मू की द वी म हा धा धा दू की
या वा य या दू की ॥ धी की कुल य व द क ना धाः
य या दू की ॥ गं गी गूं ग ॥ (नो) कुल ग (धे) वा य या
दू की ॥ ध न न व लि ॥ आ वा ह ना दि ॥ स्व स्व मू डी ॥
॥ ॥ पुं न दि न व सा नू री वि ना स्व व व वा य वा
म व धू व धू वि न रा अ न्द वि गू ल धा वि (धे) ध
न व लि ॥ स्वा क म हा व लि ॥ धी ७ दं दं दं दं
क र पा ला य व लि ग्ट द्र २ स्वा हा ॥ धी की कुल य
व द क ना धा य व लि ग्ट द्र २ स्वा हा ॥ गं गी गूं ग
॥ (नो) कुल ग (धे) वा य व लि ग्ट द्र २ स्वा हा ॥ दू म

हाकनवावग्नानाधिपतयवलिं गृह्ण २ स्वाहा
॥ श्रीसिद्धिचाम् ॥ ७ ॥ स्वनीवलिं गृह्ण २ स्वाहा ॥ श्री
ॐ काशवाविनी सवर्गस्यावलिं गृह्ण २ स्वाहा
॥ सर्वस्यास्तु नस्यापि गवस्य ४ सर्वस्य ०० द्रुतव
गास्यावलिं गृह्ण २ स्वाहा ॥ ०० गित्वाकमहावलि
॥ आवाहनादि ॥ यानिमूर्धा ॥ ॥ श्रीग्नका ॥ १
महाकाल ॥ शिवव ॥ आसन पूजनं वलिमूर्धा ॥
ॐ महाकालं सिंहनायकं शिवमालाविभूषितं
॥ कृष्णवर्णं महाध्यातुं स्वदातुं सवर्धनं वि ॥ १ ॥
धनं वलि ॥ त्वाकमहावलि विय ॥ आवाहनादि
मूर्धा ॥ ॥ यद्वि ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ शिवव आसनं पू
जनं वलिमूर्धा ॥ ॐ मूर्धासनसमानुरा ययव
र्णसूतजग ॥ १ ॥ ययुमादकहसाय गणनीयस
यनम ॥ धनं वलि ॥ त्वाकमहावलि नवनक ॥
आवाहनादिमूर्धा ॥ ॥ नमस्तुभ्यं ॥ शिव
व ॥ ननासनाय पादुका ॥ मयूनासनापादुका
मूर्धासनाय पादुका ॥ ॥ ॐ प्रसन्नदीपदमकी
ददीमहाकां कुरु ययालाय पादुका ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

व॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 मूषासनाय वासुदेवाय ॥ (ॐ) प्रसन्नो नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 दशमहाक्षेत्रे वासुदेवाय वासुदेवाय ॥ गी० श्री० क
 लय० वदकनाथाय वासुदेवाय ॥ गंगो गंगो गंगो (लो० क
 ल०) (ॐ) नमो भगवते वासुदेवाय ॥ धनं नवति ॥ आवाहनं
 दि॥ गङ्गा नदी दधु गङ्गा मूढा ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 य० दिव्याम्बुधराय वासुदेवाय ॥ (ॐ) नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 गङ्गा नदी नमः ॥ धनं नवति ॥ ॥ स्वाकमहाव
 ति ॥ वैष्णवो नमो भगवते वासुदेवाय ॥ गङ्गा नदी नमः
 स्वाहा ॥ श्री० कल० य० वदकनाथाय वासुदेवाय ॥ गङ्गा
 नदी नमः ॥ गंगो गंगो गंगो (लो० कल०) (ॐ) नमो भगवते वासुदेवाय
 वासुदेवाय ॥ दशमहाक्षेत्रे वासुदेवाय वासुदेवाय ॥
 गङ्गा नदी नमः ॥ श्री० सिद्धिदायक ॥ (ॐ) नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 स्वाहा ॥ श्री० नमो भगवते वासुदेवाय ॥ (ॐ) नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 गङ्गा नदी नमः ॥ सर्वस्या नमः ॥ सर्वस्या नमः ॥ सर्वस्या
 नमः ॥ सर्वस्या नमः ॥ सर्वस्या नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 स्वाहा ॥ आवाहनादि ॥ यानि मूढा ॥ ॥ यः
 गङ्गा नदी नमः ॥ शिवं नमः ॥ आसनं पूजनं नमः ॥ ॐ

रुद्रि (गण) निवा नूरा, निमासि द्वावर्षकै। स्य
विदधि हस्ताय, दवदवी प्रियाय च॥ धर्म नव
लि॥ त्वाक महावलि न धनक॥ आवाहनादि म
दा॥ ॥ वायव्य स्कन्द॥ विदव, आसन, यूज
नवलि मदा॥ ॐ स्कन्दाय गिरिवाहनाय, वक
वर्ष महायूतिः॥ गिरि हस्ताय वटवकु, वाल
नूपन मासुत॥ धर्म नवलि॥ त्वाक महावलि न
धनक॥ आवाहनादि मदा॥ ॥ उरुवडमा
॥ विदव आसन यूजनवलि मदा॥ ॐ सिंहास
नस मासुत, सर्वत्राप (ग) रिमा, स्वर्णमाला
त्यला हस्त, महादविन मासुत॥ धर्म नवलि॥ त्वा
क महावलि न धनक॥ आवाहनादि मदा॥ ॥
ॐ गान वलियूजा॥ विदव आसन यूजन
वलि मदा॥ ॐ प्रतासनस मासुत, कृष्णवर्षम
दायूतिः॥ कर्कटपाल हस्त, वलुदवीन मा
सुत॥ धर्म नवलि॥ त्वाक महावलि न धनक॥
आवाहनादि मदा॥ धर्मद्ववलि यूजा॥ ॥
अथ दिग्वलि नंदय कंठया वयजा॥ प्रव॥ वि

सुत ॥ धनं न वलि ॥ स्वात्म महा वलि न धनं ॥
 आवाहनादि मूढा ॥ धनं दूत वलि पूजा ॥ ॥
 अथ दिग वलि नंद यर्कं न याव यूजा ॥ पूर्व ॥ वि
 दव आसन यूजन वलि मूढा ॥ वैजं कां कां कोः
 कां कां कां कां कां पी ह उ काय धुं पी म न ला देवी
 स्वर्ग किं स्वयं विवा वाय द्वा ला कल महा म
 गाना वि प त य पी पी प्र या ग महा द्वा र अ अ पी
 अलि ना न महा रु व वा य पी व का य पी व ना म्वा
 अलि वलि पि सि त महा यूजा ग्ट द्वा र २ ॥ निं क
 व २ स्वाहा ॥ वलि ॥ स्वात्म महा वलि न धनं ॥
 आवाहनादि मूढा ॥ धनं पूर्व दिग वलि ॥ ॥
 आग्ने ॥ वि दव आसन यूजन वलि मूढा ॥ वैजं
 कां कां कां कां कां कां पी वि य वान् क काय
 धुं पी द्वा ला मालिनी देवी ॥ स्वर्ग किं प वि वा व
 सहि ता य पि वा ना व महा म गाना वि प त य
 पी वा वा प पि महा द्वा र ० ० ० पी न न महा रु व
 वा य पी ना रु ध वी प ना म्वा अलि वलि पि सि त
 महा यूजा ग्ट द्वा र २ पूर्व क व २ स्वाहा ॥ वलि ॥

त्वाकमहावलि न धूक ॥ आवाहनादि मूडा ॥ ध
न अग्नि दिग्वलि ॥ ॥ यम ॥ शिदव आसन
यूजन वलि मूडा ॥ वे ७ झां झां झां झां झां झां
झां झां अग्नि वनालाय धूंधी कान्क की दवी स्व ७
वे कि स्व ध विवा वस हि नाय धूमा कुल महा
म ७ ७ ना धि य न य धी धी काला य व महा क ज ड ड
धी व धु महा रे व वा य धी काना धि य नान्वा अलिव
लि पि सि न महा पूजा गट द्र २ व ७ क नू २ स्वाहा ॥ व
लि ॥ त्वाकमहावलि न धून क ॥ आवाहनादि मूडा
॥ धन य म दि ग व लि ॥ ॥ ने ज ल्य ॥ शिदव आ
सन यूजन वलि मूडा ॥ वे ७ झां झां झां झां झां झां
झां झां अग्नि जिह्वा य धूंधी अ जि ना द वी स्व ७ कि
स्व वे य विवा व स हि नाय धा नान्वा का व महा
म ७ ७ ना धि य न य धी धी अट हा स महा क थ मं
मं धी का ट महा रे व वा य धी वे क वी य नान्वा अ
लिव लि पि गी न महा पूजा गट द्र २ सि दि क नू २ स्वा
हा ॥ व लि ॥ त्वाकमहावलि न धून क ॥ आवाहना
दि मूडा ॥ धन ने ज ल्य दिग्वलि ॥ ॥ व न ल्य ॥ शि

लिवालिधिगनमहापूजागटक्र २ साद्वकन २ स्वा
हा॥ वलि॥ स्वाकमहावलिनधनक॥ अवाहना
दिमडा॥ धननमसदिगवलि॥ ॥ वनू॥ वि
दवआसननयुजनवलिमडा॥ वि॥ जडां डां डां डां
डां डां डां कापीकाताखायधुपीअमनादवीस
गकिस्वप ॥ विवावसहिता ॥ ययनीगन्धमहा
मनाधिपतयपीपीजयनिमहाक्षरठैदया
उनरुमहाकेववायपीवावाहीपवासाअलिव
लिपिगिर्गमहापूजागटक्र २ कव २ स्वाहा॥ वलि॥
स्वाकमहावलिनधनक॥ अवाहनादिमडा॥ ध
नवनू॥ दिगवलि॥ ॥ वायवा॥ विदवआ
सननयुजनवलिमडा॥ वि॥ जडां डां डां डां डां
डां डां पीकावालीनायधुपीकावकादवीसगः
कि ॥ स्वपनिवावसहि ॥ नायपूलरुममहाग
माना धियतयपीपीवविमहाक्षरठैदयाः
कपालीगमहाकेववायपीवन्दायनीपवासाः
अलिवलिपिगिर्गमहापूजागटक्र २ सुखदहि २
स्वाहा॥ वलि॥ स्वाकमहावलिनधनक॥ अवा

11

5

三

२

६६

三

2



၁၅

21

ना

ॐ



5

天

11

२ कामदाह २ स्वाहा ॥ वलि ॥ स्वाकमहावलि ॥ आ
वाहनादिमूडा ॥ नानादिग्वदि ॥ ॥ अरे ॥
विदव आसनवलि पूजा मूडा ॥ ॥ जं जं जं जं
जं जं जं जं श्री अनन्ताय नमः श्री जलनीदवी
स्वर्गाकि स्वयं श्री विवावमहि नाय श्री धामा
लम्भनाधियमय श्री धाटकमहाकेशव वाय
पद्माब्जाब्जलि वलि विनिर्गम महा पूजा गटक २
दहि स्वाहा ॥ वलि ॥ स्वाकमहावलि ॥ आवाहना
दिमूडा ॥ अधदिग्वलि ॥ ॥ उच्च ॥ विदव पूजा
॥ नवा सनाय पादकी ॥ मयूरा सनाय पादकी ॥
मूषा सनाय पादकी ॥ ॥ श्री पुरुषोत्तम पदमूकी
दवी महाध्वं कक्षपालाय पादकी ॥ श्री जं क
लपुत्रवटुकनाथाय पादकी ॥ गंगी गंग १ ॥ ॥ श्री
कूलग १ ॥ गववाय पादकी ॥ धर्मन वलि ॥ आवा
हनादि ॥ गऊनी दधु गऊ मूडा ॥ विदव पूजन ॥
॥ ॥ जं जं जं जं जं जं जं श्री वः
कमखाय नमः श्री पद्मनादवी स्वर्गाकि श्री स्वयं
वावमहि नाय उच्च महा लम्भनाधियमय

श्रीग्रीष्मकामध्वनमहादेववायवयवान्वात्रलि
 वलिपिलिर्गमहायुजांष्टक्र २ दहिश्वाह
 ॥ वलि ॥ स्वाकमहावलि ॥ कांक्षीक्ष्णकांक्ष
 पालायवलिष्टक्र २ स्वाहा ॥ श्रीक्ष्णकलपयव
 दकनाथायवलिष्टक्र २ स्वाहा ॥ गंगोगंग ॥ ग्लो
 श्रीक्ष्णकलग ॥ श्ववायवलिष्टक्र २ स्वाहा ॥ दूमहा
 कनवीवक्ष्मणाधिपतयवलिष्टक्र २ स्वाहा ॥ ३
 श्रीसिद्धिदाम ॥ श्ववीवलिष्टक्र २ स्वाहा ॥ आका
 ॥ वाविनीसव ॥ ग्लेश्वावलिष्टक्र २ स्वाहा ॥ सर्व
 श्वाकग्लेश्वापिशावक्ष्मः सर्वलक्ष्मदवताश्वाव
 लिष्टक्र २ स्वाहा ॥ ॥ ग्लेश्वाकमहावलि ॥ ॥ आ
 वारुनादि ॥ यानिमूर्धादशायन ॥ ॥ उद्धदि
 ग्यलि ॥ ॥ ग्लेश्वादिग्ययुजा ॥ ॥ दध्यातमहा
 वलिष्टक्र ॥ आधावक्ष्मयनमः ॥ अनकासना
 यनमः ॥ कन्यासनायनमः ॥ नालासनायनम
 ॥ पद्मासनायनमः ॥ कर्णासनायनमः ॥ कः
 र्णिकासनायनमः ॥ पद्मासनायनमः ॥ ॥
 ग्लेश्वादिष्टक्र ॥ ॥ ग्लेश्वादिष्टक्र ॥ ॥ ग्लेश्वादिष्टक्र ॥

॥ यथासनाय नमः ॥ कर्णनाय नमः ॥ कः
लिका ननाय नमः ॥ यथासनाय नमः ॥
नमः ॥ ॐ स्वादि पूजनं ॥ ॐ नमः ॥ ॐ स्वायवदाः
हृत्कायसुवाविषतययादू ॥ ॐ को ॥ वलि ॥ ॐ न
मो वृश्मनयगकि हृत्कायगजाविषतययादू को
॥ वलि ॥ ॐ नमः ॥ मयमायदपु हृत्काययना
विषतययादू ॥ ॐ को ॥ वलि ॥ ॐ नमः ॥ नमः ॥
यखपु हृत्कायबादसाविषतय ॥ ॐ पादको
वलि ॥ ॐ नमः ॥ वा वृष्णयपाग हृत्कायकुला
विषतय ॥ ॐ पादको ॥ वलि ॥ ॐ नमः ॥ यं वाय
वधु हृत्कायपवनाविषतयपा ॥ ॐ दको ॥
वलि ॥ ॐ नमः ॥ संकवनायगदा हृत्कायपवनाः
विषतय ॥ ॐ पादको ॥ वलि ॥ ॐ नमः ॥ दूष्णी
गानायविष्णुल हृत्कायरुगाविषतय ॥ ॐ यपा
दको ॥ वलि ॥ ॐ नमः ॥ अश्वश्वश्वश्वनकायवक्र हृत्का
यनागविषतयपादको ॥ वलि ॥ ॐ नमः ॥ ॐ ॐ ॐ
वक्र ॥ यथा हृत्कायखगाविषतयपादको ॥ व
लि ॥ ॥ ॐ स्वादि पूजनं ॥ ॐ दू हृत्काय

[illegible]

[illegible]

बक्रयपालायपादकी॥**ॐ** क्रां अहहसक्रय
पालायपादकी॥**ॐ** क्रां जयनिक्षयपालाय
पादकी॥**ॐ** क्रां वविषक्रयपालायपादकी॥
ॐ क्रां प्रकासक्रयपालायपादकी॥**ॐ** क्रां द
वीकाठक्रयपालायपादकी॥ धननवलि॥ ॥
ॐ सत्ययुगायनमः॥**ॐ** संतायुगायनमः॥**ॐ**
दाययुगायनमः॥**ॐ** कलियुगायनमः॥ ध
ननवलि॥ ॥**ॐ** मग्वदायनमः॥**ॐ** यशुव
दायनमः॥**ॐ** सामवदायनमः॥**ॐ** अथर्वदा
यनमः॥ धननवलि॥ ॥ नवग्रहपूजा॥ क्रां
क्रोः प्री सूर्यायनमः॥ म्रां म्रां म्रां प्री सामाय
नमः॥ क्रां क्रां क्रां प्री कजायनमः॥ वां वां वां प्री
वृषायनमः॥ क्रां क्रां क्रां प्री बृहस्पतयेनम
ः॥ दां दां दां प्री पुत्रायनमः॥ प्रां प्रां प्रां प्री गने
श्वरायनमः॥ वां वां वां प्री बालवनमः॥ क्रां क्रां
क्रोः प्री कनकवनमः॥ क्रां क्रां क्रां प्री जन्मनम
ः॥ धननवलि॥ ॥ अष्टकलनाम॥**ॐ** अं अं
नकायनमः॥**ॐ** वं वासुकेनमः॥**ॐ** तं तदका
यनमः॥**ॐ** कं कटिकायनमः॥**ॐ** पं पद्माय
नमः॥**ॐ** प्रं महापद्मायनमः॥**ॐ** लं लं स्वायन
मः॥**ॐ** कं कं कं किकायनमः॥ ॥ धननवलि॥ ॥

ॐ प्राकृतं नमः ॥ ॐ प्राकृतं नमः ॥ ॐ प्राकृतं नमः ॥

॥ धनं नवलि ॥

॥ अष्टकलनाम ॥ ॐ अष्ट

नकायनमः ॥ ॐ वं वासुकेनमः ॥ ॐ तं तदका

यनमः ॥ ॐ कं कटिकायनमः ॥ ॐ पं यमाय

नमः ॥ ॐ पं महायमायनमः ॥ ॐ लं गं खायन

मः ॥ ॐ कं कलिकायनमः ॥ धनं नवलि ॥ ॥

ॐ कं जयावहमनायनमः ॥ ॐ कं कालव

मनायनमः ॥ ॐ कं कालयामनाय

नमः ॥ ॐ कं कालवनायनमः ॥ ॐ कं

धूमाकलमनायनमः ॥ ॐ कं अस्त्रियम

नायनमः ॥ ॐ कं महायममनायनमः ॥

ॐ कं रुतनाथमनायनमः ॥ ॐ कं यदव

नमनायनमः ॥ धनं नवलि ॥ ॥ कं

नयुजा ॥ ॐ कं कं वीनायडुवकायनम

॥ ॐ कं यतनयवपायपुर्ववकायनमः ॥ ॐ

कं वं अथावायदक्षिवकायनमः ॥ ॐ कं वं

वामदवायडुववकायनमः ॥ ॐ कं लं सया

जातायपणिमवकायनमः ॥ धनं नवलि ॥ ॥

[illegible]

विष्णुकोनासामहोरुगवलितुद्रस्वाहा॥१॥
ॐ कों कों दे कों वे कों ज कों अलिवलिमहोरुग
वलितुद्रस्वाहा॥३॥ ॐ ॐ कों उ कों ड कों अ कों
अ कों महोमसानाविपनयमहोरुगवलितुद्र
स्वाहा॥४॥ ॐ ॐ कों क कों ख कों ग कों घ कों ङ
कों महोअयमसानाविपनयमहोरुगवलितुद्र
स्वाहा॥५॥ ॐ ॐ कों च कों छ कों ज कों झ कों ञ
कों रुगपिशाववाक्षसमहोरुगवलितुद्रस्वा
हा॥६॥ ॐ ॐ कों ट कों ठ कों ड कों ढ कों ण कों प्र
पिशाववाक्षसमहोरुगवलितुद्रस्वाहा॥७॥ ॐ ॐ
कों न कों त कों थ कों द कों ध कों न कों किन्नबीजक्षनाग
महोरुगवलितुद्रस्वाहा॥८॥ ॐ ॐ कों प कों फ
कों व कों र कों म कों कालिनीमहाकालरुगव
लितुद्रस्वाहा॥९॥ ॐ ॐ कों य कों ब कों ल कों व
कों महोअवामहोमाक्षमहोवलितुद्रस्वाहा
॥१०॥ ॐ ॐ कों श कों ष कों स कों ह कों ङ कों फ
कों क कों क्ष कों ज कों पा ला य महोमसानाविपनयसर्व
महोविलिङ्गुङ्गुहस्वाहा॥११॥ ॐ ॐ कों दा कों

कुं कुं १ कृष्ण कृष्ण महा रुत ॥ नि कुं व २ मू व २ स
व सिद्धि महा रुत महा रुति नि स हा स ती महा
स व सिद्धि महा वलि गृ २ स्वाहा ॥ १२ ॥ वे १ को
अं को अं को ०० को ०० को डं को डं को मं को मं को
० को ० को पं को पं को डां को डां को अं को अं को
क को खं को गं को यं को ठं को वं को कं को डं को ॥
मं को अं को ठं को वे को उं को टं को लं को नं को थं ॥
को दं को पं को नं को पं को हं को वं को रं को मं को
यं को वं को वं को गं को मं को हं को कं को ॥ को को
महा विद्यिका विपी को को महा ॥ नि कुं कृ महा
रुत रुति नी ॥ नि कुं व २ कुं ३ वलि गृ २ स्वाहा ॥
१३ ॥ ०० नि रुत वलि ॥ ॥ अथ महा रुत वलि ॥ वे
१ कुं ३ रुत ॥ व व व न म रुत ॥ ०० दं ग न्ध धू प दी
पा य वलि गृ २ ॥ नि कुं व २ स्वाहा ॥ ॥ वे १
कुं ३ महा रुत ॥ व व व न म रुत ॥ ०० दं ग न्ध धू प
दी पा दा य वलि गृ २ ॥ नि कुं व २ स्वाहा ॥ वे १
कुं ३ महा ना द रुत ॥ व व म रुत ॥ ०० दं ग न्ध धू प
दी पा य वलि गृ २ ॥ नि कुं व २ स्वाहा ॥ ॥ वे

दीपाद्यवलिगटक्र२गानिक्र२स्वाहा॥ ॐ
क्र२महानादद्य(८)व्यवयवमरुतस्य००दंगन्धधूप
दीपाद्यवलिगटक्र२गानिक्र२स्वाहा॥ ॥

ॐ क्र२महानादद्य(८)व्यवयवमरुतस्य००दंग
न्धधूपदीपाद्यवलिगटक्र२गानिक्र२स्वाहा॥ ॥

ॐ ॐ क्र२लंकव्यवयवमरुतस्य००दंगन्धधूपदी
पाद्यवलिगटक्र२गानिक्र२स्वाहा॥ ॥ ॐ ॐ क्र२

३विजयव्यवयवमरुतस्य००दंगन्धधूपदीपा
द्यवलिगटक्र२गानिक्र२स्वाहा॥ ॥ ॐ ॐ क्र२

३महाविजयव्यवयवमरुतस्य००दंगन्धधूप
दीपाद्यवलिगटक्र२गानिक्र२स्वाहा॥ ॥

ॐ ॐ क्र२शुभाद्यव्यवयवमरुतस्य००दंगन्धधूप
दीपाद्यवलिगटक्र२गानिक्र२स्वाहा॥ ॥

ॐ ॐ क्र२महाभगवानव्यवयवमरुतस्य००दंगन्ध
धूपदीपाद्यवलिगटक्र२गानिक्र२स्वाहा॥ ॥

ॐ रुतव्यवयवमरुतवलपवाकमायश्रीक्र२रुट
स्वाहा॥ ॥ ॐ ॐ क्र२श्रीमानमवाजायक्र२रुट
स्वाहा॥ ॥ धननवलि ॥ ॥ ॐ तिमहामरुतवे

लि॥ ॥ अथ हनिनी वलि ॥ वं १ डी ३ म ध म
 उ म नी १ कि रु ति नी डी ३ रु ट स्वा हा ॥ ॥ य मि
 वा व ॥ ॥ डी क उ ली महा रु ति ने डी ३ रु ट स्वा
 हा ॥ ॥ डी महा क उ ली महा रु ति ने डी ३ रु ट
 स्वा हा ॥ ॥ डी य व क उ ली महा रु ति ने डी ३ रु
 ट स्वा हा ॥ ॥ डी य मि नी महा रु ति ने डी ३ रु ट
 स्वा हा ॥ ॥ डी रु द पी महा रु ति ने डी ३ रु ट स्वा
 हा ॥ ॥ डी महा रु द पी महा रु ति ने डी ३ रु ट
 स्वा हा ॥ ॥ डी ना वा व ली महा रु ति ने डी ३ रु ट
 स्वा हा ॥ ॥ डी न नि नी महा रु ति ने डी ३ रु ट
 मू क स्य ॥ नि कू व २ मू व २ ख २ खा हि २ व लि ग
 द्रा २ ॥ नि कू व २ स्वा हा ॥ ॥ डी २ वा पी रु ति ने
 स्वा हा ॥ ॥ अथ न व लि ॥ ॥ ॥ ति रु ति नी व लि ॥ ॥
 अथ ॥ नि व लि ॥ ॥ ॥ न मा शि द ॥ ॥ ॥ व वा य महा
 रु द वा य नी ल व ॥ ॥ य वू द वू य क पि ल पि न ल ज
 टा मू क ट स्वा हि रु कि रं वा यु व म क टि रु पि न ड
 वं क बाल अ रू प वि दू दू खा य दू का व ना द ग
 कि ना य रु ति कं या य अ नी रु या न का य रु ॥ कि

[illegible]

जाकजाकीनीसलिवसागवसागदीसर्वायव्वता
यामजनकयव्यदवृक्षकजयी(०)पयी०॥था
लीस्वयपासावावलिलिःहुमयनपि॥वागन्ध
वविशिविकानाक्षसनाक्षसीकष्यउकष्यालि
उरुडादिपक्षद्वयनूपिणीस्यःयजवागिकस
फदीपावनीस्यःअविष्ठाविष्ठाद्वयस्यःदूनीदूनी
कासजीवनीजीवादिक्किल्लस्यः॥धूमनादिस
लिः॥पादिनी॥वापीतजगयनालादिक्कसयसना
लिकासविनयस्थिताविद्यापीठिकाकाषविजल
पाकलभादिस्फुलिस्फुल्लस्यः॥रुमिषूयुधआपस्फ
जावायवाकाभादिद्वयनचउरुगजउरुः॥श्वव
लरुवलजलवलरुन्नाकादिरुउवस्वउवन
उवनान्नवादिग्रहलाकपालादिसिद्धिविद्याध
वादिवलियापिलाकादिष्वावार्कगिद्वययतषू
स्वकृयाद्वयलस्थितावलित्वास्वपित्वायदवताद
वनीश्रुकावादिद्वकावानानामाक्षनसंयुतातः
लिमाक्षरुंगकतातादवतादवता००॥तिमूर्ति
कामारुकाहयस्ववलिकसल००॥दवलिगृह

[illegible]

ॐ हूँ ॥ ॐ श्री हूँ ॥ ॐ ध्याः हूँ ॥ ॐ क्री हूँ ॥ ॐ
क्राः हूँ ॥ ॐ म्रः हूँ ॥ ॐ ग्राः हूँ ॥ ॐ ङ्गः हूँ ॥
ॐ न्नाः हूँ ॥ ॐ डाः हूँ ॥ ॐ डुः हूँ ॥ ॐ जः हूँ ॥
ॐ सः हूँ ॥ ॐ लः हूँ ॥ ॐ दः हूँ ॥ ॐ चः हूँ ॥
ॐ प्रः हूँ ॥ ॐ ताः हूँ ॥ ॐ तीः हूँ ॥ ॐ थः हूँ ॥
ॐ म्रः हूँ ॥ ॐ हां हां हूँ ॥ ॐ क्षी क्षी हूँ ॥ ॐ मं
मां हूँ ॥ ॐ पं पं हूँ ॥ ॐ कुक २ हूँ ॥ ॐ की
की नू के २ हूँ ॥ ॐ क्षी २० हूँ २० हूँ के के हूँ
के १२० ॥ ॐ जी जी के १ हूँ हूँ २० ॥ हूँ हूँ २० ॥ ॐ हूँ
हूँ २० ॥ ॐ हूँ के २० ॥ ॐ हूँ १० ॥ ॐ (पं) २० ॥ ॐ
सो १॥ ॥ ॐ हूँ ॥ ॥ ॐ क्षी क्षी हूँ ॥ हूं हूं हूं हूं हूं
हूं हूं हूं हूं हूं हूं हूं हूं हूं हूं हूं हूं हूं हूं हूं हूं हूं हूं हूं
हूं ॥ ॐ क्षी यै हूं १० ॥ ॐ हूं स २ हूँ ॥ ॐ द हूं २ हूँ
२ य व २ हूँ २ म ध २ हूँ २ स बान द हूं न वृ ॥
य २ हूँ २ यो ट य २ हूँ २ सर्व द नि सा न वि धि स
य २ हूँ २ सर्व ग्र हान मे द्य य २ हूँ २ सर्व विद्या
न दि य स य २ हूँ २ सर्व पा धान रु त्स सा न क र
२ हूँ २ सर्व व्या पी न रु द्य य २ हूँ २ सर्व द्या वा न

य २ रुट २ सर्व यज्ञान मद्य २ रुट २ सर्व विद्या
न दिग्मय २ रुट २ सर्व पापान रुस्मान कृ
२ रुट २ सर्व बाधान रुदय २ रुट २ सर्व दान
पानय २ रुट २ सर्व पत्मान दह २ रुट २ सर्व ना
गान निवृत्त २ रुट २ सर्व मोदान्दान वय २ रु
ट २ सर्व कृदकान्किन्द २ रुट २ पत्रयदान
स २ रुट २ पत्रयदान वृत्तय २ रुट २ पत्रमः
ज्ञान विद्याय २ रुट २ पत्रयान रुस्मान २
सर्व रुदह २ रुट ॥ निवावदनाके वदनावद
वदनाददय वदनाया वदनाका वदनाया
य वदनाया वदनाया वदनानिवृत्तय २
रुट २ रुदमयन विष्णुसयन वृत्तमयन सर्व
दक्षान रुमय २ रुट २ माहय २ पाठय २ रुट
७ मरुताय प्रसाय विनय नाय र्थवासव
वहाय सा मसूयादि दाय दि एजाय नमः स्वा
हा वषट् वाषट् रुट २ रुद वलाय यम रुम ग
हा नाय रुद रुदे या य वृत्त सिवा रुहाय विष्णु
कव वाय दवदे सदान वनाग वा रु स पिता वय

[illegible]

॥ वासि हा हा यदु टु यदु कः यदु कः ॥ व धी २ खू इति
द्विका मय रुट २० ॥ हं सा यदु टु यदु व म हं सा
यदु टु १ ॥ ॐ वृ के रुट १ ॥ न मा रु गे व त य रि त लि
द्या य मे हा पा पु य ता स्त्राय न मा न मः ॥ व द्वा स्त्रा
य वृ ग ला स्त्राय वृ ग ला स्त्राय सर्वं श्री दू य नानि
पा न य २ ॥ य नान पा न य द वा सू ना णि म ह्या नी स
म लि ता नी रु सा गा न कू न २ रुट २ ॥ श्री रु क य हं ना
धि वा क म म म स वा वि रु गा न्ते र्थ म हा व लि श्री
श्री ज य रु य नी न्द्र म न्द्र न ० ० दं म या य व्वा धू य धू
जा य (था य नी ना वृ द व लि ग्टे क २ वृ द जा गा र्च न
वि (यो स व स गानि क व २ कू ३ रुट सा हा ॥ क म र्थ
व व द्वा म म ॥ ० ० ति म हा पा पु य ता न्द्र व लि १ स मा
र्क ॥ ॥ मूल म नु रि यां ज लि १ ॥ ॐ रु स १
मृ र्थ ज या य न मः ॥ ॐ रु स १ ॥ अ नु ती ण म हा र्थ
न वा य म या नि वा य न मः ॥ ॐ रु स १ ॥ अ नु त र्थ
जी व नी ग कि स हि ना य न मः ॥ वृ उ ग न धू जा ॥
ॐ रु स १ ॥ स वृ रु ना य द द या य न मः १ ॥ र्था दि ॥
य दि ॥ ॐ रु स १ ॥ अ नु ती ण य दि द द म हा द व

यधामह न नानुःप्रवादयाम ॥ निर्वानः
काय ॥ स्वाक महावलि ॥ कौं कौं कौं कः कय या
लाय वलिं गट्ट २ स्वाहा ॥ धीं कौं कौं लय वट्ट क
नाथा यवलिं गट्ट २ स्वाहा ॥ गौं गौं गौं गः गौं प्राकल
ग ॥ श्वना यवलिं गट्ट २ स्वाहा ॥ कू महाकनवी न
मगाना विषनय वलिं गट्ट २ स्वाहा ॥ कू सिद्धिर्व
म ॥ पुश्वनी वलिं गट्ट २ स्वाहा ॥ आका ॥ गवावि
नी सवर्ण स्वावलिं गट्ट २ स्वाहा ॥ सर्व स्वाह त स्वा
पिशाच नमः सर्व स्वाह वदना स्वावलिं गट्ट २
स्वाहा ॥ ॐ तिस्रक महावलि ॥ ॥ आवाहनादि
थानि मूढी ॥ विष्णु ॥ ॥ धूप ॥ दिव्य गन्धु समाय
क ॥ सर्व दवापिया ब्रह्मा ॥ आद्यान सर्व दवानां
धूपार्थं यति गट्ट २ ॥ धूप हाव मरुगवान् वि
रूपी मह श्वनी ॥ धूप नानु अद वासि सखा गीये न
म श्वनी ॥ ॥ दीप ॥ मय का ॥ महा तर्ज सर्व
नस्ति मिवाय ह ॥ गवाक स्य नव याति दीपो यं य
ति गट्ट २ ॥ अति दय्य मि ॥ ॥ नेव यवलि म ॥
अनं महावर्मा दिव्य ॥ अमय सर्व मनिर्त ॥ मया

[illegible]

नी। वासः। किधनं दवं दका वायनमानमः॥ ५॥
यजुस्तु सुतो दवो। जगद्वापिमहेश्वरो। याउ
वो सर्वदवानी। यका वायनमानमः॥ ६॥ वडा
दनमिदं पूर्णं। यः प्र० किं वसन्नि। को। सर्वथा
ये विनिर्मकं। निवलाकं सगच्छति॥ ७॥ ।
पुनः॥ नानि वप्रमादयवमं सर्वरुगकं वनं
नानन्दं सवनायकं सारुगवान् संपूर्णं कामय
यं। वागी। शा वददनुवागुवपदं वासासि वक्रः
श्वरी व्याधी। शाक विनाशं कुरु यहा नृपुः
यन्महिमा॥ ८॥ पुं नमा रनुगमनी गायनस्य
पुं यमदा निवधं सर्वथापविनाय। सर्वशान्तिं ह
भारुव॥ ९॥ यापारं यापकमाहं। यापान्मायापमं
रुव। याहि मां दवदवगं सर्वथापं हवा हव॥ १०॥
अवगन्धादि॥ ॐ सित्तं ॥ ॥ दवत्तं शि यांज
लियाय॥ ग० ल० ग० या॥ वे० ग० ग० ग० धी ग० ल० यनयन
मः॥ ३ वलि॥ ॥ सु० य० या॥ वे० ज० को को स० धी स
यायनमः॥ ३॥ वलि॥ ॥ ना० या० य० या॥ पुं को स
१ ना० वा० य० या० यनमः॥ ३॥ वलि॥ ॥ द० न० या॥ पुं को

मः॥३॥वलि॥ ॥हृयाया॥विजक्रक्रासः॥प्रास
आयनमः॥३॥वलि॥ ॥नावाय॥या॥पुं॥कीस
॥नावाय॥यायनमः॥३॥वलि॥ ॥दूनया॥पुं॥की
दूनयिनमः॥३॥वलि॥ ॥महादवया॥पुं॥कंस
॥महा॥पुं॥यायनमः॥वलि॥~~महा~~॥पुं॥कंस॥द
दयायनमः॥पुं॥कंस॥गिवसखाहा॥पुं॥कंस॥
गिरवायवाषट॥पुं॥कंस॥कववायक॥पुं॥कंस
॥नरुययायवेषट॥पुं॥कंस॥अमुयद॥॥आः
वाहनादि॥ ॥धूप॥वनस्यतिवसादिद्योगेश्वरा
सूत्राजानः॥मयानिददितारुकाधूपार्ययतिः
गृह्यगी॥ ॥दीप॥अनिअतिवविअति॥ध्वज
अतिसुथेववाअतियामरुमादव॥दीपार्ययः
तिगृह्यगी॥ ॥नेवअ॥अनैवउविधदव॥व
से॥षट्ति॥समन्विता॥डरुमंपालदवेवगृहाण
ममरावण॥अनैयविकवदहं॥यकान्नविवि
धाकृता॥नानादलविविजालि॥गृह्यगीयनमभ्य
व॥ ॥जय॥गोखाहा॥१०॥जाखाहा॥१०॥कीसःखा
हा॥१०॥कीखाहा॥१०॥पुं॥कंस॥खाहा॥२॥॥सुय

गोत्रं जिह्मवरादिपंचवदनं सिंहसुमाकर्षणीया
शंभुजटकावक्रविवर्यनागध्वजतंधुनी। पार्श्वमा
दकथुर्विर्गभूरुयदं सव्यापि सर्वादिदं विजसु
लमनाहर्षसूजधर्षहवम्वनाथं नमः॥ ॥ जल
वागीरुकीरुवमिवदधनः सानुसिन्धुवज्रणीः
वकाशके विवाद्ये वृद्धयगिनिटटीधारुधोवाद्यव
स्य। आशान्ताहृत्यकालीकमलवननूववावृणा
वाविहृत्ये, रूयासूरुसयन्ताहृत्यनमरिनवाः
शानवाशानवीया॥ ॥ जिनकथून्धवीकाक, न
मस्तुविष्णुकाजन। नमस्तुमुकुषीकण, महायूव
षवृवृज॥ ॥ सर्वमङ्गलमाङ्गल, गिदसर्वा
धमाधकाशवप्यगाम्बिकगोत्री, नावायणीनमा
श्नुते॥ ॥ महिम्नः पावनकथनमविदूषायय
दणी, मुनिवक्तादीनामपिनदवसन्नाहृत्ययिगि
नः। अथावायः सर्वः स्वमतिप्रविष्टः। मावधिष्टः
एन, सवायार्थकाण्डवनिवयवाद्यः पवित्रवः
॥ ॥ पाथाहं पापकमाहं पापात्मा पापसंरुवः
। जादिमां ददददद, सर्वपाथाहवाहव॥ अथ

नः। अथावाचः सर्वः स्वमतिप्रविणमावधिष्टः
एनमवाच्यः सागुहवनिप्रवाहः पवित्रः
॥ ॥ पाथाह पापकमाह पापात्मा पापसंशुद्धः
। नाहिमादवदवः। सर्वपाथाहवाहः॥ अथ
न्यादि॥ ॥ न्यासलिखायावमहावलि विसर्जन
याय॥ ॥ सावित्राय॥ ॥ नमः॥ निमहावलि
विधिसमायः॥ ॥ अथ॥ ॥ नमः॥ स्वाहा॥
॥ नमः॥ शंखाय नमः॥ शंखाय नमः॥ शंखाय
नमः॥ शंखाय नमः॥ शंखाय नमः॥ शंखाय

[illegible]

गम. कामाय ॐ ददताय ॐ दमासननमः
 पूर्यनमः॥ अग्निना जा रु द्वा वि का य ॐ दमासन
 नमः॥ पूर्यनमः॥ य रु द्वा य रु द्वा ज (गा यथः
 व द्वा द व ता य रि रु द्वा न स ॐ दमासननमः॥ पू
 र्यनमः॥ न न्दि क ष्य रा य आ वा या य ॐ दमासन
 नमः॥ पूर्यनमः॥ ॥ च र्वा दा य ह स्ता र्च व न्द
 न य रु द्वा य वि त य व धू प दी प ॥ अ रु द्वा य ॥
 गान्ति का कृति ॥ ॐ श्री गान्ति व त वि रु द्वा गान्तिः ॐ
 धि वी गान्ति ना पः ॥ गान्ति ना य ध यः ॥ गान्तिः ॥ व न स्य
 त यः ॥ गान्ति वि रु द्वा द वाः ॥ गान्ति व रु द्वा गान्तिः ॥ स व ॐ
 गान्तिः ॥ गान्ति व रु द्वा गान्तिः ॥ सा मा गान्ति व धि स्वा हा ॥
 गान्ति व रु द्वा ॥ ॥ य रु द्वा का कृति ॥ ॐ य रु द्वा क य जा
 म रु द्वा गान्ति य रु द्वा व रु द्वा न ॥ उ रु द्वा क रु द्वा मिव व रु द्वा नाः
 न रु द्वा म रु द्वा य मा रु द्वा ना त ॥ य रु द्वा क य जा म रु द्वा
 गान्ति य रु द्वा व रु द्वा न ॥ उ रु द्वा क रु द्वा मिव व रु द्वा ना दि ता म रु द्वा
 क य मा रु द्वा नाः स्वा हा ॥ य रु द्वा रु द्वा ॥

गम. य व धा ना दि हा म ॥ य व. धा ना ला जा स मि

ध. गु. ठा. द. न. ना. वि. क. ल. पी. इ. ल. पू. नि. किं. व. द. ध.
द. न. द. द. ली. इ. ल. धि. यं. गु. मू. मू. ख. ग. न. पू. ध्या. (ध.
ग. निल. इ. क. निल. व. क. निल. दि. क. इ. दि. इ. ला.
नू. य. क. ग. व. य. क. क. ग. व. य. न. न. पु. लि. गु. गु. व. क.
य. क. पु. व. पी. ख. गु. मू. वी. धी. नी. कं. द. मू. ल. इ. ल.
य. को. न. र्. दू. दू. वी. क. न. य. य. सा. म. क. न. व. ग. न.
इ. दू. या. म्. ॥ वा. म. ल. मू. न. र्. क. ल. ॥ ॐ ॐ

आ. दि. क. ल. म. ल. र्. द. म. न. र्. र्. क. ल. सि. दि. व. लु. ॥ नि.
व. ग. कि. क. ल. सा. र्. य. र्. द. म. न. र्. र्. क. ल. सि. दि. व. लु. ॥
आ. दि. ल. क. ल. सा. य. र्. द. म. न. र्. र्. क. ल. सि. दि. व. लु. ॥
म. ल. र्. य. क. ल. सा. य. र्. द. म. न. र्. र्. क. ल. सि. दि. व. लु.
॥ ग. ल. य. ल. दि. स. द. नि. वा. य. ध. डि. वा. दि. मू. र्. य. र्. द. म.
न. र्. र्. क. ल. सि. दि. व. लु. ॥ स्व. ल. न. क. य. ला. य. व.
हि. द. नी. ग. ल. ग. ल. (ग. य. म. को. मा. य. र्. द. म. न. र्. र्.
क. ल. सि. दि. व. लु. ॥ अ. नि. ग. जा. रु. द. नि. का. य. र्. द. म.
न. र्. र्. क. ल. सि. दि. व. लु. ॥ य. र्. व. द. य. र्. व. द. अ. ल.
या. य. व. क. य. व. ना. य. वि. र्. य. व. न. र्. र्. द. म. न. र्. र्.
क. ल. सि. दि. व. लु. ॥ न. दि. क. ल. वा. य. म. वा. य. य. र्.

न स कल्य सिद्धि वस्तु ॥ य इव दायरा व द्वा उ (ग)
जाय वस्तु य व ता य वि द्यु य च न स ०० द म न स
कल्य सिद्धि वस्तु ॥ न न्दि क ०० य य आ वा य य ००
द म न स कल्य सिद्धि वस्तु ॥ अ न स कल्य दू जा वि
धान स त्त व य वि पू र्ण मस्तु ॥ अ न स कल्य अ च्छि
द मस्तु ॥ ॥ दि गार्ध न ॥ ॐ न मः ॥ रु वा य व म
था रु वा य व न मः ॥ क वा य व म य स्त वा यः नि वा
य व नि व न वा य व ॥ ॥ व लि पू जा ॥ ॐ दृ तं दृ त
पा वा नः पि व न व स वा वा वा नः पि व न ग वि द्ध
स रु वि व सि स्था हा ॥ ॥ व लि का हा म ॥ गाय त्री ३
ॐ कं सः ॥ अ म नी सा य वि द्ध रु म ल्य अ या य धा
म हि त न्ना न य य वा द या त् ॥ ३ ॥ ॐ श्री ॥ ग नि वि
द्व ० ॥ ग निः ॥ व थि वी ग नि वा यः ॥ ग नि वा य ध यः ॥ ग
निः ॥ व न स य त यः ॥ ग नि वि द्ध व द वाः ॥ ग नि व द्ध ग नि
ः स व ० ॥ ग नि व द्ध ग निः सा मा ग नि व धि स्था हा ॥ ॥
ॐ अ व सा व स्य य य म ना य रुः य य य सा स य आ ल
स्य य य व द्धः ॥ अ व स्य य य ॥ वा (ग) उः स हो जा न
यि य आ ला या नी ॥ १ ॥ य न्ना च्छि द्ध अ द्ध वा द द यः

स्यमनसावातिमृत्तुदस्यतिमृत्तुदधातु ॥ १ ॥
 न्नारुवकुतुवनस्यअस्यतिः ॥ २ ॥ ॐ नमः ॥ ३ ॥
 न ॥ कथानन्वित्ररुत्तुवदूनीसदावृधः ॥ ४ ॥
 ॥ कथाऽविषयावृत्ता ॥ ५ ॥ कस्त्वामत्यामदानाम्
 ० हिमामस्तदधमः ॥ ६ ॥ दृष्टाविदानकवम् ॥ ७ ॥
 अरुत्तुवः ॥ ८ ॥ सखीनामविनाजविहृत्ता ॥ ९ ॥ मम्
 वात्युतिरिः ॥ १० ॥ कथानन्वित्ररुत्तुवदूनीसदावृधः
 मना ॥ कथानन्वित्ररुत्तुवदूनीसदावृधः ॥ ११ ॥ ॐ नमः ॥
 नाकेति ॥ १२ ॥ न्ना ॥ अरुत्तुवदूनीसदावृधः ॥ १३ ॥ ॥
 न्नातिरुः ॥ १४ ॥ न्ना ॥ अरुत्तुवदूनीसदावृधः ॥ १५ ॥ ॥
 नावृत्तुवदूनीसदावृधः ॥ १६ ॥ न्ना ॥ अरुत्तुवदूनीसदावृधः
 तः ॥ १७ ॥ न्ना ॥ अरुत्तुवदूनीसदावृधः ॥ १८ ॥ ॥
 दवः ॥ १९ ॥ न्ना ॥ अरुत्तुवदूनीसदावृधः ॥ २० ॥ ॥
 वदूनीसदावृधः ॥ २१ ॥ न्ना ॥ अरुत्तुवदूनीसदावृधः ॥ २२ ॥ ॥
 नीरुवदूनीसदावृधः ॥ २३ ॥ न्ना ॥ अरुत्तुवदूनीसदावृधः ॥ २४ ॥ ॥
 ॥ २५ ॥ न्ना ॥ अरुत्तुवदूनीसदावृधः ॥ २६ ॥ ॥
 विनायकायाः ॥ २७ ॥ न्ना ॥ अरुत्तुवदूनीसदावृधः ॥ २८ ॥ ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

गायन ॥ गायत्री ॥ ॐ वेदाननाय विद्महे अन्नः
नाचिनाय धीमहि तन्नो वद्विः प्रचोदयात् स्वा
हा ॥ ॐ नित्यं विद्महे गायत्री ॥

ॐ द व द न स न सा व य जन म सि स्वा हा ॥ ॐ म
न स्य द न स न सा व य जन म सि स्वा हा ॥ ॐ पि त
द न स न सा व य जन म सि स्वा हा ॥ ॐ आ त्म द
न स न सा व य जन म सि स्वा हा ॥ ॐ य न स य न
सा व य जन म सि स्वा हा ॥ ॐ य चा ह म ना वि द्वा
य कान य चा वि द्वा न स्य सर्व स न सा व य जन
म सि स्वा हा ॥ ॐ नित्यं ज कृ ति ॥ ॐ स्व कि

न ॐ द्या दृ द्य य वाः स्व कि नः पू षा वि ष्व व द्याः स्व
कि न स्ता अ इ अ नि षू न तिः स्व कि ना दृ दृ स्य ति
द धा उ षा रा ॥ ॐ य यः पृ थि वी य य ड ष वी ष य
या दि व न्त वि द्म य य धाः य य स गी य दि गः स नु
म र्क स्वा हा ॥ ॐ वि क्ता व ना ट म सि वि क्ताः ॐ य क ष
वि क्ता स्य न सि वि क्ता ष्वा सि वि क्त व म सि वि क्त व
ना स्वा हा ॥ ॐ अ नि र्द व ता वा ना द व ता सु यो द व
ना द नु मा द व ता व स वा द व ता कृ डा द व ता दि ता

विष्णुसूत्राविष्णुसूत्राविष्णुसूत्राविष्णुसूत्राविष्णुसूत्रा
 न्नासाहा॥ॐ॥ अनिर्द्धवतावातादवतासूत्रादव
 तावन्नुमादवतावसवादवताकूडादवतादिषा
 दवतामन्त्रादवताविष्णुदवादवतादृढस्यद
 वतान्द्रादवतावक्त्रादवतासाहा॥ॐ॥ श्रीः ४॥
 निवक्तविक०॥ गानिः पृथिवी॥ गानिवायः॥ गानि
 वावययः॥ गानिः॥ वनस्यगयः॥ गानिर्विष्णुदवाः
 गानिर्वक्त्रा॥ गानिः॥ सर्व०॥ गानिः॥ गानिववगानि
 ॥ सामा॥ गानिवविष्वाहा॥ एतद्व्यायविष्वाहा॥ ॥

गतावाक्त्रादवक्त्राकलसादक्रियादाने॥ॐ॥
 द्वादिकलसस्यादक्रियासंघदद॥ गिव॥ क्रि
 लसस्यादक्रियासंघदद॥ आदित्यकलसाय
 दक्रियासंघदद॥ मृत्सूत्रकलसायदक्रि
 यासंघदद॥ गलयस्यादिसदागिवायथप्रिवा
 दिमूर्तयदक्रियासंघदद॥ स्वस्तनक्रियायाला
 यवहिराबांगल॥ गल॥ गायत्रिकोमाय॥ ॐ॥ दव
 तायेदक्रियासंघदद॥ अग्निगाजारुद्राविकार

[illegible]

[illegible]

मूमावानः विन्तः स्नाता मलादिवः ॥ धृतं यद्विच
 मया अमायः पुं धनु मे नमः ॥ उदय नमस्तस्य
 विष्णुः पश्यन्तु रुद्रं ॥ ददददवशास्य मगसन्म
 अतिवृत्तं ॥ धीः शतलक्षं यत्ना महाबाह
 पात्रं धनं कृपाणि वृषमणिनाम्ना ॥ ॐ नमो
 वानामूमं वा ॥ सर्वलोका मं वा ॥ नमो
 वक्तुः ॥ नमस्तुभ्यं नमः ॥ धिः नमस्तुभ्यः
 नमो मावाच नमो मावाच नमो मावाच नमो
 दत्तं कर्त्तुमि ॥ अग्निविन्दुसो मा मस्य दवानामक
 तिव्ययः ॥ कविष्वान् ॥ मा महि कविष्वामवृत्तः
 न्वत्तः ॥ यदवासादिवो कोदगस्तु यदिव्यामू
 कादगस्तु ॥ अयं द्वितीया महिने कोदगस्तु दत्त
 मायं रुमिर्नृपध्वं ॥ पूनस्त्वादिष्वान् कदावसवः
 ससिंधतां पूनवृत्तं ॥ वसुनेधयः ॥ धृतं
 नत्वं वदयः स्वसत्ताः सन्तु यजमानस्य कामा
 अवाक्यं नवाक्यं ॥ वदन् वदन् सी जायता मावा
 वृत्तं नमः ॥ वृत्तं प्रयादिष्वामि महावत् ॥ जाः
 यतां द्याग्नीधनं वीरानयानां ॥ मदिः प्रवृत्तिः

श्रीवद्वन्त्राक्ष (श्रीवद्वन्त्राक्षवचसंजायतामात्रा
 वाजन्मः प्रवक्तुं प्रव्यादिवाधी महाव (थाजाः
 यतांदाग्नीधेन दोरानशानाउः सकिः पूर्वधिः
 जीवाजिष्व (थवाः मरुथायवास्मयजमानः
 स्ववीरजायतांनिकासंनिकासनः पङ्कन्याव
 पङ्कलवत्यानडावधयः पच्यतांथागक्षमा
 नः कल्पतां ॥ यथमादित्येद्विनीयाहृतीये
 हृतीयाः सत्यनसत्ययह नयह यरुहियरु
 ५ विसामरिः सामान्यरिः सर्वः यवान्वाक्का
 रिः यवान्वाक्कायाश्चरि यश्चावषट्कवेवष
 द्वावाश्चादूतिशिवादूतयासकामान्मसद्वयनु
 हः स्वाहा ॥ ६ हिमस्यताजनायनासावपनिष्य
 यामसिउतः कदाहिनालुवानिद्वधाउरुषज
 ॥ ११ गङ्गाहिनालुवानिद्वधाउरुषज ॥ ॥ अ
 कि कामनिवृज्जनय शीवागनिउवागमना अजा
 नपक्षयूणीष्य द्वादयंममधुयन ॥ विप्लवेवर्नव
 द्वाकाणीववजागवदकासायामाष्यवदयूणी
 ष्यवदः ॥ ११ वल्लवः ॥ पिङ्गलाक्षलाहिनीः

व. द. स. व. र्ण. न. म. सु. त. ॥ अ. स्मा. न. व. लि. ह. न. स्मा.
 ना. सा. ग. व. स्मा. न. म. या. य. ध. ॥ ॐ. न. द. र्ण. द. द. अ. व.
 व. र्ण. त्व. म. लि. वि. श्व. ॥ १. व. वा. नि. ध. र्ण. या. नि. ज. य.
 त्व. व. र्ण. त. ज. सा. क. पा. ल. ज. टी. स. व. र. द्वा. वा. नि.
 य. र्ण. द. र्ण. व. ना. ॥ व. र्ण. त. य. सा. य. न. म. म. व. र्ण. ध.
 व. र्ण. सि. ॥ या. व. द. दि. र्ण. म. य. ति. या. व. द. ज. नि. व.
 न. मा. ॥ या. व. त. वा. न. ॥ य. व. र. ति. गा. व. जी. व. त्व. या.
 य. र. ॥ य. न. के. न. य. का. व. ल. मा. रु. ना. को. न. जी. व. ति.
 ॥ य. व. मा. म. य. का. वा. र्ण. य. जी. व. ति. स. जी. व. ति. ॥ ७.
 य. स. र्ण. वि. ह. र. न. द. ॥ न. र्ण. वि. प. ल. ना. य. धि. वी.
 र्ण. र्ण. त्व. क. क. र. ल. द. ॥ ॥ स. पु. ल. द. य.
 क. स्मा. न. न. य. ॥ ॥ धी. म. द. म्हा. लि. या. लि. स. व. व.
 व. न. नि. र्ण. द. व. द. व. म. ना. र्ण. ना. क. र्ण. ॥ गो. र. म. र्ण.
 ज. ग. ति. पु. रु. क. र्ण. स. र. स. वी. जी. व. र. र्ण. ॥ म. र्ण. ना.
 गा. र्ण. लि. म्हा. नि. ग. र्ण. म. क. ले. ॥ सि. दि. वि. या. ध. र. व.
 व. न. दि. ग्वा. ल. ग. र्ण. द. ग. र. न. य. न. वि. प. र्ण. का. र्ण.
 ना. र्ण. ॥ ॥ द. वा. ना. मा. न. वा. र्ण. व. र. न. व. म. पु. र्ण.
 वि. दि. ना. वा. वि. या. र्ण. क. वा. ना. य. र. ना. ॥ पु. रु. ज.

वन्द्यादिव्यालं गच्छदं गतं नयनं विग्रहकाञ्च
नारुं ॥ ॥ दवानां मानवाणां वदन्तवमपुनं
विधिना नानाविधार्तं रुक्मानां यद्गुहागुहज
ननकवं सर्वसंयतिदहं विधुर्गदितिवर्कः
वददगानधर्तं वाक्कमालावदस्ते लघुकाया
लियन्तं रुजवल्यसिर्तं नानिहस्तकाङ्क्षणीकं ॥
॥ ॥ दवायं काञ्च नारादिवुजकेवववः य
सुर्कं वासहस्रं वृन्दादानीं सुवाणां गुर्वववय
वमः गीयंति वदसुर्हिः नानापीठाग्रहाणां
सूयगमनकवः सूयवोविः समाना निर्यसो
मातिजाता वदवदकवधुता मोलिना न नमासु
॥ ॥ ॥ छद्मार्कं सपुञ्जसुटिकमलिमयं पल्ल
वं कृययुक्तं वाष्टीतीर्थप्रयुक्तं सकलजलनि
धिपञ्चवत्ताषधीवायुर्गुहागुहसिद्धमूनिज
नसकलं सविर्गं सर्वरावास्वीवन्द्यनोमिरुक्ता
गिवगदियुर्गं कुरुमुर्हि नमासु ॥ ॥ आदि
ययुगुतां यरामुष्टपतिरुमः पवववववव
द्विवापिवदधुगुष्टपुष्टगोमागुष्टरुगुष्ट

[illegible]

स्वमूलाः स्वयुक्ताः आदिष्टादिप्रहारावसतिवि
सदाजनमदवः स्वदूयाः मन्त्रायागाः सूतीथाः
गणपुत्रवट्टकाः कलिलमालुवा सिद्धिः (प्रः
याददाउरुवकुवसुमनीयन पुष्पुतिरामु ॥
॥ ॥ **कुं** नभाश्रुनय ॥ नृजाकीत्यानिविष्वरुव
कलखरुवपावनरुवः स्वः सदीयविष्वया
रुमनिजननमितीराध्वनीकिहलीजनाथा
रुनवात्माकनकमलिकवधुद्वयतिगुम्भी
वन्दवधुयकडुद्विजनिखिलउन्नाविक्कणी
रुवनी ॥ वक्ताविष्वगकादवतियसकवाः
वक्तापाणीसमीन यद्वगानकदूनाग्रहगण
सहिताः सयनसर्वनागाः रुवम्बाः सिद्धिः
यादविनरुयदवाध्वनुसूयानिदवा यागिन्य
ः सर्वदवाः सुवववसहिताः पाशुवः सर्वद
वाः ॥ सग्वदायस्ययादायरुवयवयदः साम
वदाधरुम यथाथवादिगीयगणपथवदन
यादनीवकदाय ॥ गायणीयस्यगर्जनयनमू
पनिमशुद्ध (प्र) वेवददुविष्वः प्रकनमहिरु

वडवसुसतीयहृन्पीवबाहः॥ ॥ अस्मन्मः
 न्नाथाः॥ सन्तु कलसस्तुलितवेधानवदि। ग्यव
 ताः॥ स्यीगावधद्वारुवन्तु। (गा। वा। द्वा। ॥ १॥ पु। री। रु। व
 पु। वा। जा। ध। र्म। वि। ज। या। सु। प्र। जा। ॥ स। त्वि। नः॥ स। न्तु
 स। र्व। स। त्वाः॥ स। त्वि। ना। रु। व। न्तु। य। र्य। न्य। का। ल। व। र्ष।
 रु। व। न्तु। बा। ह्य। पु। री। रु। व। न्तु। द्वि। प। द। य। न्तु। य। द। ना।
 ॥ नि। रु। व। न्तु। य। र्वि। रु। व। न्तु॥ द। वा। व। र्ष। न्तु। का। ल। ज
 न। य। ति। व। स। ध। ॥ स। र्व। स। य। र्ण। म। य। न्नी। वा। द्याः॥ स
 न्तु। गा। वा। न। य। वि। प। ल। म। तिः॥ पा। न्तु। वा। जा। ध। वि। र्ष।
 (लो। य। न्नी। सा। ध। य। ॥ क। ल। य। व। ति। ज। ना। या। न्तु। दा
 या। वि। ना। ॥ ला। का। नी। रु। कि। रा। वा। य। व। न्तु। वि। प। ला
 रु। कि। व। या। नि। वा। न्तु॥ अ। स्म। द्वा। द्वा। धि। य। ति। ग्रा। ग्रा। ज
 य। न्तु। य। न्तु। म। न्तु। द। व। व। र्ण। ॥ ख। र्ण। सि। द्वि। व। न्तु॥ य
 ज। मा। न। स। का। र्ति। क। व। न्तु। य। न्तु। नि। मि। र्थ। य। ध। ॥
 अ। क। रु। ल। व। व। द्या। यि। ना। रु। व। न्तु। य। ज। मा। नी। ना। म
 व। ल। सि। न्तु। व। म। न्तु। स। ग। ल। स्य। वि। वा। वा। ला। ना। य। न्तु। वा
 वा। ग्य। मे। र्व। य। ज। न। ध। ल। ल। न्तु। स। न्तु। नि। स। न्तु। ना। न्तु
 दि। व। न्तु॥ स। न्तु॥ स। न्तु। नि। व। न्तु। व। स। द्या। ति। ना। वि। ध

वलासिन्दुवमसु.सगलस्याववावापातायना
वाग्यमेवैयैजनधनलक्ष्मीसक्तिसक्तानव
द्विवसु॥सक्तःसक्तुनिवक्तवसुदतिनाविध
रुपायादया.वाजानःप्रतिपालयन्निवसुधा
धर्मलिङ्गासर्वदा।कालसक्तनिवर्षि(पा)कलम
वःसक्तुप्रजाभादिना.मादनाधनवृद्धिवाधव
सुद(काष्ठीप्रमादाःसदा॥स्वस्तिःप्रजास्यःप्रः
तिपालयत्वं.न्यायनमा(र्जनमहामहा॥१॥(पा
वाक्(पात्यःपुरुमसुनिर्ण.लाकास्यमस्तःस
विनारुवक्तु॥कालवर्षप्रययनि.पृथिसस्य
लिनी।द(पायैकारुवदिनावाक्(पाःसक्तुनिर्
या॥ग्रहानाज्ञानभावाकृतमक्तनक्तनयत्तु
वापिमर्कसुखापूजाविधानंक्रमयजनवि(पा
काशमर्कनमर्क।यक्तुयक्तुप्रदापादविबपि
नक्तिसर्वलोकेकनाथं.सर्वसंपूर्णमक्तु
लनक्तुवदयाःश्रुतिःसुप्रसन्न॥दाप्रजावा
क्तुनवक्तुकिरावा.वायल्यदःरवमूनयःप्रका
दा॥नूनाधिकमक्तुकयाधव॥१॥क्रमसुदवाम

मदाष्टकना॥ त्वं गतिः सर्वरुतानां, सीहितीस
ववाचवा॥ अकव्यावणरुतानां, दृष्टा त्वं यत्र म
ष्वत्र॥ कर्मणमनसावाचा, तनान्मायादिनक
माता॥ अद्वर्तीवाक्काहीनं, नृत्तयद्वृत्तकृता॥ न॥
मन्त्रेहीनं क्रियाहीनं, रुक्मिहीनं तथैवव॥ अ
यहा मावनाहीनं, दम्भगीयवमष्वत्र॥

यथाद्वयस्य आशीर्वादः॥ पुंनमः॥ ईरुवायवम
आरुवायवम नमः॥ ईकवायवमयस्रुवायव
नमः॥ गिवायवगिवतवायव॥ ॥ अग्निआ
शीर्वादः॥ पुं अग्निममिः पवमानः॥ पाश्रुकन्य
ः पवहिताः॥ तमीमहमहागयी॥ ॥ मल्ल
विसर्जनं॥ ॥ आत्मा आशिर्वादः॥ पुं यस्य

कर्मणद्विहविस्रमः॥ नवद्वयात्वा॥ तस्यैदवाश्र
धिववन्नयः॥ वद्वपस्यतिः॥ ॥ यजमानः
आशिर्वादः॥ पुं दाद्यायस्त्रायवलायववसं।
सुयजास्त्रायसहसाश्र॥ धाजीवसवदगर्त॥

॥ ॥ वक्ता विसर्जनं॥ पुं उतिष्ठवद्वपस्यत
दवकस्तगह॥ उयययं उमवृत्तः॥ सुदानवः॥

सुखजाह्नय सहस्राश्रितो जाव स न द गत ॥
॥ **वक्त्रा विसृज न** ॥ **पुं** उतिष्ठ वक्त्रा स्यत
द व न स ग ह । उ प य यं दु म नू तः सु दान व ०
दु य धू रु वा स या ॥ ॥ **पणी न विज न** ॥ **पुं** ०
दं विष्णु विव क्र म य धा नि द (ध प दं । स मू र म
स पा ५ स न स्वा ह ॥ ॥ **पणी हि क** ॥ **पुं** क स्त्रा
वि मू ऋ ति स त्वा वि मू ऋ ति क स्मे त्वा वि मू ऋ ति न
स्मे त्वा वि मू ऋ ति । पा षा य न क्क सां ला (गा ति ॥
पणी नारि ष क ॥ **पुं** अ या अ यां त्वा वि ष ० न स
न स म सृ क्क हि । प य स्त्रा न न अ ग म न्क मा स ० स
ज व व सा य क मा व ध न न व ॥ ॥ **वदि भा व न**
॥ **पुं** स त्वा वि दि व द्वा ५ ह वि वा द्यु त न स मा दि स्थे
व त्वा रिः सी म न्क हि ॥ **स मि न्द्रा वि ष्व द व रि व द्वाः**
दि व्यं न रु ग न्द्रु य ॥ ॥ **ह रु य मा यं** ॥ **पुं** न
नू पा अ (न सि न त्व म धा अ य द्वा अ (न स्या य म्
द हि . व द्वा द अ (न सि व द्वा मि हि । अ (न य न न त्वा
दु न न्क न्क य ॥ म धा म्म द व स वि ताः अ द धा
पु म धा द वी स व स्त्र ती य धा व ष्वि नो द वा वा ग स्त्र

[illegible]

न॥ ॐ शं सः कनिष्ठायां नमः॥ ॐ शं सः ब्रह्म
मिकायां नमः॥ ॐ शं सः मध्यमायां नमः॥ ॐ
शं सः तर्जनीयां नमः॥ ॐ शं सः ऊर्ध्वा
नमः॥ ॐ शं सः अस्त्राय हट्॥ ॐ तिक्व न्यास
॥ ॐ शं सः हृदयाय नमः॥ ॐ शं सः नि
वसस्त्राहा॥ ॐ शं सः निखायवी षट्॥ ॐ शं सः
१ कवचाय हूँ॥ ॐ शं सः नखत्रयाय वषट्॥
ॐ शं सः अस्त्राय हट्॥ ॐ शं गन्ना सः॥
अनिकलसः बलि विसेऊ जे॥ ॐ उ द य न म
सस्य निखः पञ्चक उरुदी॥ द व द व ज्ञा सू य म
ग म म अ नि नू त दी॥ ॥ ह स्ता अलि व क्षा॥ ॐ
या नु द व ग णा स व॥ पूजा मा दा य या त्ति का॥ ॐ
काम य सि धि र्थ पू न वा ग म ना य व॥ ॥
व रु का वि स र्ज न म नि नि॥ ॥ व लि क्ता य॥
अ न क ल स पी णि स॥ य द्वा य द्वा णी व द्वा ल द्या
स॥ ॥ ना ग य॥ रू णा व द्वा व स॥ व द्वा णी व द्वा
व द्वा स॥ ग ण द्वा र्वा ॐ ना य स॥ ॥ उ व द्वा उ व
रू॥ ॥ अ नि क ल स व उ रू॥ ॥ य द्वा उ द्वा

वस॥ स्वस्तिक वाय॥ यजमान नृवर्चुर्न॥ ॐ व
श्राद्धं वल गहनं वेक्ष्वामिदमहर्न वल गम
स्त्रिभामि यमनिक्षयसमाहानि च खानदमह
र्न वल गमस्त्रिभामि यमसमा नायससमाना
नि च खानदमहर्न वल गमस्त्रिभामि यमसव
न्धयससवन्धनि च खानदमहर्न वल गमस्त्रि
भामि यमसजा नायससजा ना नि च खाना लृष्ट्या
किनामि॥ ॥ वलि॥ ॐ अथ वा वदधिवकाय
धमादथालिषक॥ अर्हन्वि सदा जह्यसवन्धि
जातु धान्ना धवावी॥ यवा सुव॥ ॥ प्रिययवार्ध
॥ ॐ गजा सिधुक्रमस्य मृतमसि धामनामा सिधि
यदवानामनादृष्टं दवयजनमसि॥ ॥ नि
माल विवर्नं लीतु सदाय॥ ॥ निवर्नं क
लालिषक॥ यजमानस्य कालिकवताया य
नयुक्तसंयुक्तं निमिषा॥ धनं अरिषकसमृद्ध
हमसु॥ ॐ दवसत्वा सदिशुः सुसदा विना
जादुया सुसुहसराया॥ अग्निना हवधनं वज
मवधनं वदयाया लिमिवामि॥ सवसत्वा हवः

[illegible]

[illegible]

[illegible]

गतः सति कुरु प्रत्यावृत्तिविधिः ॥ वाक्पुत्रस्यैव
 दातुं नयाय ॥ विधिर्वाक्पुत्रस्यैव प्रत्यावृत्ति
 धर्मदानकः ॥ धूपदीपजपः ॥ कण्ठस्थं धूपं ॥
 ॥ ॥ धूपं पुष्पं ॥ दक्षिणं ॥ वाक्पुत्रः ॥ धूपं
 नमस्कृत्य ॥ ॥ देवस्तुतिविधिस्तथादि
 विधिः ॥ लेखनहाय ॥ पुं देवस्तुतिविधिः ॥ य
 सवस्तिना द्वादशैः पुष्पादस्य ॥ ॥ वक्त्रं ॥ पुं अ
 दयकचकृतं हृन्मृदगाश्रुतिस्तुत्यः ॥ सर्वतदि
 न्दतं वक्षः ॥ न वलिविषयतविस्तृताश्रुतिविषयमा
 रासिवाचनं ॥ ॥ निन्दनं ॥ पुं त्वजविषयदापु
 त्रावः पाहि ॥ ॥ ॥ धीनिवः ॥ वक्त्राताकमृत्तम
 ना ॥ ॥ सगुनं ॥ पुं दक्षिणाश्रावावजिष्णव
 यस्तवाजिनः ॥ सुबलिनामृताकमृत्तम
 ५ विगार्यतः ॥ ॥ देवस्तुतिविधिः ॥ पुं नमः ॥
 रुवायवमया रुवायवनमः ॥ कवायवमय
 रुवायवमः ॥ निवायवनिवतवायव ॥ ॥ न
 सतिनाय ॥ ॥ कामास्तुति ॥ श्रुतं हीनं क्रिया
 हीनं विधिहीनं महं वा पुजिता विमयाद

[illegible]

नाट्यलखादा॥ वनीसकलत्वान॥ ॥ लिखाव
याव॥ यथासांनसिद्धिस्तथा॥ ॥ नववृत्त॥
ॐ नमो हर्षवर्णलंगहर्षे॥ वेकवीमिदमहं गीवल
गमूक्तिवामियम्यनिष्कृत्यममाथानिचखानदम
हर्षवर्णलंगमूक्तिवामियम्यसमानायमहमा
नानिचखानदमहर्षवर्णलंगमूक्तिवामियम्यम
वन्धुयमसवन्धुनिचखानदमहर्षगलंगमूक्ति
वामियम्यसजागायमसजागानिचखानाहर्षादि
वामि॥ ॥ वलि॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः॥ श्रीगणेशाय नमः॥
देव्यालिखका॥ श्रीगणेशाय नमः॥ श्रीगणेशाय नमः॥
धन्याधवावी॥ यथासुखा॥ ॥ दिव्यदानं॥ ॐ न
जासिष्ठकनस्यमृतमसिधामनामासिधिर्यदवा
नामनादृष्टं ददयजनमसि॥ ॥ सिम्हालविष
नलीखसुखा॥ ॥ क्रसकनद्ववनतयाव
धम्मसदास्यतयाउलकलंगनश्रुतिषक॥ ॥
यजमानस्यकारिषुतस्यवृत्तिनिमित्ता॥ धनश्रु
ति॥ गवसुसुखलु॥ ॐ सुखात्त्वामहिर्विचलुख
द्वविषमहर्षया॥ वासुदवाजगन्नाथ॥ सुधासंक

अजमानस्य कोटि वरुणस्य धूम्रानामस्य धूम्रानामस्य
लिङ्गवत्समस्य कुरुते ॥ १ ॥ सुवास्त्वामहि विवदुः
वृद्धिस्तु महेश्वराः प्रामुदता उगनाथ, सुधासुत
वर्णाविरुः ॥ १ ॥ प्रयत्नस्य निवृत्त, रुद्रविरुजया
यतः। आरुण्यलानिर्गुणान्, यमावेनेन निरुद्ध
॥ २ ॥ वरुणः पवनस्यैव, गणेशश्च सुधागिवध
सुसहितः। गणेश, दिक्कलाः पानुतमस्य ॥ ३ ॥ कीर्ति
लक्ष्मी धृतिर्महा, प्रसिद्धा क्रिया मतिः। वदित
जावपः। गान्धिसुतिः। कानिश्च मातवः ॥ ४ ॥ यमाः
स्वामि विवदुः, धर्मयत्नः। समागताः। अदित्य
स्यन्दमागोमा वधजीवतिता कजाः ॥ ५ ॥ यहास्व
महि विवदुः, बाहुः। कुरुष्व मपिताः। दवदानवग
श्वरा, यद्वान्दस्यत्तगः ॥ ६ ॥ सषयामन्या
गावा, दवमागवपववा। दवपन्नादमानागा, द
स्याप्यवर्णागलाः ॥ ७ ॥ अमुलिमवर्णागला, वा
जानावाहनानि व। जीषधानिववत्तानि, कालस्या
वयवाप्ययः ॥ ८ ॥ सवितः। सागवाः। लेला, सीथानि
उलदानया। पुनस्वामि विवदुः, सर्वकामार्थसि

दध॥ ॥ **ॐ** ददस्य स्वासविष्टः प्रसवविनाश
दस्य पूकाहकासा॥ अग्निना रेव अन्नतजस
वसवस्य सायारि विवामी॥ सन्नखये रेव अन्न
वीयायानायायारि वामी॥ नृस्य नृयनववाय
(अथ सारि विवामि॥ ॥ **वन॥** **ॐ** यदयकव

वृहदहनदगा अरि सूर्या॥ सर्वं नदि नृतसं॥ त
वलि विष्वत वि सता अति विष्वमाहा सिधावन
॥ ॥ **सिधव॥** **ॐ** त्वज वि ष्टदा उवात्र ४ पाहि।
७७ धागि वः वका नाक मूत नना॥ ॥ **र**

उन॥ **ॐ** दधि जात्रा अया व जिष्णु प्रथम वा
जिना॥ सन्नखिना मखाक वस्य ल अयू ५ विताव

॥ **खानतज कुरुया ना॥** **ॐ** ॐ मन्दवा अ
सपत्न ० सुवर्ध महत कथाय महत ये व्वाय म
हत जान वा अये नृ स्य नृियाय॥ ॐ मम मूष्य
पूषम मूष्य पूषम स्य विग यव वामी वाजा सामा
२ स्या क वा मूषा ना ५ वाजा॥ ॥ **ॐ** वाज नृ मध्व
वाजा (गायाम नृ स्य दी दि वि। व द मान ५ (यदमा
सन्नः पित वरु न व (न सूर्याय नाहा सन्नखानः

इस्माकखान्नानापूजा॥ ॥ पुनर्जनकमव्य
वाणीं (गायामृतस्यदीदिवि। वदमान २ (वदमा
सनः पितवस्तुनव (नस्तुयायनाह। सचत्वानः
स्वस्त्या ॥ इतिजनसकलसंस्थानविय ॥ ॥
अथति ॥ पुनर्जासिष्ठकमसमस्तसिधामना
मसि। पितवस्तुनामनाधस्तुनवयजन मति ॥
पुनर्या ॥ पुनर्जासिष्ठकमसमस्तसिधामना
हमिमना त्वविष्टमह ० समिमंदधारावि। पित
वान् ० हमादयमाभा ३ पितृ ॥ सपुतिष्ठावन
दाहवस्तु ॥ ॥ इतिजनकम ॥ पुनर्जासिष्ठकम
पुनर्जासिष्ठकम ॥ पुनर्जासिष्ठकम ॥ पुनर्जासिष्ठकम
पदायजयायव ॥ ॥ इतिजनकम ॥ पुनर्जासिष्ठकम
हिकवस्तु वस्तुवस्तु सपुतिष्ठावन ॥ इतिजनकम
॥ इतिजनकम ॥ पुनर्जासिष्ठकम ॥ पुनर्जासिष्ठकम ॥

॥ पुनर्जासिष्ठकम ॥ पुनर्जासिष्ठकम ॥ पुनर्जासिष्ठकम ॥
कासिष्ठकम ॥ पुनर्जासिष्ठकम ॥ पुनर्जासिष्ठकम ॥
॥ ॥ अथकासिष्ठकम ॥ पुनर्जासिष्ठकम ॥ पुनर्जासिष्ठकम ॥

वि१॥ ॥ महाद्वजाकारि ॥ दमाशर्कद्वी। काम ॥
॥ ॥ श। लिमिद्वजा ॥ वलियात ॥ ॥ द्वी। दयु ॥ धाखा
०० नायस. कालकहाय ॥ ॥ दयुहाम. नवच
पेठीमद्विय ॥ कलनउद्धालाकय ॥ दासयां
दयुयां ॥ लाई ॥ सुवाल. लाठील. आवागक क
माथतविय ॥ ॥ नवबाशसपूर्वसास. यठवा
सनवाय ॥ कुकलउघातउतय ॥ ॥ **द्वजना**
नयवरात ॥ अयादि ॥ वा ॥ पीसम्वरासमु
लान्ककमयदनिदिता. नन्द ॥ कि ॥ सुलीमा. स
छिन्नायवउर्क. त्वकलकलगत. पीवर्कवान्य
मर्द ॥ वत्ताव ॥ य ॥ कान्यन्यनवा. वैवउवत. त्व
तामउलद. सीसुर्कथननसेनमनउद्वतन
ववणीकुऊणी ॥ ॥ वैष्णवीविष्णुमाया. देव
दुर्गाकनानिनी ॥ रुविनस्यामवष्णी. गनूजायवि
सीलिता ॥ ॥ मवक्रगदाहस्ता. वहुवाकविह्वि
ता ॥ वत्तकालामहाक्रीडा. नानावत्तविह्विता ॥
रुनीनयव्यगन्ध. सदाहविनधाविपी ॥ स्वर्ग
मयदधाल. लिनिवयपीसीलिता ॥ अदहा

गोपलनकोलासिहोकाजोनानवलेविहोविता
हनीसयप्यगन्धश्चसदाहविनधविष्णुसुग्न
मह्यदधालालिनिबूयलसंलिता॥अट्टहा
समहादोषकदम्वट्टकवासिनी।निकनिकिया
०नेमस्यनावायलिनसासुत॥॥खपुम्नामकु
सिद्धिपत्रयवविष्णुनखगतिंलावनत्वा।गुरुसु
मंविदुनीवलिपलिकजयसुमनसर्वविद्या
।दोषासुखकविर्त्तनिधिवरुण्टिकायादूका
कानसिद्धि।सर्वसुखमानददकि।अलिपिगिन
वताहेवतलानुवका॥॥आसवकाजिनता
कनरुवनामिनामरुमागीगमासि।वेत्ताळीथाव
नशादधनकजयनामखनामले(गारु।दवावे
वमु(गारुववववकसुमवववकगाराव।ता
मयीकडिकाखाविनवयुतवसाहानदियोय
माद्य॥॥वन्धुकयुतिसुन्दवाजिनयनासि
हासनीसुन्दरीसर्ववामिहसर्वगुरुवणी।उ
कामवारेविता।यस्यास्तदगयालिपयविमला
वांहाहलाधपदा।गान्धनमहिवासुवदयकनी

दुस्वस्वजीनोमहं ॥ ॥ काकासः कसमीव
ः कदरुनः कायः कविः स्वमुवा कवको कज
नादनः ककुजगः कन्दः कदेवासुवाः कल्या
नकरुथीनतप्रमृदिनः धीसिद्धिधागव्यवः कीज
नाटकनायकोविजयतदवासमहासेववः ॥ ॥
महाकालीमहाबोर्धमहाहृक्कूर्मप्रहासूलवू
र्धमहाकाजकारिकापालहस्तर्क ॥ खड्गदृष्टक
र्धदर्व, तिनर्णकलनप्रहासमस्तुमहाकाली
ः कर्सीहावकावर्क ॥ ॥ मार्कण्डेयविषयदूयह
गान्ध्यायावसाव, वक्रयस्यप्रवृत्तकवर्णव
द्वीवककल्पः देवाहृदयप्रमृदिन, सुवस्तुशग
र्धप्रहावासायदवाहववुरुवता, प्रयसंविष्टि
कायाः ॥ ॥ यादवीमध्वकोटरुप्रमथनीयाचप्रु
मृष्टादिनी, यासायासहिषासुवदयकवीयावक
वीजप्रया, यासाधुमुनिधुमुदेत्यदलनीयादवी
दवाधया, सादवीममलकदक्षिणलुज, यष्टीजः
यावद्वह ॥ ॥ उत्तुन्नीकजकर्णिकाप्रविगमाधी
सिद्धिलक्ष्मीयवा, कर्णवस्तुटिकन्दकधुधवलाः

दद्याद्यथासादवामिमलकदाकलुजः ॥ ५ ॥
आवक्रुतः ॥ ५ ॥ उक्तं श्रीकृष्णकल्पाय विगताया
सिद्धिलक्ष्मीयवा. कर्पूवस्तुटिकन्दकपुष्पवलाः
निःशयावयाः ॥ ५ ॥ ससावापुवदः स्वर्णकदर
नीनिष्कम्यनसर्वदा. धीमतीवमूखाम्जादयः ॥ ५ ॥
जाधसहिततायापुनः ॥ ॥ आमानिकाग्निकुरुवा
सिद्धिरासवर्षांशामाकर्तवक्रिषिय(धादलम(धर्म
रु। विवदविहविषयास्यविलीनरावा. सा राव
रावितयवायलमामिकाली ॥ ॥ चेन्दीस्येवसेवा
सनस्यदधमीम(धललाटयनी. सौकीकानिमन
क(गविवगिबस्यतन्वमीसर्वतः ॥ ५ ॥ अथासौविपूवा
ददियतिविवाक्(गः ॥ सदाहसिता. दियान्नसक
सायदेहिरिवर्षातिमयीवाग्मया ॥ ॥ बालः
रावमहाबोधी. कोमावीवकलावनी। वकवसुय
नीधाना. सिद्धवावलयविग्रहा ॥ ५ ॥ उक्तं ॥
ल. सिद्धियायधवापुना. कोमावीवममीगकि. मय
ववववाकनी ॥ वकपूष्यवतादवी. वकमीसावसा
धिया ॥ कालायूष्मिहाकथ. वटवृक्षनिवासिनी ॥

याम्यपी॥०॥सिद्धान्तिकोमावीचनमाह॥ ॥
सिद्धिप्रसूत्रियावमृदुद्विप्रसूधनागम।प्रसिद्ध
गनीवमृगानिप्रसूगृहगतव॥सर्वविधिप्रशम
न॥सर्वगानिकप्रसूरा॥आयुप्रवकासचल
क्षीसक्तितवधन॥ ॥यथावलयप्रदानाणां क
वर्वरुवर्वरुवसुवावर्ण॥तद्वदेवविधाहृणां
गानिरुवसुवावर्ण॥यथालाजनीसमययामि
॥ ॥लीखनकाय॥दुकाववायुवीजतदूपनि
ववर्ण॥वकापालितदुर्द्धकालवल्गुनियुक्ततद
प्रविषयमवद्विवीजसहस्र॥ॐ नमो विन्दुत्तयान
सिक्तकमलदली॥कीवधावाधवनी॥दृष्टकृतनु
निर्यदरुनिकूलमली॥मनुरुल्यदिपार्य॥ ॥व
न॥शीखलुग्यलुनीदीवी॥गधायसमनाहव॥आ
रुखिर्गललाना॥य॥वन्दनप्रतिगसित॥ ॥सिः
दूव॥वीवग्यवीमहावीव॥वीवरुसविहविनी॥य
लायकाकषलीदवी॥सिद्धनागलमरुम॥ ॥अक
न॥अकनीअकयाकाम॥धमकामार्थसिद्धिदी॥ॐ
यिनीमवर्वदही॥यवववयवाहनी॥ ॥जजम

लाक्षाक्षपलादवा। सिद्धुवाकूलमस्तु॥ ॥ श्री
 न॥ श्रीकृष्णश्यामसंघस्य कामार्थसिद्धिर्द्विर्द्वि
 योर्गमवर्चदही, यवज्वयववाकसी॥ ॥ ऊजुम
 का॥ यद्वा यदीतं यवमं यविर्षं, यजायतयत्सह
 ऊजुवलात्॥ आयुक्तमर्थं यतिमस्तु॥ यद्वा यदी
 र्गवयमस्तु॥ ॥ ॥ ॥ नानाप्रवृत्तगन्धादिमा
 वती कस्तुमादयं। सोलायसिद्धिर्द्विर्द्वि, यद्वा वाह
 नस्तु॥ ॥ वस्तुमादयं॥ यवयताकातय॥
 ॥ ॥ वित्तवन्मावसर्ग॥ कां आत्मतत्वाय स्वाहा॥
 कां वित्तवन्मावसर्ग॥ कां निवन्मावसर्ग॥ ॥
 अथादि॥ वा॥ ॥ ॥ ॥ वस्तुमादयं॥ त
 म्मायविनिर्वन्मस्तु॥ आदिमस्तु॥ ननु, अग्निज
 यविर्षवित्त॥ वस्तुमादयं॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 वस्तु॥ यवस्तु॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ॥ अर्थवन्मस्तु॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 वायवन्मस्तु॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ॥ अर्थवन्मस्तु॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 यवस्तु॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

नृविष्णु उरुदवमहः ॥ १ ॥ उरुदवजगत्सर्व
मसोपा उरुवनमः ॥ २ ॥ जयवम उरुस्थानमः ॥
जं जयवम वी उरुस्थानमः ॥ ३ ॥ जयवमाचार्य
उरुस्थानमः ॥ ४ ॥ वलिन ॥ जयवमासनायनमः
॥ ५ ॥ धवक ॥ कुमासनायनमः ॥ ६ ॥ जकिलि
शविचकाकलायेकः ॥ ७ ॥ अष्टायरुट ॥ ८ ॥ जवदु
टवदार्पजवसाहा ॥ ९ ॥ जवलमकलकलमव
लेकां दुटसाहा ॥ १० ॥ न्यासः ॥ ११ ॥ जकिलिशवि
चकाकलायेकः ॥ १२ ॥ अष्टायरुट ॥ १३ ॥ कव ॥ १४ ॥ धन
॥ १५ ॥ नमारागवतिदत्तमलायेकां श्रीगुवा
र्यायादकां ॥ १६ ॥ धुं कडिकायेकलदीपायेकां
धीतऊनीत्यां नमः ॥ १७ ॥ जं जं जं जं ववववनिखः
जं जं मवमारायायादकां ॥ १८ ॥ जं जं जं जं जं जं जं
धावामरवीवकवूयायेकां श्रीनामिकायायाद
कां ॥ १९ ॥ जं जं जं जं मरुताविकायेकां श्रीकनिष्ठा
र्यायादकां ॥ २० ॥ जकिलिशविचकाकलायेकः ॥ २१ ॥
यकवगलदृवायायादकां ॥ २२ ॥ नितकवनासः ॥
॥ २३ ॥ जं जं नमारागवतिदत्तमलायेकां जं जं

[illegible]

पाशासनाय पादकां ॥ वे १ अंग ॥ आनन्द ॥ किरे व
 वानेदवीनाधियनयम्या ॥ १ ॥ पीजलपाचरुहा
 विवाये पादकां ॥ १ ॥ १ ॥ दयायत्यादि ॥
 आवाहनादि ॥ धनम ॥ १ ॥ गायत्री ॥ अलिमि
 ने ॥ १ ॥ एकदि काये विवाह ॥ कलदी पायधी मः
 रु ॥ तन्ना कडि पवा दयात ॥ ॥ अर्थ पाच दूजा
 ॥ १ ॥ अर्थ पाशासनाय पादकां ॥ वे १ अंग ॥ १ ॥
 कः १ ॥ यस्तु व २ ॥ धाव २ ॥ नव ननु नृप वट २ ॥ यव वट २
 कह २ ॥ वम २ ॥ दम २ ॥ धातय २ ॥ विद्यातय २ ॥ विष्नी २
 दू ३ ॥ रुट ॥ १ ॥ धीमहा कोमा विवा विव पादकां ॥ १ ॥
 १ ॥ अंग ॥ आनन्द ॥ किरे ववानन्द धीमहा विद्यावाः
 १ ॥ १ ॥ १ ॥ धीमहा ॥ अर्थ पाच रुहा विवाये पादकां
 कां ॥ १ ॥ १ ॥ दयायत्यादि ॥ आवाहनादि ॥
 यानिमूर्धाद ॥ १ ॥ यत ॥ ॥ १ ॥ १ ॥ कचुय
 मूर्धावद्धा ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥
 आल दूजा ॥ १ ॥ वन्द न पादकां ॥ १ ॥ अकतीया
 दकां ॥ १ ॥ धीवी वरुस पादकां ॥ १ ॥ सर्वजनमाह
 नी पादकां ॥ १ ॥ नाना कपाल ॥ १ ॥ नययी पाद

श्री लक्ष्मी वन्द्य नमो दूता ॥ श्री लक्ष्मी वन्द्य
दूता ॥ श्री वीरहस पादूता ॥ श्री सर्वजनमाह
नी पादूता ॥ श्री नानाकुशल कावयव्य पादू
ता ॥ श्री जगन्नाथानन्दगिरिरेववानन्दवीनाधिप
तयम्या ॥ श्री लक्ष्मी पादूता ॥ श्री लक्ष्मी पादू
ता ॥ ॥ ३ ॥ विन्दु जय ॥ नमो श्री लक्ष्मी ॥ ॥
श्री लक्ष्मी ॥ श्री लक्ष्मी मण्डलानककमपदनिदि
ता नन्दगिरिः सलीमा सुदिन्यायवदुक्त स्वकूल
कूलगत पञ्चक वानावर्द्धा वत्तावः पञ्चकानाथ
नवपि वदुक्त स्वता मण्डलद स सुखयनतस्मै
नमस्तु नववर्द्धा वदुक्त जगन्नाथ ॥ नन्दगिरिरेव
श्री लक्ष्मी ॥ श्री लक्ष्मी मण्डलानककमपदनिदि
दूता ॥ श्री जगन्नाथानन्दगिरिरेववानन्दवीनाधिप
तयम्या ॥ श्री लक्ष्मी पादूता ॥ ॥ विन्दु ॥ जनमाह
ना ॥ श्री लक्ष्मी मण्डलानककमपदनिदि
॥ ॥ श्री लक्ष्मी मण्डलानककमपदनिदि
पदमृदवीमहाध्वंशकृष्णपालाय पादूता
॥ वलि ॥ श्री लक्ष्मी मण्डलानककमपदनिदि

दूकी॥ वलिः॥ **वै** जगं गी गू गः **वै** प्री कल गल **वै**
वाय पादूकी॥ वलिः॥ **आवाहना वि॥** नकुनी द
लु गज मूडा दल यम्॥ **वृ** निदि दव॥ ॥ **ख** व
ला **वा** न **ल** **दू** **का**॥ **आ** धा व **ग** क य न म॥ अन ना
स ना य न म॥ ज क न्या स ना य न म॥ ज ना वा स
ना य न म॥ द वा स ना य न म॥ ज क **ग** ना स ना
य न म॥ ज क **लि** का स ना य न म॥ ज य द्या स ना
य न म॥ ज ग वृ **ज** स ना य न म॥ ॥ **अ** **ध** **ध** **ध**
न॥ **वै** ज व र्क द्य **ध** क याल **र** **ग** **ख** **र** द व ती क
ने॥ न माल **ग** **म** **ला** **ध** **य** **वै** **क** **वी** वि **ज** **म** **ला**
वृ **नि** **ज** **न** **म**॥ ॥ **वि** **जी** **ज** **लि**॥ **वै** **ज**
अ **ध** **व** **अ** **मा** **य** **व** **व** **द** वि **म** **ल** **का** **प्र** **वै** **क** **वी** वि **ज**
पादूकी॥ **म** **उ** **म**॥ वलिः॥ ॥ **ग** **अ** **य**॥ **वै** **ज**
जै **ज** **वै** **क** **वा** य वि **द** **ह** **ग** **वृ** **ज** **स** **ना** य **धी** **म** **ह** **त**
न॥ **वै** **क** **ध** **वा** **द** **या** **न**॥ वलिः॥ ॥ **यू** **ज** **न**॥ **अ** **व**
क **य** **ली** **पा** **दू** **की**॥ **कै** **मा** **ह** **वै** **वी** **पा** **दू** **की**॥ **वै** **का** **म**
वी **पा** **दू** **की**॥ **ठं** **वै** **क** **वी** **पा** **दू** **की**॥ **नं** **वा** **वा** **ही** **पा** **दू**
की॥ **यं** **जै** **दा** **ली** **पा** **दू** **की**॥ **यं** **वा** **मू** **उ** **ये** **पा** **दू** **की**
॥ **गं** **म** **हा** **ल** **की** **पा** **दू** **की**॥ **ध** **नं** **नं** **व** **लि**॥ ॥
का **अ** **सि** **गा** **म** **है** **व** **वा** य **पा** **दू** **की**॥ **का** **न** **वृ** **है** **व** **वा**
य **पा** **दू** **की**॥ **का** **न** **वृ** **है** **व** **वा** **य** **पा** **दू** **की**॥ **का** **न** **वृ** **है** **व** **वा**

क्लृप्तायादूका ॥ क्लृप्तायादूका ॥ च काम
 वीयादूका ॥ ठं वे क्लीयादूका ॥ नं वा वाहीयादू
 का ॥ यं जे लाणीयादूका ॥ यं वा मूलायेयादूका
 ॥ गं महालक्मीयादूका ॥ धनं न वलिः ॥ ॥
 जां अस्मिन्महरे व वाययादूका ॥ जां न वृहरे व वा
 ययादूका ॥ जां वलुहरे व वाययादूका ॥ जां का
 रे व वाययादूका ॥ जां उल्लहरे व वाययादूका
 ॥ जां कपालीहरे व वाययादूका ॥ जां ही प्रलहरे
 व वाययादूका ॥ जां सी हारहरे व वाययादूका ॥ ध
 नं न वलिः ॥ जां रुडकहरे व वाययादूका ॥ जां शि
 प्रवानकहरे व वाययादूका ॥ जां अनिवना वरे
 व वाययादूका ॥ जां अनिजिजहरे व वाययादूका
 ॥ जां कालाहरे व वाययादूका ॥ जां कबालि न
 रे व वाययादूका ॥ जां चक्रपादहरे व वाययादू
 का ॥ जां ही मवृषहरे व वाययादूका ॥ जां गगल
 रे व वाययादूका ॥ धनं न वलिः ॥ ॥ लं०
 दाययादूका ॥ नृग्नययादूका ॥ मयमायया
 दूका ॥ नृ नमसाययादूका ॥ नृ व नृपाययादू

की॥ अं वायवाययादूकी॥ सं क व वाययादूकी
॥ हूं वीं नाययादूकी॥ अं अननाययादूकी॥
ॐ वं वं वाययादूकी॥ धनं न वलिः॥ ॥ श्रीजया
दवीयादूकी॥ श्रीविजयादवीयादूकी॥ श्रीअजि
तादवीयादूकी॥ श्रीअयवाजितादवीयादूकी॥
श्रीजमुनीदवीयादूकी॥ श्रीसुमुनीयादूकी॥ श्री
माहनीदवीयादूकी॥ श्रीआक वं वाययादूकी
॥ धनं न वलिः॥ ॥ शिवायुलिः॥ ॥ वै ज अयाव
अमाधव न दविमलकी॥ श्रीवे कवीविश्वयादूकी
॥ ३ ॥ धनं न वलिः॥ गायत्री॥ ॥ वै ज वे कयायविम
ह ग व ज स नायधीनह न नावे कय वादयाह॥
वलिः॥ ॥ निजल्लय॥ वलिः॥ ॥ अथवा
कनहावलिः॥ जं दं की कूं कः कय वा लायवलि
गुद्र २ स्वाहा॥ श्रीं की कूल य व दूक नाथाय वः
लिं गुद्र २ स्वाहा॥ जं गं गी गं गः ग्लो कूल ग (१) ग्य
वायवलिं गुद्र २ स्वाहा॥ जं हूं महाकनवीवसाग
नाधियनथं वलिं गुद्र २ स्वाहा॥ जं हूं सिद्धि वाम
(२) ग्य वी वलिं गुद्र २ स्वाहा॥ आका १ ग वाविला

वीथवालिंग्टन २ स्वाहा ॥ जं म हा क न वा व स ग
ना वि य न थं व लि ग्ट न २ स्वाहा ॥ जं म हा क न वा व स ग
एव नी व लि ग्ट न २ स्वाहा ॥ आ का २ १ वा विला
स व (ने सा व लि २ स्वाहा ॥ स व सा रू त थः पि सा
व थः स व सा ०० व द व ना सा व लि ग्ट न २ स्वाहा
॥ आ वा रु ना दि ॥ या नि मू डी ॥ ०० नि स्वा क म हा व लि
१ ॥ ०० नि ख व ला या न वि वि ॥ ॥ अ थ ज व ला
या न थू ज न ॥ ०० जं म हा क न वा व स ग
दू का ॥ व लि १ ॥ ॥ ०० जं म हा क न वा व स ग
ज वान न द वी ना वि थू प त थ म्मा थान वा
सा ए व म उ ल रु हा वि का य थू या दू का ॥
०० जं म हा क न वा व स ग
लि १ ॥ ॥ ०० जं म हा क न वा व स ग
य या दू का ॥ व लि १ ॥ ॥ ०० जं म हा क न
न द ग कि रे व वान न द वी ना वि य त थ म्मा
थी क ०० ना थ स्व ग कि म हि ना य या दू का
॥ व लि १ ॥ ॥ ०० जं म हा क न वा व स ग
थी व का ला वि द या दू का ॥ ०० जं म हा क न वा व स ग

व विमलपीमाहः विचयादूकी ॥ **ॐ** जगद्धा
व जगद्धा व जगद्धा विमलपीकोमा विचयादूकी
ॐ जगद्धा व जगद्धा व जगद्धा विमलपीवेक विच
यादूकी ॥ **ॐ** जगद्धा व जगद्धा व जगद्धा विमलपीवा
वाही विचयादूकी ॥ **ॐ** जगद्धा व जगद्धा व जगद्धा वि
मलपीवन्दापी विचयादूकी ॥ **ॐ** जगद्धा व जगद्धा
व जगद्धा विमलपीवामुखा विचयादूकी ॥ **ॐ** जगद्धा
व जगद्धा व जगद्धा विमलपीमहालक्ष्मी विचयादूकी
॥ **धर्मनंदलिः** ॥ **ॐ** जगद्धा व जगद्धा व जगद्धा विचयादूकी ॥ **वलिः** ॥ **ॐ** जगद्धा व जगद्धा व जगद्धा विचयादूकी ॥ **वलिः** ॥
पूरकपुत्रे स्वाहा वागीश्वरी वृद्धमन्त्राविका विच
यादूकी ॥ **वलिः** ॥ **ॐ** जगद्धा व जगद्धा व जगद्धा विचयादूकी ॥ **वलिः** ॥
वानन्दती वा विद्यतयन्त्रा ॥ **ॐ** जगद्धा व जगद्धा व जगद्धा विचयादूकी ॥ **वलिः** ॥
कर्मरुद्राविकायेया ॥ **ॐ** जगद्धा व जगद्धा व जगद्धा विचयादूकी ॥ **वलिः** ॥
ॐ जगद्धा व जगद्धा व जगद्धा विचयादूकी ॥ **वलिः** ॥ **ॐ** जगद्धा व जगद्धा व जगद्धा विचयादूकी ॥ **वलिः** ॥
ख ॥ **ॐ** जगद्धा व जगद्धा व जगद्धा विचयादूकी ॥ **वलिः** ॥ **ॐ** जगद्धा व जगद्धा व जगद्धा विचयादूकी ॥ **वलिः** ॥
जगद्धा व जगद्धा व जगद्धा विचयादूकी ॥ **वलिः** ॥ **ॐ** जगद्धा व जगद्धा व जगद्धा विचयादूकी ॥ **वलिः** ॥
मः ॥ **ॐ** जगद्धा व जगद्धा व जगद्धा विचयादूकी ॥ **वलिः** ॥ **ॐ** जगद्धा व जगद्धा व जगद्धा विचयादूकी ॥ **वलिः** ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

मू य क मा रु ध वी पा दू का ॥ व को मा नी पा दू का ॥
टं वे ल वी पा दू का ॥ तं वा वा ही पा दू का ॥ यं वे ल वी ॥
पा दू का ॥ यं वा मू उ ये पा दू का ॥ गं महा ल वी पा दू
का ॥ धा न न व लि ॥ ॥ व उ व ल य ये पा दू का ॥ य व
उ ये पा दू का ॥ व (उ म य ये पा दू का ॥ व उ ना यिका
ये पा दू का ॥ व उ द व ये पा दू का ॥ व उ व र ये पा दू का
॥ व उ वू य ये पा दू का ॥ अ ति व उ को ये पा दू का ॥
ध न न व लि ॥ ॥ वे न अ द्या दू का थ द्या दू का धा व
धा व न दू कं सं सर्व तः सर्व सर्व दू कं सं सः दू कं दू कं
प दः पा दू का ॥ व लि ॥ ॥ वे न व दू कं दि नी दू कं
वे ला व दू कं व ली दू का मा म द्या व ली दू का म द्या व ली
रु का वि ली वे सी सः यी पा दू का ॥ व लि ॥ ॥ व दू कं
या दू का लि यि य अ लि ॥ मूल मूल रु क वा ल दू का ॥ ॥
वि य अ लि ॥ वे न का का दू कं व वं वं जं जं वे यं मू
का यी महा का मा वि का वि व वू पा दू का ॥ ३ ॥
म उ न ॥ व लि ॥ ॥ ग य ली ॥ वे न व दू का मा वि
वि दू कं म दू का ठ य वी म लि न ना क मा ल य वा दः
या न ॥ व लि ॥ ॥ अ द्या रु ना दि ॥ या नि मू दू का ॥ ॥

वलि विद्यया सुकला का जाव ॥ ॐ ॐ निवा रुगवतिव
व. माया रुदा न (येव वा कि किनी विमला वेव य म
जि का त्व क क र्ष ला ॥ १ ॥ द्यं ठा द नी वो व ना ना कि कि
नी का कि पी रा था ॥ सर्व वि चि वि ना ॥ य सर्व ग क नि
वा व र्ण ॥ २ ॥ सर्व ल का व म नि र्ण सर्व सा य वि दू वि
र्ण ॥ यथा द ॥ मला य क था सि दित ल का र्था व लि ग क
२ खा हा ॥ ॐ नि नि वा वि व लि ॥ ॥ य ज ना म वि या
ॐ लि रु य क ॥ ख व या म स ॥ ॐ ॐ अ वा व अ ना य
व व द वि म ल की था वे क वा वि व या द की ॥ ३ ॥ व लि
॥ ॥ ऊ व या म स ॥ ॐ ॐ अ न न द ॥ कि रे व वा न
न वी वा वि य न य न ॥ ॥ य वि म म ल रु न रु द
वि का ये या द की ॥ ३ ॥ व लि ॥ ॥ य अ या म स
॥ ॐ ॐ का का कू कू ॥ वं वं ऊं मं ॥ ॐ ॐ का पी म रु
का मा वि का वि ॥ व या द की ॥ ३ ॥ ॥ नि वा वि
रु य ॥ व लि ॥ ॥ खा क म रु व लि ॥ ॐ ॐ का का
कू कू ॥ क य या ला य व लि ग क २ खा हा ॥ ॐ ॐ का कू
ल क य व रु क ना था य व लि ग क २ खा हा ॥ ॐ ॐ गी गी
ग ॥ गी क ल ग ॥ य वा य व लि ग क २ खा हा ॥ ॐ ॐ

[illegible]

कल्पसिद्धिबस्तुवृन्दं नैव अननमः॥ ॥ जय॥ ॥
 स्वाहा॥ १०॥ श्रीं श्रीं स्वाहा॥ ॥ स्तोत्राहा॥ ॥ मालम॥
 वां स्वाहा॥ १४॥ द्यां द्यां स्वाहा॥ १४॥ वां स्वाहा॥ १४॥
 ॥ निर्वाणवा ॥ ॥ रुक्मा॥ ॥ मञ्जुलव
 यक॥ ॥ श्रीवाजय ॥ ॥ यलवपत॥ ॥ रुक्म
 ॥ ॥ अखलमञ्जुलाकारं कार्कश्यनवनाचवर्णं
 त्वदं दलितं यन, तस्मै प्राणवदनमः॥ ॥ श्रीमहा
 रुक्मवदुवाच॥ श्रीदक्षवाच॥ श्रीसर्वहर्ममञ्जुला
 न्क, कस्यप्यनिदिगा नन्दः किं सुखी मा, सुखि
 न्माथ वरुण, अकलकलगर्भं, यैवर्कवान्नवद
 । वत्सावः यश्च काष्ठ, त्वनवधिवरुवः वा उगाहा
 रिषकं, दिव्याद्यैर्मृष्टिभ, अरुसखरुलकवावि
 न्दुप्याखमडा॥ वालिका मालवदुर्दयवमगिव
 कलावकुद्वीकमाना, श्रीनार्थवरुयान्नवनव
 कलितं अगमरुदमुगादं, श्रीलिसिद्धावतादं यथ
 मकलियुगकाक, एवाधिकारं, नवासेयुलुला
 निनवद्वरुषमतं, नवमकादिबद्धं॥ सन्नान(ग
 ययिषुं कस्यप्यदसकली, वा उगाहं कमानं, (गवा

मन्त्रालिख्यगोकाकलेवाधकाव. नवास्वधुल्ल
निनवप्रवृत्तमत. नष्टमन्त्रादिवद्वे॥ सन्ताने
वपिपुंक्रमयदसकले. वाउगावृत्तमाने. (गवा
वमलुलानियविद्यमविमलपुष्टसहाववृन्दः
आदावद्वदगानेकलकमसकलेमलुलकनः
पूर्वसिक्तावृत्तिसमनयपुमलकयकृत्पिपुसि
द्विगिवाग्ने॥ स(वविद्यामस्तमीप्रसवमनुर्यय
त्ययस्वाधिकार्यसिष्टवृत्तनसस. नमस्तुववृन्द
रुववृत्तिकाजग॥ ॥ **विद्यागागकिरुगाखापिप**
थगतियुगाविद्वत्वापिपकाजावेतस्याधीडाडिया
नववकलसहिर्गमध्वसिहसुदीर्घा. (का) नकुआ
वृत्तवारय. यकृत्तिननिलथदद्वि. (ग) ग्येवका. (ग)
धीवाभधीयुष्मपी. (०) प्रसुजनरुयकृत्पिपिथन
विध्यं॥ **कुं** तस्या. (य) का. मन्त्रपुंमदनकलिमूर्तसव
सिद्धाले. यष्ट. **कुं** ॥ **विद्यागागकिरुगाखापिप**
वकलालेकृत्तयोगवृन्द. **कुं** तन्म(ध)दिव्यलिङ्ग
यवमसुखकवृत्तिनूयपखयुयं. **कुं** निर्यानन्द
नृपं तदूयविमथनंमद्युकावेविहिनी॥ **कुं** विद्याः

रागायगम अनुरवविमलविषयी (० ललाटः
उचयं वार्यं समस्तं हितं अजननी कृदं कि
हिरदा जं न गृह्य दवदवा अकलकलमथान
न्यधा विषयता. उं गुवा विन्दु रगा यं उरुयह
वपी सिद्धि दिव्य वया ॥ यो नित्यकी ॥ सुवकार
गमदितयदान न्यधा विषय सिद्धा. का कृवनी य
का मा कृति तव वत नू पी कृडि कार्या नमामि ॥ ॥
सकानं मन्मा (नन. अनुरयं तव दवता. निर्गम
पी ० उं काव सिद्धा नथ यकी हिता ॥ रुक्मी रुतीः
उरावासी. वृद्ध (ये वकद सवक ॥ स कट स विनय
कं जसर्वे उरुवासिनी ॥ गृहं वन्दु यवी धाकं. स
जामन्त नरे ववः ॥ ग. य अमलिका दवी. वाममाः
(नय कल्पयत् ॥ अनुरयं यय याव. सधिका वन्दु
काक (० ज नव क गिला सन. हितिः श्री कामव
यक ॥ का हिति विनिवृत्त उ. सिद्धि (ये वरुसा ग
व. उरु दं त स्य दवलि. आजानाति कलाक्रम ॥ वा
उगा धा वरु दन. न्या स कृटं क्रमन्त ॥ पूजितं सि
द्धि दं रुद्ध. सुगि वाय निवदयत् ॥ ॥ नमामुत

व। उ। द। ह। न। स्य। द। व। ल। आ। ज। न। न। क। ल। क। म। वा।
उ। ग। वा। न। रु। द। न। न्या। स। कू। ट। क। म। न। ध। पृ। जि। न। लि।
दि। दं। रु। ड। स। गि। वा। य। नि। व। द। य। न॥ ॥ पुं न। मा। मु। तं
म। हा। मा। थ। स। न्ना। दं। ह। य। ना। य। व। य। का। कि। नी। वि। श्व। धा। न्य।
ना। दा। र्थ। वि। न्दु। म। लि। नी॥ अ। दं। हा। य। स। मू। त्यन्तं। अ। व। लं
वि। श्व। धा। वि। ण। म। हा। क। पु। ल। नी। नि। र्थं। दं। स। म। धे। य। व।
स्ति। ना॥ सा। म। स्रू। य। नि। म। धे। रू। व्या। म। व्या। पि। य। ना। य। न।
। पुं। का। न। वि। प। हा। व। रू। ह। का। ना। दं। ह। धा। वि। ण॥ वा। ला
य। ग। स। धा। स्रू। य। अ। न। न। वा। क। या। य। य। ह। का। ना। दं। क।
ला। धा। वा। य। द। किं। ज। ल्प। मा। पि। तं॥ स। क। ला। र्थ। म। हा। मा।
थ। व। व। दं। ला। क। पु। जि। नं। य। के। क। ना। दि। म। धे। रू। स। म्मं
स। के। क। रं। दि। नी॥ अ। वृ। णि। ग। क। ला। दं। वी। रुं। दी। नी। वं। धं
वं। धं। ग। वि। श्वं। न। नि। रा। दं। वी। रुं। ज। नं। कू। टि। ला। कू। र्ता
॥ वृ। णि। वि। श्वं। वृं। दं। यं। वृं। यं। वृं। यं। स। द। गि। व। यं।
यं। वं। म। हा। यं। यं। पा। दं। मू। लं। यं। व। स्ति। ना॥ वं। ला। कू। जं। न
नी। दं। वी। न। म। स्रू। ग। किं। वृ। पि। नी॥ वं। श। र्थि। ग। लं। मं। धे। रू।
मृ। ण। लं। नं। नु। वृ। पि। नी॥ वि। न्दु। मं। धे। ग। ना। दं। वी। कू। टि। लं
वां। दं। वं। पुं। का। उ। वा। लं। क। नि। का। रा। स्रू। दं। यं। नं। वं। लं

चिनी॥ उमा (मदमना) गोवी द्वादशादित्यवर्चसा
। सुलसुखं नवावस्तु, हंसाखयालधाविणी॥ त
न्नाखयव माधवी दक्षि (लासवगमिनी) नागाय
उसमस्तु, सध सुखयवाहिनी॥ दन्तरवयव
मानन, नालसुखिवलिता। नादयन्त्रिकस
युक्तु, उलासुसमचिनी॥ सुलसुखसुसुखवः
धमाधमयनदय। कायकायलकहल, विष्णु
ननादविपद॥ पुत्रायवयवसुख, वेतन्यगास्व
नधरव। सर्ववर्णधवीदवी, उक्तलनयवलिता
॥ जगन्नाविणीदवी, सैवराय ० गमिनी। अगा
वीव महालाग, सैसावाल्नवताविणी॥ जयाववि
जयावेव, अजिनावायवाजिना। सुन्दरुवीजमध
ल नमस्तुपायमावनि॥ वन्द्यमास्तुववीदवी, वा
उगाकवलिता। जामनीगकि, सुलन महाबुद्ध
समन्तित॥ जमनीजामनीगोवी, मायायनयवाः
हिनी। स्वचन्द्रसेववीदवी, सैकाधान्नहसेववी
॥ यक्षगोवर्णसुखान, लयानुवायकीहिता। अ
स्तुताखववध (७) नमःकापालिनीगिव॥ वूर्वक

हिनास्वितुन्दरुववाववा. सखा. पोन्न रुववा
॥ यश्चागोदधुसुखाव. लया नूडाधकीहिता। अ
सुताखववुधुधु. नमः कापालिनीगिव॥ नूनक
नीमहामाय. नमस्तुतानरेवती। दंष्ट्राकटविश्व
जिह्वा. तावकाकीरुयानन॥ नमामिदवदवनिः
अधावधाववुपिली। कालासूचीवगवती. उमाः
दवीनमासुत॥ यागिनीवधियादवी. (गोनीलकी
सवस्वती। रुं सवा. (गध्वनीदवी. (गामूची। किमा
लिनी॥ काष्ठासीसुरुगादवी. दन्तकास्यायनी न
धा। निरुक्तिनाममास्याता. वकावेकान्द्रवायना
॥ वाक्कीमादंश्वनीवेव. कीमावीवेकवीतथा। वा
नाहीवेवमादंश्वनी. वासुधात्वरुयानना॥ या. (गः
गीर्वाहद्विद्वि. कलाषुकसमन्वित। अष्टाशुः
कधवीदवी. लकीर्त्तवदुपिलि॥ उन्दीवेवत
था. (गया. याम्यानेसत्यवावुणी। वायवावेवकी
दवी. (गानीसमदाददा॥ पुयागाववुणी। काला
अष्टहासजयनिका। वदिनेकास्रकवेव. दवी
काठववावुथा॥ तथाकालीकूमादवीदवदु

गीनमासुता। रुडकालीमहादवी वासुधार्त्तः
नयावहा॥ महाकुक्षमहागान् नमस्तु॥ किं
नूविनी। सुखेवः स्वतिखाहान् दयादविक्रय
म॥ ज्ञानाधितामाहमायं एतमिच्छामि वदितुं। य
स्त्रिदं य० तस्तु। विस्मयः देवमानवः॥ प्राप्ताति
विकिर्ताकामान् स्त्रीनीव वन्नराव वग॥ ॐ नमो
द॥ किं समस्तं महामाया कर्म समर्थं॥ ॥
पिंगारवीवकक॥ किं लिङ्गिलिववव किं किं पीमा
लजानं दंष्ट्रा स्त्रीकुलरावं सकलविषद्वयं प्राः
षट्कं नादं। सुखकर्मिह नादं ललललललल
नवव नव्यागतत्वं रुतयताधिनाथं सकलरुय
हवः कथय्यालनमामि॥ ॥ वक्रान्वयं कलितपि
गजटाकलार्थं कालावलीजटिलदधुधवयवधु
। सुखादयावनककावलं गंगेवं गंगीसूतः
वदकनाथमहं नमामि॥ ॥ हन्तावदददः र्व
समितरुवरुयं सर्वविद्यातुकार्यं गंगीगुं नैषथ
गंगगलगतिगतं सिद्धिस्तुर्धदायं। ॐ नमो मूढाग
जाखगसयवनगतं जाययावेकसीहं ॐ दं दं

समिंतं रुद्रं सयं सव विद्यातु काय. ना ना गू (न वष
गंग गलगतिगत सिद्धि सर्वार्थदायं। पुं नूं मूलाग
जाखगसयवनगत. आष्यानेकसीहं पुं जां पुं
हं गांग (ग) दिवद मूरवग (ग) विप्रना (येन मस्त
॥ वेष्मवी विष्मसायाश्च देवदूतानि नागिनी
हविस्तस्यामवधूती गवूतापविर्मस्तिता ॥ ११॥ सव
कगदाहका. वहुवाकू विह्विषिता। वल्लवाला महा
कीजा नानावल्लविह्विषिता ॥ रुवी मय्यगन्धश्च स
दाहविमधाविषा। स्वर्ग मय्यवयागाल. सिद्धिदूय
लर्मस्तिता ॥ अष्टहासमहाक्षेत्र. कदम्बवृक्षवाः
सिनी। निवृत्तिनी ० नेमस्य. नावायलिनमास्तुत ॥
॥ ॥ उकावा नमयादाहसदमलकुजा. बाधव
स्थानिलि (मा वायुवाद्याश्चिनाक. गतिगकलजि
वा. विन्दुनादाहयूक ॥ निमन्त्रितामधवा मय्ययव
मकलालेववा मनुमूहि. पायाद्यवानवालासक
लपुत्रववालेववपीकज ॥ ॥ ॥ वकापीकम
लेन्दुनीमयवदनी साहववीलया. कोमावीविष्टद
पानासनकवी वकायूधावेष्मवी। वावाहीयनद

धावद्यद्यवमूर्वाचिन्दीववडायूध। चामूअगल
नाथरेवगलावन्कनुममारुका॥ ॥म(ध)विम्र
सनरु, मदमूदिनमूर्वावडायधसूदीकावः
काप्यायवपय, खनदिगयलवपीप्रयागादिक्
ज।यकायविगका(प)वममगहसखावडाः
(ग)सूवनि, गाहाविगविहवा, कमयदसहिनापा
हुद्धाविगवपुः॥ ॥खप्रमामरुसिद्धिपव
यवविगनखगतिलावनन्दी, गलुसुमंविपूनी
वलियलिगजयसुमनसर्वविद्या। दीयोयूवीक
विल, निधिवसुठिक्की, पादकीकामसिद्धि, सर्वा
नननानददकि, अलिपिगितवगारुववलानूवकी
॥ ॥योमावकाशिनजा, रुनरुवपमितामरुमा
नगगामि, विमाळीवावनजायुध, नवजयनामख
वावत्त(ग)रु। दवाहेवसु(ग)रुववववकसुमव
ववक(ग)राव, सामथीकुडिकात्वावित्तयुतवसाः
हानदिषोद्यमाद्य॥ ॥वधुकयतिसून्दवाशिन
यनी, सिहासनीसून्दवी, सर्वजामिहसर्वगफरुव
पीउहामववाहविना। यत्मासदग।यालियद्यविम
लीवीकुरुलाथेयदा, नामन्दसहिवासूवकयक
वीउमवधवीनोम्यह॥ ॥काकासः कसमीवलाः
हहहहह॥ कासः कसमीवलाः कसमीवलाः कसमीवलाः

[illegible]

साधुमुनिपुत्रदेवदत्तनीयादवीदवायया. साः
 दवीममलकदन्दिपुत्रजेवपुत्रजयावकउ॥ ॥
 उदुन्नीदजकलिंकाप्रविगताप्रसिद्धिलक्ष्मीपवा
 कपुत्रमुद्रिकन्दकपुत्रवलानिः। मय्यागपुत्र
 । सीमावापुत्रवदुःखयंकदहनीनिकम्यनसर्वदाः
 प्रामत्यवमूखान्जदः। उजाधनसिन्हायाउन॥
 ॥ ॥ अगपुत्रवलिप्रायहाविलिजगदुःखेयविडा
 वली. क्ता। लाविलिवेविमाविलिसदार्नसावमाहाः
 विला। प्रयत्नाविलिकाव। एववयवया। यसेवा
 विला. लीमयानिनवामरीकुरुलदाप्रसिद्धिलक्ष्मी
 नमः॥ ॥ यासानिकानिकदहवास्तिसरास्वव
 या. सामाकवद्विप्रिय। धदलम। धर्मसु. विचंद
 विहविषयाखविलीनरावासावावराविनयनी
 यलमामिकाती॥ ॥ वदुःखेवसवासनस्यद
 धनीम। धललाठयरी. सौहार्दकानिमनूक। गाविव
 निवसातन्वनीसर्वतः॥ यथासाविप्रवाददिसुमि
 विवाक्ता। ॥ सदाहसिना. विद्यानसहसायदः
 मिनिवदीशानिमयीवागमयी॥ ॥ नमस्तुतवद

निवृत्त्यानन्वतासिद्धतायथासाध्यप्रवादद्विधा। त
विदाक्ता (१॥) सदाहृदिता। विद्यान्तसहसायदेः
मिहिवर्धयतिमयीवाग्मयी॥ ॥ नमस्तुतवद
वणि, सिद्धिलक्ष्मीमहाजगत्। यथेगिनामस्तुतवि
वाञ्छलक्ष्मीनमस्तुत॥ ॥ बालरावमस्तुतबोधि
कोमावीवकलावनी। वृकवस्तुयवीधाना, सिद्धुः
वाञ्छलविग्रहा॥ वस्तुजगत्किंशूल, सिद्धिपात्र
धवाञ्छला। कोमावीवमंगकि, मयूत्रवववाहः
नी॥ वृकपूवववाहवी, वृकमीसावसाधिया। का
लापूवमहाकृत्, वटवृक्षनिवासिनी॥ याम्यः
यी (१॥) सिद्धानिर्ग, कोमावीवनमस्तुत॥ ॥ ह
सीपूवधिकारी, अञ्जलिगवनिहा, कालबाधीरु
वानी, येषवीकृत्किंकारवा, नवनवधिकया, सिद्धि
लक्ष्मीः प्रवाधी। रासानाखायवाखा, विदुवनजन
नी, वाजवाजयवीर्य, एकासानकनूपा, विदुवन
जननी, नोमिदवीकृमावी॥ ॥ यथावानप्रहारा
लीकववैरुवस्तुवावली। तद्वद्वेवविधाहली, ॥
किरुवस्तुवावली॥ ॥ अन्यजगत्वालीनास्ति, स्वम

वशवर्षमम। तस्मात्कावृत्त्यरावन. वन्दमप्यव
मश्वरी॥ **अथ गन्धादि॥** ॥ नमस्तुभ्य॥ **(गायत्री)**
य॥ ॥ नवययवियाहातिलवान॥ समयवा
नयक॥ दूधसम्रागलकायवा३॥ कातिलवि
हय॥ समयवाय॥ ॥ **तथै॥** यीनः यनाः
सनस्तुव रुयहृद (लाह ववा मनु नृहि स्थु
यु॥ सनस्तु गल पुव वट्काला कपाला रुनीदा
। वकायका सुतीथाः पिरु गल सक्ता. मानव ४३
कृषपाला. यागिन्नायागयकाः जल वल खवल
पानमनसि वलु॥ पिवनुद वना सर्व. सनस्तु
गला विद्या। यागिन्मक्षययावस्थममदहववहि
ता॥ नमः श्रीनाथाय नमः॥ नमः सिद्धिनाथाय
नमः॥ नमः कजनाथाय नमानमः॥ विन्दुः
य ३॥ ॥ **यन्त्रि॥** चकानुहि वनकधा विजग
नी. यू (स्व) वी वासव रुतगी गगलाय सारुगवती
निः (ग) स्ववी दद्वे (लाह) नागम्यकज स्ववी कुलगला
यावृत्त्यदिनायका. श्रीवामप्यलमामि विविज ननी
द (ग) स्ववी सिद्धिदी॥ ॥ अन्तपूर्व गतं पर्वरुग

निःशब्दवादादौ लक्षणानामेव कुञ्जवद्वक्तृलक्षण
वाच्येति नान्यथा प्रीतिमात्रं प्रत्यक्षमात्रं विविक्तजननी
यः शब्दवादिद्विदी ॥ ॥ अन्तर्पूर्वगर्भपदं रग
वती येन ननु पात्रिकात्तनकावकृता तथा ह
विद्वद्वाचका मन्त्रविषयं । रत्नहेतवप्येवकं त
वनूय प्रीत्यागिनीयं वक्तुं वक्तुं वक्तुं वक्तुं वक्तुं
विसर्ज्य मीमांसुनिर्णयिणीकृता ॥ ॥ स्नानकाय ॥
वाचनतय ॥ अरिषक ॥ यन्मनादि ॥ स्नानविय
॥ यजमानादिन स्नानवियमालका ॥ ॥
कोमात्री विसर्ज्य ॥ सर्वमन्त्रलमात्रं लयनिवस
वार्थमाधिकं । शब्दवाच्यं अन्विकं (नेविना वायलि
नमात्रं ॥ ॥ कोमात्री विसर्ज्य ॥ ॥ रववया
पीरियार्तं स्नातलवियावकाय ॥ ॥ ऊवयादू
यिनिमात्रं दूमात्रयानकीनवियावकाय ॥ ॥
यथ्यावाहालक ॥ मूलनकीनिवियावकाय ॥
॥ ॥ साक्षिथाय ॥ ॥ रात्रिलवान ॥ समयन
यक ॥ कलनसहित ॥
॥ ॥ वन्धवन्तसह ॥ यथ्युक्ताय ॥ ॥

सुनिष्कारिक कृष्णायाम् कृष्णकोमावाचनम्
रुनविधिः समाप्तः ॥

१ समस्त ॥ ११ अग्निन उक्त पक्ष ॥ पूर्वमास्याति
(थो, उरुव रुदन कव, अरव या (ग, जंगम न
वाव, धक्कू, धीधी जय रु पती नु मन्त्र देव
सन, कार्तिके धर्म अरु म् या दा दि न ॥ ॥

१ समस्त ॥ १८ कार्तिक उक्त पक्ष ॥ पूर्वमास्याः
कि (थो, अग्निनी न कव, सुद्वि या (ग, जंगम न
वाव, धक्कू, धीधी जय रु पती नु मन्त्र देव
सन, कार्तिके धर्म पतिता या, धसा दू लि द य
का व समाप्तः ॥ १८ रु म रु ॥



१ धूजाशः । नित्यपानम् ॥

॥ होयद्यम् ॥

कलसुताहाप्रदम्बः॥१॥वार्कगणेशावाः

अथान्वित १८

५१ भा.३

निखग्यउ२

गो ० ग्य ३

मा.व.सू.१८

क्षयदहम् ।

कलस्यामावयू।

यूनि० आद तिवा

नलि कोलम्बुः।

बा. द. व. ध. य. या. ता.

द्रसकन

अथवा

सिद्धिमुद्र

द्वयै लम

नाथ सह

वैद्याय नमः

यनवास, सले

पद्मनालका

वन सिंहास

५५३०

ଜଜନକା

नड संखू३०

ॐ नमः

दूवात्याख्य ५२

बकन मालका

प्राप्तः ०० लान्दिनया

ધનિ વા ૨૧

प्राप्त होऊं. विद्वज्

वलिशावतववाहवात४

वक्रान्तमालिका

धविवा २१

वलिशावतवधादुयात ४

(गमयाम)

कृष्णवज्रजा

(गमलजाग्वय २

मलानउतयू २

वक्रानधादुवलिधात १८

आकाशमाल १८

दूदूया २

धविधा २

धन अस्ता १

कलि अस्ता १

साखव अस्ता १

पंचगव्य, धवान

(गमयपिनीख ४ अर्चयाता

दवस्नानयाताकायवाया १

कायावक् १ (गमयाहिनावक् १ नीख अर्चयाता

याता १ वंलानि वृत्तया

यात ३ लोकोउत्तिरज

पा २ सहावतिनासा

निरुधधर्मदानयागासनधि॥

धूजाशु।

माहाद्यग्वज।

पैवाभुत

पैवगद्य

गंगाजल

वहुवज्रमवित

सुगंधवित

जजकायू३०

नियाजजमकायू१

वहुवज्रयत

नियाश्रुत

सिधव

माखान

मालखान

हुलसि

नायपदा

कादवदल

नगवाज

धवन

कादुतिसाव

नायवेगिसाव

नायखान

जिधिसान

सथराल

जमलरुव

नवकाससंयवकाद

नियादाहल

दधव

धूपवास, सिद्ध

धन

धूपदह

आवति

धविवा

मसा

उल्लसि
तायूधक
आदूचवल
तायूचवल
वृषातका
जिह्मस्वान
उल्लतानिया
शकस्वान
अवकयात
तायूवववव
वायस्वान
मलस्वान
अपामान
कृणव
कालिव
मालयात
शीमजाज
आदूकनविन

आदामि
धनिवा
मसा
मारु
आय
मानुल
भाकसिल
खिलजानेवशवाहउ
वारुल, डाहाव, रु।
उकीव, लूयाया।
ग। ७
गंखग्य। पूखउव
दक्षिण। मालका
ग। (गोविर्गंख पूखउव

सिद्धाहामजालम
पूजाशु १

आवमतया ३०

सासिमालक

सासिगलका नकाय २

कचिहाक

सिमगाद्यानकचि १ हाक

सिमगामालक

गाय सलाव १

यसवास सलाव १

ध १ धून

जजमकाय १००

गाकाकजजमकाय २०

०० गावमालका

वकनमालका

खानवाक १

विदिह ३

हामलक १

विक ७

शिहला

दूधक ११ व

पदक ११ व

वन्दनउलि १०८

उउलि

धूपवात

धीख ७

कलुव

कयूव

कूक म

क १ लि

सधाविधि

विहाकन

८ न

जामवस

लदूवामा (धम्य १)

७

खानवाक १
विहि रू ३
हामलक १
अकनक १
पवाक रू २
एकासले १
पलकासले १
शमलसले १
खाडिकायावक २५
सायकनकट १
वाल, ग्वज १
सिधुवकायालकाट १
ककनका (गादा
पियंउ
वयलस
मालयासाक
समूख
हामलनियसले १

जामवस
लदूवामा (धम्य १
हु
(गाय
ग्याल
बाहुलखान १०८
खदा ०० ता वदू १०८
साखल दू १
धवसाया दू १
धवक २
कलि दू १
दुवदू दू १
साधलियान ४
सादूदूयान ४
सादूदूयान १८
अदगसमिध
धादगसमिध
अधामान

वलागतसि
वलागतहव
लायअला
द(धादन.जालउ
गुदादन जालउ
वलिपा॥
निवसपूज०
दन्द०
(गावजाग्व२
मलानिवसपू॥
आवतिरु२
वलपतिरु२
(गालजापू२
(गाप्रास
ककलपूजा
मासखि
मिजवखावाग्व२
अवाजालवदुय

ईवा
स(गानरु॥
कातव
सिधनमूद
वनवति
कलगामास
द्रसन
माहायध

अरुयसि
अवसप्रातसि
लाहाति
खययसि
अपामान
यविनसि
वलागतसि
गनिक्कागसि
उदवा

सोसिख
सिजवखावाग्य२
एवाजालनकुपु
सलावसुधा
लोजवकाग।
नलिकारवग्य२
लिवगकिग्य२
यकयकलिग्य२
पीलकिग्य२
नागधान्य।
कलश
कलशउयवमालका
दूधजमालका
सलेसभावका
आधपश।
मवलिवान्य।
कवसला।
जावहासा

वलागतासि
गनिकागसि
उवता
कश
वलति

कामखाडिका।
अद्वानयाता।७
कल्पयताकाश७
पेवयताकाश१२
दुदिरा१८

पासवकागश
पासवकाखाव
नागकुश
पतकू।
पतकालवा
लाव
गधानाय

अ सा

म सा क सा (ध

म सा क

अ सा

क ० ख ल ध म ल को

क ०

प ० य ल व

म म ल व ४

आ दू क ० १

च दू क ० ३

वा दू क ० १

का क क ० ३

प नू या न ।

स्नान जाल न

पूजा न ।

कोप लाया ।

क स क न या ।

वल यति ।

म सा क

ना व या

(० का न

० ना व द नू ध

(० म ति

(० म य

कि सि या दा न या वा

स्नान धे या वा

मा या का या वा

नि व द्वा व या वा

वि षू द्वा व या वा

वा ज द्वा व या वा

धि व वा या वा

० ना धि ना या वा

व ली न न हा या वा

धि दा का या वा

धूआइ।
कायलाया।
कसकनया।
ज्ञानकलंगवध
गतधाम
सहस्रधाम
दूदया।
सम्बनरु।
धिवदिगयानारव

विभक्तवयालांक
मायसले।
पतयाससले।
कायति।
कापालदवदूययाता
एका.सले।
पत्रका.सले।
आवसिऊ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
वलेनतहायावा
पिदाकायावा
वांधयावा
सायादिनयावा
कृगयावा
गंगामहिका
कनूजकूयावा
सर्वाधि
पतगय
गंगाजल
वलादकसले।
दूयादक
रुलादक
नंदलादक
गंधादक
अलादक
तिरथादक

स्वच्छजल
 स्वच्छदिक
 (गम्य) (गम्यक
 धान्यादिक
 गीतवजल
 उच्छदिकसले
 मंख

दशदशयासा

वि. पाल्, बाक्, वंमनजलिन, दक्षिणादु
 स्रध, सिधव, लवाढ
 गय, शिकु, शिरुला
 वंवा, आउलि, लंखल
 डाहाखल, लंमूल
 डाहामूल, लयल
 डाहायल
 पंववल
 जानादवदका

आत, हिलल, कलका
 तिलसा, न्याकति,
 वादाव, कदाव
 स्रच्छालिमि, कयराव
 कोयति, धलधा,
 जलधा, कुथल
 जाति, कसि, हासा
 कं ११ खला गदा
 धलिमान ग्य १

लंगमहानेवययासा

सूधा
 हिउलवन
 वलमवन
 रुविधावन
 वासिगुवन
 उलवाहावन

डाहापल

पंचवत्स

जानादेवदका

पूवारुं।

सिधालदल्लथद्यान३

सधनिन.

कंगउवाघा।

सलाव

वाकरुनिन

कागरुनिन

साघागखाव

लाहामा

लाहावा

खागावा

०वाघा

दूगा.खागा

००लानवा

उरु२

हाविधानवून

वासिउववून

उरुवाहावून

उवाल

नलिसिधन

आलवून

हामलवून

गकावून

यवायकयातावसध

ग्वलजाग्या।

००००००।

कदलपूजा।

भलानिवन।

दन् १२

नडन १२

गका.उलगा

वयलसि.धलि

नाथ सले।

यत वास सले।

धन धू३

हं गाल

जज नकाधू३

काग्यजा३

दक्षिणा दं२१

दा दवद्वा दकोरु

पाल दवद्वा दकोरु

हललिवन

मगाक

विचिह्नव

पूजाश।

अकन

कवल

खान

सिधाल

गलगनाथवचुष व

मापयू१

सूर्य को दपना ययू१

विष्णु वा दपना ययू१

दूर्गा वा दपना ययू१

महादेव नाथवचपनाय

कू२५०० लानया१ यचन

महानेव यया नाविदि॥

पूजाश।

नाथसले।

यत वास सले।

धन धू२०

हं गाल मालका

जजनकाधू२०

वलिवा.या२०

सिधलगागल।

अकनय।

कमल

खान

सिंहाल

धविवाइ

धन

धूपवास

जजमकायू३

०० गाल

वकन, गायसले१

पगवाससले१

मसा, कलूपगाका३

धैवयगाका४

शूदवाल, यागा३

दछिइ३, वलियाग३

(गालजायू१

मलानिवनयू१

ददू १२ नडनयू१२

ददूयाग१

वालवा.वा२०

सिंहालगागल१

मकनय१

कमवउ.क१

खान

सिंहाल

मसा

उउलगा२

महासगा२

धूपवासगा२

सिंहालखलाग्य१

धलई१

वासलकायगा२

वनलमी३

ग्य१दूकावाल

जाक१०८

कता१०८

दकधल, य२

साखलना ०० व २
 डाल २
 व नाना (१६) २
 कामखाति वाकलहि
 (१५) याताक १०५
 वाकल मताया १०
 यलदियायू १
 लवेयिया १०
 रुमिया १०
 काविधलिग्व १
 दूदकुलया ४
 दूदयायाया ४
 पंचलीगधजा वधूसर १
 पंचलीगयतायद १
 वलिहवत १ ६६ य १८
 वलियातालीगयताय
 ता १८ य १८
 धजय ४

यलजाय २
 १ मलाज्ञानजीलन
 यूजा ३१
 मायसले १
 यतादाससले १
 व मरुला
 सिधल
 धूनधून २०
 ऊऊमकाय ३०
 ०० ताल
 खान
 क ग्वउ य १
 मूकतसले १
 धविवा ३
 तुलना
 वदवका १

बालियातालंगयताय

मा १८ यू १८

धजयू४

बालियातायताययू१७

धासाता८

मूलता८

मताक२२

मताकमा८५. ता२

दक्षिणा८५

लीग

पातयूनय२

रुलठिचूनय२

बालपातयूनय२

ककलिमीननकावयूनय२

नलिसिधयय२

दन्द १५०

निवत १५०

मलानिवतग्य२

गुलता

वकनक१

(गामयसले१

(गामयसले१

विशुति

धलि

इदू

कलिसले१

धिययनूव

मता १०८

खानता १००

नकायूनसले१

बालपातयूनसले१

रुलनवकनय१

नासाखनाखसले१

मयावधिसले१

रुलायकसले१

बलादकसले१

खल्लदकसले१

सायादायातिसले१

धान्नादकसले१

काखनाखधलपाग्य

१००० ॥

कालपागदप्रहादाव१३

कायावद२५

गुगुलिम२

अगुलिम२

धलम२

आलनिवा२१

साखव

(गालावन

धलि

गुलनी

अकनसले१

धवन

दगवलि॥

पूजाइ१

खलिग्य१

नायसले१

पनवाससले१

धूनधू४

ऊऊमकाधू३

ॐ गाल

चकन

अदूवावया१

दृष्टिइ१

कल्पिताकाइ१

पंचयनाकाइ१

दूदूया१

काखाया

मनाक दक्षिणाद३

कसधलि

गुलना

अकनसले।

धवन

नासाकखान

सिजनद्यनवाग्व।

चारुय।

क्रसकन।

ॐलान

धुजा

(गोग्यउ१०

द४दद्वि८॥

प्र२५ धव

प्र२५ कसि

प्र२५ धलि

प्र२५ दूदू

प्र२५ साखव

अनाक दादनाद३

कर्मधलि

बुजाश।

गायसले।

घनवाससले।

धनयू२०

ॐताल

जजसकायू२०

वकनय।

सिधय. गागय।

कर्णयताकाश।

पंथयताकाश३

मूदूवावया।

द्वि३।

या२दूदू

सवनरु१

मूययावखाला। क३

मावधू १
अर्धा १
अर्धमाव १
वलिघात १२
द्वन्द्व २४
निडात २४
मलानिडात २४
(माल) १२
मलाक दक्षिणार्ध ३

पूनिस्तकूयागा
मलकूला

मलायूजादालिकानर
लंकिकित्वा न गलकूला
मी ३

मा २ धूमाकूलाका वा दूदू
न

(मा २ ग ३ ३)

सूवावधा
जाक
मा ४ क
रुवत
कासाव
दूला
मलद्विग्न

रुविजालम

मा ४ घाटा

मा ४ पंला

मा ४ दालवा

मा ४ घासा

मा ४ मूल

धलि

वजि

लक

मा२ दूमाशुकाका सो दूदू

न

(गाय ग्व३५)

दक्षिणादी१८

वजि

लक्ष

म्बाव

दूदूदाया

नाहूनकक

क५ मना पूजा

मा२ नलरुका

मा१ दूमाशुका

क१ हंस दूमाशुका

ग्व३५ (गाय

दी१८ दक्षिणा

वकनिवदक्षिणादी४

नाहूनजालनधाखा

व्नायस

क१ मना पूजा

क१ म५ मा८ २२ मूल

दी२ दक्षिणा

वक्ष्मिष्ठुकि। धन। धामखावि. आवात
जयतिष्ठुकि। धू। गमनाखावि. आवात.
धीवृद्धिवाजुठुकि। धू। गमनाखावि
धामधुसुजवाजुठुकि२
धीरुवि देवठुकि।
धामधुसुजवाजुठुकि।
धीयमानधुठुकि२ धू। गमनाखावि
धामधुसुजवाजुठुकि।
धीवृद्धिवाजुठुकि।
धीनदिष्ठुकि।
गमधन धंठुठुकि।
वासकक धंठुठुकि।
सिद्धिवास आवातठुकि।
धीयजायति. गववाठुकि।
धीमूदविधन. गववाठुकि।
धं। जलति. यकसकाया
धं १५. प्रतिष्ठाया दवसककाया
लति। कसकाया. दवसककाया

भा२ वृ३ तल रु क पी पी ह्य नी लु म लु म व
स न, का हि क पू र्ण मा सि च लु पा स क कू र्ण ना
॥ (म) द्रा न र्क २१ र्क नि द द्दि पा भा ट १

भा ट १ र्क १२ रा गिका न क वि या, द व कू व य का
या व य र्क ति ३८

र्क म २१ रा य वा म म हा न वि या, द व कू व य का
या व य र्क २१

र्क ११ का न क व य

र्क १२ प न स म वा य व य

र्क ११ का ० ना य क २ ना वा न का या, व य

भा ट १ र्क २४ का हा न, पा ग, द व, रु नि, ना य, द
वा यि व य

र्क ८ म हा न व य

र्क १ ना य

र्क ४२ व न क न, दि क्षि वि या या

ल क नि व वा य ना या ठा न पा द वा द द वा

५४२ वनकन. दिक्कविद्याया

लकनिववायनायाठालपठयावहया
जाल।पी३।मपिनाथदं२वान
जा३।पी३।नवदवलयादं३वान
जा१।पी३।जगन्नाथदं२वान
जा१।पी३।पूलावदवलयादं२वान
जाल।पी३।वालाखगलयादं२वान

प।पी।रूपतीनुमन्तदव.खुहादास.स्नानविष्णु
दायादंम२२दक्षिण
००क.की.बा.ठ.दंम१२दक्षिण।स्नानविष्णुदाया
ननिखवमहादेवदंम१०दक्षिण।स्नानया
लिखामहादेवदंम२०दक्षिण।स्नान
भा.वा.तिथदंम१२दक्षिण।स्नान
अनकलिजमहादेवमाटी१दक्षिण।स्नान
वा।ग.धव.दंम३३दक्षिण।स्नान
सामलिज.हिनिमदंम३५दक्षिण।स्नान

जिघाद न माद २

१ सवत् ८११ आश्विन वृदि ११ शाम
दल ४१ सवत् ४४ उमहादव
दल ३ सवत् २२ श्री ८ पञ्चायन
१ आश्विन वृदि १ श्री गा
दल ४८ सवत् ११ श्री ७० महा
दल २८ सवत् २२ श्री ३१ पंच

आश्विन वृदि २ वृष
महादव ८१२००
पंचायन ३८२१

आश्विन वृदि ३ वृहस्प
महादव ११११८१
पंचायन ३८४०

आश्विन वृदि ४ शुक्र

पञ्चायन ३८४०

आग्निनवदि ४ पुञ्ज

महादव ८२ ३३२

पञ्चायन ४५१०

आग्निनवदि जगनि

महादव ८३ ४४२

पञ्चा ४८१२

आग्निनवदि नञ्जदि

महादव ८० २४३

पञ्चा ३४२१

आग्निनवदि ८ साम

महादव १०३००

पञ्चा ३००

आग्निनवदि २ नञ्ज

महादेव ११११०
पंचायन ३१००

आग्निवदि १० ब्रह्म
महादेव ४०१००
पंचायन ३००

आग्निवदि ११ ब्रह्म
महादेव १०११३०
पंचायन ११०२

आग्निवदि १२ ब्रह्म
महादेव ५८४८१
पंचायन ११४०

आग्निवदि १३ ब्रह्म
महादेव १११११
पंचायन ३२४०

आश्विनवदि १३ गान
महादेव ७७१७७
पंचायन ३२४०

आश्विनवदि १४ आदि
महादेव ८२३२८
पंचायन १४ २७

आश्विनवदि १७ सात
महादेव ८०४७०
पंचायन ३१२४

कार्तिकशुदि १ अंग
महादेव ८०४४४
पंचायन १२२०

कार्तिकशुदि २ वध
महादेव ११७८०

पंचायन २७७८

कार्तिकेयुदि २ वृह
महादेव १००२०
पंचायन ३२७८

कार्तिकेयुदि ४ शुक्र
महादेव १०७२०
पंचायन १८२०

कार्तिकेयुदि ५ गनि
महादेव १७३३००
पंचायन ४८४५

कार्तिकेयुदि ७ आदि
महादेव ८०११०
पंचायन २१३०

कार्तिकेयुदि ९ शाम
महादेव ८२५२०

कार्तिकेयुदिउसाम
महादेव ८२१२०
पंचायन १४१०

कार्तिकेयुदि १० अंग
महादेव १०१४२०
पंचायन २८२०

कार्तिकेयुदि ८ वक्ष
महादेव ९२१३०
पंचायन ११५४

कार्तिकेयुदितरुह
महादेव ४४८००
पंचायन ११३००

कार्तिकेयुदि १० उक्र

महादेव ८२४२१

पंचायन ८१२७

कार्तिक उक्ता ११ मनि

महादेव १३२०८

पंचायन ४१२३

कार्तिक उक्ता १२ आदि

महादेव ४३१११

पंचायन १४३१

कार्तिक उक्ता १४ सान

महादेव ५७४३८

पंचायन ३११०

कार्तिक उक्ता १७ श्रीगा

महादेव २०००

पंचायन १०००

का॥ ६०००॥ का॥ ३०००॥

महादेव २०००

पंचायन १०००

१ का॥ ६०००॥ का॥ ३०००॥
वसनद्वयं पंचायनद्वयं प्रतिवादाद्वयं का॥ ६०००॥
मि॥ ६०००॥ दि॥ ३०००॥

१ लं॥ या महादेव

२ उ॥ हा या महादेव

३ लि॥ ल या महादेव

४ नि॥ ज ल या महादेव

५ का॥ य हा या महादेव

६ का॥ स या महादेव

७ क॥ ल या महादेव

८ ना॥ या महादेव

९ का॥ न खा ला हा या महादेव वा

१० उ॥ मा महादेव

क्री० लक्ष्मीनावायल

क्री० जा० गध्वदूधूजि

ग्व० सूर्यकानि

क्री० खयासा कया महादव

क्री० लाहायामहादव गव

क्री० लक्ष्मीनावायन चक्रीधाद लाहाया

क्री० लक्ष्मीनावायन चक्रीधाद लाहाया

क्री० लक्ष्मीनावायन चक्रीधाद लाहाया

क्री० जा० गध्वदूधूधाद

क्री० जा० गध्वदूधूधाद

क्री० ग० ल०

क्री० सूर्य

क्री० लक्ष्मीनावायल

क्री० दूना

क्री० गवदी

क्री० डनामहध्वद लाहाया

क्री० ल० कवनावायल

क्री० डनामहध्वद धादाया

क्री१७ नामहं धव, लाहाया
क्री१८ कवना नायल
क्री१९ सामहं धव, थाहाया
क्री२० पूसा लाहाया
क्री२१ यतिवाहाव
क्री२२ लित्रया पूसा

कालिकया अरिगारव वरुंग, जागधवस
धीयादव वाजक मा२
धीजातिवाजक मा२
धीगंमधवक मा२
धीविश्ववाजक मा२
धन, कवसिस, दक्षिणाविया

निरयया, जागधवस, वरुंग, संहिता
धीमाधवरुह मा२
धीगिविधवरुह दगड

श्री मुक्तदव रुद्रमा२

श्री३ मंगल ध्वजम, जर्जग, जूलि (१५) व

श्री वृद्धिवाज मा२

श्री लक्ष्मीवाज मा२

श्री वृद्धदव मा२

श्री हृषीवाज मा२

पार्थिव धूजा

श्री पुरुषोत्तम मा२५

श्री वामदेव मा२५

श्री अश्वक मा२५

श्री वावहृष या युया मा२५

श्री वृद्धटिका ० मा२५

श्री दव मा२५

श्री मनवान मा२५

श्री ध्यामदव मा२५

श्री गंकवरुद्र मा२५

श्री हृषीरुद्र मा२५

श्री विना

श्रीमन्नयान मा२५
श्रीग्यामदव मा२५
श्रीगंकवरुह मा२५
श्रीहृक्करुह मा२५

वैठिपाथ

श्रीग(ल)गङ्गा मा१५
श्रीगूनकवाङ्गा मा१५
श्रीहृमवाङ्गा मा१५
श्रीहृविदव मा१५
श्रीवक्त्रानन्द मा१५
श्रीबामश्वव मा१५
श्रीमहादव मा१५
श्रीयति मा१५
श्रीबलाकव मा१५
श्रीहृक्वा मा१५
श्रीलकुमन मा१५
श्रीवीरश्वव मा१५

पुष्पाकवाचन
पीवि।पुष्पवद्भा।
पीरुविदव भा।
पीकूलपुष्प भा।
पुकि२ दक्षिण
पुकि२ धविमूल
पुकि१ कालक
द१।मत्तानवय

धर्म, स्वस्वयन आवकाशम् ॥ संपादकारिणः ॥

प्रीतिजयस्तु यमीत्यमल्लदवद्गु ३०

प्रीतिजननवाजराशुद्गु ३०

प्रीतिवृत्तिराशुद्गु ३०

नवधकद्गु ३०

गवर्धनसिद्गु २२

जयसिद्गु ३०

ग्रामधनवद्गु ३०

प्रीतिमवाजराशुद्गु ३०

वर्णिधनधनवद्गु ३०

मनरावसिद्गु २२

प्रीतिमधनवद्गु ३०

पूजसिद्गु ३०

महानुसिद्गु २२

महाधनवद्गु ३०

धनसिद्गु २२

लाला २२

उपवसिद्गु ३०

प्रीतिमधनवद्गु ३०

लाला २२

उपवसि क्र ३०

प्रीतामव न्य क्र ३०

प्राप्तमान न्य क्र ३०

वृत्तिक व क्र ३०

पूजानि न्य श क्र २२

वद्य नाथ क्र ३०

महान क्र २३

वक्र सिंहा क्र ३०

मनिध व जा क्र ३०

वृत्ति. नि. क्र ३०

निव नान (गा) क्र ३०

धनि क्र ३०

दशव ति क्र ३०

का क्र मह क्र ३०

जिव सजा क्र ३०

मनाका व सिं ड क्र ३०

ह क्र ति म क्र ३०

जगत्सि. यद् ३०
यनसि धवोद् ३०
जयसि. जमद् ३०
सूनत्सि. राद् २२
विष्णुनाथ रीद् ३०
सूखन. मरुद् ११
रायदव. राद् २२
नयन्यसि. सीद् २२
धनदल विज. द् ३०
रागिसि. विज. द् ३०
जिवद् ११
धनसि. वद् ३०
कृष्णवाज. द् ३०
रागिबाम. उद् ३०
मरुदव. सद् ३०
दल द् ३०
नव. धव. उ. सी. द् ३०
वाम. धव. जम. द् ३०

समूखद् ३०
वक्तिसि. विद् ३०
धाकल. धव. द् ३०
प्रावासदव. द् ३०
गामिसि. द् ३०
वालक. सी. द् २२
वक्त. धव. वि. द् ३०
वैलि. द् ३०
वि. धव. धव. रा. न. द् ३०
जगत्सि. ला. द् ३०
मनि. धव. जा. सि. ध. व. द् ३०
मना. व. सि. द् ३०
कृष्णसि. द् ३०
वी. व. सि. द् ३०
जाग. सि. सी. द् २२
ही. मान. न. द् २२
वक्तिसि. जा. द् २२
वक्त. वाम. सि. द् ३०

वसुधा ३०
नवधकडसां ३०
वामधनजन ३०
धीननिकधन ३०
वाम ३०
हविस्वि ३०
सिद्धिदाम ३०
दविदास ३०
सखम आवा ३०
धर्मदाम ३०
गलिधनजा ३०
हवि.जा. ३०
जगत्सि. ३०
धामननराश ३०
वासुधवशरा ३०
दातका ३०
सुनन्ति.सादा ३०
दातकाका ३०

शानानन्द ३०
वकुति.का ३०
वकुवाम.वि ३०
वकुति.ई ३०
आगिदास.वि ३०
धनसि.का ३०
धनवाम. ३०
साम.ई. ३०
हवसि.वि ३०
धनवामखा ३०
विमडई ३०
धनसियाका ३०
धनवामवेय. ३०
उलावाम. ३०
जगत्सि.का ३०
वसुत्ति ३०
पदसि ३०
दहवेय ३०

मानसिद्ध २९

हाउयाकाय २९

साम. मा. २९

दागंका. का ९ २९

गिवरु २९

महादव. बाउ २९

दव वाम २९

(गाव छन २९

हविसिजासि २९

सम. विज २९

गायवखान. २९

लाला २९

रु. २९

जयवाज २९

वामव २९

पीवहायि. २९

हाक. जावा २९

पूनसिद्ध २५

गयावाम २९

सूर्यवाम २९

गीगावाम २९

जगन्नाथका २९

वदुवाम २९

पूनवाम २९

यावसिद्ध २९

विश्वनाथ २९

बालका २९

काष्ठा २९

(धाकका. सहि २९

वामव २९

जगत्सि २९

सववाम २९

गिवरु २९

पीवि. २९

पीहाकवा. २९

मूकन. थं. जा २९

आविष्कार्य. क्र२२

हाक. आवा. क्र२२

पूनसिं क्र२५

निवसिं क्र२२

नाम क्र२२

यमसिं क्र१७

माहानसिं क्र२२

जयकल्याण क्र२२

जयसिं क्र२२

निवद्याम क्र२२

गापि आवा. क्र२२

मानसिं आवा. क्र२२

दव नाम. क्र१७

रुव क्र२२

पुत्र नाम. क्र२२

पूनसिं क्र२५

नाम रुवि. वि क्र२२

वलाय. क्र२२

आविष्कार्य. क्र२२

धीहाकवा. क्र२२

मक न्द थं क. आ क्र२२

यमसिं आवा. क्र२२

वकृति आवा. क्र२२

जयसिं आवा. क्र२२

सिद्धि नाम आवा. क्र२२

जयसिं सी क्र२२

माहान सी क्र२२

वद्याम वि. क्र२२

धनसिं राया क्र२२

गंक वदव. राया क्र२१

जययति सिं डसां क्र२२

वैनिधव. एव नाम क्र२७

नाम एव न धवा २७

विष्णु नाम क्र२२

मूर्य क्र२२

दव. क्र२२

विवागवामक्र २४
 दवसि क्र १
 वासु क्र २३
 वसुसि क्र २४
 जयदवि क्र २०
 वद्युनाथ क्र २२
 वामरुवि क्र २४
 वसि क्र २४
 दवाव क्र २१
 धनदव क्र २३
 दविवागवाम क्र २२ मस
 जयवाममस क्र २२
 वसि म्याव क्र २२
 क्र १०८ धिक् धर्मदादयनि

वाकन ई ३३ काठिकया मता कावकाया ल्याख

किर्लनयाता वाययाधजात ॥

वा. कन रु ३३ का. ३ कया, मता कुव काया ल्याख

कि रु नया ना वा य या ध या त ॥

लमा ० नान पाठ १ क्रु न व व न या द या
ध ज प ४

पू १ ग व धा द, त व द व न या दू वा ल्या ख

पू १ ग व धा द, दू वा ल्या ख, रुं जा व स वि का या

आ व ति, त व धा द, गा रु क पू २

धा त २४ दि वा वा

धा त ३ ग व धा द दि वा

ग्व १ सि ज व कृ वि न, व क न धा वा

पू २ कृ लि स

पू १ स्र कि न

पू जा ३ १ बा णी या य रु व पू जा

ग्व १ गा हा व य

ग्व ४ ध वि वा वा ४

ग्व १ अ य द रु त व धा द लि व या

ग्य३खि

ग्य२(धमाय

ग्य१ नायखिन

ग्य२ धाक

ग्य१ कखि

ग्य१ अगत्र

ग्य१ नवक

ग्य२ नगलाचाय

ग्य१ दउवा

श१ वकूवत्तवधाद

श२ वाजन

श१ वाक स्यावत्तवधाद

श१ वाक स्यावत्तवधाद

श१ सिक् स्यावत्तवधाद

श१ सिक् स्यावत्तवधाद

प१ कल्लव

प१ नरुति

प१ नवनिद्या

पू१ कल्लव

पू१ नरुति

पू१ नवसिंघा

पा२ कागपिन

पू४ हावाय. दिन

पू४ वन्दुजातिदिधान

पू१ आवति

ताय, खान, पुकसाया२

पू१ सामसासिजन, वकनकुसा

पू१ कासया. सामसा, वकनकुसा

कार्तिक यात्री नक्षत्र नक्षत्र

प्रीति जय हय नक्षत्र नक्षत्र ३० कृ १५ ला

वलिधन जाति धन सिद्धि नक्षत्र ३० कृ १५ ला

जयसि, विज, वक्षान नक्षत्र ३० कृ १५ ला

जिव, उला, वक्षान नक्षत्र ३० कृ १५ ला

जिव वाम सिद्धि नक्षत्र १० कृ २५ ला

सूत्रसि, नक्षत्र, कागधिन नक्षत्र २३ कृ १५ ला

रुद्रिख, कागधिन नक्षत्र २० कृ १५ ला

प्रीतिमानन, कागधिन नक्षत्र २० कृ १५ ला

महादव उला, नायसि नक्षत्र ३० कृ १५ ला

नक्षत्रास, सि, कतसि, नक्षत्र २१ कृ ३५ ला

वृषवाज, कागधिन नक्षत्र २४ कृ ३५ ला

अवसि, सदाव, धाके नक्षत्र ३० कृ १५ ला

गावधनसि, स, नक्षत्र २५ कृ १५ ला

वृक्षति, वृक्ष, वृक्षल नक्षत्र ३० कृ १५ ला

माहनयाकाय, धर्मा, नगावा नक्षत्र ३० कृ १५ ला

जय धर्मा, कागधिन नक्षत्र ३० कृ १५ ला

मानाहावसि, धागधिन नक्षत्र ३० कृ १५ ला

जाति वंद, धागधिन नक्षत्र २४ कृ ३५ ला

आमवादयाकाय धागधिन नक्षत्र ३० कृ १५ ला

प्रीति वंद, धागधिन नक्षत्र २४ कृ ३५ ला

माह नयाकाय, वच्चा, नगानाका ३० कु १५ ला

जय धर्म, कागा ३० कु १५ ला

मानाहावसि, यागा ३० कु १५ ला

जाति वंद, यागा २४ कु ७ ला

आमवा दयाकाय यागा ३० कु १५ ला

प्रीव कुतिला ३०, नावडगा ३० कु १५ ला

प्रीहम बाजगा ३०, सि दधू ३० कु १५ ला

बाम ग्वन, जवकाक २१ कु ७ प्र ३ ला

वकुतिका ०, मूत्र गयने ३० कु १५ ला

वखलि गखा, खवकाक १३ कु ३ प्र १ ला

दह वय २१ जवकाक कु ७ प्र ३ ला

सिमान न्य ३० जव कु १५ ला

पयसि, जवकाक गखा, खवया ३० कु १५ ला

विश्वनाथ ३० मूत्र खवया ३० कु १५ ला

निवसि २० खवकाक कु १ ला

सवनामने ३० कु १५ ला

मनहावसि ३० कु १५ ला

लानिनाम, ३० कु १५ ला

ला

वदाम्खिका ०, कु ३० कु १५ ला,
जयकल्याण, जव खिमूजा, कु ३० कु १५ ला
हाकुतिम, खवखिमूजा, कु ३० कु १५ ला
शयदव, हाट कु ३० विनायाक कु १५ ला
यनाकि, कु ३० विनायाक कु १५ ला
जयनाम कु ३० विनायाक कु १५ ला
हविसि कु ३० विनायाक कु १५ ला

दाग रुनि, माहावि पूव कु २२, कु १५ ला
उदयनाथ, रुनि, माहावि पूव कु २१ कु ३५ प्र
विष्णुनाथ रुनि, माहावि पूव कु २० कु १५ ला
कु ४३ थिक
कु १३ प्र ३ थिक लाविया आल्याख



कार्तिक नमूल चूक स की र्ण न या च का या		
ह्रिया काय	रू ३०	लाक १४
यक्ष सिं	रू ३०	लाक १४
चूक नि	रू २०	लाक ११
विष्णु च	रू ३०	लाक १४
यूक्ष सिं	रू २१	लाक १४
नाम	रू २२	लाक ११
अय सिं	रू २१	लाक १४
शानन्द लाल	रू ३०	ला ८२ द्रुया
सिद्धि नाम	रू २८	लाक १
धर्म नाम	रू २२	लाक ११
ध्याम रं	रू ३०	लाक १४
यधु नाम रु सि	रू ३०	लाक १४
धन सिं धमक गल्या	रू २८	लाक १
लायक सुधाक	रू ३०	लाक १४
नाम वन्द कागकी	रू ३०	लाक १४
रुद्र दत्त गतल	रू २८	लाक १
कल्या धमि ताद	रू ३०	लाक १४

नाम वल्लु बागका क्र ३०
कृष्णदेव गवतल क्र ३८
कल्याणसिंताद क्र ३०
मलदालयावाय क्र ३०
गुणदास क्र २८
वसुवयाकाय क्र २८

लाक ११४
लाक १
लाक ११४
लाक ११४
लाक १
लाक १

लसिकल क्र ३०
लसिकलयाकाय क्र ३०
महाविष्णु क्र ३०
दिवाकन क्र ३०
गंगधन्य क्र ३०
यमसिंमा क्र ३०
रावकृष्ण क्र २८
शावनदव क्र ३०
शावनीवन्द्य क्र ३०
सननाम सा क्र २१
मिणसिंरुटि क्र २१

लाक ११४
लाक ११४
लाक ११४
लाक ११४
लाक ११४
लाक ११४
लाक १
लाक ११४
लाक ११४
लाक ११४
लाक ३४

लक्ष्मणसंग ३०	लाक १५
धनक २१	लाक ३५
वंधीधन (धन) ३०	लाक १५
गामलिक ३०	लाक १५
दमयन्ती वृक २५	लाक ३५
सामयक ३०	लाक १५
मानसिंत ३०	लाक १५
कुरुसिंत २५	लाक ३५
रुयसिं कायपीन २५	लाक ३५
वखावा २१	लाक ५५
धर्मज्ञाति वा २६	लाक १
आकहगिया काय ३०	लाक १५
खाखलवा २६	लाक १

लक्ष्मिं वाक ३०	लाक १५
वृक किं वा ३०	लाक १५
वलिं वा २०	लाक ३
सखल वा २०	लाक ३

वृक्षमिच्छादा	रु ३०	लाक १४
तलि म्वादा	रु २०	लाक ३
सूखलम्वादा	रु २०	लाक ३
रुगिनाथगतल	रु ३०	लाक १४
सिंवायाकायवदूल	रु २१	लाक ३१
रुलि कर्णल	रु २२	लाक ११
उदयनाथकर्णल	रु २२	लाक ११
संखाल प्रणसिंघा	रु ३०	लाक १४
वलनाथनरुनि	रु ३०	लाक १४

रुनिखियाकाययाखत्रकसलरुसिंघावयाखन
कसविगायाक॥

गवर्द्धनगावू रु ३० लाक १४

सूखल रु ३० लाक १४

रुक्काठा रु ३० लाक १४

त्रसिकलयाखलकसलमायधकखलकस
विगायाक॥

गवर्द्धकायिडमा रु ३० लाक १४

नाम द्विहाजक ३० ला क १४

लायिक रुं १०१ रुथिया

१ अथादिमानवगणेष्वपि जयह्वयतीत्यमन्त्रवर्मादी
 धीधीधी आसायबन्धवत्कर्तृकधीत्यर्थः महासानाङ्ग
 त्वं ह्येकैकं च यथाकियत्तयोपादिसुखयाष्टकयितु
 लाकाङ्क्षितं यत्पूर्वककल्यायनसर्वत्रासानकबन्धिव
 सायश्चरुलनिवलाकमदत्तकामसकललक्षणसम
 ननिवलाकयाप्यर्थः सुखं गच्छितवित्त्वरुलयथाग
 किनानाद्यञ्जनसूययकान्तसहितादनमहावर्लिक
 त्रिधा ॥ सर्वम् ७२७ योषकृष्णकादणी अतुवाधनः
 कृष्णगंठयाग आदित्यवाचनकनसंक्रान्तिध्वकृष्ण
 सायबन्धनसुयोनस धीधी जयह्वयतीत्यमन्त्रयवसः
 नमस्तुतेवद्यथाकादिन ॥ ॥

नमस्तुतं वयं यादव नमः ॥ ॥





























































































